भारत के सबसे ज्यादा बिकने वा

वेद प्रकाश शर्मा

द्दारी

संशोधित संस्करण

"जी चाहता है अपने हाथों से तुम दोनों की खोपड़ियां खोल दूं। इस काम को करने से दुनिया की कोई ताकत इस वक्त मुझे रोक भी नहीं सकती। मगर नहीं, इतनी आसान सजा नहीं दे सकता मैं तुम्हें। तुम्हारे खून से अपने हाथ रंगने का मैं जरा भी ख्वाहिशमंद नहीं हूं। जो गुनाह तुमने किया है उसकी सजा इतनी आसान नहीं हो सकतीकिदो ध्धमाके हों और तुम्हें हर मुसीबत से निजात मिल जाये...। शांतिबाई और विचित्रा से कहीं ज्यादा घृणित वेश्या हो तुम। वे कम से कम कोठे पर तो बैठी थीं। तुम तो मेरे दिल में बैठकर अपनी गोद में किसी और को बैठाये रहीं। तुम जैसी तवायफ के लिए यह सजा कोई सजा नहीं कि मैं गोली मारूं और तुम्हारा गंदा शरीर मेरे कदमों में आ गिरे। तुम्हारी सजा तो वो है, जो मैंने मुकर्रर की है! जो कदम-कदम पर तुम्हें मारेगी। याद रखना मेरी बात---मरने के बाद अगर मैंने तुम्हें तड़प-तड़पकर मरने पर मजबूर नहीं कर दिया तो मेरा नाम राजदान नहीं।"

मदारी

राजदान वास्तव में मदारी ही था, जो मरते-मरते भी अपनी पत्नी और जान से ज्यादा प्यारे भाई को अपनी इच्छानुसार नाचने को मजबूर कर गया।

वेद प्रकाश शर्मा के उपलब्ध उपन्यास

- शेखचिल्ली
- अंगारा
- वेद-मंत्र
- क्योंकि वो बीवियां बदलते थे
- सभी दीवाने दौलत के
- साढ़े तीन घंटे
- बहू मांगे इंसाफ
- हत्या एक सुहागिन की
- कैदी नम्बर-100
- कोख का मोती
- मेरा बेटा सबका बाप
- पागल
- शिखंडी
- डमरूवाला
- पंगा
- असली खिलाड़ी
- पाक-साफ
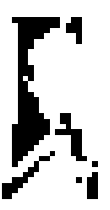
- एक थप्पड़ हिंदुस्तानी
- रामबाण
- एक और अभिमन्यु
- मि० चैलेंज
- रैना कहे पुकार के
- भस्मासुर
- सारे जहां से ऊंचा
- माटी मेरे देश की
- चक्रव्यूह
- जादू भरा जाल
- जिगर का टुकड़ा
- कातिल हो तो ऐसा
- शाकाहारी खन्जर
- शंखनाद
- विजय और केशव पंडित
- वर्दी वाला गुण्डा (प्रथम)
- वर्दी वाला गुण्डा (द्वितीय)
- शीशे की अयोध्या
- दहेज में रिवाल्वर

- हिंसक
- दरिन्दा
- भगवान न. दो जय हिन्द
- वन्दे मातरम्
- कठपुतली
- सुहाग से बड़ा
- कारीगर
- राखी और सिन्दूर
- वो साला खद्दर वाला (संपूर्ण)
- सबसे बड़ी साजिश
- फंस गया अलफांसे
- गूंगा
- जजमेन्ट
- जुर्म की मां
- कुबड़ा
- लल्लू
- ट्रिक
- इन्टरनेशनल खिलाड़ी
- हत्यारा मंगलसूत्र (प्रेस में)

मदारी

वेद प्रकाश शर्मा

प्रकाशक के तौर पर हमारा दावा हैधपिछले तीन दशक से उपन्यास लेखन का एक ही मदारी है---वेद प्रकाश शर्मा! क्योंकि बेहद अनोखे किरदार इसी लेखक की कलम से जन्म लेते हैं।

उपन्यास के नाम, पात्र, स्थान, घटनाएं सभी काल्पनिक हैं। समानता संयोग से हो सकती है। किसी भी जीवित अथवा व्यक्ति से इसका कोई संबंध नहीं है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है। उपन्यास में प्रकाशित सामग्री के प्रति किसीभी प्रकार के विवाद का न्यायिक क्षेत्र मेरठ होगा।

उपन्यास – मदारी

उपन्यासकार – वेद प्रकाश शर्मा

प्रकाशक – तुलसी पेपर बुक्स
K-1265, शास्त्रीनगर मेरठ-250004
(0121) 2774961

टाइप सेटिंग – एक्सपर्ट कम्प्यूटर्स, मेरठ।

मुद्रक – विमल ऑफसेट, मेरठ

MADAARI
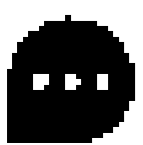
BY
VED PRAKASH SHARMA

...और अब पेश है—प्यार भरा सन्देश

मेरे प्रेरक पाठकों

हाजिर है मदारी।

न...न...न... मैं अपने बारे में नहीं कह रहा! अपने इस उपन्यास के बारे में कह रहा हूं। भला मैं 'मदारी' कैसे हो सकता हूं! मदारी तो राजदान है। वह राजदान जिसकी कहानी 'कातिल हो तो ऐसा' से शुरू हुई, 'शाकाहारी खंजर' से गुजरी और अब 'मदारी' पर आकर समाप्त हुई है। इस कथानक को लिखते वक्त मुझे पहली बार एहसास हुआ कि कभी-कभी कहानी के तूफानी बहाव के साथ लेखक भी बहता चला जाता है। यूं तो मैंने पार्ट वाले अनेक उपन्यास लिखे हैं। परन्तु वे उपन्यास वे हैं जिन्हें शुरू करने से पहले ही मैंने 'पार्ट्स' में लिखने का मन बना लिया था। इस कथानक के साथ घटा हादसा उन सबसे अलग है

क्योंकि 'कातिल हो तो ऐसा' शुरू करते वक्त मुझे दूर-दूर तक इस बात का इल्म नहीं था कि इस कथानक का कोई पार्ट भी बन सकेगा। और फिर... पार्ट भी दो नहीं, तीन बन गये। ऐसा केवल इसीलिए हुआ कि बात से बात निकलती गई। देखते ही देखते पहाड़ों का कलेजा चीरकर बहती नदी का सा रूप धारण कर लिया इस कहानी ने। भरपूर कोशिश के बावजूद मैं उस प्राकृतिक बहाव को नहीं रोक पाया। कलम तभी रुकी जब तमाम उतार-चढ़ावों के बाद कहानी को अपनी मंजिल मिली और आज... जब आपके पत्रों द्वारा मेरे पास यह रिपोर्ट है कि यह कहानी आपको बेहद-बेहद पसन्द आ रही है तथा आप बेताबी से 'मदारी' का इन्तजार कर रहे हैं, तो सोचता हूं---कहानी के प्राकृतिक बहाव को रोकने का कोई बेवकूफाना प्रयास न करके, इसके साथ बहते चले जाने का जो काम मैंने किया, वह ठीक ही था। शायद इसीलिए आपने इस कथानक को इतना पसंद किया है। अब मुझे पूरी उम्मीद
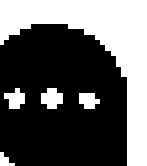
है–'मदारी' के रूप में कहानी का अंत भी आपको 'आगाज' की तरह बहुत पसंद आयेगा। ऐसी मुझे केवल उम्मीद है। फैसला तो आप ही को सुनाना है। क्योंकि आप जानते हैं–जज मैंने हमेशा आप ही को माना है। तो पढ़िए मदारी। उठाइए कलम और लिख भेजिए अपना फैसला। नतमस्तक हुआ, मैं उसे स्वीकार करने के लिए तैयार हूं। और इसी सैट के साथ मेरा नया उपन्यास शेखचिल्ली भी प्रकाशित हो रहा है जो मेरे पूर्वप्रकाशित उपन्यास अंगारा का दूसरा पार्ट है। और जिसे आप पढ़ने के लिए बेताब होंगे तथा पढ़ने के बाद आप सोचेंगे कि क्या कोई करेक्टर ऐसा भी हो सकता है।

ओल्ड न्यूजध्इस पत्र के माध्यम से मैं आपको एक पुरानी लेकिन जरूरी सूचना देनी चाहता हूं। सूचना यह है कि मेरा बेटा शगुन शर्मा भी अब उपन्यास लेखन के क्षेत्र में कदम रख चुका है। अभी तक उसके तेरह उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। अगर आपने कोई उपन्यास पढ़ा है तो मुझे
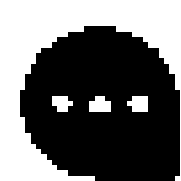
कुछ नहीं कहना क्योंकि तब तो आप खुद ही उसकी लेखनी के बारे में मुझसे ज्यादा जान गए होंगे लेकिन अगर आपको अभी तक यह सूचना नहीं मिली है और उसका कोई उपन्यास नहीं पढ़ा है तो अवश्य पढ़ें और अपनी कसौटी पर परखें कि वह आपका मनोरंजन करने जैसा कुछ लिख रहा है या नहीं। यहां मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि यदि आपको शगुन शर्मा का एक उपन्यास पढ़ने के बाद लगे कि वह आपकी कसौटी पर खरा नहीं है तो भविष्य में बिल्कुल न पढ़ें। लेकिन किसी भी नए लेखक का इतना हक तो जरूर है कि आप उसका एक उपन्यास पढ़ें।

मैं आपको उसका 'खून की गंगा' नामक उपन्यास पढ़ने की सलाह दूंगा जो इसी सेट में प्रकाशित हो रहा है...प्रकाशित करने वाली है उसकी... यानी हमारी अपनी प्रकाशन संस्था–'तुलसी पेपर बुक्स'। और अब मेरे और शगुन के सभी नए और पुराने उपन्यास केवल और केवल 'तुलसी पेपर बुक्स' से ही प्रकाशित होंगे। अगर अन्य कोई

प्रकाशक हमारे उपन्यास प्रकाशित करने का दावा करे तो उसे धोखा मानें। यदि भविष्य में ऐसा कोई परिवर्तन हुआ तो उसकी घोषणा भी पहले हमारे ही प्रकाशन यानी 'तुलसी पेपर बुक्स' से होगी।

अंत में हमेशा की तरह आपके प्यार, विश्वास और आशीर्वाद का आकांक्षी---

आपका अपना–
'तुलसी'
के.1264, शास्त्रीनगर, मेरठ।

ॐ

मदारी

'कातिल हो तो ऐसा' से शुरू होने वाली इस कहानी के मुख्य किरदार का नाम आर.के. राजदान था। एक युवा बिजनेसमैन। उसके छोटे भाई का नाम देवांश था। राजदान आज अपनी मेहनत, लगन और निष्ठा के बूते पर 'राजदान एसोसिएट्स' नामक कंस्ट्रक्शन कम्पनी का मालिक था। देवांश से वह बेइन्तिहा प्यार करता था।

राजदान की पत्नी का नाम था---दिव्या।

देवांश अगर राजदान की आंखों का तारा था तो दिव्या थी उन आंखों की ज्योति। देवर-भाभी के रूप में देवांश और दिव्या भी एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

बात शुरू होती है तब से जब आर.के. राजदान

करीब बीस दिन बाद कनाडा से भारत लौट रहा था। दिव्या और देवांश 'राजदान एसोसिएट्स' के चुनिंदा स्टाफ के साथ उसे रिसीव करने आये थे। वे सब विजिटर्स लॉबी में थे जबकि एयरपोर्ट के बाहर, कार-पार्किंग में खिल रहा था एक गुल!

राजदान के ड्राइवर का नाम---केशोराज बन्दूकवाला था। उस वक्त अपने मालिक की सिल्वर कलर की चमचमाती मर्सडीज पर कूल्हा टिकाये सिगरेट में कश लगा रहा था जब एक अत्यन्त खूबसूरत और सैक्सी लड़की ने अपने एक अन्य साथी के साथ केशोराज बन्दूकवाला को बेवकूफ बनाकर उस गाड़ी में टाइम बम फिट कर दिया जिसमें बैठकर राजदान को एयरपोर्ट से घर जाना था।

उधर---दिव्या, देवांश और 'राजदान एसोसिएट्स' के स्टॉफ ने गर्मजोशी के साथ राजदान का स्वागत किया। मगर राजदान जाने क्यों, उदास-उदास और कुछ हद तक टूटा हुआ लग रहा था। दिव्या

और देवांश ने कारण जानना चाहा। राजदान ने कुछ बताया नहीं बल्कि खुद को सामान्य दर्शाने की नाकाम कोशिश करने लगा। अंततः वे एयरपोर्ट से बाहर निकले। पार्किंग में पहुंचे। देवांश ने सिल्वर कलर की उस मर्सडीज की ड्राइविंग सीट संभाली जिसमें टाइम बम फिट किया गया था और राजदान दिव्या के साथ पिछली सीट पर बैठा। बाकी लोग देवांश की 'जेन' और स्टाफ कार में थे।

काफिला 'राजदान विला' की तरफ चल दिया।

रास्ते में राजदान ने दिव्या और देवांश से बबलू के बारे में पूछा। बबलू एक गरीब लड़का था। उम्र करीब सोलह साल! उसके पिता टीचर थे। वह राजदान विला के ठीक सामने सड़क के उस पार बनी तीन-मंजिला इमारत के एक फ्लैट में रहता था। जाने कैसे, राजदान का बबलू में और बबलू का राजदान में प्यार बढ़ गया था। बबलू के प्रति राजदान की यह चाहत दिव्या और देवांश को

बिल्कुल पसंद नहीं थी। उसके बारे में राजदान से बातें तक करना नहीं चाहते थे वे, अतः टॉपिक चेन्ज करने की गर्ज से कार ड्राइव करते देवांश ने राजदान से उसकी मायूसी और उखड़ेपन का कारण पूछा। जवाब में राजदान भड़क उठा, जबकि यूं भड़क उठना उसके स्वभाव में नहीं था। इससे दिव्या और देवांश को पूरा यकीन हो गया राजदान कनाडा से कोई बड़ी उलझन दिमाग में लेकर आया है। दोनों उस उलझन को जानने के लिए बेचैन हो उठे। बहरहाल, प्यार तो वे भी राजदान को बेइंतिहा करते थे। परन्तु तत्कालीन माहौल में कुछ पूछने की हिम्मत न जुटा सके। कार में तनावपूर्ण सन्नाटा छा गया था और शायद इस सन्नाटे के कारण ही

टिक्-टिक्...टिक्-टिक्... की आवाज देवांश के कान खड़े कर सकी। टिक्-टिक् की उसी आवाज का पीछा करते वे मर्सडीज में छुपे टाइम बम तक पहुंच गये और उसे उठाकर गाड़ी से बाहर फेंका ही गया था कि वह फट गया।

अर्थात् मरते-मरते बचे थे दिव्या, देवांश और राजदान!

यहां इन्ट्रोड्यूज होता है---इंस्पैक्टर ठकरियाल। अदरक की गांठ जैसे शरीर का मालिक। बेहद काइंया और मुंहफट पुलिसिया जो दिमाग में आये उसे फट से कह देने में जरा भी नहीं हिचकता। घटनास्थल पर पहुंचते ही उसने केशोराज बन्दूकवाला को भी तलब कर लिया। उसके मुंह से पार्किंग में घटी घटना की डिटेल सुनी। वह फौरन समझ गया कि बन्दूकवाला को उलझाने की घटना मर्सडीज में बम रखने के लिए की गई थी, परन्तु सबसे बड़ा सवाल था...यह सब किया किसने? कौन था उनके खात्मे का तलबगार? क्यों मार डालना चाहता था उन्हें?

राजदान बबलू के फ्लैट में जाकर उससे मिला। बबलू को बुखार था। इसके बावजूद वह राजदान को रिसीव करने एयरपोर्ट जाना चाहता था परन्तु उसके माता-पिता ने नहीं जाने दिया। यहां जब

एकान्त में राजदान और बबलू की बातें हुईं तो पता लगा---बबलू का इश्क उसके स्कूल में पढ़ने वाली एक हमउम्र लड़की से चल रहा है। राजदान से वह उसी लड़की के बारे में घुट-घुटकर बातें करता है। बड़ा ही मासूम प्यार था बबलू और उस लड़की के बीच। राजदान की कोशिश थी---उस प्यार को 'मासूम' ही बनाये रखना। दरअसल, वह बच्चों को बहकने नहीं देना चाहता था।

उधर, विला में दिव्या और देवांश कुढ़ रहे थे। कुढ़न का कारण था---राजदान का बबलू के पास से अब तक न लौटना। उनका ख्याल था---बबलू के मां-बाप ने अपने बेटे को जानबूझ कर राजदान के पीछे लगा रखा है ताकि वक्त आने पर किसी बहाने से 'नावां-पत्ता' झटक सकें।

उस रात दिव्या ने खुद को विशेष रूप से सजाया-संवारा। वे सभी लटके-झटके इस्तेमाल किये जो एक पत्नी अपने पति को लुभाने के लिए

कर सकती थी, मगर राजदान विला के पिछले हिस्से में बने किचन लॉन की रोशनियों में खोया रहा। यह किचन लॉन खुद राजदान ही ने बनवाया था। अपने और दिव्या के लिए। दो हजार गज में फैले, उस लॉन में कृत्रिम पहाड़ और झरने थे। पेड़-पौधे और झाड़ियां थीं और थे ऊंचे-ऊंचे फव्वारे। रात के वक्त जब वह रोशनियों से जगमगाता तो 'परिस्तान' जैसा लगता था। राजदान जब उसके किसी भी लटके-झटके का शिकार नही हुआ तो दिव्या हैरान रह गयी, बोली---'आखिर बात क्या है, राज, दिमाग में ऐसी क्या प्रॉब्लम लेकर आये हो कनाडा से जो तुम्हारा ध्यान किसी और तरफ नहीं लगने दे रही? मुझे बताओ राज! मैं पत्नी हूं तुम्हारी! तुम्हारी प्रॉब्लम के बारे में जानने की हकदार। और तब...राजदान बुरी तरह उत्तेजित हो उठा। जेब से एक कागज निकालकर उसकी तरफ फेंकता हुआ चीखा---'जानना चाहती हो तो लो, देखो इसे। ये है मेरी प्राब्लम! कागज को पढ़ते ही दिव्या के हलक से चीख निकल
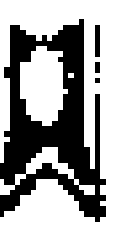
गई---'नहीं!... ऐसा नहीं हो सकता।' तब राजदान ने बहुत ही शान्त स्वर में कहा था---'ऐसा हो चुका है।' दिव्या राजदान की तरफ इस तरह देखती रह गई थी

जैसे अपने पति की तरफ नहीं बल्कि चिड़ियाघर से भागकर आये संसार के किसी विचित्र प्राणी की तरफ देख रही हो।

अगले दिन! इंस्पैक्टर ठकरियाल ने सुबह-सुबह राजदान, देवांश और दिव्या को बन्दूकवाला सहित थाने में तलब किया। कारण था कम्मो और बुग्गा की गिरफ्तारी। बन्दूकवाला ने पुष्टि की---ये दोनों वही हैं---जिन्होंने गाड़ी में टाइम बम रखा था। ठकरियाल ने काफी तत्परता के साथ उन दोनों को खोज निकाला था। उन्हें सामने देखते ही देवांश मारे गुस्से के मानो पागल हो उठा। वह यह जानना चाहता था उन्होंने उसे मारने की कोशिश क्यों की? पता लगा... यह काम कम्मो और बुग्गा को मुनासिब फीस के साथ एक ऐसे नकाबपोश ने सौंपा था जो थोड़ा लंगड़ाकर चलता है।

कम्मो-बुग्गा नकाबपोश के बारे में इससे ज्यादा जानकारी न दे सके। देवांश को शक था वे झूठ बोल रहे हैं। सच्चाई का पता लगाने के लिए उसने खुद खोजबीन करने का फैसला किया। हालांकि राजदान ऐसा नहीं चाहता था परन्तु देवांश पर हमलावर तक पहुंचने का जुनून सवार
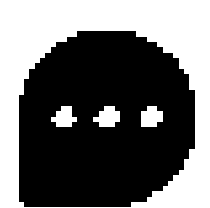
था।

उसके बाद देवांश नजर आता है---एक फाइव स्टार होटल के शानदार सुइट में। वह सिगरेट पी रहा है। शराब पी रहा है। साकी है---एक सांवली परन्तु तीखे नाक-नक्श वाली बेहद आकर्षक और सैक्सी लड़की। देवांश उसे

'विनीता' कह रहा है। उनकी बातचीत से स्पष्ट होता है कि लंगड़ा नकाबपोश बनकर देवांश ने ही कम्मो और बुग्गा से सौदा किया था। वह टाइम बम दिया था जो बाद में उन्होंने मर्सडीज में रखा।

फिर देवांश खुद भी उसी मर्सडीज में क्यों बैठा? क्यों बम को फटने के 'ऐन' पहले उसने गाड़ी से बाहर फेंक दिया? इन सवालों के जवाब भी देवांश और कथित विनीता की बातचीत से ही मिलते हैं। दरअसल उनका उद्‌देश्य राजदान और दिव्या को दुनिया से उठा देना था ताकि उनके बाद सारी जायदाद देवांश की हो जाये, परन्तु मर्सडीज में

टाइम बम किसी की हत्या करने के लिए नहीं बल्कि ठीक वही ड्रामा प्लान्ट करने के लिए रखा गया था, जो किया गया। और यह उपज थी देवांश के दिमाग की। वह जानता था.... राजदान और दिव्या के मरते ही पुलिस सीधा शक उसी पर करेगी क्योंकि उनके बाद जायदाद का वारिस वही है। ड्रामा रचा ही इसलिए गया था ताकि बाद में... तब, जबकि किसी अन्य तरीके से वास्तव में राजदान और दिव्या का मर्डर हो तो देवांश इन तर्कों के साथ खुद को शक के दायरे से दूर रख सके कि अगर उनकी हत्याओं के पीछे वह होता तो खुद उस गाड़ी में क्यों बैठता जिसमें बम था?

अर्थात् गाड़ी में टाइम बम वाली घटना को देवांश ने केवल अपनी 'एलीबी' तैयार करने के लिए अंजाम दिया था। असल मर्डर तो अब... यानी आगे, किसी और तरीके से होना था।

अब जरूरत थी एक योजना की। इस काम में उनकी मदद 'विषकन्या' नामक एक किताब ने की। किताब में एक ऐसी विषकन्या का जिक्र था जिसने अपने उरोजों के निप्पल पर घातक जहर का लेप करके एक विलासी राजा को मार डाला था।

देवांश ने किताब में तरकीब पढ़ने के बाद कहा----'तरकीब तो वाकई लाजवाब है मगर 'भैया' पर कारगर नहीं होगी। वे विलासी नहीं हैं। 'भाभी' के अलावा किसी की तरफ देख तक नहीं सकते। तब...विनीता ने कहा---'जहर दिव्या के ही निप्पल पर लगाया जायेगा। यह काम तुम्हें इस तरह करना होगा कि खुद दिव्या न जान सके तुम कब उसके निप्पल पर जहर लगा गये? इस तरह---विनीता उसे समझाने लगी कि किस तरह राजदान की हत्या करके न केवल दिव्या को उसमें फंसाया जा सकता है, बल्कि यह भी साबित किया जा सकता है कि राजदान एसोसिएट्स का

समरपाल नामक चीफ एकाउंटेंट उसका आशिक है और यह काम उसने उसी के साथ मिलकर किया है। विनीता उस वक्त देवांश को अपने शबाब के सागर में डुबोने का प्रयत्न कर रही थी जब अचानक इंस्पैक्टर ठकरियाल वहां पहुंच गया।

उसे वहां देखकर जहां विनीता और देवांश के होश फाख्ता हो गये वहीं, ठकरियाल के तो उन लोगों की जुगलबंदी मानो हलक में अटककर रह गई। उसने देवांश को थाने ले जाकर एकान्त में समझाया भी। कहा---मैं अच्छी तरह जानता हूं! विनीता का असली नाम विचित्रा है। वह एक तवायफ की बेटी है। अगर तुम उसके मोहपाश में पड़े रहे तो निश्चित रूप से किसी बखेड़े में फंस जाओगे। मगर, सिर पर जब इश्क का भूत सवार हो तो 'मरीज' की समझ में कुछ नहीं आता।

देवांश घर पहुंचा। उस वक्त वहां बबलू और भट्टाचार्य भी थे। भट्टाचार्य राजदान के बचपन का दोस्त भी था और डॉक्टर भी। राजदान को हल्का सा बुखार था। कुछ देर बाद वह दवा के असर से सो गया। भट्टाचार्य और बबलू अपने-अपने घर चले गये। देवांश अपने कमरे में। नींद नहीं आ रही थी उसे। दिमाग में लगातार वह 'प्लान' घूम रहा था जिसके तहत दिव्या के निप्पल पर जहर लगाना था। हालात का जायजा लेने रात के करीब दो बजे चोरों की मानिन्द दबे पांव कमरे से निकला। 'की-होल' के जरिए राजदान के कमरे में झांका और दिव्या को बैड से गायब पाकर हैरान रह गया। राजदान वहां अकेला सोया पड़ा था। देवांश के दिमाग में सवाल कौंधा---रात के इस वक्त, अपने पति को यूं सोता छोड़कर दिव्या आखिर गई कहां है? वह दिव्या को खोजता किचन लॉन में पहुंचा और... ठण्डे पानी केएकझरने के नीचे नहा रही दिव्या को देखा तो उसके होश उड़ गये।

बहके हुए युवा देवांश का जी तो जाने क्या-क्या चाहा परन्तु अपनी भावनाएं खुलकर दिव्या के समक्ष व्यक्त करने की हिम्मत नहीं जुटा सका था। अतः चुपचाप वहां से खिसक लिया। उस घटना के बाद दिव्या के प्रति देवांश का नजरिया पूरी तरह बदल चुका था।

अगले दिन, तब जबकि राजदान ऑफिस जा चुका था। दिव्या शॉपिंग हेतु बाजार गई थी। देवांश उनके कमरे में पहुंचा। उसे दिव्या के उस खास पैन की तलाश थी जो सोने का बना था। जिस पर डायमण्ड्स जड़े थे। लाखों की कीमत का वह पैन दिव्या को राजदान ने भेंट किया था। देवांश और विचित्रा का प्लान था उस खास पैन से 'विषकन्या' नामक किताब की उन पंक्तियों को अण्डरलाइन करना जिनमें हत्या का वह विवरण था जिस तरीके से राजदान की हत्या होनी थी। उनके प्लान के मुताबिक वह किताब हत्या के बाद 'समरपाल' के घर से बरामद होनी थी जिससे यह साबित हो जाता कि समरपाल दिव्या का आशिक है और उन दोनों ने मिलकर किताब में लिखे गये प्लान के मुताबिक राजदान की ईहलीला समाप्त की है। देवांश ने दिव्या का पैन तलाश किया। खास पंक्तियां अण्डरलाइन कीं और किताब को समरपाल के घर में छुपा भी आया। अब बाकी था---जहर दिव्या के निप्पल पर पहुंचाना। वह
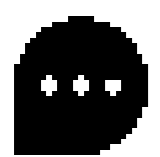
जहर जो उसने एक सपेरे से हासिल किया था।

रात नौ बजे के आसपास दिव्या को नहाने की आदत थी। देवांश दिन ही में बाथरूम की उस खिड़की की चटकनी अंदर की तरफ से गिरा आया जो 'फ्रंट लॉन' की तरफ खुलती थी। अपने प्लान के मुताबिक उसी खिड़की के जरिए वह पौने नौ बजे बाथरूम में दाखिल हुआ तथा ड्रेसिंग में उस अलमारी के अंदर छुपकर खड़ा हो गया, जिसमें राजदान के कपड़े थे। दिव्या ड्रेसिंग में आई। अपनी अलमारी से वे कपड़े निकालकर ड्रेसिंग टेबल के टॉप पर रखे जो स्नान के बाद उसे पहनने थे। उन्हें निकालने के बाद स्नान हेतु वह बाथरूम में चली गई। देवांश छुपे स्थान से निकला। जहर की बूंदें ब्रा की कटोरियों पर ठीक वहां टपकाईं जहां पहनी जाने के बाद

दिव्या के निप्पल को शरण लेनी थी।

तो यह था देवांश और विचित्रा का प्लान।

इस ढंग से जहर पहुंचाया गया दिव्या के निप्पल

पर।

काम इतना आसान था कि बगैर किसी विघ्न–बाधा के करने के बाद वह पुनः अलमारी में आ छुपा। अब बस---उसे करना यह था कि जैसे ही स्नान के बाद दिव्या ड्रेसिंग टेबल के टॉप पर रखे कपड़े पहनकर बाथरूम से बाहर जाये, वह भी जिस खामोशी के साथ खिड़की के जरिए अंदर आया है उसी खामोशी के साथ बाहर चला जाये परन्तु... हमेशा वो होता कहां है जैसा आदमी ने सोचा होता है। जाने कैसे दिव्या को उसकी वहां मौजूदगी का अहसास हो गया और..अहसास ही क्यों---दिव्या ने रंगे हाथ पकड़ ही जो लिया देवांश को। जहां दिव्या उसे वहां देखकर हतप्रभ रह गयी वहीं देवाश के तो मानो होश ही उड़ गये। दिव्या के कदमों में गिर पड़ा वह। रो पड़ा! गिड़गिड़ाया---'गलती हो गई मुझसे। मेरी इस हरकत का जिक्र भैया से मत करना।' दिव्या इस कदर हैरान थी कि काफी देर तो कुछ समझ ही न सकी। होश आया तो उसने गुर्राकर देवांश को

चुपचाप उसी रास्ते से चले जाने के लिए कहा जिससे आया था और ... देवांश यूं भागा जैसे सिंहनी के पंजे से हिरन निकलकर भागा हो। बौखलाया हुआ उस वक्त वह शहर की सुनसान पड़ी सड़कों पर कार दौड़ाये फिर रहा था जब दिमाग ने कहा---'इन हालात में अगर राजदान दिव्या के निप्पल चुसककर मर गया तो दुनिया की कोई ताकत उसे फांसी के फंदे से नहीं बचा सकेगी। कल---जब राजदान की लाश के नजदीक खड़ा ठकरियाल यह घोषणा करेगा, यह हत्या दिव्या के निप्पल पर लगे जहर से हुई है तो दिव्या.... वह दिव्या जो इस वक्त यह समझ रही है कि देवांश ड्रेसिंग में 'नीयत खराब' होने की वजह से था... वह समझ जायेगी कि उसकी वहां मौजूदगी का असल कारण 'नीयत खराब' होना नहीं बल्कि 'यह' था---यह कि उसी ने जहर उसके निप्पल पर पहुंचाया और जब वह यह बयान ठकरियाल को देगी तो ठकरियाल को उसे हथकड़ी पहनाने में एक सेकण्ड नहीं लगेगी।'

बचने का एक ही रास्ता था---यह कि वह किसी भी तरह आज की रात दिव्या और राजदान को 'हम-बिस्तर' होने से रोके। यह सोचकर वह कांप उठा कि वर्तमान हालात में दिव्या की नजरों का सामना कैसे कर सकेगा! परन्तु जान बचानी थी तो सामना तो करना ही था।

सो, घर पहुंचा।

वहां एक ऐसी मुसीबत सामने आई जिसकी वह स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकता था। वह मुसीबत थी---राजदान को उसके और विचित्रा के सम्बन्धों का पता लग जाना। उन सम्बन्धों के बारे में राजदान को देवांश के मोबाइल के बिल से पता लगा था। देवांश के होश उड़ गये और उस वक्त तो उसके पैरों तले से मानो धरती ही खिसक गई जब पता लगा कि वह विचित्रा और उसकी वेश्या मां शांतिबाई के षड्यंत्र का शिकार है। उनका उद्देश्य है---राजदान की दौलत हड़प जाना। देवांश की आंखें तो खुल गईं मगर राजदान का

सम्भावित कत्ल अब भी नंगी तलवार की तरह उसकी गर्दन पर लटक रहा था क्योंकि दिव्या वही कपड़े पहने हुए थी जो उसने स्नान से पूर्व ड्रेसिंग टेबल के टॉप पर रखे थे। वक्षस्थल को उसी ब्रा ने कस रखा था जिसकी कटोरियों में उसने जहर टपकाया था। अतः राजदान से छुपाकर उसने दिव्या से एकान्त में बात करने की इच्छा जाहिर की। वह दिव्या को यह इशारा देकर अपने कमरे में आ गया कि 'भैया' के साथ सोने से पहले उसे उसके कमरे में आना है। और उस वक्त एक नया ही गुल खिला जब दिव्या उसके कमरे में आई। राजदान को नींद की गोली देकर आई थी वह। रात के उस वक्त, दिव्या को अपने इतने नजदीक देखकर देवांश का विचलित होना स्वाभाविक था किन्तु अपने मनोभाव व्यक्त करने की हिम्मत नहीं थी उसमें। उस वक्त तो होश ही फाख्ता हो गये पट्ठे के जब दिव्या दौड़कर उससे आ लिपटी। थर-थर कांप रहा था देवांश। यह वैसी ही स्थिति थी जैसे आप किसी पेड़ पर लटके

पके फल को ललचाई नजरों से देखें और उसी क्षण फल खुद टूटकर आपकी गोद में आ गिरे। सब कुछ हो चुकने के बावजूद देवांश विश्वास नहीं कर पा रहा था जो कुछ उसकी आंखें देख रही हैं वह सच है मगर... जो सच था, वह सच था। पता लगा---राजदान को एड्स है। कनाडा से वह यही बीमारी लेकर आया था। वह उसकी ब्लड रिपोर्ट थी जिसे देखने के बाद उस रात दिव्या के हलक से चीख निकल गई थी। तब से दिव्या निरंतर 'प्यासी' थी। उस प्यासी ने जब देवांश को अपनी तरफ आकर्षित पाया, अपने ड्रेसिंग में देखा तो स्वभाविक रूप से वह उससे आ लिपटी। उस हद तक गिर चुके दिव्या और देवांश को पतन की गर्त में गिरने से भला अब कौन बचा सकता था!

उधर, बुग्गा और कम्मो के मुताबिक उन्हें सुपारी देने वाला नकाबपोश लंगड़ाकर चलता था। समरपाल की चाल में लंगड़ाहट देखकर इंस्पैक्टर ठकरियाल की तवज्जो उस पर गई। वह उससे मिला। बातचीत के बाद इस नतीजे पर पहुंचा कि नकाबपोश और भले ही चाहे जो हो लेकिन समरपाल नहीं है। वह जो भी है, कोई ऐसा शख्स है जो बेगुनाह समरपाल को इस झमेले में फंसाना चाहता है अतः ठकरियाल ने समरपाल से कहा---'तुम्हें किसी की हत्या के इल्जाम में फंसाने की कोशिश की जा रही है। खैरियत चाहते हो तो जैसे ही अपने आस-पास कोई असामान्य बात देखो, बगैर समय गंवाये मुझे सूचित करना।'

वह चौकस रहने लगा। चौंका उस वक्त जब अपने बेडरूम से 'विषकन्या' मिली। तुरन्त थाने पहुंचकर ठकरियाल से मिला। कहा---'यह किताब मेरे बेडरूम में थी जबकि मैंने इसे कभी नहीं खरीदा।' ठकरियाल ने किताब झपटी। उन पंक्तियों
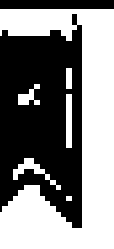
तक भी पहुंच गया जिन्हें अण्डरलाइन किया गया था। तभी उसकी आंखों के समक्ष देवांश और विचित्रा की जुगलबंदी चकरा उठी। वह समझ गया---इन्हीं मां-बेटियों के फेर में फंसा देवांश राजदान और दिव्या की हत्या के मिशन पर काम कर रहा है। कोशिश वही, समरपाल को फंसाने की की जा रही है। किताब बता रही थी---'राजदान की हत्या 'विषकन्या' के उरोज चुसकने से होगी।' ठकरियाल के सम्मुख लगभग सारा किस्सा खुला पड़ा था। केवल यह पता लगाना बाकी था कि 'विषकन्या' कौन बनने वाली थी? यह पता लगाने के लिए वह जा धमका---शांतिबाई के कोठे पर। यह वही रात थी जिस रात दिव्या और देवांश पवित्रता की दीवार तोड़कर पतन के गर्त में गिरे थे। विचित्रा और शांतिबाई ने चालाक बनने की कोशिश की। अपनी तरफ से कुछ नहीं बताया परन्तु ठकरियाल ताड़ गया कि विषकन्या दिव्या को बनना है। सारी बातें समझ में आते ही उसने विचित्रा और शांतिबाई

को गिरफ्तार कर लिया।

सुबह! ठकरियाल राजदान विला पहुंचा। देवांश की तरफ व्यंग्यभरी मुस्कान उछाली। दिव्या के लिए उसकी आंखों में सहानुभूति थी। राजदान से कहा---'मैं एकान्त में आपसे कुछ बातें करना चाहता हूं।' और एकान्त में---उस वक्त राजदान के पैरों तले से धरती खिसक गई जब ठकरियाल ने सुबूतों के साथ साबित कर दिया कि कम्मो और बुग्गा के हाथों मर्सडीज में बम रखवाने वाला नकाबपोश भी देवांश था और धोखे से दिव्या के निप्पल पर जहर पहुंचाकर उसकी हत्या का प्रयास करने वाला भी देवांश है।

ठकरियाल को उम्मीद थी---जब राजदान को यह हकीकत पता लगेगी तो मारे गुस्से के वह पागल हो उठेगा। मगर उस वक्त इंस्पैक्टर को दंग रह जाना पड़ा जब उसकी सभी आशाओं के विपरीत राजदान ने कहा---'देवांश ने जो भी किया या करना चाहता था उसमें उसका नहीं, विचित्रा और

शांतिबाई का कुसूर है। उनका जहर है ही ऐसा कि इंसान के सिर पर चढ़कर बोलता है।

ठकरियाल हैरान रह गया। राजदान जैसा भाई देखना तो दूर, उसकी कल्पनाओं तक से परे था। जब उसने कहा---'आपकी हत्या का प्रयास करने के इल्जाम में देवांश को गिरफ्तार तो करना ही पड़ेगा मुझे।' तब राजदान गिड़गिड़ा उठा। बार-बार कहने लगा---वह ऐसा न करे। देवांश उसकी आरजुओं का आखिरी चिराग है।

ठकरियाल राजदान की तरफ उन नजरों से देखता रह गया जिन नजरों से भक्त लोग भगवान की प्रतिमाओं को देखते हैं। फिर भी, ठकरियाल था तो एक भ्रष्ट पुलिसिया ही। देवांश को बख्शने के उसने पचास लाख मांगे। राजदान तैयार हो गया। साथ ही कहा---'तुम देवांश को कभी इल्म नहीं होने दोगे कि सब कुछ जानने के बाद तुम मुझे बता चुके थे और मैंने उसे बचाने के लिए रकम दी। तब, ठकरियाल ने कहा---विचित्रा और शांतिबाई के जरिए उसे हकीकत पता लग सकती

है। राजदान ने ठकरियाल को पच्चीस लाख और दिये। यह रकम विचित्रा और शांतिबाई को ठिकाने लगाने के लिए दी गई थी और... ठकरियाल जब उन्हें ठिकाने लगाने हेतु समुद्र के बीच में ले गया तो एक बार को, खुद उसी की जान के लाले पड़ गये। हालात ऐसे बने कि वह विचित्रा और शांतिबाई की लाश न देख सका। खुद ही को बड़ी मुश्किल से बचा कर निकल सका। फिर भी, उसे पूरी उम्मीद थी वे दोनों समुद्र में मर-खप गई होंगी।'

राजदान ने बिस्तर पकड़ लिया। छुपाने की लाख चेष्टाओं के बावजूद उसे एड्स होने का राज ठकरियाल और भट्टाचार्य को भी पता लग गया। नहीं मालूम था तो सिर्फ बबलू को। वह दिन-रात राजदान की सेवा में लगा रहता। दूसरी तरफ दिव्या और देवांश एक बार अवैध सम्बन्धों की सड़ांध भरी दलदल में क्या गिरे कि उसी में लथपथ होकर रह गये। राजदान के खर्चीले इलाज में जमा-पूंजी यूं उड़ रही थी जैसे खुले में रखा पैट्रोल उड़ा करता है। व्यापार में मंदा था। सब कुछ चौपट होता जा रहा था। जिन फाइनेंसरर्स ने राजदान एसोसिएट्स में पैसा लगा रखा था, उनका ब्याज तक नहीं पहुंच रहा था इसलिए मूल की मांग करने लगे थे। छः महीने गुजर गये। इन छः महीनों में दिव्या और देवांश इस कदर आर्थिक क्राइसेज का शिकार हो चुके थे कि उनका वश चलता तो जाने कब का राजदान का चल रहा महंगा इलाज बंद करा देते। इस मामले में उनकी नहीं चल रही थी तो केवल भट्टाचार्य के कारण।

उसके रहते वे राजदान का इलाज बंद नहीं करा सकते थे जबकि खुद राजदान नहीं चाहता था उसके इलाज के नाम पर इतना मोटा खर्चा हो। वह खूब समझता था उसके कारण दिव्या और देवांश आर्थिक संकट में फंसे हुए हैं। ऐसा वह नहीं चाहता था। वह तो स्वप्न में भी उन दोनों में से किसी को कष्ट में नहीं देख सकता था। काश वह जानता होता कि दिव्या और देवांश अब वे दिव्या और देवांश नहीं रह गये हैं जो उसके इस 'अंधे प्यार' के हकदार थे। अब तो वे, वे दिव्या और देवांश हैं जो उतनी ही शिद्दत से उसकी मौत की कामना किया करते हैं जितनी शिद्दत से एक बीमार बच्चे की मां ईश्वर से उसके ठीक हो जाने की कामना करती है। नई-नई बीमारियां लग गई थीं राजदान को। ऐसी-ऐसी कि दिव्या-देवांश को लगता, कहीं उनके जर्म्स उनमें भी न समा जायें। उसके नजदीक जाने से बचते ही थे वे। ऐसा महसूस भी कर लिया था राजदान ने। अंदर ही अंदर चोट सी लगी थी उसे। मगर, प्यार तो

वह उनसे बेइंतिहा करता ही था। खुद चाहता था उन्हें उससे कोई बीमारी न लग जाये। दिव्या से खुद ही कहा था उसने---'तुम मेरे पास--- इस कमरे में नहीं बल्कि बगल वाले कमरे में सोया करो।' क्या मालूम था राजदान को कि दिव्या को उसकी मनमांगी मुराद दे रहा है! अकेला बबलू था जो बार-बार खुद राजदान के मना करने के बावजूद न केवल उसके पास आता था बल्कि खूब सेवा भी किया करता था। दोनों के बीच उस लड़की के बारे में भी बातें होतीं जिससे बबलू प्यार करता था। स्वीटी था उसका नाम। राजदान के अनुरोध पर एक बार बबलू उसे मिलाने के लिए लाया भी। सचमुच बड़ी स्वीट थी वह। स्वीटी था उसका नाम। राजदान के अनुरोध पर एक बार बबलू उसे मिलाने के लिए लाया भी। सचमुच बड़ी स्वीट थी वह। जब उसने राजदान के लिए लम्बी उम्र की दुआएं कीं तो राजदान की आंखें भर आईं।

और वे, जिनके लिए राजदान ने अपनी जिन्दगी

गला दी थी---वे दुआ कर रहे थे, वह घड़ी में मरता हो तो चौथाई में मर जाये। उनकी तो अब टेंशन ही राजदान का जिये चला जाना थी। एक रात दिव्या ने देवांश से कहा---'अगर वह तीस अगस्त से पहले नहीं मरा, उसके बाद एक दिन के लिए भी जिया तो हमारे उद्धार का जो एकमात्र रास्ता है वह भी बंद हो जायेगा।' देवांश चौंका। इस बात का मतलब पूछा। तब, दिव्या ने उसे एक बीमा पॉलिसी दिखाई। पांच करोड़ का बीमा था राजदान का। नोमिनी थी दिव्या। तीस अगस्त को प्रीमियम की अगली किस्त ड्यू थी। किश्त इतनी मोटी थी कि अपनी वर्तमान अवस्था में चाहकर भी जमा नहीं करा सकते थे। उस हालत में पॉलिसी लैप्स हो जानी थी अर्थात् यदि राजदान तीस अगस्त के बाद मरा तो फूटी कौड़ी नहीं मिलनी थी एल.आई.सी. से। अतः ज्यों-ज्यों तीस अगस्त नजदीक आता जा रहा था, उनकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। उन्हें लगा---राजदान का जो इलाज चल रहा था उसे फौरन बंद कर देना

चाहिए, ताकि उसके तीस अगस्त से पहले मरने के चांस बढ़ जायें। मगर, वे फैसला नहीं कर पा रहे थे भट्टाचार्य के रहते ऐसा कैसे हो सकता है? उधर राजदान भी अपनी मौत के लिए उतना ही बल्कि उनसे भी कहीं ज्यादा व्याकुल था। एक दिन उसने एकान्त में भट्टाचार्य को पकड़ लिया। कहा---'देख दोस्त, मैं दिव्या और देवांश की वर्तमान आर्थिक हालत के बारे में अच्छी तरह जानता हूं। इलाज बंद कर दे यार मेरा। मरने दे मुझे। एकाध दिन पहले मरूं या बाद में, क्या फर्क पड़ता है मुझ पर! परन्तु मेरी दिव्या और देवांश के भविष्य पर जमीन-आसमान का फर्क पड़ जायेगा।' राजदान की विडम्बना तथा दिव्या और देवांश के प्रति उसका प्यार देखकर भट्टाचार्य फफक-फफक कर रो पड़ा था। एक हद तक राजदान को ठीक ही मानता था वह परन्तु डॉक्टर होने के नाते भला कैसे दवाएं बंद करके उसे मरने के लिए छोड़ सकता था? एक ही बात कही उसने---'किसी को इस तरह मरने के लिए छोड़

देना उसकी हत्या करना होता है और मेरे मर्डर के इल्जाम में फांसी पर नहीं झूलना मुझे।' जब राजदान की भट्टाचार्य पर एक न चली तो सीधे-सीधे दिव्या और देवांश को ही पकड़ा उसने। सब कुछ बताने के बाद कहा---'उम्मीद है, तुम व्यर्थ की भावुकता में बहकर अपने भविष्य पर कुठाराघात नहीं करोगे। भट्टाचार्य दवाएं लिखता भले ही रहे, उसे दिखाने के लिए भले ही तुम उन्हें खरीदते भी रहो मगर मैं खाऊंगा नहीं। इस काम में तुम्हें मेरी मदद करनी होगी, तभी तीस अगस्त से पहले मर सकूंगा जो कि जरूरी है।' सुनकर, बल्लियों उछलने लगे थे दिव्या और देवांश के दिल। मूर्ख खुद वह कह रहा था जो वे चाहते थे। नाराजगी का ड्रामा करते हुए, उन्होंने राजदान की यह डिमांड मान ली मगर होनी को तो पता नहीं क्या मंजूर था! दवाएं बंद होने के बावजूद राजदान के प्राण नहीं निकल रहे थे। तीस अगस्त नजदीक आता चला गया। जाहिर है---दिव्या और देवांश की बेचैनी बढ़ गई। अब चर्चा इस बात

पर होने लगी---वह तीस अगस्त तक नहीं मरा तो क्या होगा? उधर राजदान अपनी मौत को लेकर उनसे कहीं ज्यादा बेचैन था। जब कोई और रास्ता नहीं मिला तो सुसाइड का फैसला कर लिया उसने।

दिव्या और देवांश के नाम एक लेटर लिखा। बहुत ही भावुक लेटर था वह और वही उसका सुसाइड नोट भी था। अपने कमरे के बाहर बॉल्कनी में फांसी लगाकर मरने का प्लान बनाया था उसने। मरने ही वाला था कि.... कि उसने दिव्या और देवांश को एक-दूसरे की बाहों में देख लिया। उफ्फ! पहले तो उस दृश्य को देखकर राजदान को अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ लेकिन सच्चाई को कब तक झुठला सकता है आदमी? जो सच था, वह था। और सच केवल इतना ही नहीं था।... वे उसकी हत्या का प्लान बना रहे थे। राजदान ने अपने कानों से सुना, दिव्या नामक बोतल के नशे में चूर देवांश ने कहा---'अगर उनतीस की रात तक वह खुद नहीं मरा तो हमें करना पड़ेगा यह नामुराद काम। हत्या को आत्महत्या साबित करना हमारे लिए जरा भी मुश्किल नहीं होगा।'

राजदान को तो बस एक ही अफसोस था---उनके

ऐसे 'प्रवचन' सुनकर उसके कानों के पर्दे क्यों नहीं फट गये? क्यों नहीं वह उस नंगे दृश्य को देखने के साथ ही अंधा हो गया? आखिर किन हालात में, आदमी का 'हार्टफेल' होता है? इतना सब कुछ देखने-सुनने के बावजूद कैसे...कैसे ठीक-ठाक धड़क रहा था उसका दिल? क्यों नहीं फट रही थी यह धरती? आसमान आखिर गिर क्यों नहीं रहा था? किसी सवाल का जवाब नहीं था उस पर।

जी चाहा---कूदकर उनके सामने पहुंच जाये। जाने क्या-क्या कहे उन्हें! मगर, फिर लगा... देवांश अभी, यहीं गला दबाकर उसकी ईहलीला समाप्त कर देगा और वह इतना कमजोर हो चुका है कि देवांश की मजबूत पकड़ के बीच एक मिनट से ज्यादा छटपटा तक नहीं सकेगा। अतः देवांश और दिव्या को वहां अपनी मौजूदगी का भान नहीं होने दिया उसने। उन्हें नहीं पता लगने दिया वह क्या देख और जान चुका है।

उसके बाद, दो दिन तक राजदान का व्यवहार बड़ा अजीब और रहस्यमय रहा।

ऐसा, जैसे वह किसी प्लान पर काम कर रहा हो।

जो अपनी बीमारी के कारण पिछले चार महीने से किसी से नहीं मिला था, उसने समरपाल को विला पर बुला लिया। उससे मिला। बंद कमरे में जाने क्या बातें कीं उससे। मारे सस्पैंस के दिव्या का बुरा हाल था। उस वक्त वह उन बातों को जानने के लिए मरी जा रही थी जब विला में एक नया करेक्टर आ धमका। वकीलचंद था उसका नाम। वह नाम ही से नहीं, पेशे से भी वकील था। और बस---यह बात दिव्या के दिमाग को 'भक्क' से उड़ाये हुए थी कि राजदान ने वकील को क्यों बुलाया है जबकि राजदान का कहना था---वकीलचंद मेरे बचपन का दोस्त है, मिलने का मन था उससे। दिव्या का दिलो-दिमाग मानने को तैयार नहीं था कि बात बस इतनी सी है।

रात के वक्त उसने देवांश से राजदान की दिनभर की गतिविधियों का जिक्र किया, परन्तु देवांश ने कहा---'बेवजह की बातें सोचकर अपना दिमाग खराब मत करो। वह जो करेगा हमारे अच्छे के लिए करेगा। हमारे खिलाफ कुछ करना तो दूर, सोच तक नहीं सकता वह।' परन्तु अगले दिन, राजदान को बाहर जाने के लिए तैयार देखकर दिव्या हैरान रह गई। उसके बार-बार पूछने पर भी राजदान ने नहीं बताया कि वह कहां जा रहा था? दिव्या ने साथ चलने के लिए कहा। इसके लिए भी तैयार नहीं हुआ वह। अकेला गया। ड्राइवर के रूप में केवल बन्दूकवाला साथ था। करीब दो घण्टे बाद लौटा। दिव्या ने फिर पूछा कहां गया था। राजदान ने नहीं बताया और उस वक्त तो दिव्या की खोपड़ी बुरी तरह घूमकर रह गई जब उसने इस बारे में बन्दूकवाला से बात की। बन्दूकवाला ने बताया---'मेरे साथ तो ये केवल जुहू बीच तक गये थे। वहां गाड़ी रुकवाई। एक टैक्सी पकड़ी। मुझे वहीं रुककर इन्तजार
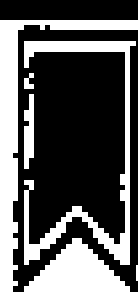
करने के लिए कहा और टैक्सी में बैठकर जाने कहां चले गये? करीब डेढ़ घण्टे बाद दूसरी टैक्सी में लौटे। गाड़ी में बैठे और 'यहां' आ गये।'

बन्दूकवाला का यह बयान दिव्या के ही नहीं, देवांश के दिमाग में भी खलबली मचा देने के लिए काफी था। उस वक्त वह राजदान से उसकी रहस्यमय गतिविधियों के बारे में बात करने के बारे में सोच ही रहा था जब खुद राजदान ही ने उन दोनों को अपने कमरे में बुलवाया। एक लिफाफा दिया। उसमें करीब पचास लाख के शेयर्स थे। राजदान ने कहा---'मेरे बैंक लॉकर में पड़े थे ये। आज ही दिन में निकालकर लाया हूं। कल समरपाल ने बताया था कि रामभाई शाह बार-बार अपनी रकम मांगकर तुझे परेशान कर रहा है। साइन कर दिये हैं मैंने। कल उसके कर्जे से मुक्त हो जाना। तब, देवांश ने दिव्या की तरफ ऐसी नजरों से देखा जैसे कह रहा हो---'देखो, मैं न कहता था---ये शख्स जो भी कर रहा होगा, हमारे फायदे के लिए कर रहा होगा।'

राजदान ने उन्हें एक रिवाल्वर भी दिखाया।

उसका लाइसेंसी रिवाल्वर था वह। कहा---'यह भी बैंक लॉकर में ही रखा था।'

उसके बाद, राजदान ने जितनी बातें कीं उनसे एक ही बात ध्वनित हो रही थी। यह कि---वह उन्हें पांच करोड़ दिलाने के लिए समय रहते आत्महत्या करने वाला है। उसने उन्हें यह आभास भी दिया कि लॉकर से वह इसी इरादे को पूरा करने के लिए रिवॉल्वर निकालकर लाया है। वास्तव में राजदान क्या खिचड़ी पका रहा था, इस बारे में तो वे सोच तक नहीं सकते थे।

शाकाहारी खंजर---

उस खिचड़ी के बारे में उन्हें उनतीस अगस्त की रात को पता लगा। तब जबकि वे दिव्या के कमरे में रंगरलियां मना रहे थे। राजदान ने उन्हें अपने बैडरूम में बुलाया। कम से कम शुरू में राजदान
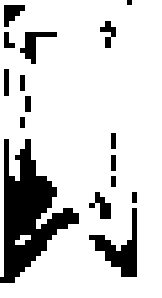
ने बिल्कुल जाहिर नहीं किया उसे उनकी रंगरलियों के बारे में कुछ पता है। उस वक्त वह व्हिस्की पी रहा था। दिव्या और देवांश चौंके क्योंकि राजदान ने पहले कभी व्हिस्की नहीं पी थी। उसने उनसे भी पीने के लिए कहा। उनके लिए दो गिलासों में व्हिस्की डाल भी दी परन्तु उनके द्वारा उसे पीने की नौबत न आ सकी।

बड़ा ही भावुक सीन था वह!

शनैः-शनैः वार्ता आगे बढ़ी! और उस वक्त तो उनके पैरों तले से मानो जैसे जमीन ही सरक गई जब पता लगा---राजदान न केवल उनके बीच स्थापित हो चुके अवैध सम्बन्धों के बारे में जान गया है बल्कि यह भी जान गया है कि वे उसका कत्ल करने के मंसूबे बनाये बैठे हैं। शुरू में भले ही दिव्या और देवांश को झटका लगा हो परन्तु थोड़ा संभलते ही वे पूरी नंगाई पर उतर आये। राजदान की हालत देखकर उन्हें लगा---अगर वे उसके सामने ही आपस में 'संभोग' करें तो

राजदान हार्ट अटैक से मर जायेगा। राजदान को मार डालने की यह तरकीब उन्हें सबसे उत्तम लगी क्योंकि हार्ट फेल हो जाने के कारण हुई उसकी मौत को कोई भी 'कत्ल' साबित नहीं कर सकता था। कत्ल के ख्वाहिशमंद लोगों के लिए भला इससे बेंहतर स्थिति क्या हो सकती थी!
सो---ऐसा ही प्रयास किया उन्होंने। और तब, जब वे इतनी नीचता पर उतर आये कि राजदान को मार डालने की मंशा दिल में संजोये उसी के सामने अश्लील हरकतें करने लगे तो राजदान के धैर्य के सभी बांध टूट गये। रिवाल्वर निकाल लिया उसने। दिव्या और देवांश यह सोचकर कांप उठे कि अब वह उन्हें गोली मार देगा। मगर नहीं... ऐसा नहीं किया राजदान ने। ऐसा कोई प्लान ही नहीं था उसका। उसका प्लान सुनकर दोनों के छक्के छूट गये। उसने कहा---'मैं कल ही रजिस्टर्ड डाक से बीमा कम्पनी को एक लेटर पोस्ट कर चुका हूं। उसमें लिखा है---'अगर मेरा मर्डर हो जाये या मैं स्वाभाविक मौत मर जाऊं तो

पॉलिसी की नोमिनी अर्थात् मेरी पत्नी को पांच करोड़ रुपये दे दिये जायें लेकिन अगर मैं किसी वजह से आत्महत्या कर लूं तो यह रकम किसी को न दी जाये। दिव्या और देवांश अभी ठीक से समझ भी नहीं पाये थे राजदान क्या चाहता है कि उसने आगे कहा---'मैं खुद को गोली मारकर आत्महत्या करने वाला हूं। तुम समझ सकते हो मेरे इस अंत को किसी भी तरह स्वाभाविक मौत साबित नहीं किया जा सकता। मेरी मौत के बाद पांच करोड़ कमाने का तुम्हारे पास केवल एक ही तरीका बचेगा, यह कि मेरी सुसाइड को किसी के द्वारा किया मर्डर साबित करो।' ऐसा ही कुछ कहने के बाद राजदान ने सचमुच रिवाल्वर की साइलेंसर युक्त नाल अपने मुंह में घुसेड़ी और ट्रेगर दबा दिया।'

उसका सिर बीसवीं मंजिल से गिरे तरबूज की तरह फट गया।

चारों तरफ खून ही खून!

चेहरा वीभत्स!

उस वक्त दिव्या और देवांश अपने स्थानों पर खड़े सूखे पत्तों की मानिंद कांप रहे थे और मुश्किल से दो ही मिनट गुजरे थे कि किसी ने बहुत ही धीमे से बाथरूम का दरवाजा खटखटाया। वह कमरे की तरफ से बंद था। इस एहसास ने तो होश ही फाख्ता कर दिये उनके कि वहां कोई है! और... उस वक्त तो पट्ठों के देवता तक कूच कर गये जब बाथरूम के अंदर से किसी ने बहुत ही धीमी आवाज में कहा---'राजदान साहब!'

आवाज पहचानने की उन्होंने बहुत-बहुत कोशिश की मगर नहीं पहचान सके। मारे खौफ के दिव्या के हलक से तो चीख ही निकलने वाली थी। देवांश ने झपटकर उसका मुंह दबोचा! घसीटता हुआ कमरे से बाहर लाया और उसके बाद... वे विला के टैरेस पर पहुंचे। जाना---दरवाजा खटखटाने वाला इंस्पैक्टर ठकरियाल था। यह पता लगते ही न केवल उनके दिमागों में सैकड़ों सवाल

कौंध उठे बल्कि तिरपन भी कांप गये।

उधर, ठकरियाल विला के मुख्यद्वार पर पहुंचा।

बाकायदा कॉलबेल बजाने लगा वह।

मारे खौफ के दिव्या और देवांश का बुरा हाल था। यह बात उनकी समझ में आकर नहीं दे रही थी कि रात के इस वक्त ठकरियाल वहां कर क्या रहा है? क्यों वह चोरों की तरह बाथरूम में पहुंचा? क्यों धीमी आवाज में राजदान को पुकार रहा था और अब क्यों धड़ाधड़ कॉलबेल बजाये चला जा रहा है? जिस अवस्था में लाश थी, उसे उसी अवस्था में ठकरियाल द्वारा देख लिये जाने का मतलब था---यह भेद खुल जाना कि राजदान ने आत्महत्या कर ली और... इस भेद के खुलने का मतलब था---उनका पांच करोड़ से हमेशा के लिए वंचित रह जाना। और...ऐसा वे होने नहीं दे सकते थे। सो, उधर ठकरियाल बार-बार कॉलबेल बजा रहा था इधर, हड़बड़ाये हुए वे घटनास्थल

को ऐसा रूप देने में जुटे थे जिससे राजदान का अंत हत्या लगे। उन्होंने लाश के हाथों से रिवाल्वर गायब किया। लॉकर से जेवर हटाये। राजदान के खून से सने अपने कपड़े चेंज किये। उन सबको दिव्या के कमरे में छुपाया। इतने कम समय में इस सबसे ज्यादा और वे कर भी क्या सकते थे? उस वक्त तक ठकरियाल सात बार कॉलबेल बजा चुका था और आठवीं बार बजाना चाहता था जब देवांश ने दरवाजा खोला। इसी के साथ शुरू हो गये ठकरियाल के चुभते हुए सवाल जब पता लगा---ठकरियाल को ठीक एक बजे बाथरूम के रास्ते से आने के लिए खुद राजदान ने कहा था तो उन्हें पहली बार एहसास हुआ---राजदान ने पूरा प्लान बनाने के बाद आत्महत्या की है क्योंकि उसने ठीक एक बजने में दो मिनट पहले खुद को गोली मारी थी और अब पता लग रहा था---ठकरियाल से उसने ठीक एक बजे आने के लिए कहा था। जाहिर था---राजदान ने यह सब उस वक्त उनकी वही हालत करने के लिए किया

था जो हुई या हो रही थी। उन्होंने ठकरियाल को वहीं से टालने की, राजदान के बैडरूम में न पहुंचने देने की भरपूर कोशिश की मगर ठकरियाल को न टलना था! न टला! उनकी सभी कोशिशों को लांघता वह अंततः बैडरूम में पहुंच गया।

नजर राजदान की लाश पर पड़ी। ठकरियाल का माथा ठनका। दिव्या और देवांश ने ऐसी एक्टिंग शुरू कर दी जैसे अभी-अभी राजदान के 'मर्डर' के बार में पता लगा हो परन्तु ठकरियाल उनके झांसे में आने को तैयार नहीं था। उस वक्त दिव्या और देवांश को अपने सभी इरादों पर पानी फिरता नजर आया जब ठकरियाल ने कहा---'यह मडर नहीं आत्महत्या है। ऐसी आत्महत्या जिसे कोई मर्डर साबित करने का ख्वाहिशमंद है।' बात अगर यहीं तक सीमित रहती तब भी दिव्या और देवांश शायद खुद को नियंत्रित रख सकते थे मगर, जब ठकरियाल ने एक सोफे के पीछे से 'कुछ' उठाकर अपनी जेब में डाल लिया और उनके लाख पूछने के बावजूद नहीं बताया कि उसे वहां से क्या मिला है तो दिव्या और देवांश के सभी हौसले पस्त हो गये। घटनास्थल के बारे में ठकरियाल ने ऐसे-ऐसे सवाल उठाये जिनके उनके पास कोई जवाब नहीं थे। अंत में वह उन्हें कमरे में ही रुके रहने का हुक्म सा देकर बाथरूम में

चला गया। दरवाजा बाथरूम की तरफ से बंद कर लिया। ये वे क्षण थे जब दिव्या और देवांश पूरी तरह टूट चुके थे। उन्हें लगा था---वे किसी हालत में ठकरियाल को धोखा नहीं दे सकेंगे। ऐसी कोशिश की तो लम्बे नप जायेंगे। यही सब सोचकर उन्होंने सरेण्डर करने का फैसला कर लिया। निश्चय कर लिया कि भले ही पांच करोड़ हाथ न लगें, ठकरियाल को बता देंगे राजदान ने असल में आत्महत्या की है। ऐसा फैसला करने के बाद उन्होंने बाथरूम का दरवाजा खटखटाना शुरू किया। ऊंची आवाज में कहा---'किसी इन्वेस्टिगेशन की जरूरत नहीं है इंस्पैक्टर! सारी हकीकत हम खुद ही बताने को तैयार हैं।' मगर...बाथरूम में कोई हो तो उनकी आवाज सुने भी। इस एहसास ने उनका खून जमाकर रख दिया कि ठकरियाल बाथरूम में नहीं है। दिमाग में अनेक सवाल कौंधे---कहां गया ठकरियाल? ऐसा क्यों किया उसने? क्या वे किसी जाल में फंस गये हैं? घबराकर बैडरूम के मुख्यद्वार की तरफ लपके

और.... उस वक्त तो पित्ते ही ढीले हो गये जब उस कमरे को भी बाहर से बंद पाया। अर्थात्... उन्हें घटनास्थल पर राजदान की लाश के साथ बंद कर दिया गया था। मारे खौफ के बुरा हाल हो गया उनका। समझ में नहीं आकर दे रहा था ठकरियाल ने ऐसा किया तो किया क्यों? आखिर किस जाल में फंसाना चाहता है वह उन्हें?

बौखलाहट में फंसा देवांश उस वक्त बैडरूम का मुख्यद्वार तोड़ डालने पर आमादा था जब, अचानक ठकरियाल ने बाहर की तरफ से दरवाजा खोल दिया। मुस्करा रहा था जालिम। भरपूर मजा ले रहा था दिव्या और देवांश की हालत का।

पता लगा, बल्कि खुद ठकरियाल ने बताया---इस बीच वह दिव्या के कमरे में हो आया है। वहां उसने रिवाल्वर और जेवर ही नहीं, राजदान के खून से सने उनके कपड़े भी देख लिये हैं। अगर अब भी दिव्या और देवांश की मंशा वही साबित करने की होती जो वे 'शुरू' में साबित करना चाहते थे तो यकीनन ठकरियाल के इतना सब जान लेने पर उनके होश फाख्ता हो जाते---मगर क्योंकि वे पहले ही ठकरियाल को राजदान की आत्महत्या के बारे में बताने का फैसला कर चुके थे इसलिए ठकरियाल को हकीकत पता लगने पर ज्यादा हलकान नहीं हुए। अब देवांश को अपने और दिव्या के अवैध सम्बन्धों को छुपाये रखकर ठकरियाल को राजदान की आत्महत्या के बारे में बताना था। हालांकि यह काफी कठिन था फिर भी, देवांश ने किया। मगर, जब ठकरियाल ने यह सवाल उठाया कि जो राजदान सारे जीवन उनका और केवल उन्हीं का भला चाहता रहा, वह अंत में उनके पांच करोड़ तक पहुंचने के सभी रास्ते

वंद करके क्यों मरा, तब उनके पास ठकरियाल को संतुष्ट करने वाला कोई जवाब नहीं था। ठकरियाल को संतुष्ट करने की कोशिश में उस वक्त वे आंय-बांय-शांय गा रहे थे जब अचानक कमरे में राजदान के ठहाका लगाने की आवाज गूंजने लगी। हालत बैरंग हो गई दोनों की। काटो तो खून नहीं। कभी सोफे पर लुढ़की पड़ी राजदान की लाश को देख रहे थे, कभी बौखलाये हिरन की तरह दायें-बायें। फिर, उन्हें सम्बोधित करते राजदान की आवाज भी गूंजी वहां। और अंततः पता लगा---वह आवाज उन्हें ठकरियाल सुनवा रहा था। जेब से एक छोटा सा टेपरिकार्डर निकालकर उसने मेज पर रख दिया। दिव्या और देवांश उसे इस तरह देख रहे थे जैसे अचानक उसके सिर पर सींग नजर आने लगे हों! तब, ठकरियाल ने भेद खोला---राजदान ने रात आठ बजे उसे फोन करके कहा था---'रात के ठीक एक बजे तुम्हें लॉन की तरफ खुलने वाली खिड़की के जरिए मेरे बाथरूम में पहुंचना है।' वह पहुंचा।

बाथरूम में उसे पांच लाख रुपये और राजदान का एक लेटर मिला। उस लेटर को ठकरियाल यहां दिव्या और देवांश को भी पढ़ा देता है। उसमें लिखा था---'पांच लाख उस काम की फीस है जिसे तुम्हें मेरे लिए करना है। अगर तुम्हारे खटखटाने और मुझे आवाज देने के बाद भी दरवाजा न खुले तो सीधे विला के मुख्यद्वार पर पहुंच जाना। कॉलबेल बजाकर दरवाजा खुलवाना। दिव्या और देवांश भले ही तुम्हें बाहर ही से टालने की चाहे जितनी कोशिश करें मगर तुम्हें हर हालत में मेरे बैडरूम में पहुंचना है। वहां तुम्हें उस सोफेकेपीछे से कुछ मिलेगा जहां मैं 'विराजमान' होऊंगा।'

पता लगता है---ठकरियाल ने जो भी किया राजदान के लेटर के मुताबिक किया। जब दिव्या और देवांश ने पूछा---'सोफे के पीछे से तुम्हें क्या मिला था तो ठकरियाल ने बताया---यह टेप और एक अन्य लेटर।' उन्होंने पूछा---'उस दूसरे लेटर में क्या लिखा है? जवाब में ठकरियाल ने लेटर

उसने पकड़ा दिया। उसमें सबकुछ साफ साफ लिखा था। यह भी कि दिव्या और देवांश के बीच अवैध संबंध कायम हो चुके हैं। यह भी कि वे उसकी हत्या का प्लान बना रहे हैं और यह भी कि वे किस तरह दिव्या और देवांश को पांच करोड़ के जाल में फंसाकर आत्महत्या करेगा। इस लेटर के जरिए वह ठकरियाल को दो काम सौंप गया था। पहला कदम कदम पर दिव्या और देवांश को आतंकित और हलकान करना, उन्हें सताना और दूसरा अंततः उन्हें जेल में ठूंस देना। पहला काम ठकरियाल अब तक कर ही चुका था। पूरी तरह नंगे हो चुके थे वे ठकरियाल के सामने। न बच निकलने का कोई रास्ता बाकी बचा था, न ही बचकर निकल जाने की कोई आरजू रह गई थी। केवल एक ही तमन्ना थी। वही कहा दिव्या ने 'ठकरियाल, बेशक तुम राजदान के लेटर में लिखे का अक्षरशः पालन करो। जेल में ठूंस दो हमें। मगर... हो सके तो एक कृपा हम पर भी कर दो। यह कि---मेरे और देवांश के संबंधों को

सार्वजनिक मत करो। लोग जब मुझ पर थू-थू करेंगे तो जी नहीं सकूंगी मैं। तब टकरियाल ने पूछा---'तुम लोगों का प्लान क्या था? देवांश ने बता दिया कि वे किस तरह राजदान की हत्या के इल्जाम में बबलू को फंसाना चाहते थे। टकरियाल को प्लान जमा। बोला---'पांच में से ढाई करोड़ मुझे मिलें तो इस प्लान पर अब भी अमल हो सकता है।'

दिव्या और देवांश अवाक् मुद्रा में उसकी तरफ देखते रह गये।

यहां सामने आया---ठकरियाल का असली रूप! दिव्या झूम उठी। देवांश हैरान। उन्होंने पूछा---क्या तुम राजदान के लेटर में लिखे को भूल जाओगे? ठकरियाल का जवाब था---उसके मुझे केवल पांच लाख रुपये मिले हैं। इस रकम में जितना काम हो सकता था उतना उसके लिए कर चुका हूं। अब मेरे सामने ढाई करोड़ कमाने का स्वर्णिम मौका है। कैसे गंवा सकता हूं इसे? दिव्या तो मारे खुशी के मानो पागल हो गई। वह ठकरियाल के साथ मिशन पर आगे काम करने के लिए तैयार थी परन्तु देवांश का विचार ऐसा नहीं था। बोला---'दिव्या, मुझे लगता है---ठीक यही होगा कि हम सबकुछ कुबूल करके जेल चले जायें। जाने क्यों मुझे लग रहा है---अगर हम ठकरियाल के कहने में आये तो बुरी तरह उस झमेले में फंस जायेंगे जिसे फंसाने का जाल राजदान अपने मरने से पहले बुन गया है।' दिव्या ने उसकी एक नहीं सुनी। बल्कि बेवकूफ कहा उसे। बोली---'बेवजह डर रहे हो तुम! राजदान

का जाल ठकरियाल के पलटते ही तार-तार हो चुका है। जिसे राजदान मर्डर केस की इन्वेस्टीगेशन करनी है जब वही हमारा पार्टनर बन गया है तो काहे का डर रह गया?' देवांश ने समझाने की काफी कोशिश की कि वह बीमे की रकम के लालच में न पड़े मगर दिव्या नहीं मानी। अन्ततः देवांश को भी उनका साथ देने पर मजबूर होना पड़ा।' ?

अब सारी बागडोर ठकरियाल के हाथ में थी। उसने राजदान के लेटरपैड के कागज पर बबलू के नाम एक ऐसा लेटर लिखा जिसे बबलू राजदान का लिखा समझे। इस लेटर को रात के उसी वक्त बबलू के कमरे में फैंककर आने का काम देवांश को सौंपा गया। दिल में वह सब न करना चाहकर भी देवांश को करना पड़ा।

बबलू के फ्लैट की खुली खिड़की तक देवांश रेनवाटर पाइप के जरिए पहुंचा। लेटर उसके कमरे में फेंका। उस वक्त वह पाइप पर वापस उतर

रहा था जब बिल्डिंग के टैरेस पर मौजूद किसी शख्स ने उसका फोटो खींच लिया। देवांश की हालत खराब हो गई। जब इस बारे में विला में जाकर ठकरियाल और दिव्या को बताया तो दिमाग तो उनके भी घूम गये मगर ठकरियाल अपने आगे बढ़े कदम वापस खींचने को तैयार नहीं था।

राजदान के नाम से लिखे लैटर के जरिए उसने बबलू को रात के उसी वक्त बाथरूम के जरिए बैडरूम में बुलाया था। बबलू आया। ठकरियाल ने ऐसा इन्तजाम कर रखा था कि बबलू की नजर कमरे में पड़ी राजदान की लाश पर न पड़ सके और वह ठकरियाल को ही राजदान समझे। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा ठकरियाल चाहता था। अर्थात् बबलू उसे राजदान समझता रहा। उसने बबलू को जेवर दिये। उस रिवाल्वर पर बबलू की अंगुलियों के निशान लिये जिससे राजदान का अंत हुआ था। इतना ही नहीं, कमरे में बबलू के फुट स्टैप्स भी ले लिये उसने। यह कहकर बबलू को वापस उसी रास्ते से निकाल दिया जिससे आया

था कि जेवर को वह संभालकर रखे।

सुबह! लाश के इर्द-गिर्द ठकरियाल, दिव्या और देवांश ही नहीं---समरपाल, भागवंती, काका, बन्दूकसिंह, भट्टाचार्य और एस.एस.पी. रणवीर राणा भी मौजूद था। शुरू में राणा को लगा---मामला आत्महत्या का है परन्तु जल्द ही ठकरियाल द्वारा बिछाये गये सुबूतों ने अपना रंग दिखाना शुरू किया। राणा को विश्वास होता चला गया राजदान का खून बबलू ने इस तरीके से किया था कि वह आत्महत्या नजर आये।

सभी लोग बबलू के फ्लैट पर पहुंचे। बबलू के पिता सत्यप्रकाश और मां के तो यह सुनकर होश ही उड़ गये कि वे उनके बबलू को राजदान की हत्या और वहां से लूटे गये जेवर के इल्जाम में गिरफ्तार करने आये हैं मगर, उनकी किसी भी हालत से पुलिस की कार्यवाई तो बहरहाल रुकनी नहीं थी। ठकरियाल ने सुबूत ही ऐसे बिछाये थे कि बबलू को हत्यारा और लुटेरा साबित होना ही था। उस वक्त उसके मां-बाप की आंखें हैरत से फट पड़ीं जब दिव्या के जेवर बबलू के स्कूल बैग से मिले। ठकरियाल की सोचों के मुताबिक उस वक्त बबलू को चीखना चाहिए था, चिल्लाना चाहिए था। कहना चाहिए था कि किस तरह राजदान ने उसे लेटर लिखकर रात में बुलाया था, क्या कहकर ये जेवर उसको दिये थे। परन्तु ... उस वक्त मारे आश्चर्य के खुद ठकरियाल की ही हालत देखने लायक हो गई जब बबलू ने

ऐसा कुछ नहीं कहा। और उस क्षण तो ठकरियाल को अपना दिमाग 'भक्क' से उड़ गया महसूस हुआ जब अपने गुलाबी होठों पर बहुत ही जहरीली और रहस्यमय मुस्कान लिए बबलू ने बहुत आहिस्ता से उसके कान में कहा---'इंस्पैक्टर अंकल, मुझे चाचू का हत्यारा सिद्ध करके आप अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल कर चुके हैं।'

राजदान की लाश पोस्टमार्टम के लिए ले जाई जा चुकी थी। बबलू उसके हत्यारे के रूप में गिरफ्तार हो चुका था। जाहिर है--- दिव्या और देवांश बेहद खुश थे। तभी, डाक से उन्हें एक रजिस्टर्ड लेटर मिला। लेटर अट्ठाइस अगस्त को राजदान द्वारा पोस्ट किया गया था। उसमें लिखा था---'मुझे पूरा विश्वास है, पांच करोड़ के लालच में फंसे तुम बबलू को मेरा हत्यारा साबित करने की कोशिश जरूर करोगे! अगर तुमने ऐसा किया है तो समझ लो---मेरे जाल में पूरी तरह जकड़े जा चुके हो।'

इधर दिव्या और देवांश की हालत बैरंग थी उधर, हवालात में ठकरियाल के होश फाख्ता थे क्योंकि रणवीर राणा के सवालों के जवाब में बहुत ही आसानी से बबलू ने न केवल राजदान का कत्ल करना कुबूल कर लिया बल्कि विस्तारपूर्वक यह भी बताता चला गया कि यह काम उसने क्यों और कैसे किया। स्टोरी सुनाते वक्त उसने बीच-बीच में कई बार ठकरियाल की तरफ व्यंगात्मक मुस्कान उछाली। ठकरियाल का जी चाह रहा था---उस नन्हें शैतान को कच्चा चबा जाये मगर राणा की मौजूदगी के कारण, वह ऐसा नहीं कर सकता था।

बड़ी ही अजीब स्थिति थी।

बबलू को राजदान का हत्यारा साबित करने के लिए खुद

उसी ने पूरा जाल बिछाया था।

इसलिए!

क्योंकि ऐसा होने पर ही बीमे की रकम उन्हें मिलनी थी और वही सब हो रहा था मगर ठकरियाल खुश होने की जगह हल्कान था। कारण एक ही था—बबलू खुद को बेकुसूर क्यों नहीं बता रहा? क्यों वह खुद को राजदान का हत्यारा कह रहा है? भला खुद ही को किसी का हत्यारा सिद्ध करने के पीछे किसका क्या उद्देश्य हो सकता है? लाख सिर खपाने के बावजूद ठकरियाल की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उस वक्त तो उसके दिमाग का फ्यूज भी उड़ गया जब बबलू ने कहा---'चाचू के खून से सने कपड़े इस वक्त भी मेरे बैड के नीचे पड़े हैं।'

ठकरियाल वापस बदलू के घर पहुंचा। सचमुच राजदान के खून से सने बबलू के कपड़े बरामद करते वक्त उसकी खोपड़ी भरतनाट्यम कर रही थी। जब उसने विला में जाकर यह सब दिव्या और देवांश को बताया तो उनकी बुद्धियां भी डिस्को कर उठीं। कुछ वैसी ही हालत उस वक्त ठकरियाल की भी हुई जब उन्होंने उसे राजदान का लेटर पढ़ाया।

तीनों हवालात में पहुंचे। वहां...जहां शैतान टॉर्चर चेयर पर बंधा बैठा था। उस वक्त रणवीर राणा वहां नहीं था। ठकरियाल ने टॉर्चर रूम अंदर से बंद कर लिया। इरादा जमकर बबलू को टॉर्चर करने और उससे यह पूछने का था कि वह बेकुसूर होने के बावजूद खुद को राजदान का हत्यारा साबित करने के लिए क्यों मरा जा रहा है? परन्तु... उस वक्त एक बार फिर उन्हें मात खानी पड़ी जब टार्चर का मौका आने से पहले ही उसने कहा---'मैं वही कर और कह रहा हूं जैसा चाचू ने मुझे समझाया। वे ऐसा क्यों चाहते हैं, यह उन्होंने मुझे नहीं बताया।' उस वक्त एक बार फिर उनकी खोपड़ियां गुरुत्वाकर्षण विहीन पिंडों की मानिन्द अंतरिक्ष में कलाबाजियां खाने लगीं जब बबलू ने बताया---'चाचू जिन्दा हैं।'

उसके कह देने भर से, उनके द्वारा इस बात पर विश्वास कर लेने का सवाल ही नहीं उठता था क्योंकि राजदान ने दिव्या और देवांश की आंखों के सामने खुद को गोली मारी थी परन्तु बबलू द्वारा बताई गई 'डिटेल' ने ठकरियाल के दिमाग में पुनः सभी कलपुर्जों को बुरी तरह झकझोर डाला जिन्हें वह बहुत मजबूत समझता था। बबलू ने बताया---जिस शख्स ने दिव्या और देवांश की आंखों के सामने खुद को गोली मारी है, वह एड्स का मरीज था। बेहद निर्धन। तीन जवान किन्तु कुंवारी बेटियों का पिता।

राजदान द्वारा दस लाख दिये जाने पर वह खुशी-खुशी उसका फेसमास्क लगाकर मरने के लिए तैयार हो गया। बबलू ने यह भी कहा, बल्कि साबित कर दिया कि देवांश जिस वक्त रेन वाटर पाइप पर लटका हुआ था, उस वक्त टैरेस से उसका फोटो खींचने वाला राजदान था। बकौल दिव्या और देवांश---राजदान एक बजने से दो मिनट पहले मर चुका था जबकि बबलू ने साबित कर दिया रात के दो बजकर पचपन मिनट पर राजदान ने अपने मोबाइल से उसके मोबाइल पर बात की है। अपने पास मौजूद मोबाइल बरामद भी करा दिया उसने। यह सब बबलू बगैर टॉर्चर हुए बताता चला गया था। बावजूद इसके, ऐसे ढेर सारे सवाल थे जिनके जवाब दिव्या, देवांश और ठकरियाल चाहते थे जबकि बबलू का कहना था---इन सवालों के जवाब वह बगैर टॉर्चर हुए नहीं देगा। इधर उसने टॉर्चर करने की तैयारी शुरू की, उधर बबलू जोर से ठहाका लगाकर हंस
पड़ा---बोला---'चाचू को मालूम था तुम मुझे टार्चर करने की कोशिश जरूर करोगे मगर तुम ऐसा न कर सको, इसका इंतजाम चाचू पहले ही कर चुके हैं। इससे पहले कि ठकरियाल उसकी इस पेंचदार बात का मतलब समझ पाता, थाने पर वकीलचंद जैन आ टपका। दिव्या को मालूम था---वह राजदान का बचपन का दोस्त भी था और वकील भी था। पता लगा---बबलू ने मानवाधिकार आयोग में पहले ही से 'एप्लीकेशन' लगा रखी थी और आयोग ने वकीलचंद

को इस ड्यूटी पर नियुक्त किया था कि थाने में बबलू के साथ कोई ज्यादती न हो पाये।'

सिर धुन लिया ठकरियाल ने। अपने बाल नोंचने की सी नौबत आ गई उसके सामने। राजदान की पेशबंदी ने उसके दिलो-दिमाग को बांधकर रख दिया। सचमुच वकीलचंद की मौजूदगी के कारण वह बबलू को हाथ तक नहीं लगा सकता था। इसी विषय पर बात करता वह गाड़ी में दिव्या और देवांश के साथ विला की तरफ चला आ रहा था कि उनके पास मौजूद बबलू से बरामद मोबाइल की बैल बज उठी। उस वक्त तो रूह ही फना हो गई तीनों की जब दूसरी तरफ से राजदान को बोलते पाया। ठहाके पर ठहाके लगाता राजदान उनकी अवस्था का मजा लूट रहा था।

उसके बाद राजदान बबलू के घर नजर आया। तब, जब बबलू की फ्रैंड अर्थात् स्वीटी बबलू के मां-बाप को यह समझाने की कोशिश कर रही थी कि उन्हें बबलू के लिए बहुत ज्यादा फिक्रमंद होने की जरूरत नहीं है, पुलिस उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती क्योंकि 'चाचू' जीवित हैं। और बबलू जो भी कुछ कर रहा है, चाचू के कहने पर ही कर रहा है। उसकी पेंचदार बातें उस वक्त बबलू के सीधे-सादे मां-बाप की समझ में बिल्कुल नहीं आ रही थीं, इसीलिए राजदान को खुद सामने आना पड़ा। बबलू के मां-बाप हैरान रह गये। साथ ही, राहत की सांस ली उन्होंने क्योंकि जिसके कत्ल के इल्जाम में उनका बबलू गिरफ्तार था वह उनके सामने जीता-जागता खड़ा था। जब उन्होंने पूछा---ये क्या चक्कर है? 'आपने' बबलू को अपनी हत्या के इल्जाम में क्यों फंसाया?... तो राजदान ने बताया---अगर समय रहते मुझे मेरे कत्ल के ख्वाहिशमंदों की साजिश का पता न लग जाता तो आज वास्तव में बबलू मेरी हत्या के इल्जाम में फंसा होता और सचमुच उसे बचाने वाला कोई न होता क्योंकि उनका प्लान ही मेरी हत्या करके बबलू को फंसाना था मगर अब..वर्तमान हालात में दुनिया की कोई ताकत बबलू का बाल तक बांका नहीं कर सकती, क्योंकि उसकी हिफाजत के लिए वे खुद इस दुनिया में मौजूद हैं। राजदान ने उन्हें यह भी बताया---'बबलू आज ही रात को पुलिस के चंगुल से निकल आयेगा।'

ठकरियाल अपने फ्लैट का दरवाजा खोलकर अंदर दाखिल हुआ ही था कि कमरे में राजदान की आवाज गूंज उठी। वह आवाज वहां पहले से मौजूद एक टेपरिकार्डर से निकल रही थी। आवाज ने बताया---"तुम्हारी मेज की दराज में एक लेटर है। उसे पढ़ो!" ठकरियाल अपने फ्लैट का दरवाजा खोलकर अंदर दाखिल हुआ ही था कि कमरे में राजदान की आवाज गूंज उठी। वह आवाज वहां पहले से मौजूद एक टेपरिकार्डर से निकल रही थी। उस आवाज ने बताया---'तुम्हारी मेज की दराज में एक लेटर है। उसे पढ़ो!' ठकरियाल बाज की तरह मेज की तरफ झपट पड़ा।

उधर! रात के वक्त! तब, जब थाने में ड्यूटी पर मौजूद सभी सिपाही ऊंघ रहे थे---रामोतार नामक हवलदार ने बबलू को फरार करा दिया। जब तक ठकरियाल वहां पहुंचा तब तक बबलू का दूर-दूर तक पता नहीं था। मगर, ठकरियाल ताड़ गया---बबलू को फरार कराने में ड्यूटी पर तैनात किसी पुलिसिए का हाथ है। रामोतार ने खुद को उसके शक के दायरे से बाहर रखने की काफी कोशिश की परन्तु ठकरियाल इतना खुर्राट था कि उसने रामोतार को 'पकड़' ही लिया। पूछा---'क्यों किया तूने ऐसा?' रामोतार ने बताया---इस काम के उसे दो लाख रुपये मिले हैं। उस वक्त तो ठकरियाल की खोपड़ी कत्थक ही कर उठी जब रामोतार ने कहा---'दो लाख उसके घर आकर खुद राजदान ने दिये थे।' ठकरियाल चाहकर भी रामोतार का इसलिए कुछ न बिगाड़ सका क्योंकि रामोतार जानता था---ठकरियाल ने राजदान से पच्चीस लाख लेकर विचित्रा और शांतिबाई को ठिकाने लगाया था। यदि ठकरियाल उसके खिलाफ कोई एक्शन लेता तो वह भी उसकी शिकायत उच्चाधिकारियों से कर सकता था।

उसी रात दिव्या और देवांश को राजदान पहले विला के किचन लॉन में नजर आया, फिर बॉल्कनी में पड़ी उस आराम-कुर्सी पर, जिस पर अक्सर बैठा करता था। गर्ज यह कि कभी यहां, कभी वहां राजदान को देखकर दिव्या और

देवांश की घिग्घी बंध गई। मारे खौफ के उनका बुरा हाल था। भरपूर चेष्टाओं के बावजूद राजदान उनके हाथ नहीं आ रहा था। अंत में उन्होंने उसे बाथरूम की खिड़की से लॉन में कूदते देखा। देवांश ने भी वहां से कूदकर उसका पीछा करने की कोशिश की। वह तो हाथ नहीं आया मगर, लॉन में ठकरियाल जरूर टकरा गया उनसे। पता लगा---थाने से बबलू की फरारी के बाद वह सीधा यहीं आया है। दिव्या और देवांश ने उसे वह सुनाया जो उनके साथ गुजरा था। ठकरियाल ने दिखाया वह लेटर जो उसे अपने कमरे में पड़ी मेज की दराज से मिला था। राजदान की राइटिंग को वे खूब पहचानते थे। यह लेटर उसके द्वारा अट्ठाइस अगस्त को लिखा गया था। याद रहे, राजदान की मृत्यु उनतीस अगस्त की रात को हुई। हैरत की बात यह थी कि उसकी मौत के बाद जो भी कुछ हुआ---दिव्या, देवांश और ठकरियाल ने जो भी कुछ किया, वह सभी इस लेटर में लिखा था कि तुम इस-इस स्पॉट पर ये-ये करोगे और घटनाएं यूं घटेंगी। इस लेटर को पढ़ने के बाद देवांश इस नतीजे पर पहुंचा कि वे खुद कुछ नहीं कर रहे हैं बल्कि जो भी कुछ हो रहा है, उस साजिश के तहत हो रहा है जिसके ताने-बाने राजदान अपनी मौत से पहले ही बुन चुका था। इस स्पॉट तक आते-जाते देवांश बुरी तरह टूट चुका था। वह चाहता था---पुलिस के उच्चाधिकारियों के सामने जाकर अपना गुनाह कुबूल कर ले और जेल में जाकर शांति की सांस ले। परन्तु...ठकरियाल

हार मानने वालों में से नहीं था। उसका कहना था बेशक मरने से पहले राजदान ने ऐसा हैरतअंगेज जाल बुना जिसमें फंसे वे अब तक छटपटा रहे हैं परन्तु जल्दी ही वह इस जाल को काट डालेगा।

जाल को काट डालने के प्रयास में वह सुबह होते ही दिव्या और देवांश के साथ बबलू के फ्लैट पर जा धमका। इरादा बबलू के मां-बाप को गिरफ्तार करके उस पर दवाव बनाने का था परन्तु फ्लैट के दरवाजे पर पड़ा ताला उनका मुंह चिढ़ा रहा था। एक पड़ोसी ने उन्हें एक पैकिट देते हुए कहा---"बबलू के मां-बाप धार्मिक यात्रा पर बद्रीनाथ गये हैं, मुझसे कह गये हैं---आप लोग आयें तो यह पैकिट आपको दे दूं। यह देखकर वे दंग रह गये कि पैकिट सील्ड था। सील पर 28 अगस्त की तारीख थी और थे राजदान के हस्ताक्षर।

हैरान परेशान वे वापस विला पहुंचे। पैकिट खोला। एक केसिट बरामद हुई। कैसिट को उन्होंने टेपरिकार्डर में लगाया। टेप से निकलने वाली राजदान की आवाज जैसे-जैसे उनके कानों पर पड़ती गई, चेहरे पीले पड़ते चले गये। राजदान कह रहा था---'बबलू के फरार होने के बाद तुम उस पर दबाव बनाने के लिए उसके मां-बाप को गिरफ्तार करने के मंसूबे बनाओगे लेकिन कामयाब नहीं हो सकोगे क्योंकि यह बात मैं आज... अर्थात् अपनी मौत से एक दिन पहले ही जानता हूं। कोई ऐसी चाल चलो ठकरियाल... जिसकी कल्पना मैंने अपनी मौत से पहले ही नहीं कर ली थी।' टेप के सदमे से अभी वे उबर भी नहीं पाये थे कि नये सदमे के रूप में सामने आया---अखिलेश।
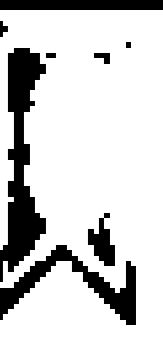
राजदान के बचपन का एक और दोस्त। बहुत ही पतला-दुबला, साढ़े छः फुट लम्बा अखिलेश देखने मात्र से कार्टून सा नजर आता था। मगर वास्तव में वह एक बहुत ही सुलझा हुआ और ब्रिलियेंट प्राइवेट डिटेक्टिव था। दिल्ली में उसके नाम की बड़ी धूम थी। और उस वक्त तो दिव्या, देवांश और ठकरियाल के होश ही फाख्ता हो गये जब अखिलेश ने उन्हें अपनी जेब से राजदान का लेटर निकालकर दिखाया। वह भी अट्ठाइस अगस्त का ही लिखा हुआ था। लिखा था---'अखिलेश, यह लेटर तुझे तीस अगस्त को मिलेगा जबकि कुछ लोगों द्वारा मुझे उनतीस अगस्त की रात को ही कत्ल किया जा चुका होगा। तेरा काम होगा मेरे कातिलों को पहचानना, उन्हें पकड़ना और अंततः फांसी के तख्ते पर पहुंचाना।' लेटर को पढ़कर दिव्या, देवांश और ठकरियाल के तिरपन कांप गये। बड़ी ही अजीब बात थी---मकतूल ने खुद मरने से पहले अपने कत्ल की इन्वेस्टीगेशन के लिए जासूस नियुक्त कर दिया था। उस वक्त अखिलेश के टेढ़े-मेढ़े सवाल उनके छक्के छुड़ाये हुए थे जब राजदान की लाश पोस्टमार्टम के बाद विला पर पहुंची।

राजदान के अंतिम संस्कार की तैयारियां चल रही थीं। जहां उसकी डैडबाडी को नहलाया जा रहा था वहां दिव्या और देवांश के अलावा ठकरियाल भी था। भरपूर कोशिश के बावजूद उन्हें लाश के वीभत्स चेहरे से प्लास्टिक का कोई 'रेशा' तक नहीं मिला। वे अंतिम रूप से इस निष्कर्ष पर

पहुंच गये---मरने वाला राजदान ही था, उसके मेकअप में कोई और नहीं, जैसा कि बबलू ने अपने बयान से साबित करने की कोशिश की थी। अब वे समझ गये---बबलू के मां-बाप के सामने आने वाला, रामोतार को दो लाख देने वाला, और दिव्या और देवांश को कभी कहीं, कभी कहीं नजर आने वाला राजदान नहीं, बल्कि उसका 'क्लोन' था। कोई ऐसा शख्स जो खुद को राजदान साबित करके उन्हें डराने और उलझाने की कोशिश कर रहा था। अब उनके सामने लक्ष्य था---उस शख्स तक पहुंचना।

अंतिम यात्रा के दरम्यान ठकरियाल ने महसूस किया---अखिलेश की नजर बराबर उसी पर है। यहां ठकरियाल के लिए मुसीबत बना रामोतार। वह बार-बार ठकरियाल से पूछ रहा था---'साब, ये चक्कर क्या है? अगर हम राजदान की लाश को फूंकने के लिए श्मशान की तरफ ले जा रहे हैं तो मेरे घर आकर दो लाख रुपये कौन पकड़ा गया मुझे? ठकरियाल कसमसा रहा था, दांत पीस रहा था बार-बार। यह चिंता उसके होश फाख्ता किये हुए थी कि बेवकूफ रामोतार के शब्द अखिलेश के कानों में पड़ गये तो क्या होगा।

श्मशान में, उस वक्त तो ठकरियाल के कदमों तले से मानो जमीन ही सरक गई जब राजदान की चिता को देवांश द्वारा अग्नि दी जा चुकी थी, उसने देखा---अखिलेश रणवीर राणा के साथ न केवल घुट-घुट कर बातें कर रहा था बल्कि उन्हें राजदान का लेटर भी दिखा रहा था। ठकरियाल लपककर उनके नजदीक पहुंचा। पता लगा---रणवीर राणा अखिलेश को न केवल पहले से जानते थे बल्कि उसके दिमाग का लोहा भी मानते थे। अखिलेश के नाम राजदान द्वारा मृत्यु-पूर्व लिखे गये लेटर को पढ़कर रणवीर राणा भी हैरान थे। जब उन्होंने ठकरियाल से कहा---'इंस्पैक्टर, कितने आश्चर्य की बात है! राजदान ने मरने से पहले ही मिस्टर अखिलेश को अपने कत्ल की इन्वेस्टीगेशन हेतु नियुक्त कर
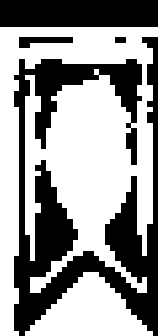
दिया था।' तो ठकरियाल ने कहा---'सर, इनके करने के लिए अब रह ही क्या गया है? केस खुल चुका है। कातिल बबलू है। अपना गुनाह आपके सामने खुद कुबूल कर चुका है वह।' तब... अखिलेश ने दावा किया---'बबलू कातिल नहीं बल्कि कातिलों के षड्यंत्र का शिकार है।' वह साबित कर देता है---कातिलों द्वारा घटनास्थल से दो गिलास गायब कर दिये गये हैं। सवाल उठाता है---क्यों? उधर, चिता में जल रहे राजदान की हड्डियां चटकती हैं इधर, ठकरियाल को लगता है---उसके दिमाग की नसें चटक रही हैं। अपनी सारी 'पेशबंदी' जर्रा-जर्रा होकर बिखरती नजर आ रही थी उसे।

और बस! 'शाकाहारी खंजर' में आपने यहीं तक का कथानक पढ़ा था। इस सबके बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें 'कातिल हो तो ऐसा' और 'शाकाहारी खंजर'।' आगे का सम्पूर्ण कथानक अपने 'उदर' में छुपाये पेश है---'मदारी'।

"अब भी मान जाओ दिव्या। अब भी मान जाओ मेरी बात।" कसमसाता सा देवांश कहता चला जा रहा था---"छोड़ो बीमा कम्पनी से मिलने वाली रकम का लालच और ठकरियाल का फेर! आखिर वही हो रहा है जिसका मुझे डर था। सीधे-साधे राजदान के हत्यारे साबित होने वाले हैं हम। इससे बेहतर है, वह जुर्म कुबूल कर लें जो किया है। अखिलेश के पास चलो। वह हमें बता ही गया है कि सेन्टूर होटल के सुईट नम्बर छः सौ बारह में ठहरा है। उसके पास नहीं तो सीधे एस.एस.पी. के पास चलो। राणा को ही बता दो सबकुछ।"

"तुम समझ क्यों नहीं रहे देव! सचमुच अब हमें कुछ भी स्वीकार करने से कोई फायदा नहीं है।"

"कुछ और फायदा हो न हो मगर एक फायदा जरूर है। भले ही जेल में रहें मगर सुकून से रहेंगे।"

"मतलब?"

"गौर करो---जब से वह मरा है, तब से क्या चैन की एक भी सांस ले सके हैं?" देवांश उसे कन्विंस करने की भरपूर कोशिश कर रहा था---"इधर उसने आत्महत्या की उधर बाथरूम का दरवाजा खटखटाया जाने लगा। हमारी ऊपर की सांस ऊपर, नीचे की नीचे रह गयी। भाग-दौड़ मचाई। पता

लगा... वह ठकरियाल था। तब से शुरू होकर यहां तक पहुंचे रुके सिलसिले पर गौर तो करो तुम। आज तीसरी रात है। न सोना मिला है न खाना। एक क्षण... एक

क्षण भी तो ऐसा नहीं आया जिसे अपना कहा जा सके। कानून की शरण में जाकर कम से कम चैन से मरना तो मिल जायेगा हमें।"

"मैं जेल से नहीं डरती देव। उस मंजर से डरती हूं जब लोगों को मेरे और तुम्हारे सम्बन्धों के बारे में पता लगेगा। और.. हमने ऐसा किया तो ठकरियाल कह चुका है यह भेद वह सब पर खोल देगा।"

"मैं कहता हूं खोल दे। यह स्थिति भी हमारी आज की स्थिति से बेहतर होगी।"

"नहीं देव। मैं लोगों को अपने ऊपर थूकते नहीं देख सकती।"

"उफ्फ!... मरने भी तो नहीं दे रहा हमें वह मरा हुआ शैतान!" दांत किटकिटाकर देवांश कहता चला गया "अच्छे भले हम उसी वक्त अपना जुर्म कुबूल कर रहे थे। वो साला ठकरियाल पाला बदल बैठा। तुम उसके चक्कर में आ गईं और..

"प्लीज! प्लीज देव! धीरे बोलो। वह टकरियाल आता होगा। उसने सुन लिया तो..

"तुम डरती होगी उस कमीने से। मैं नहीं डरता।" देवांश बुरी तरह उत्तेजित था---"बड़ा समझदार बनता था खुद को। पुराना खिलाड़ी बताता था इस किस्म के खेलों का। उसने हर बार दावा किया कि अब... अब वह राजदान की सारी साजिश को समझ गया। मगर अगले ही पल, हर बार मुंह की खाई। अरे, उससे बेहतर तो मेरी ही समझ में आ रहा है राजदान का जाल। कोई ज्यादा दिमाग भिड़ाने की जरूरत भी नहीं है उसे समझने के लिए। खुद उसी के अंतिम शब्दों पर गौर कर लिया जाये तो सब कुछ क्लियर है। वह न हमारी मौत चाहता था न वह जिन्दगी जिसे हम जी सकें। देखो---वही हालत बना दी है उसने हमारी। उसके पास मेरा फोटो है। वह चाहे तो उसे 'रिलीज' करके एक सेकण्ड में हमें जेल पहुंचा दे। वह एकमात्र फोटो यह साबित करने के लिए काफी होगा कि बबलू को हमने फंसाया। मगर वह उसे 'रिलीज' नहीं करता। उल्टा बबलू से जुर्म कुबूल कराता है। उसे जेल से फरार करा लेता है। किचन लॉन और बाथरूम में हमें डराने की कोशिश करता है। अखिलेश को भेज देता है। उसके लेटर में हमारे नाम साफ-साफ लिख सकता था मगर नहीं लिखता। क्यों?... जवाब साफ है दिव्या, वह एक ही झटके में खेल खत्म नहीं कर देना चाहता। वह हमें आतंक के साये में जीने पर मजबूर करना चाहता है।

अखिलेश को नंगी तलवार बनाकर हमारी गर्दन पर टांग देता है। मगर गर्दन पर गिरने नहीं देता उसे। यही सब तो कहा था उसने---यह कि न वह हमें मरने देगा न जीने देगा। उसके इस चक्रव्यूह से निकलने का एक और सिर्फ एक ही रास्ता है। वही, जिसका फैसला हम तब कर चुके थे जब ठकरियाल को बाथरूम में समझ रहे थे।"

दिव्या ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला था कि कॉलबेल बज उठी।

दोनों को झटका सा लगा।

दिव्या के मुंह से निकला---"ठकरियाल आ गया।"

"आने दो। .... अब मैं उसके किसी फेर में नहीं पड़ूंगा। करके ही रहूंगा फैसला।"

"नहीं देव। उससे यह बात मत कहना। वह पहले ही चेतावनी दे चुका है कि...

"मुझे किसी चेतावनी की परवाह नहीं है और फिर, वे हालात दूसरे थे। जब से अखिलेश आया है तब से तो खुद उसी की फूंक सरकी हुई है अंतिम संस्कार के बाद जब सब लोग चले गये थे, तब देखा नहीं था उसे? श्मशान में अखिलेश ने जो किया और कहा उसे बताते वक्त खुद उसी

की सिट्टी-पिट्टी गुम थी। उसकी हर बात का मतलब एक ही था। यह कि अखिलेश बहुत जल्द हमें राजदान का हत्यारा साबित करने वाला है।"

कालबेल एक बार फिर बजी।

"धीरे बोलो देव।" दिव्या फुसफुसाई---"वह बाहर ही खड़ा है।"

इस बार देवांश बगैर कुछ कहे विला के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ा।

इस वक्त वे लम्बी चौड़ी लॉबी में थे।

केवल एक बल्ब ऑन था।

सभी पर्दे खिड़कियों पर खिंचे हुए थे ताकि बाहर से पता न लग सके अंदर की लाइटें ऑन हैं।

देवांश ने एक झटके से दरवाजा खोल दिया।

और।

यूं खड़ा रह गया अपने स्थान पर जैसे पत्थर की मूर्ति में बदल गया हो।

जैसे समझ न पा रहा हो उसकी आंखें आखिर देख तो देख क्या रही हैं?

वैसी हालत हो गयी थी जैसे अचानक किसी मोड़ पर मुड़ते ही खुद को बब्बर शेर के सामने पाकर हिरन की हो जाती है। न हिल सका, न डुल सका। पलकें तक न झपक सकीं। पल भर में आंखें मानो कांच की बेजान गोलियों में बदल गयी थीं।

हिप्नोटाइज सा हो गया वह।

"क्या हुआ देव?" दिव्या ने पूछा।

तब कहीं जाकर देवांश के हलक से चीख निकली।

कुछ इस तरह पलटकर दरवाजे से सीधा लॉबी के फर्श पर आ गिरा जैसे किसी शक्तिशाली स्प्रिंग ने रबर के बबुए पर उछाल दिया हो।

उसी क्षण, दिव्या के हलक से भी चीख निकली।

दरअसल उसकी नजर भी दरवाजे पर खड़े शख्स पर पड़ चुकी थी।

चीखने के साथ घबराकर दिव्या ने गैलरी की तरफ भागना

चाहा।

"खबरदार!" लॉबी में राजदान की गुर्राहट गूंजी---"एक कदम भी बढ़ाया तो ढेर कर दूंगा।"

दिव्या जहां की तहां जाम हो गई।

जैसे वह लोहे में और फर्श चुम्बक में तब्दील हो गया हो।

हाथ में रिवाल्वर लिए वह लाबी में दाखिल हुआ।

वह।

जो वही था, जो सत्यप्रकाश, सुजाता और स्वीटी से मिला था।

देवांश उसकी तरफ यूं देख रहा था जैसे लोग मिस्र के पिरामिडों को देखते हैं।

फटी-फटी आंखों से उसे देखता वह 'स्लो मोशन' में खड़ा हो गया।

दिव्या की हालत उससे भी ज्यादा खराब थी। पीले चेहरे के साथ वह जूड़ी के मरीज की मानिन्द कांप रही थी। लाख कोशिशों के बावजूद दोनों में से किसी के मुंह से आवाज न

निकल सकी।

कुछ और आगे बढ़ते राजदान ने क्रूर मुस्कान के साथ कहा---"मैंने ढेर कर देने के लिए कहा और तुम जाम हो गई। यानी मरना नहीं चाहतीं। अब भी मरना नहीं चाहतीं तुम। ठीक भी है। इंसान भले ही चाहे जिन हालातों में हो। भले ही जिन्दगी से इतना आजिज आ चुका हो कि भगवान से बार-बार मौत मांग रहा हो लेकिन मौत जब झपटती है---मौत को जब आदमी अपनी तरफ लपकते देखता है तो छटपटाता ही है उससे बचने के लिए। बहुत ही कष्टप्रद काम है मरना। मैं खुद भुक्तभोगी हूं। न होता तो इस वक्त तुम्हारे सामने न खड़ा होता। मरने की कितनी ख्वाहिश थी मेरी! कितनी शिद्दत से चाहता था अपनी मौत लेकिन जब वक्त आया तो पलायन कर गया। नहीं जुटा सका खुद में मरने का साहस। मुझसे ज्यादा जिगरवाला तो वही निकला। वह, जो अपनी बेटियों की खातिर हंसते-हंसते तुम्हारी आंखों के सामने मर गया।"

"झूठ बोल रहे हो तुम! बकवास कर रहे हो!" खुद को काफी हद तक संभाल चुका देवांश चिल्ला उठा---"डराने की कोशिश कर रहे हो हमें। मगर....मगर हम तुम्हारे इस फेसमास्क से डरने वाले नहीं हैं। अच्छी तरह जानते हैं तुम वो नहीं हो सकते।"

राजदान के होठों पर मौजूद मुस्कान कुछ और गहरी, कुछ और जहरीली हो उठी। बोला---"आओ! नजदीक आओ मेरे। और चैक करो। मेरे चेहरे पर मास्क है तो उतार फेंको उसे।"

देवांश ने उसे गौर से देखा---वह, वही नजर आ रहा था।

हड्डियों का पंजर। जैसे कंकाल पर असंख्य झुर्रियों वाली खाल चढ़ा दी गई हो।

चुड़चुड़ी, गिलगिली खाल।

आंखें गड्ढों में धंसकर कांच की गोलियों की तरह गोल नजर आने लगी थीं। काले धब्बे पड़ गये थे उनके चारों तरफ। जिस्म पर वही गाऊन था। वही, जिस पर स्केल की चौड़ाई जितनी काली-सफेद लम्बी-लम्बी धारियां थीं। उसका पसन्दीदा गाऊन।

वही जिसे पहनकर वह मरा था।

कमजोर हाथ में एक रिवाल्वर था। वैसा ही रिवाल्वर जैसे से उसने आत्महत्या की थी। साइलेंसर भी लगा हुआ था उस पर। हाथ भले ही कांप रहा हो उसका मगर, नाल पर चढ़े साइलेंसर का भाड़ सा मुंह बराबर उन्हीं को घूर रहा था।
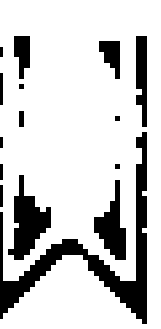
देवांश तो देवांश, भला कौन हो सकता था इतना दिलेर जो रिवॉल्वर की मौजूदगी में उसकी तरफ बढ़ सकता। हिम्मत करके देवांश ने कहा---"तुम्हारा फेस चैक करने की हमें कोई जरूरत नहीं है। लाश का फेस चैक कर चुके हैं। हम भी और ठकरियाल भी। प्लास्टिक का कोई रेशा नहीं था उस पर।"

राजदान की मुस्कान उस बुजुर्ग की सी मुस्कान में बदल गई जो बच्चे की बचकानी बात पर मुस्कराया हो। बोला---"यूं तो तुम दो ही मूर्ख काफी थे। तीसरा ठकरियाल आ मिला तुमसे। वह, जिसे अपने बारे में इस दुनिया का सबसे चालाक शख्स होने का वहम था। वह इतना तक नहीं सोच सका---मैं जानता था, बबलू के बयान के बाद वह लाश के चेहरे से प्लास्टिक के रेशे ढूंढने की कोशिश करेगा। लाश उस वक्त मोर्चरी में थी। तुम तक पहुंचने से पहले भला मेरे लिए उन रेशों को चुन-चुनकर अलग कर देना क्या मुश्किल था!"

अवाक् रह गया देवांश। कुछ बोलते न बन पड़ा।

"य-ये हमें धोखा देने की कोशिश कर रहा है देवांश।" बुरी तरह भयभीत दिव्या देख राजदान की तरफ रही थी, कह देवांश से रही थी---"उतनी जान ही कहां थी उसमें जो उतने ऊंचे पत्थर पर चढ़कर झरने के नीचे नहा सकता।

बाथरूम की खिड़की से कूदकर तुमने तेज...

"हा...हा...हा...हा...।"

ठहाका लगा उठा राजदान।

दिव्या का वाक्य अधूरा रह गया।

ठहाका ऐसा था जो दिव्या और देवांश के जिस्मों में झुरझुरी बनकर दौड़ गया।

और फिर।

हंसते ही हंसते खांसी उठी राजदान को।

एक बार उठी तो फिर उठती ही चली गई।

उठी उसी तरह जैसे उनतीस तारीख को रात से पहले उठा करती थी।

उनतीस तारीख की रात।

उस रात खांसी क्यों नहीं उठी थी उसे?

यह सवाल दिव्या और देवांश के दिमाग में एक साथ कौंधा। उन्हें अच्छी तरह याद है---वह व्हिस्की पी रहा था। सिगार
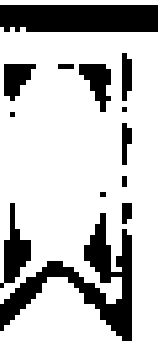
पी रहा था।

कमरा भरा पड़ा था सिगार के धुवें से।

इसके बावजूद उसे एक बार भी खांसी नहीं उठी थी।

क्यों?

क्या सचमुच वह राजदान नहीं था?

क्या ये है राजदान?

ये---जो इस वक्त भरपूर कोशिश के बावजूद अपनी खांसी को नहीं रोक पा रहा है?

खांसते-खांसते दुहेरा सा हुआ जा रहा था वह।

रिवॉल्वर वाला हाथ भी जहां का तहां था।

देवांश के दिमाग में ख्याल आया---मौका ठीक है।

वह चाहे जो हो---

राजदान या कोई और।

इस वक्त आसानी से दबोचा जा सकता है।

और।

जम्प लगा ही जो दी उसने।

परन्तु।

लड़खड़ाता सा राजदान ठीक उसी क्षण अपने स्थान से हट गया था।

देवांश झोंक में फर्श पर जा गिरा।

पुनः उठकर झपटने की कोशिश कर ही रहा था कि संभलने की कोशिश में लड़खड़ाते राजदान ने अपना रिवाल्वर वाला हाथ उसकी तरफ तानते हुए खांसी के बीच कहा---"खबरदार! खबरदार छोटे! मुझे वह करने पर मजबूर मत कर जो मैं आज भी करना नहीं चाहता।"

देवांश को ठिठककर रुक जाना पड़ा।

सचमुच अब राजदान पर झपटने का मौका नहीं रहा था।

वह खुद को संभाल चुका था।

खांसी भी नियंत्रण में आ चुकी थी।

कोई शक नहीं इसमें कि इस वक्त वह उन्हें राजदान ही लगा था। वह, जिसने नियंत्रित होते ही कहा---"पत्थर पर चढ़कर झरने के नीचे नहाने और बाथरूम की खिड़की से कूदकर भागने वाला मैं नहीं था।"

"फिर वह कौन था?"

"भट्टाचार्य।"

"भ-भट्टाचार्य?" दोनों के हलक से चीख सी निकल गई।

"हां।" राजदान की मुस्कान में पुनः जहर आ घुला---"वही भट्टाचार्य जिसे तुम्हारे ठकरियाल ने पोंगा पंडित समझकर इन्वेस्टिगेशन के टाइम इसलिए बुलाया था ताकि रणवीर राणा से तुम्हारी तारीफ कर सके। उसे बता सके तुम दोनों मुझे एड्स से बचाने के लिए किस कद्र मरे जा रहे थे। ताकि तुम किसी के भी शक के दायरे से कोसों दूर रहो। तुम्हारी सारी हरामजदगियों से वाकिफ होने के बावजूद उसने वही कहा जो मैंने समझाया और मैंने वही समझाया जो तुम चाहते थे। भला कैसे न करता मैं वैसा? मैंने तो हमेशा वही किया है जो तुमने चाहा।"

दोनों की जुबान तालू से चिपकी थी।

राजदान कहता चला गया---"भट्टाचार्य यार है मेरा। जैसे

ही तुम्हारे काले चेहरों का पता लगा, सुबह होते ही मैंने सबकुछ बता दिया। यह भी कि तुम मुझे कोई दवा नहीं दे रहे थे। मगर यह सब पुलिस को न बताने की सख्ती से हिदायत दी। उसने कारण पूछा। और तब---मैंने उसे अपने प्लान में शामिल किया। वैसे भी उसके बगैर मेरा प्लान परवान नहीं चढ़ सकता था।"

"म-मगर... तुम्हारा प्लान आखिर था क्या?"

"अब भी नहीं समझे। इसका मतलब पूरे गधे हो। अव्वल दर्जे के बेवकूफ हो तुम।"

अपने-अपने स्थान पर खड़े दोनों थरथर कांपते रहे।

"मैं जिंदा हूं। सामने खड़ा हूं तुम्हारे मगर अपनी हत्या के इल्जाम में तुम्हें फांसी करा दूंगा। यही सजा है तुम्हारी।"

"कैसे---कैसे हो सकता है ऐसा?"

"क्यों नहीं हो सकता?" वह हंसा।

"हमारे पास तुम्हारे हाथ के लिखे ऐसे अनेक लेटर हैं जिनमें तुमने खुद आत्महत्या..

"हा...हा...हा...हा...।"

एक बार फिर ठहाका लगाकर राजदान ने देवांश के शब्दों का गला घोंट दिया। हंसता ही चला गया वह। दिल खोलकर हंसने के बाद बोला---"कहां हैं? कहां हैं वे लेटर?"

"य-ये रहे।" देवांश ने अपनी जेब से लेटर निकालकर उसे दिखाये।

हंसते हुए राजदान ने कहा---"इन्हें खोलकर तो देख छोटे! मेरे मुन्ना, कहीं ऐसा तो नहीं कि तू किसी भ्रम में जी

रहा हो।"

"क-क्या मतलब?" देवांश हड़बड़ा गया।

"खोल... खोल तो सही!"

बौखलाये हुए देवांश नेएकलेटर की तहें खोलीं और..देखता रह गया उसे।

आंखें विस्फारित अंदाज में फैली की फैली रह गईं।

दिव्या ने भी कागज को देखा।

वह बिल्कुल कोरा था।

राजदान के लेटर पैड का एक कोरा कागज।
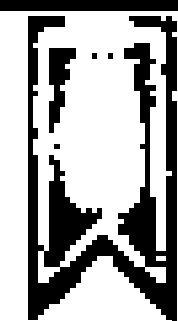
"हे भगवान!" दिव्या के हलक से चीख सी निकल गई---"अक्षर कहां गये?"

"गायब हो गये।" राजदान ने उसकी अवस्था का पूरा मजा लिया---"बंगाल के काले जादू से।"

बौखलाये हुए देवांश ने दूसरे लेटर की तहें खोलीं।

वह भी खाली था।

"कोई फायदा नहीं छोटे। कोई फायदा नहीं। जिस लेटर को ठकरियाल संभाले घूम रहा है उसका भी यह हाल हो चुका होगा। लेटर्स का ही क्यों---ऑडियो केसिट्स भी साफ हो चुकी होंगी। और... यह सब कोई जादू नहीं है। बाजार में खुलेआम ऐसी इंक भी मिलती है और कैसिट्स भी जो एक टाइम के बाद 'साफ' हो जाती हैं। वह टाइम गुजर चुका है।"

दिव्या और देवांश को काटा तो खून नहीं।

"अब तुम्हारे या ठकरियाल के पास ऐसा कोई सुबूत नहीं है जिससे मेरे अंत को आत्महत्या साबित कर सको। खुद तुम्हीं ने तो रंग दिया था आत्महत्या को हत्या का। अब भुगतो। तुम्हें ऐसे जुर्म की सजा मिलेगी जो तुमने किया ही नहीं, जो असल में हुआ ही नहीं।"

"रामोतार सारी दुनिया को बतायेगा तुम जिन्दा हो।"

"वह साला ठकरियाल का चमचा! कौन विश्वास करेगा उसकी बकवास पर? कानून तो बहुत दूर की चीज है, आम आदमी तक यही सोचेगा---ठकरियाल को बचाने के लिए, उसके कहने पर बकवास कर रहा है वह।"

देवांश और दिव्या हतप्रभ रह गये।

जाहिर था---राजदान पहले ही सब कुछ सोच चुका था।

बचाव का जब कोई रास्ता नजर नहीं आया देवांश को तो कह उठा---"भ-भैया! म-मुझे माफ कर दो। म-मैं भटक गया था और भटकाने वाली थी विचित्रा। जिस उम्र में उसने मुझे अपने जिस्म का स्वाद चखाया, आप समझ सकते हैं---उस उम्र में कोई भी भटक सकता था। उसके बाद दिव्या..दिव्या ने खुद को मेरी गोद में गिरा दिया। मैं क्या करता भैया? मैं क्या करता? जवानी के जोश में एक बार भटका तो फिर भटकता ही चला गया। यहां तक कि आपके मर्डर तक का प्लान बना बैठा। मगर, आपने हमेशा मुझे माफ किया है। एक बार... सिर्फ एक बार और माफ कर दो। आखिरी बार। मैंने चाहे जितना नीच काम किया हो मगर आप..आप तो देवता हैं।"
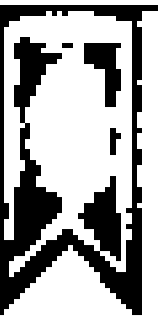
राजदान के होंठ फड़फड़ाये। जैसे भावुक हो रहा हो।

मगर अगले ही पल, उन्हें सख्ती से भींच लिया उसने। गुर्राया---"बहुत खूब छोटे! बहुत खूब! बच निकलने के जब सारे रास्ते बंद हो गये तो अच्छा पैंतरा बदल रहा है तू।"

देवांश ने उसके फड़फड़ाते होठों को देख लिया था।

उम्मीद की बहुत ही जबरदस्त किरन नजर आई थी उसे।

लगा था---वह अब भी उस शख्स को अपने प्रति भावुक कर सकता है जिसने सचमुच उसे सारे जीवन बेइंतिहा प्यार किया था। जिसके जीवन का मकसद ही सिर्फ और सिर्फ उसे प्यार करना था।

एक झटके से दोनों घुटने टेककर फर्श पर बैठ गया देवांश। हाथ जोड़कर दीन-हीन स्वर में बोला---"नहीं भैया। कोई पैंतरा नहीं है ये। बहुत पैंतरे चल चुका। अब थक गया हूं मैं। अगर माफ नहीं कर सकते तो.... तो आपके हाथ में रिवाल्वर है। यहीं इसी वक्त शूट कर दीजिए मुझे। मगर, वह जिल्लत भरी मौत मत दीजिए जो आपने मेरे लिए सोची है। लोग यह जानें कि अपनी भाभी से मेरे नाजायज ताल्लुकात थे। पांच करोड़ के लालच में आपका मर्डर किया। नहीं-नहीं...। यह सब सहन नहीं होगा मुझसे। इससे बेहतर

है, यहीं खत्म कर दीजिए मुझे।"

राजदान उसकी तरफ देखता रह गया।

कुछ इस तरह, जैसे जानने की कोशिश कर रहा हो वह एक्टिंग कर रहा है या सचमुच पश्चाताप की आग में जल रहा है।

खुद दिव्या भी नहीं समझ पा रही थी देवांश के इस पैंतरे को।

यह पैंतरा था या वाकई देवांश पूरी तरह टूट चुका था?

उधर, एकाएक राजदान के जबड़ कस गये। गुर्राया---"ठीक है। अगर सचमुच तुझे अपने किये पर पछतावा है तो मैं तुझे माफ कर सकता हूं मगर वह माफी केवल इतनी ही होगी कि तुझे जिल्लत से बचा लूंगा। मरना तो होगा ही तुझे, उस तरह नहीं तो मेरे हाथों।"

रूह कांप गई देवांश की।

मगर अगले ही पल दिमाग में ख्याल कौंधा---अगर ये राजदान है तो किसी कीमत पर मुझ पर गोली नहीं चला सकता। अगर 'क्लोन' है तब... बचने का रास्ता ही कहां है?
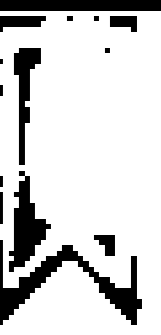
वह कहे या न कहे।

जब चाहे उसे गोली मार सकता है।

सो, नाटक जारी रखना ही मुनासिब लगा। आंखों में आंसू भरे कह उठा---"खुशी से भैया। खुशी से टुकड़े-टुकड़े कर डालो मेरे! जीने के काबिल रहा भी कहां हूं मैं? ठीक ही कहा आपने। आप मुझे जिल्लत से बचायेंगे, यह भी माफी ही होगी आपकी तरफ से।"

"ओ.के.।" राजदान के जबड़े कस गये---"तो तैयार हो जा मरने के लिए।"

"मैं तैयार हूं भैया। तैयार हूं मैं।" कहने के साथ देवांश के आंसू गालों पर ढलक आये।

राजदान की अंगुली का दबाव ट्रेगर पर बढ़ गया।

देवांश ने आंखें बंद कर लीं।

सचमुच मरने के लिए तैयार नजर आ रहा था वह।

उस दृश्य को देखती दिव्या थर-थर कांप रही थी।

ट्रेगर पर दबाव बढ़ाता राजदान एकाएक भावुक सा नजर

आने लगा। उसे पूरी तरह दबाने से पूर्व ही वह दिव्या की तरफ पलटकर चीख पड़ा---"देखा!... देखा कमीनी! भाई आखिर भाई होता है! खून का रिश्ता आखिर खून का रिश्ता होता है। किसी भी स्टेज पर पहुंचकर सही, माफी तो मांग ली इसने। मेरे हाथ से मरने को भी तैयार है।"

देवांश ने चौंककर आंखें खोलीं।

दिव्या के होश उड़े हुए थे।

दांतों पर दांत जमाये राजदान कहता चला गया---"ठीक ही कहा छोटे ने। तुझ जैसी हुस्न की परी अगर इस जैसे जवान लड़के की गोद में जा गिरे तो कैसे नियंत्रित रख सकता है लड़का खुद को? मुझे एड्स क्या हुआ, कुछ दिन तेरी जिस्मानी भूख क्या शांत नहीं कर पाया कि तू इस कदर सुलग उठी---इस कदर कि मेरे ही छोटे भाई को अवैध सम्बन्धों की कीचड़ में खींच ले गई। इस कदर दीवाना बना लिया इसे तूने कि मेरे मर्डर तक की बात सोचने लगा।"

बहुत कुछ कहने की इच्छा के बावजूद दिव्या मुंह से एक लफ्ज न निकाल सकी।

"याद कर! यार कर विचित्रा को!" राजदान कहता चला गया---"उसका नशा भी एक बार मुझ पर ... खुद मुझ पर

इस कदर चढ़ा था कि मैं छोटे को बेदखल करने के लिए तैयार हो गया था। वह घटना बताती है---औरत का नशा कम्बख्त होता ही इतना घातक है कि आदमी नीच से नीच हरकत कर बैठता है। अपने यौवन की मदिरा पिला-पिलाकर तूने इसे मेरे मर्डर के लिए उकसा लिया और मेरी मौत के बाद यह तभी से लगातार सबकुछ कुबूल करने के लिए फड़फड़ा रहा है जब तुम्हारी नजरों में ठकरियाल बाथरूम में था। मेरे यहां आने से पहले भी यह तुझे यही समझाने की कोशिश कर रहा था मगर तू क्यों मानने लगी? असली घुटी हुई तो तू है। तूने ही बहकाया मेरे छोटे को।"

अब दिव्या भी खुद को नियंत्रित न रख सकी। चीख पड़ी वह---"वाह! वाह! राजदान! अपने भाई में कभी कोई दोष नजर नहीं आता तुझे। या तो विचित्रा में नजर आया था या मुझमें नजर आ रहा है। ड्रेसिंग में छुपकर अपने नंगे बदन को देखने के लिए भी मैंने ही निमंत्रण दिया था इसे। मैंने इससे कहा था---मैं रात को इतने बजे झरने पर नहाऊंगी, मुझे देखने वहां आ जाना! तुमने ठीक कहा राजदान---खून आखिर खून होता है। इतने सब के बावजूद तुम इसे माफ करने को तैयार हो। सारा दोष मुझ पर मंढ़ रहे हो क्योंकि मैं...

"हां..हां! दोष तेरा ही है!" राजदान चीख पड़ा---"अरे ये अगर बहक भी गया तो तुझे संभालना चाहिए था इसे। तू

बड़ी थी। समझाना चाहिए था। मगर तू कहां करती यह सब? कैसे करती? तू तो खुद दहकती हुई भट्टी बनी हुई थी। और अब... तुझे तो अब भी इतनी गैरत नहीं आई कि अपनी गलतियों के लिए पश्चाताप भी करे।"

"भाभी!" एकाएक देवांश दिव्या से कह उठा---"माफी मांग लो भैया से। भैया का दिल इतना बड़ा है कि...

"नहीं...नहीं छोटे।" दांत भींचकर राजदान कहता चला गया---"इतना बड़ा भी नहीं है मेरा दिल कि इस... इस कलंकनी को माफ कर सके। किसी भी मामले में विचित्रा से छोटी वेश्या नहीं है ये।"

"भैया।"

"लो!" राजदान ने रिवॉल्वर देवांश की तरफ बढ़ाया---"खत्म कर दे इसे।"

"म-मैं?" देवांश की जान मानो हलक में आकर अटक गई।

"अगर माफी चाहता है तो इसका खात्मा जरूरी है क्योंकि ये जिन्दा रही तो दुनिया से तेरे और अपने सम्बन्धों का बखान जरूर करेगी। वैसा हुआ तो तू भी जेल की चारदीवारी में होगा या इसके साथ फांसी के फंदे पर झूल जायेगा।"

"ल-लेकिन मैं... भ भैया मैं?"

"क्यों?" एक बार फिर राजदान के होठों पर जहरीली मुस्कान रेंग गई---"इस पर गोली चलाते वक्त हाथ कांप जायेंगे तेरे?"

देवांश ने झपटकर उसके हाथ से रिवाल्वर ले लिया।

राजदान की मुस्कान में ज्वाला नजर आने लगी।

आंखें फाड़े दिव्या कभी देवांश को देख रही थी कभी राजदान को।

देवांश के हाथ में दबा रिवाल्वर इस वक्त उसी की तरफ तना हुआ था।

चेहरे पर दृढ़ता के भाव।

जबड़े कसे हुए।

अंगुली ट्रेगर पर थी।

"देव!" दिव्या चिल्लाई---"क्या तुम मुझे सचमुच मार डालोगे?"

राजदान की गोल आंखों में 'अजब' चमक नजर आने लगी।

"देव! कोशिश करो समझने की। कुछ माफ-वाफ नहीं करने वाला है ये तुम्हें। गेम खेल रहा है। तुम्हें मेरे हाथों से मरवाने का गेम। जरा उसकी आंखों में मौजूद चमक को देखो। यह साबित करना चाहता है कि हमारा रिश्ता कितना कच्चा था। मेरी हत्या के इल्जाम में यह तुम्हें..

उसी क्षण, माहौल गोली चलने की जोरदार आवाज से कांप उठा।

दिव्या के हलक से चीख निकली।

उसे लगा, वह मर रही है।

मगर नहीं।

गोली देवांश के हाथ में दबे रिवाल्वर से नहीं चली थी।

वह रिवाल्वर तो गोली चलने के साथ ही उसके हाथ से निकलकर फर्श पर गिरा और फिसलता हुआ डायनिंग टेबल के नीचे जाकर रुका।

गोली दरवाजे से चली थी।

चलाने वाला था ठकरियाल। निशाना था---देवांश के हाथ में दबा रिवाल्वर।

तीनों ने चौंककर दरवाजे की तरफ देखा।

और।

इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता।

धांय।

ठकरियाल के रिवॉल्वर से एक और गोली चली।

राजदान की छाती पर लगी वह।

परन्तु।

बाल तक बांका नहीं हुआ उसका।

उल्टा बिजली की गति से वह इस तरह हवा में उड़ता नजर आया जैसे उड़ने वाले सांप ने जम्प लगाई हो। उसकी फ्लाइंग किक सीधी ठकरियाल के चेहरे पर पड़ी थी।

ठकरियाल कहीं, उसका रिवाल्वर कहीं।

राजदान ने दरवाजे से बाहर की तरफ जम्प लगा दी थी।

ठकरियाल फुर्ती से उठकर उस पर झपटा।

दरवाजे के नजदीक दोनों गुत्थम गुत्था हो गये।

उससे भिड़ा ठकरियाल चिल्लाया---"मेरी हैल्प करो देवांश! ये राजदान नहीं है।"

देवांश मानो सोते से जागा।

दरवाजे की तरफ झपटा।

मगर तभी---

राजदान ने ठकरियाल को उसकी तरफ उछाल दिया था।

ठकरियाल का जिस्म देवांश से आकर टकराया।

एक-दूसरे से उलझे दोनों फर्श पर गिरे।

राजदान दरवाजे के पार।

दिव्या किंकर्त्तव्यविमूढ़ अवस्था में अपने स्थान पर खड़ी कांप रही थी। उसे विश्वास ही नहीं आ रहा था गोली चलने के बावजूद वह जीवित है।

ठकरियाल और देवांश ने संभलने के बाद एक साथ बाहर जम्प लगाई।

वहां दूर-दूर अंधकार के अलावा और कुछ नजर नहीं आया।

तभी।

भागते कदमों की आवाज सुनाई दी।

"कौन है ऊपर?" आवाज आफताब की थी।

"हम हैं आफताब।" देवांश ने कहा---"हमलावर भागने की कोशिश कर रहा है।"

ठकरियाल चिल्लाया---"लॉन की सभी लाइटें ऑन कर दो... जल्दी!"

आफताब ने ऐसा ही किया भी।

लेकिन---

काफी भागदौड़ के बावजूद राजदान किसी को नजर नहीं आया।

"मुंह नोंच लूंगी मैं तुम्हारा! कच्चा चबा जाऊंगी!" दिव्या घायल शेरनी की तरह देवांश पर झपट पड़ी---"काहे का प्यार करते हो मुझसे? उसका इशारा हुआ और मुझ ही को मारने पर आमादा हो गये?"

"दिव्या! दिव्या! बात तो सुनो मेरी।" उससे बचने का लगभग असफल प्रयास करता देवांश चीखा---"मैंने तुम्हें नहीं, उसे मारने का फैसला किया था।"

मगर। दिव्या को भला होश कहां?

कुछ सुनने को तैयार नहीं थी वह।

उसका बस चलता तो उस क्षण देवांश को जान से मार डालती।

यह ड्रामा आफताब, दीनू काका, तीसरे नौकर और भागवंती के वहां से जाते ही शुरू हो गया था। उनकी मौजूदगी में जाने किस तरह खुद को नियंत्रित किये थी दिव्या। गोली की आवाज सुनकर वे सभी वहां आ गये थे। ठकरियाल ने समझा-बुझाकर वापस सर्वेन्ट्स क्वार्टर में भेजा। विला का मुख्य द्वार बंद किया।

दरवाजे का बंद होना था कि दिव्या देवांश पर झपट पड़ी।
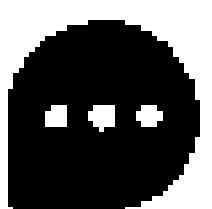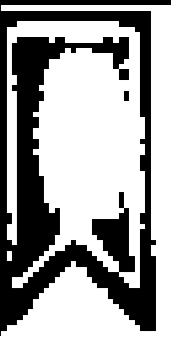
ठकरियाल ने उसे बड़ी मुश्किल से पकड़कर अलग किया।

वह अब भी चीख रही थी। चिल्ला रही थी।

"समझने की कोशिश क्यों नहीं कर रहीं तुम?" दिव्या की चीख-चिल्लाहट के जवाब में अंततः देवांश उससे ज्यादा जोर से चीख पड़ा---"एक पल और ठकरियाल मुझ पर गोली नहीं चलाता तो राजदान की तरफ घूमने वाला था मेरा रिवाल्वर वाला हाथ।"

"बक रहे हो तुम!" ठकरियाल के बंधनों में जकड़ी दिव्या चिल्लाई---"झूठ बोल रहे हो। अगर ऐन समय पर ठकरियाल न पहुंच जाता तो तुम मुझे मार चुके थे। खुश कर चुके थे अपने भाई को। माफी की उम्मीद क्या बंधी कि तुम मुझ ही को मारने पर तुल गये।"

"दोनों बेवकूफ हो तुम!.... दोनों।" अंततः ठकरियाल को उन दोनों से ज्यादा जोर से चीखना पड़ा---"वह राजदान था ही नहीं। कितना समझाया तुम्हें। कितने कॉन्फीडेंस के साथ कहा था मैंने कि राजदान मर चुका है। वह उसका क्लोन है। इसके बावजूद तुम बेवकूफ बन गये।"

"उसने कहा था---मोर्चरी में उसने लाश के चेहरे से प्लास्टिक के सभी रेशे हटा दिये थे।"
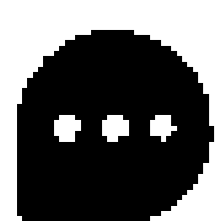
"उसने कहा और तुमने मान लिया? क्या राजदान मुझसे इस तरह फाइटिंग कर सकता था? क्या थी उसमें इतनी ताकत कि मुझे उठाकर तुम्हारे ऊपर फैंक देता? हम दोनों के बीच से फरार हो जाता?"

"वह चाहे जो था मगर इसने उसे राजदान ही समझा था।" दिव्या पुनः चिल्ला उठी---"मैं बस इतना जानती हूं कि खुद को बचाने के लिए यह मेरी जान लेने को तैयार हो गया था।"

"दिव्या!.... अब मैं कैसे समझाऊं तुम्हें। यह गलत है। मैं चाल चल रहा था।"

"तुम दोनों समझ क्यों नहीं रहे?" ठकरियाल ने कहा---"वह यहां आया ही तुम्हारे बीच वह दरार डालने था जो मुझे साफ-साफ नजर आ रही है। मेरे आ जाने की वजह से वह पूरी तरह कामयाब भले ही न हो सका हो मगर आंशिक रूप से जरूर कामयाब हो गया।"

"क्या मतलब?"

"सबसे पहले यह रिवाल्वर उठाओ।" ठकरियाल ने डायनिंग टेबल के नीचे पड़े रिवाल्वर की तरफ इशारा किया।

देवांश ने आगे बढ़कर साइलेंसरयुक्त रिवाल्वर उठा लिया।
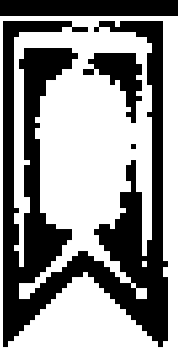
"चैम्बर खोलो इसका। मेरा दावा है यह खाली है। एक भी गोली नहीं है इसमें।"

देवांश ने चेम्बर खोला।

वह सचमुच खाली था।

"अब सोचो।" ठकरियाल ने कहा---"अगर तुम पलटकर उस पर गोली चलाते भी तो क्या होता?"

देवांश ने मूर्खों की तरह कहा---"क्या होता?"

"ठहाके लगा-लगाकर हंसता वह तुम्हारी बेवकूफी पर।"

"नहीं इंस्पैक्टर।" दिव्या ने कहा---"यह उस पर नहीं, मुझ पर गोली चलाने वाला था। तुमने तो खुद अपनी आंखों से देखा था।"

"तब भी क्या होता?"

"मतलब?"

"मर तो जातीं नहीं तुम। क्योंकि यह खाली था।"

"फ-फिर?"
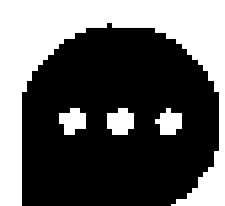
"वही तो समझाने की कोशिश कर रहा हूं मैं तुम्हें। उसका इरादा देवांश के हाथों तुम्हें खत्म करा देने का नहीं---बल्कि केवल यह सिद्ध करना था कि अपनी जान बचाने के लिए यह तुम्हें मार सकता है। यह वह इसलिए सिद्ध करना चाहता था ताकि तुम्हारे बीच दरार पड़ जाये, जो कि मैं देख रहा हूं कि पड़ चुकी है।"

दिव्या अविश्वसनीय नजरों से ठकरियाल की तरफ देखती रह गयी।

हैरान देवांश ने पूछा---"मगर तुमने यह अनुमान कैसे लगाया रिवाल्वर खाली होगा?"

"भरा हुआ होता तो इसे तुम्हारे हाथ में देने की बेवकूफी कभी नहीं करता वह। वह पहले ही कल्पना कर चुका होगा---तुम्हारे हाथ में पहुंचने के बाद इसका रुख खुद उसकी तरफ भी घूम सकता है। उस अवस्था में उसे पता लग जाता---माफी मांगना तुम्हारा एक पैंतरा था।"

"म-मगर... उस पर तो तुम्हारी गोली का भी असर नहीं हुआ।"

"अर्थात् वह बुलेट प्रूफ जैकेट पहने हुए था।" ठकरियाल कहता चला गया---"इससे सिद्ध होता है---कितनी पुख्ता
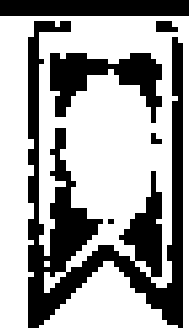
तैयारियों के साथ आया था वह यहां। तुम्हारे हाथ में जो रिवाल्वर दिया, उसमें गोली नहीं, इसके बावजूद जिस्म पर बुलेट प्रूफ जैकेट। मतलब साफ है---आने से पहले वह यह भी सोच चुका था तुम इसके अलावा किसी और रिवाल्वर से भी उस पर गोली चला सकते हो। अपनी इसी सतर्कता के कारण वह मेरी गोली से बच गया।"

दिव्या ने अब भी कहा---"मैं नहीं मान सकती देवांश के रिवाल्वर का रुख उसकी तरफ घूमने वाला था।"

"तुम्हारे न मानने से कोई समस्या हल होने वाली नहीं है दिव्या।" ठकरियाल ने उसे समझाने वाले लहजे में कहा---"बल्कि समस्या बढ़ेगी। वही होगा जो वह चाहता है। तुम दोनों और अंततः हम तीनों के बीच वह अविश्वास की खाई खोदनी चाहता है ताकि आपस में लड़-झगड़कर उसके गर्त में जा गिरें। हमारी कोशिश उसकी चाल को नाकाम करने की होनी चाहिए, न कि कामयाब करने की ओर..यदि देवांश पर तुम इसी तरह शक करती रहीं तो कामयाब ही समझो उसे। देवांश की बात पर विश्वास करने के अलावा कोई चारा नहीं है।"

दिव्या को चुप रह जाना पड़ा।

"इसके बावजूद जो हुआ, बहुत अच्छा हुआ। खासतौर पर

यह अच्छा हुआ कि ऐन टाइम पर मैं आ गया।" कहते वक्त ठकरियाल के होठों पर रहस्यमय मुस्कान थी---"मेरे ख्याल से राजदान के क्लोन की ये ड्रामेबाजियां अब ज्यादा लम्बी नहीं चलनी चाहिएं।"

देवांश ने पहली बार ठकरियाल के होठों पर आत्मविश्वास से लबरेज मुस्कान देखी।

"रामभाई, तेरहवीं निपटने दो। उसके बाद मुझे केवल पन्द्रह दिन चाहिए।" अगले दिन, दोपहर के करीब एक बजे देवांश के लहजे में गिड़गिड़ाहट थी---"पन्द्रह दिन के अंदर मैं ब्याज सहित तुम्हारा पैसा चुकता कर दूंगा।"

"और हमारा?" रामभाई शाह के नजदीक बैठे अधेड़ आयु के एक अन्य शख्स ने कहा।

देवांश के सामने ये दो ही नहीं उनके अलावा चार और व्यक्ति बैठे थे। देवांश ने उन छओं को देखा। चेहरे पर याचना के भाव लिए बोला---"अब आप ही लोग सोचिए, भला इतने कम समय में सभी का चुकता पेमेंट कैसे कर सकता हूं मैं? ऐसा तो अगर भैया खुद होते तो शायद वे भी न कर पाते। परन्तु वादा करता हूं, धीरे-धीरे सभी के पेमेंट कर दूंगा। बहरहाल, बिजनेस करना है। भागना तो है नहीं मुंबई से।"

एक अन्य व्यक्ति ने गुर्राकर पूछा---"आखिर कब तक इंतजार करें हम?"

"सबके पैसे देने में करीब छः महीने तो लग ही जायेंगे।"

"हम इतने दिन इंतजार नहीं कर सकते।" चौथे ने कहा।

"प्लीज...समझने की कोशिश कीजिए मनचंदा साहब।" गिड़गिड़ाते-गिड़गिड़ाते देवांश का बुरा हाल हो गया था---"यूं अगर एक साथ बैंक के लेनदार भी इकट्ठे होकर अपना पैसा मांगने लगें तो शायद बैंक भी दिवालिया हो जायें। बहरहाल, बिजनेस से पैसा निकालूंगा तो तभी, जब सीट पर जाकर बैठूंगा।"

"देखा जाये तो लड़का ठीक ही कह रहा है।" उसने कहा जो उम्र में उन सबसे बड़ा था---"जितना पैसा हम सबका है, उतना बिजनेस से निकालने में छः महीने तो लग ही जायेंगे।"

"लेकिन ये क्या बात हुई कि रामभाई शाह का पैसा पन्द्रह दिन में निकल आये और हमारा छः महीने फंसा रहे?"

"बात ठीक है मिस्टर चावला।" रामभाई शाह ने कहा---"आपस में झगड़ने की मैं कोई वजह नहीं समझता। सबको इसी धंधे में रहना है। मेरा पैसा इसने तेरहवीं के पन्द्रहवें दिन देने के लिए कहा है। उस पैसे को हम लोग अपने कर्जे के अनुपात के हिसाब से छः हिस्सों में बांट लेंगे। छः महीने तक हर महीने मिलने वाला पैसा इसी तरह बंटेगा। इस तरह छः महीने में सबका पैसा एक साथ निकल आयेगा।"

"बशर्ते यह हर महीने किश्त देता रहे।" छठे ने कहा।

देवांश बोला---"मैं हर महीने पैसा देने का वादा करता हूं।"

"ओ.के.।" रामभाई शाह ने कहा।

उसके बाद।

वे छओं बार-बार हर महीने पैसा देने की चेतावनी देते विदा हुए।

देवांश को लगा---सिर पर 'थप्प' से लाकर पटक दिया गया बहुत बड़ा बोझ हटा है।
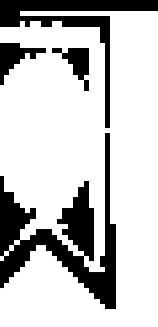
बैठक कक्ष से सारा फर्नीचर हटाकर फर्श पर दरी–चांदनी बिछा दी गई थी।

उसी पर, देवांश एक दीवार पर पीठ टिकाये बैठा था।

अफसोस जाहिर करने वाले आ–जा रहे थे।

महापंडित के मुताबिक तेरह दिन तक सबको अटेन्ड करना ही उसका काम था।

उस वक्त वह माथा पकड़े अपने भन्ना रहे दिमाग को काबू में करने का प्रयत्न कर रहा था जब उस दरवाजे पर दिव्या प्रकट हुई जो बैठक को विला के अंदरूनी हिस्से से जोड़ता था। उसके जिस्म पर इस वक्त सफेद सूती धोती थी। फुल बाजू वाला सफेद ब्लाउज।

चेहरे पर कोई मेकअप नहीं था।

बाल खुले हुए।

उसके अंदर आने की आहट पाकर देवांश ने आंखें खोल दीं।

नजरें मिलीं मगर बोला कोई कुछ नहीं।

रात से अब तक---देवांश के लाख स्पष्टीकरण के बावजूद दिव्या इस बात का विश्वास नहीं कर सकी थी कि ऐन वक्त पर ठकरियाल न आ जाता तो वह रिवाल्वर का रुख राजदान की तरफ घुमाने वाला था। केवल एक ही बात पर समझौता किया था दिव्या ने। यह कि कम से कम वर्तमान मुसीबत से निपटने तक वे आपस में झगड़ा नहीं करेंगे।

"क्या कह रहे थे?" दिव्या ने उसके बायीं तरफ बैठते हुए पूछा।

"कह क्या रहे थे! भेजा चाट रहे थे मेरा!" भन्नाया हुआ देवांश फट पड़ा---"जी चाहता है, सिर दीवारों से टकरा-टकराकर फोड़ डालूं। साला एक मुसीबत में डाल गया हो तो कुछ कहूं भी। रात होती है तो रहस्यमय घटनायें घेर लेती हैं। दिन निकला है तो कर्जमंदों ने आ घेरा। इनका कर्ज नहीं चुकाया गया तो गिद्धों की तरह गोश्त नोंच-नोंच कर खा जायेंगे मेरा। किसी तरह एक महीने के लिए टाला है। नहीं मालूम तेहरावनी से पन्द्रहवें दिन क्या होगा। ..... और एक तुम हो। तुम भी मुझ पर विश्वास करने को तैयार...

वाक्य खुद अधूरा छोड़ दिया उसने।

नजर दरवाजे पर जा अटकी थी।
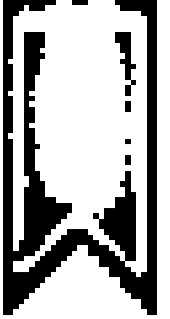
दिव्या की आंखों ने उसकी नजरों का पीछा किया।

दरवाजे पर खड़े शख्स का हुलिया बड़ा अजीब था।

जगह-जगह से घिसी हुई एक जींस पहन रखी थी उसने।

ढीली-ढाली शर्ट। दायें कंधे से थोड़ी फटी हुई थी।

बायें जूते से पैर का अंगूठा झांक रहा था।

बाल लम्बे, रूखे और बिखरे हुए थे। चेहरा क्लीन शेव्ड। रंग गुलाबी। नाक-नक्श तीखे। मगर ऐसा लगता था जैसे कई दिन से नहाया नहीं है। कुल मिलाकर वह बदसूरत नहीं बल्कि स्मार्ट और खूबसूरत ही था परन्तु लिबास आदि से फटीचर नजर आता था।

देवांश ने सोचा---होगा कोई राजदान का परिचित।

अतः कुछ बोला नहीं।

आगन्तुक ने अपने फटे हुए जूते उतारे और उसके सामने आकर चांदनी पर बैठ गया।

"कैसे हो गया ये?" उसने गमगीन स्वर में पूछा।

देवांश ने रटा-रटाया जवाब दिया---"बस क्या बतायें। हमारी

किस्मत खराब थी।"

"ये भाभी जी हैं?" पूछने के साथ उसने दिव्या की तरफ देखा। देखा... तो देखता ही रह गया।

यदि आप किसी लड़की या औरत की तरफ तीन सेकण्ड तक लगातार देखते रहें तो वह समझ जाती है कि आप उसमें खास दिलचस्पी ले रहे हैं और... उस अजनबी ने तो दिव्या के चेहरे से पांच सेकेण्ड तक नजरें ही नहीं हटाईं। यदि तब भी देवांश ने यह न कहा होता कि---'मैंने आपको पहचाना नहीं, तो जाने कब तक एकटक देखता रहता। देवांश की बात का जवाब देने के लिए उसने उसकी तरफ देखा। धीरे से कहा---"मेरा नाम अवतार है।"

"अ-अवतार?" दोनों एक साथ चौंक पड़े।

उसने पुनः अपनी आंखें दिव्या के चेहरे पर गड़ाते हुए कहा---"लगता है आप लोग मुझ जानते हैं।"

"नाम सुना है।" दिव्या ने कहा।

"राजदान के मुंह से सुना होगा। मैं उसके बचपन का दोस्त हूं।"

उसकी आंखें ब्राउन कलर की थीं।

चमकदार।

दिव्या को लगा---वे आंखें उससे कुछ कहना चाहती हैं।

उसकी आंखों में झांकता सा वह कहता चला गया---"पांच दोस्त थे हम। मैं, राजदान, भट्टाचार्य, वकीलचंद और अखिलेश।"

"अब तक कहां थे आप?" देवांश ने पूछा।

"कलकत्ता में था। अखबार में राजदान के मर्डर की खबर पढ़कर आया हूं।"

देवांश ने राहत की सांस ली। वरना नाम सुनकर तो उसे यही लगा था---एक और मुसीबत आ टपकी है। इसे भी राजदान ही ने बुलाया होगा। किसी खास काम पर नियुक्ति की होगी उसकी भी।

"अखबार के मुताबिक सोलह साल के लड़के ने किया है उसका कत्ल।" वह कहता चला गया---"चंद जेवरात की खातिर। राजदान के पास अक्सर आता रहता था। और कहीं पास ही में रहता है।"

"एक मिनट। मैं अभी आया।" कहने के साथ देवांश अपने दायें हाथ की सबसे छोटी अंगुली दिखाता हुआ खड़ा हो

गया।

अगले पल दरवाजा क्रास करके वह विला के भीतरी भाग में पहुंच चुका था।

अचानक उसकी चाल में थोड़ी तेजी आ गयी। लगभग दौड़ता सा लॉबी में पहुंचा।

फोन पर झपट सा पड़ा।

ठकरियाल से कॉन्टेक्ट करने के बाद बोला---"राजदान के बचपन का चौथा दोस्त भी आ टपका है।"

"अवतार?" ठकरियाल की आवाज उभरी---"कहां है?"

"बैठक में बैठा है।" कहने के बाद देवांश सब कुछ बताता चला गया।

देवांश के जाने के कुछ देर बाद तक बैठक में खामोशी रही।

मगर।

वह ऐसी खामोशी थी जिसमें बहुत सारी बातें हो रही थीं।

दिव्या ने महसूस किया---अवतार की आंखों में उसके लिए वही भाव है जो किसी औरत की 'चाहना' पर मर्द की आंखों में उभरता है। इस एहसास ने दिव्या का दिल जोर-जोर से धड़काना शुरू कर दिया था। नजरें चुराने लगी वह। अवतार का यूं एकटक देखते रहना उसे जरा भी अच्छा नहीं लग रहा था। एकाएक उसने कहा---"आपने जवाब नहीं दिया?"

"क-किस बात का?" दिव्या बौखला सी गई।

"कहां रहता था वह, जिसका नाम शायद बबलू है?"

"स-सड़क के सामने वाली तीन-मंजिला बिल्डिंग के एक फ्लैट में।"

"सुना है थाने से फरार हो गया। पूरा थाना सोता रह गया?"

"कहां सुना आपने?"

"पेपर में ही लिखा था।"

"ओह! हां।"

"कमाल की बात है। सोलह साल का होने के बावजूद ऐसा कर गया। काफी शातिर किस्म का लड़का मालूम पड़ता है।"

दिव्या ने कोई टिप्पणी नहीं की।

पुनः अवतार ने ही कहा---"उस बेवकूफ को तो यह भी पता नहीं होगा आप पर कितना बड़ा जुल्म कर बैठा है।"

"म-मुझ पर?"

"उम्र ही क्या है अभी आपकी।... ये लिबास।" कहते वक्त अपनी आंखों में बड़ा गहरा भाव भरकर उसने दिव्या की आंखों में झांका था---"नहीं! ठीक नहीं किया उस लड़के ने।"

दिव्या ने नजरें झुका लीं।

अवतार पुनः कुछ करने वाला था कि देवांश वापस आ गया। अपने स्थान पर बैठते हुए उसने पूछा---"कलकत्ता में क्या

करते हैं आप?"

"मैनेजर था एक होटल में।"

"था से क्या मतलब?"

"होटल बंद हो गया।"

"क्यों?"

"उसमें रेड पड़ी। पता लगा---मालिक लोग होटल की आड़ में कॉल गर्ल्स रैकेट चलाते थे। बहुत-सी लड़कियां और ग्राहक पकड़े गये। सारे शहर में काफी बदनामी हुई।"

"होटल में रैकेट चलता था। आप उसके मैनेजर थे और आपको पता नहीं था?"

"सब यही कहते हैं। इसीलिए तो तभी से बेरोजगार हूं। कोई काम देकर राजी नहीं है।"

"आपकी बातों पर विश्वास आ भी नहीं सकता। भला होटल के मैनेजर को पता न हो कि...

"अजी काहे का मैनेजर था मैं! बस नाम के लिए दे रखी थी यह पोस्ट। असल में देखते तो सब मालिक लोग ही थे। वो

तो जब रेड पड़ी और वेश्यायें पकड़ी गईं तब मेरी समझ में आया---उन्होंने मुझे मैनेजर नहीं बलि का बकरा बना रखा था।"

"क्या मतलब?"

"रेड के बाद मालिक लोग पल्ला झाड़कर एक तरफ खड़े हो गये। कहने लगे---उनके पास टाइम ही कहां है होटल के धंधे को देखने का? मैनेजर रखा हुआ था---इसी ने चला रखा होगा हमारे होटल में वेश्याओं का अड्डा।"

"फिर?"

"फिर क्या? बौखला गया मैं। होश फाख्ता हो गये। पुलिस ने 'धप्प' से गर्दन पकड़ ली। मैं खूब रोया, चीखा, चिल्लाया, सफाई दी। कहा---मुझे कुछ नहीं मालूम। मगर, पुलिस वाले उसकी सुनते कहां हैं जो उनकी जेब गर्म करने की हैसियत नहीं रखता। जेब तो मालिक लोगों ने गर्म की उनकी बल्कि शायद पूरे के पूरे ही गर्म कर डाले। तभी तो जब केस बना तो यही बना---मालिक लोगों का कोई कुसूर नहीं है। उन्हें तो कॉल गर्ल्स रैकेट की भनक तक नहीं थी। जो कर रहा था मैनेजर कर रहा था।... इस आरोप-पत्र के साथ उन्होंने मुझे कोर्ट में पेश कर दिया। कोर्ट ने चौदह दिन की रिमांड पर पुलिस को सौंप दिया। चौदह दिन क्या, चौदह घण्टे

पुलिस के लिए बहुत होते हैं। ऐसा हवाई जहाज बनाया पट्ठों ने मेरा कि उस वक्त अगर वे यह कुबूल करने को कहते कि तीनों गांधियों की हत्या मैंने की है तो मैं मैं वार कुबूल कर लेता।"

"यानि उन्हें दिये बयान के मुताबिक होटल में तुम ही कॉल गर्ल्स रैकेट चला रहे थे। मालिक लोगों को उस बारे में कुछ पता नहीं था?"

"साइन करने पड़े इस बयान पर। मरता क्या न करता!"

"उसके बाद?"

"जेल भेज दिया गया।" अवतार ने बताया---"एक महीने बाद हाईकोर्ट से जमानत हुई। तब से नौकरी के लिए भटक रहा हूं। केस चल रहा है सो अलग।"

देवांश को लगा---मालिकों वाली कहानी वह खुद को बेदाग साबित करने के लिए 'गढ़' रहा है।

असलियत वही है जो चार्ज उस पर लगाया गया है। अर्थात् वाकई वह होटल में रैकेट चलाकर मालिकों को चूना लगा रहा होगा। देवांश को ऐसा लगने का कारण शायद उसकी हालत और हाव-भाव थे। लेकिन इस टॉपिक को यहीं ड्राप करके उसने पूछा---"भैया के मर्डर की खबर कब पढ़ी?"

"परसों।"

"और यहां के लिए रवाना हो गये?"

"हां।"

"क्यों?"

"क्यों से क्या मतलब, भई? राजदान यार था अपना।"

"उससे पहले तो यार की कोई याद नहीं आई?"

"शायद तुम्हारे अपने बचपन का कोई यार नहीं है बर्खुरदार जो ये बात कही। आदमी साला सबकुछ भूल सकता है, बचपन के याड़ियों को नहीं भूल सकता। हां, हालात कभी-कभी ऐसे जरूर बन जाते हैं कि चाहकर भी बंदा उनसे मिल नहीं पाता। अब हमारी ही टुकड़ी को लो। जबलपुर के एक ही मुहल्ले में रहते थे। बड़े होते-होते तितर-बितर हो गये। न मुझे राजदान, वकीलचंद, भट्टाचार्य और अखिलेश को पता रहा वे कहां हैं, न ही शायद उन्हें मेरा पता था। मैं ये भी नहीं जानता वे एक-दूसरे के टच में भी हैं या नहीं। हां, अखबार में वकीलचंद का नाम जरूर पढ़ा था। लिखा था---जिस रात बबलू थाने से फरार हुआ, उस रात मानवाधिकार आयोग से वहां वकीलचंद नाम का एक वकील भी तैनात था। शायद तुम मुझे बता सकते

हो---क्या वह वही, राजदान के बचपन का दोस्त वाला वकीलचंद था या कोई और था?"

"वही है।"

"गुड!... यही सोचा था मैंने।" एकाएक उसकी चमकदार आंखें जगमगा सी उठीं---"यही कि शायद मेरी तरह बाकी तीनों में से भी किसी ने राजदान के मर्डर की खबर पढ़ी हो और शायद वह भी यहां पहुंचे। मन में यही उम्मीद लेकर आया था कि शायद किसी से मुलाकात हो जाये मगर...

"मगर?"

"बात कुछ समझ में नहीं आई।" धाराप्रवाह बोलता-बोलता थोड़ा अटक सा गया वह---"वकीलचंद अपनी मंडली का साथी है। और थाने में था मानवाधिकार आयोग की तरफ से उसके हत्यारे के हितों की रक्षा के लिए। मानवाधिकार की तरफ से उसकी नियुक्ति का सीधा अर्थ है---वह वहां इसलिए मौजूद था ताकि पुलिस बबलू के साथ थर्ड डिग्री का इस्तेमाल न कर सके। अपने ही यार के हत्यारे के हितों की रक्षा क्यों कर रहा है वह?"

"एक वकील के लिए उसका पेशा पहले, दोस्ती बाद की बातें होती हैं।" असलियत को पर्दे में रखे देवांश ने कहा---"उसे

मानवाधिकार की तरफ से सौंपी गई ड्यूटी निभानी थी।"

"बात तो ठीक है।" अवतार बड़बड़ाया---"ड्यूटी इज ड्यूटी।"

देवांश चुप ही रहा।

"और कोई आया?" एकाएक उसने पूछा।

"और किसी से मतलब?"

"भट्टाचार्य या अखिलेश?"

ठकरियाल की तरफ से अभी उसके इस सवाल का जवाब देने की परमीशन नहीं थी अतः बात को घुमाते हुए देवांश ने पूछा---"यानि तुम अपने दोस्तों से पूरी तरह कटे हुए थे?"

"क्या तुम्हें मेरे इतने सवालों के बाद भी अपने सवाल का जवाब नहीं मिला?"

"मैंने सोचा था मुमकिन है, बिछुड़ने के बाद कभी कहीं किसी से मिले हो।"

"नहीं। पता नहीं कौन कहां है!"

"ओह!"

"वकीलचंद से मिलना है मुझे। क्या तुम मुझे उसका पता बता सकते हो?"

"मैं मिला सकता हूं तुम्हें उससे।" एकाएक बैठक में ठकरियाल की आवाज गूंजी।

तीनों ने एक साथ पलटकर दरवाजे की तरफ देखा और... अवतार के चेहरे पर नजर पड़ते ही चौंक सा पड़ा ठकरियाल। दिमाग में कुछ फ्लैश सा हुआ।

ऐसा लगा जैसे कुछ याद आने वाला है।

इधर, पुलिस इंस्पैक्टर की ड्रैस में सजे अदरक की गांठ जैसे जिस्म को देखकर एक पल के लिए अवतार भी सकपकाया सा नजर आया था। परन्तु अगले ही पल, बहुत फुर्ती से संभाला उसने खुद को। सवाल किया---"आपकी तारीफ?"

"इंस्पैक्टर ठकरियाल कहते हैं मुझे।" वह जूतों समेत बैठक में घुस आया---"राजदान मर्डर केस का विवेचनाधिकारी।"

"ओह। हां! हां। पेपर में आपका नाम भी पढ़ा था मैंने। राजदान के हत्यारे को रणवीर राणा और आप ही ने पकड़ा है।"

ठकरियाल का जहन बार-बार, चीख-चीखकर उससे कह रहा था---अवतार नाम के इस शख्स को उसने कहीं देखा है।

मगर कहां?

कहां?

कुछ याद नहीं आ रहा था।

ऐसा लग रहा था जैसे दिमाग जवाब उगलने वाला है।

बस याद आने ही वाला है उसे कहां देखा था।

मगर।

दिमाग से बाहर नहीं निकल पा रही थी तस्वीर।

उसे बाहर निकालने के प्रयास में वह लगातार अवतार की तरफ देख रहा था कि शायद इसी तरह कुछ याद आ जाये। इधर, जाने क्यों---ठकरियाल को यूं एकटक अपनी तरफ देखता पाकर अवतार के चेहरे पर पसीना झिलमिलाने लगा। बोला---"ऐसे क्या देख रहे हैं?"

दिमाग पर जोर डालते ठकरियाल ने कहा---"मैंने तुम्हें कहीं देखा है।"

"म-मुझे?" घबराहट छुपाने के प्रयास में रोकते-रोकते भी उसकी आवाज हकला ही उठी---"भ-भला मुझे कहां देख लिया आपने? मैं तो मुंबई ही पहली बार आया हूं।"

"क्या नाम बताया आपने अपना?"

"अवतार।"

"पूरा नाम?"

हलक में सूखा सा पड़ गया था। बोला---"अवतार पोद्दार।"

'क्लिक।' ठकरियाल के दिमागी कैमरे का 'फ्लैश' चमका। पलक झपकते ही याद आ गया वह कौन है?

याद आते ही बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हुई थी ठकरियाल के दिमाग में।

बुरी तरह चौंका था वह।

"देवांश!" हलक से गुर्राहट सी निकली थी।

उसके अंदाज पर चौंकते हुए देवांश ने कहा---"क्या हुआ?"
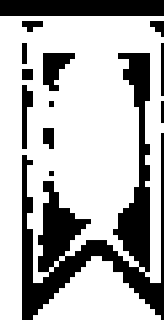
"बैठक का मेन गेट बंद कर दो।"

"म-मतलब?" देवांश समझ न सका।

"सवाल नहीं, जो कहा है वह करो!" गुर्राते वक्त ठकरियाल की नजर अवतार पर ही स्थिर थी।

देवांश उठा।

सस्पैंस में फंसा दरवाजे की तरफ बढ़ा।

अवतार के चेहरे पर घबराहट के चिन्ह उभरने लगे थे।

थूक निगलते हुए उसने कहा---"अ-आप मुझे वकीलचंद से मिलाने वाले थे....।"

"मिलाता हूं। सबसे मिला दूंगा मैं तुम्हें।"

देवांश दरवाजे के नजदीक पहुंच चुका था।

और....।

बैठक में मानो बिजली कौंधी।

दिव्या के हलक से तो चीख ही निकल गई।

अवतार छलावे की सी फुर्ती के साथ उछलकर खड़ा हो गया था। न केवल खड़ा हो गया था बल्कि शर्ट और जीन्स के बीच में से रिवाल्वर भी निकाल चुका था।

उसके हाथ में रिवॉल्वर की केवल एक झलक नजर आई।

अदरक जैसे शख्स की टांग अवतार से भी कहीं ज्यादा फुर्ती के साथ चली।

भारी बूट की ठोकर रिवाल्वर वाले हाथ पर पड़ी थी।

रिवाल्वर अवतार के हाथ से निकलकर बैठक की एक दीवार से जा टकराया।

फर्श पर गिरा।

अवतार ने ठकरियाल पर जम्प लगानी चाही।

मगर।

उसी पल---ठकरियाल के हाथ में उसका सर्विस रिवाल्वर नजर आया।

"हिले... तो भूनकर रख दूंगा!" ठकरियाल की गुर्राहट बैठक कक्ष को थर्रा गयी।

अवतार जहां का तहां ठिठक गया।

मानो अचानक खिलौने में भरी चाबी खत्म हो गयी थी।

चेहरे पर उत्तेजना के भाव लिए वह ठकरियाल की तरफ देखता रह गया।

ठकरियाल के चेहरे पर उत्तेजना के भाव थे।

होठों पर सफलता की मुस्कान।

दिव्या भयभीत थी। हैरत से मुंह फटा हुआ था उसका।

बंद दरवाजे के नजदीक खड़े देवांश की हालत भी कुछ वैसी ही थी।

दोनों में से किसी की भी समझ में नहीं आया कि पलक झपकते ही क्या से क्या हो गया था?

सचमुच!

जो भी हुआ, पलक झपकते ही हुआ था।

अपने रिवाल्वर को लहराते ठकरियाल ने कहा---"क्या नाम बताया था तुमने अपना?"

"अवतार पोद्दार।"

"पोद्दार नहीं... गिल। अवतार गिल।"

अवतार के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं।

"ठीक पहचाना मैंने?"

वह चुप रहा।

"जीन्स घिसी हुई पहनते हो। शर्ट फटी हुई। जूते भी लद्दड़ मगर... रिवाल्वर वो रखते हो जिसकी कीमत आज बाजार में तीन लाख है।" ठकरियाल ने एक नजर फर्श पर पड़े उसके रिवाल्वर पर डालते हुए कहा---"स्मिथ एण्ड बेसन कम्पनी का बना प्वाइंट थ्री फाइव रिवाल्वर।"

अवतार अब भी चुप रहा।

"क्या सोचा था तुमने कि तुम अगर पगड़ी बांधनी छोड़ दोगे, दाढ़ी कटवा लोगे और बालों को एक फटीचर आदमी की तरह बिखेर लोगे तो दुनिया का कोई भी पुलिस वाला तुम्हें पहचान नहीं सकेगा? नहीं मिस्टर गिल! दुनिया का हर पुलिस वाला तुम्हारे हुलिया बदल लेने से धोखा नहीं खा सकता। जयपुर के स्टेट बैंक में पड़ी पैंसठ लाख की डकैती के एकमात्र फरार मुजरिम की फोटो पूरे बायोडेटा के साथ

हिन्दुस्तान के हर थाने में मौजूद है।"

"ब-बैंक रॉबरी?" देवांश चौंक पड़ा---"बैंक रॉबरी का मुजरिम है ये? ये तो कह रहा था---कलकत्ता के होटल में मैनेजर था। होटल कॉल गर्ल्स रैकेट चलाने के जुर्म में बंद हो गया। और..

"वो तो पुरानी बात हो गयी देवांश। उसके बाद तो उससे कई गुना ज्यादा बड़े कई कारनामे अंजाम दे चुका है ये।" ठकरियाल कहता चला गया---"दीवाना है दौलत का। बनारस में एक बूढ़े दम्पत्ति की हत्या की। उसकी तिजोरी खंगाली मगर हाथ कुछ नहीं लगा बेचारे के। अपना सब कुछ वह बूढ़ा बैंक लॉकर में रखता था।"

अब।

खुलकर बोला गिल---"अगर तुम्हें इतना सब मालूम है तो यह भी मालूम होगा---बैंक रॉबरी के पैंसठ लाख में से मेरे हाथ फूटी कौड़ी नहीं लग सकी। उस काम में मेरे तीन साथी थे। तीनों पकड़े गये। पूरे पैंसठ लाख के साथ। बस इतना ही हाथ लगा मेरे कि अब तक पुलिस के हाथ नहीं लग सका हूं।"

ठकरियाल ने बड़ी अजीब मुस्कान के साथ कहा---"मैं क्या

नजर आता हूं तुम्हें?"

वह चुप रह गया।

"जवाब दो मिस्टर अवतार गिल!"

"मैं तुमसे एकान्त में कुछ बातें करना चाहता हूं।"

"एकान्त से मतलब?"

उसने दिव्या और देवांश की तरफ इशारा करके साफ कहा---"ओ.के.!"

गिल के होंठों पर मुस्कान रेंगी।

उसके होठों पर जिसकी तरफ देखते हुए दिव्या और देवांश हैरत और खौफ के झूले में झूल रहे थे कि भेद खुलने से पहले वे कल्पना तक नहीं कर सके थे कि यह शख्स...फटीचर सा नजर आने वाला यह शख्स इतना खतरनाक मुजरिम होगा।

हत्यारा!

बैंक लुटेरा!

वांटेड!

"अंदर चलो!" ठकरियाल ने रिवाल्वर लहराते हुए कहा।

वह बैठक के छोटे गेट की तरफ मुड़ा।

"इंस्पैक्टर, ये क्या कर रहे हो तुम?" देवांश ने कुछ कहना चाहा---"ये भैया का दोस्त..

ठकरियाल ने उसे चुप रहने का इशारा किया।

सेन्टेंस अधूरा छोड़ दिया देवांश ने।

ठकरियाल ने रिवाल्वर की नाल गिल की पीठ से सटा दी। हुक्म सा दिया---"चलो!"

वे दोनों दरवाजा क्रास कर गये।

दिव्या और देवांश की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।
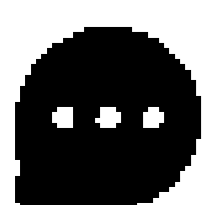
लॉबी में पहुंचकर ठकरियाल ने कहा---"कहो, क्या बातें करना चाहते थे एकान्त में?"

"जब मैं इस कदर फंस जाता हूं जिस कदर इस वक्त तुम्हारे चंगुल में फंसा पड़ा हूं तो बचाव का एक... और केवल एक ही रास्ता नजर आता है मुझे।"

"कौन सा रास्ता?"

"वह जिसे फ्लाप होते मैंने कभी नहीं देखा।"

"जो कहना है साफ-साफ कहो।"

गिल ने उसकी आंखों में झांकते हुए कहा---"अगर तुम मेरे राज को राज रखो। गिरफ्तार करने का ख्याल दिमाग से निकाल दो तो मैं तुम्हें मुंहमांगी रकम दे सकता हूं।"

"क्या सोचकर दे रहे हो ये ऑफर?... कि मैं बिकाऊ होऊंगा?" ठकरियाल गुर्राया।

उसने अपने एक-एक शब्द पर जोर दिया---"मैं मुंहमांगी रकम की बात कर रहा हूं इंस्पैक्टर।"

"तो?"
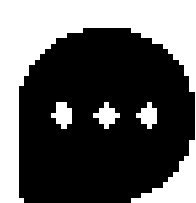
"अपने लम्बे आपराधिक जीवन में मैंने ऐसा एक भी पुलिसिया नहीं देखा जो बिकाऊ न हो। यह अलग बात है कोई कौड़ी में बिकता है, कोई करोड़ों में। जो जितना कड़क है, जितना ज्यादा ईमानदार नजर आता है, उतने ही ज्यादा में बिकता है, ये भी मत समझो मुझे पहचानने वाले तुम पहले पुलिसिए हो। पहले भी कई बार कई पुलिसिए इस अजीमुश्शान कारनामे को अंजाम दे चुके हैं। मगर कभी जेल नहीं गया मैं। मामला वहीं का वहीं रफ-दफा हो जाता है।"

"जैसे इस वक्त करना चाहते हो।"

"जो कर रहा हूं पिछले अनुभवों के आधार पर कर रहा हूं।"

"इस बार तुम जरा दूसरे किस्म के पुलिसिए के लपेटे में आ गये हो।" ठकरियाल ने कहा।

"यानी सौदा नहीं करोगे, जेल भेजकर मानोगे मुझे?"

"अगर कहूं---हां। तो?"

"मर्जी तुम्हारी।" अवतार ने लापरवाही के साथ अपने दोनों कंधे उचका दिये---"तो कर लो वही जो चाहते हो मगर सोचो---मिल क्या जायेगा तुम्हें? छब्बीस जनवरी पर मेडल तो पहना नहीं देगी सरकार। पहना भी दिया तो किस काम
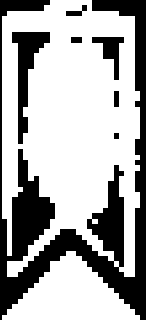
आयेगा मैडल तुम्हारे? और क्या बिगड़ जायेगा मेरा? तुम नहीं लोगे तो इस शहर के एक मजिस्ट्रेट जैसा कोई दूसरा मजिस्ट्रेट ले लेगा। जेल तो फिर भी नहीं जाऊंगा मैं।"

"ऐसी फटीचर हालत में तुम किसी को क्या दे सकते हो?"

"पुलिस रिकार्ड में केवल वे कारनामे दर्ज हैं जिनमें मैं नाकामयाब हो गया। वे नहीं जिनमें कामयाब हुआ हूं। तुम जैसे पुलिस इंस्पेक्टर का 'उदर' भरने लायक रकम तो मैं चाहे जब चाहे जहां से पैदा कर सकता हूं।"

"यानी जेब में नहीं है, कमाकर दोगे मेरी मुंहमांगी रकम।"

"तुम्हें एतराज है?"

"मुंबई में अपने दोस्त की मौत का मातम मनाने आये हो या कमाने?"

"सौदा मंजूर करो तो बताऊं।"

"मतलब?"

"सबसे पहला सवाल ये है कि हमारे बीच सौदा हो सकता है या नहीं?"
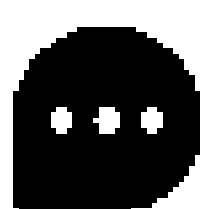
“पचास लाख।” ठकरियाल ने एक झटके से कह दिया।

“डन!” अवतार मुस्कराया---“मैंने कहा था न, सब बिकते हैं।”

“कब मिलेंगे?”

“कब चाहिए?”

“दस दिन के अंदर।”

“नौवें दिन मिल जायेंगे।”

“गारंटी?”

“मतलब?”

“दस दिन तुम्हें खुला छोड़ना पड़ेगा। इस बीच फरार हो गये तो किसकी मां को मां कहूंगा?”

“बायोडेटा पढ़ा है मेरा?”

“पढ़ा है। अब भी थाने में है।”

“उसमें यह नहीं लिखा---गिल वादे का पक्का है?”

"लिखा है।" टकरियाल ने कहा---"तुम्हारे जितने भी साथी अभी तक पकड़े गये हैं, सबने पुलिस को एक ही बयान दिया है---जुबान के बहुत पाबंद हो तुम। एक बार जो कह देते हो उसे पूरा करते हो।"

"इसके बावजूद गारंटी की जरूरत है?"

"वे वादे तुमने अपने अपराधी साथियों से किये थे?"

बेहिचक कह दिया पट्ठे ने---"रिश्वतखोर पुलिसिया क्या अपराधी नहीं होता?"

सकपकाकर रह गया टकरियाल।

"बुरा मत मानना दोस्त। थोड़ा मुंहफट भी हूं। पुलिस के पास मौजूद बायोडेटा में यह बात नहीं लिखी।" अवतार गिल अब निश्चिन्त और मस्त नजर आ रहा था---"वैसे भी जुबान की कीमत आजकल केवल क्राइम की दुनिया में रह गई है। दूसरी बात---तुम पुलिस वाले हो, मैं वांटेड मुजरिम। चोली-दामन जैसा साथ होता है दोनों का। तुमसे पंगा लेकर भला नहीं हो सकता मेरा। हां, दोस्ती के फायदे ही फायदे हैं। आज भी और भविष्य में भी। इसलिए पचास लाख देकर तुम्हारी और अपनी दोस्ती को मजबूत करना चाहूंगा।"

"यही सब सोचकर सौदा किया है।"

"सौदा तो हो चुका।"

"अब बताओ---किस काम से आये हो मुंबई?"

अजीब रहस्यमय स्वर में पूछा गिल ने---"बता दूं?"

"जब दोस्ती हो ही गई तो बताने में क्या हर्ज है?"

गिल ने एक नजर बैठक कक्ष के दरवाजे पर डाली।

ठकरियाल उसे लॉबी की तरफ से बंद कर आया था।

खुला भी होता तो वे दूर थे, यहां की आवाजें वहां नहीं सुनी जा सकती थीं। इसके बावजूद फुसफुसाकर बहुत ही धीमे स्वर में कहा गिल ने---"मैं यहां राजदान की दौलत पर हाथ साफ करने आया हूं।"

"क-क्या?" चीख सी निकल गई ठकरियाल के हलक से।

बहुत ही जबरदस्त झटका लगा था उसके जेहन को।

इतना तगड़ा कि कुछ कह न सका।

आंखें और मुंह फाड़े केवल देखता रह गया गिल की तरफ।

गिल ने कहा---"अचानक मेरे सिर पर तुम्हें सींग नजर

आने लगे हैं क्या?"

"बड़ी ही अजीब बात कही तुमने। भला यह ख्याल तुम्हारे दिमाग में कब आया?"

"ख्याल का क्या है! वो साला तो अखबार पढ़कर ही आ गया था।" अवतार गिल कहता चला गया---"जब पढ़ा---राजदान इतना अमीर आदमी था तो सोचा, खूब तरक्की की साले ने। बचपन में तो निहायत ही गरीब फैमिली से था। ऐसे धनकुबेरों की तो हमेशा से तलाश रही है मुझे। अपना यार ही निकल आया। वह भी वह, जो मर चुका है। बस, चल पड़ा यह सोचकर मुंबई की तरफ कि देखें, क्या जुगाड़ भिड़ सकता है?"

"यानी तुम्हारे दिमाग में कोई निश्चित योजना नहीं है?"

"यहां पहुंचने से पहले नहीं थी। केवल यही सोचकर चल पड़ा था---वहां पहुंचकर ही संभावनाएं तलाशूंगा कहां, क्या हो सकता है! मगर यहां पहुंचने के बाद संभावना तलाशने में ज्यादा हाथ-पैर नहीं मारने पड़े। रास्ता एक तरह से मेरे सामने खुला पड़ा है।"

"मैं समझा नहीं।"

"बायोडेटा में लिखी मेरी एक और खूबी को याद करो।"

"कौन सी खूबी?"

"अवतार गिल खूबसूरत लड़कियों का रसिया है। माहिर है उन्हें पटाने में। पुलिस वालों को खास हिदायत दी गई है---गिल किसी खूबसूरत लड़की के आस-पास हो सकता है।"

"त-तो?"

"यार की घरवाली लड़की न सही, औरत सही, मगर है लाखों लड़कियों से खूबसूरत। वैसी, जिसे देखकर किसी शायर ने औरत को हूर की परी कहा होगा। क्या रंग है पट्ठी का। ताजे-ताजे पके सेब जैसा। क्या रसभरे होंठ हैं, देखते ही जी चाहता है एक बार मुंह में भरकर छोड़े ही न जायें। और आंखें। सच कहूं इंस्पेक्टर, लाखों लड़कियां देखी हैं मैंने मगर इतनी बड़ी-बड़ी आंखें किसी की नहीं देखीं। सच्चे मोतियों सी जगमगाहट है उनमें। जब वह पलकें झुकाती है तो लगता है---सीप ने मोतियों को छुपा लिया है। उसके तन पर मुझे सफेद धोती और ब्लाऊज बिल्कुल अच्छे नहीं लगे। कल्पनाओं में तब की दिव्या उभरी जब राजदान जीवित होगा। लिपस्टिक लगाने के बाद दहकते अंगारे नजर आते होंगे उसके होंठ। माथे पर लगी सुर्ख बिंदी ऐसी लगती होगी जैसे पूरब से उदय होता सूरज। वाह! बहुत ही बुलन्द नसीब पाया था मेरे जालिम दोस्त ने। चारों तरफ दौलत का

भण्डार, बगल में हूर की परी।"

"तुम तो मतलब की बातें छोड़कर उसकी सुन्दरता के वर्णन में खो गये।"

"मतलब की बातें अवतार गिल के दिलो-दिमाग से न कभी पहले निकली हैं, न आगे निकलेंगी लेकिन वह है ही ऐसी।... ऐसी कि मुझे लगता है---पहली बार किसी से सच्ची मुहब्बत हो रही है मुझे। रश्क हो रहा है राजदान के भाग्य से। मगर अब कैसा रश्क! वह तो रहा नहीं, उसके भाग्य को मैं अपना भाग्य बना सकता हूं।"

"गिल!" ठकरियाल गुर्राया---"कहीं पागल तो नहीं हो गये हो तुम?"

"वाकई! लग तो मुझे भी रहा है ऐसा। ऐसा कि जीवन में पहली बार मैं किसी औरत को देखकर पागल हुआ हूं। बहुत लड़कियां देखी हैं मैंने। जिसे चाहा उसे भोगा भी है। मगर इस कदर पागल कोई नहीं कर सकी। जी चाहता है, उसे केवल भोगूं ही नहीं, पत्नी बना लूं अपनी। कब तक यूं ही भटकता रहूंगा? ठहराव तो आना ही चाहिए कहीं। शादी तो करनी ही पड़ेगी। फिर यहीं क्यों नहीं? दिव्या ही क्यों नहीं? ये विला ही कौन सी बुरी है।"

"तुम एक वांटेड मुजरिम हो।"

"तो?"

"यहां बसने का ख्याल किया तो धरे जाओगे।"

"इंस्पेक्टर।" गिल ने बुरा सा मुंह बनाया---"तुम तो यार मेरा नशा ही उतारने पर लग गये।"

"जरूरी भी यही है।"

"नहीं।... जो नशा दिव्या को देखकर मुझे चढ़ गया है, उसे उतारने के पक्ष में मैं बिल्कुल नहीं हूं।" गिल कहता चला गया---"होश संभालने के बाद से दो ही चीजों का रसिया पाया मैंने खुद को---दौलत और औरत। दोनों चीजें हैं यहां। बेशुमार दौलत। अनमोल औरत। अपने ऊपर पूरा विश्वास है मुझे। बहुत जल्द दिव्या को शीशे में उतार लूंगा। वैसे भी अभी उम्र ही क्या है बेचारी की। 'पक' जाती तो शायद मेरे जैसे किसी शख्स के झांसे में नहीं आती। अभी तो खुद..खुद उसका शरीर वह मांगेगा जिसे बुजुर्गों ने 'प्राकृतिक भूख' कहा है। उसकी वह भूख मेरी मदद करेगी। मगर, यह भी ठीक ही कहा तुमने। वांटेड आदमी हूं। इण्डियन पुलिस चैन से नहीं रहने देगी जबकि दिव्या का रसास्वादन करने के लिए चैन की सबसे ज्यादा जरूरत होगी। करना यह पड़ेगा कि

यहां से सबकुछ समेट-समाटकर उसके साथ कहीं विदेश जा बसूं।"

"अपना पूरा प्लान तुम एक पुलिसिए को बता रहे हो।"

"पुलिसिया कहां, अब तो चोर-चोर मौसेरे भाई हैं हम। वैसे भी, मेरी क्राइम लाइफ का एक्सपीरियंस है---वारदात छोटी हो या बड़ी, जिस थानाक्षेत्र में करो---उसके थानेदार को दोस्त जरूर बना लो। सारे खतरे टल जाते हैं। समस्याएं ही सॉल्व हो जाती हैं। पचास लाख का वादा तो कर ही चुका हूं। वे केवल मुझे जेल न भेजने के 'एवज' में मिलेंगे। रही उस काम की बात जिसके लिए मैंने तुमसे अभी-अभी डिस्कशन किया। उसे निर्विघ्न होने देने की फीस अलग से मिलेगी। मुंहमांगी। राजदान के उक्त खजाने में कोई कमी आने वाली नहीं है।"

मन ही मन हंसा ठकरियाल। जी चाहा, कहे---'भ्रम नामक गैस से भरी किस हवा में उड़ रहे हो अवतार प्यारे। पांच करोड़ की पॉलिसी के अलावा कुछ नहीं है दिव्या के पल्ले में। बाकी सब गिरवी पड़ा है। यह विला भी। और जैसा जाल राजदान बिछा गया है उसके रहते पांच करोड़ तक पहुंचना भी एवरेस्ट पर चढ़ने से कहीं ज्यादा कठिन है।"

मगर, यह सब कहा नहीं उसने।

इससे तो एक ही झटके में गिल का सारा नशा काफूर हो जाता।

नशा काफूर होने का मतलब था---उसके अपने प्लान पर पानी फिर जाना।

दरअसल उसके दिमाग में गिल का बेहतरीन 'यूज' आ चुका था।

अब, उसने उसे परखने वाले सवाल करने शुरू किये---"अगर दिव्या इतनी धनवान नहीं होती तो क्या तुम तब भी उसे...

"ऐसी कल्पना तक मेरा जायका खराब कर देती है इंस्पेक्टर।"

"एक सवाल पूछ रहा हूं।"

"बगैर दौलत की चाशनी में लिपटी औरत भी कोई औरत होती है।"

ठकरियाल मुस्कराया---"अभी तो तुम दिव्या के सौन्दर्य के कसीदे पढ़ रहे थे?"

"झूठी तारीफ नहीं कर रहा था।"

"फिर?"

"फिर क्या? छोड़ता तो उस अवस्था में भी नहीं उसे। चूसता तो जरूर। चीज है ही इस लायक। बस घंटी बजाकर गले में टांगने के विचार को कैंसिल कर देता।"

"एक बात और पूछूं?"

"दोस्त बन गये हो, चाहे जितनी बातें पूछो।"

"राजदान तुम्हारे बचपन का दोस्त था। दिव्या उसकी बीवी है। सुना है सब धोखा दे सकते हैं पर बचपन के दोस्त धोखा नहीं दे सकते।"

"सरकारी गजट में लिखी है ये बात?"

"मतलब?"

"मैं समझ गया तुम क्या कहना चाहते हो? यह कि---यार के माल और बीवी पर हाथ साफ करने में क्या मुझे जरा भी हिचक नहीं होगी? जवाब बहुत साफ है। एक बार फिर थाने जाकर मेरे बायोडेटा को पढ़ना, अवतार गिल को क्राइम की दुनिया में आना ही इसलिए पड़ा क्योंकि उसके बड़े भाई ने, उस भाई ने मुकम्मल पैतृक सम्पत्ति पर अपना अधिकार जमा लिया था, जिसे वह देवता की तरह पूजा करता था।

एक कानी पाई तक नहीं दी थी उसने मुझे। सर्वेन्ट्स क्वार्टर तक में उतनी जगह नहीं दी जिसमें उकडू होकर कुत्ते के बच्चे की तरह पड़ा रहता। भाई, भाभी और उनके बच्चे ने धक्के देकर निकाल दिया था महल जैसे घर से...।"

कहते-कहते गिल भावुक हो उठा। चेहरा भभकने लगा था उसका। कहता चला गया---"उस वक्त किसके पास नहीं गया था मैं मदद के लिए? सबने दुत्कार दिया। उस घटना ने मुझे बताया---मां-बाप, भाई-बहन, पत्नी-बच्चे और दोस्त। दुनिया का कोई भी रिश्ता वास्तव में अपना नहीं होता। जो इस भंवर जाल में फंसकर जीता है, मेरी तरह धोखा खाता है। सब साले अपने-अपने स्वार्थ के कारण एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। जहां स्वार्थ टकराये, सब बिखर जाता है। ऐसी लाइफ से गुजरा है अवतार गिल और उस अवतार गिल से तुम एक बेवकूफाना सवाल पूछने वाले थे। अरे, काहे का बचपन? काहे की दोस्ती? सब दौलत के दीवाने हैं। अपनों की ठोकरों ने मुझे भी वही बना दिया। कोई संवेदना जिन्दा नहीं है अब मेरे अन्दर। अच्छा है राजदान मर चुका है। अगर मुझे पहले, उसके जिन्दा रहते पता लग जाता उसके पास इतनी दौलत और ऐसी खूबसूरत बीवी है तो क्यों बैंक में डाका डालता? क्यों कॉल गर्ल्स रैकेट चलाने जैसा जलील धंधा करता? सीधा यहीं न आ धमकता। दिव्या को शीशे में उतारता। राजदान का मर्डर करता और जा बैठता उस पायदान पर जहां राजदान बैठा था। मगर, जो हुआ---अच्छा

ही हुआ। अब उसका पायदान कब्जाने के लिए अपने हाथ खून से नहीं रंगने पड़ेंगे मुझे। कब से सोच रहा था छोटी-मोटी चोरियों से पीछा छूटे, कोई बड़ा दांव हाथ लगे ताकि चैन से जी सकूं। ठीक ही कहा है किसी ने--- ऊपर वाले के घर देर है, अंधेर नहीं। यहां पहुंचने से पहले मैंने सोचा भी नहीं था इतना बड़ा दांव मेरा इंतजार कर रहा है।"

यह सब कहते वक्त अवतार गिल की जो हालत हो गई थी उसने ठकरियाल के दिमाग में खुशियों के अनार भर दिये। ऐसा लगा था---जैसे अंजाने में वह गिल की दुखती रग पर हाथ रख बैठा है।

किसी अंजान शख्सियत की इस बात पर आज उसे विश्वास हो गया कि हर आदमी की कोई न कोई दुखती रग जरूर होती है। उधर, अवतार खुद को भावुकता के भंवर से निकालने की कोशिश कर रहा था, इधर ठकरियाल को विश्वास हो चला कि गिल के जरिए वह पूरी तरह बेकाबू हो चले हालात पर काबू पा सकता है। सारी योजना को अपने दिमाग में घुमाते हुए उसने गिल से कहा---"मैं तुम्हें वकीलचंद से ही नहीं, भट्टाचार्य और अखिलेश से भी मिला सकता हूं।"

"ओह!... सभी पधारे हुए हैं।"

"भट्टाचार्य तो पहले ही से राजदान के 'टच' में था।

वही देखभाल कर रहा था उसकी।"

"देखभाल से मतलब?"

"डॉक्टर है न वह!"

"ओह, डॉक्टर बन गया पट्ठा। होशियार था पढ़ने में।"

"अखिलेश राजदान की हत्या की खबर सुनकर आया है।"

"वह क्या है आजकल?"

ठकरियाल ने बता दिया।

सुनने के बाद अवतार बोला---"एक धनकुबेर बन गया था। दूसरा डॉक्टर। तीसरा वकील। चौथा जासूस। एक साला मैं ही रह गया, फद्दड़ का फद्दड़!"

"अखिलेश से तुम्हें सावधान रहना होगा।"

"कारण?"

"अपने पेशे से कोई समझौता नहीं करता वह। अगर उसे पता लग गया तुम कितने बड़े क्रिमिनल बन चुके हो तो वह

बचपन की दोस्ती का कोई लिहाज नहीं करेगा। ताक पर रख देगा उसे और तुम्हें टेंटवे से पकड़कर कानून के हवाले कर देगा।"

"गले में ढोल डालकर सड़कों पर चिल्लाता नहीं फिरता मैं कि मैं क्रिमिनल हूं।"

"बताना अपना फर्ज समझा कि कहीं तुम बचपन की दोस्ती के बहाव में बहकर...

"बता चुका हूं इंस्पैक्टर। ऐसे बहावों में बहने से मैंने उसी दिन तौबा कर ली थी जिस दिन भैया-भाभी और उनके बच्चों द्वारा धक्के देकर घर से निकाल दिया गया था।"

"एक और सनक सवार है अखिलेश के दिमाग पर।"

"वह क्या?"

"उसे लगता है---राजदान का हत्यारा बबलू नहीं है। रि-इनवेस्टीगेशन कर रहा है वह।"

"बेस?"

ठकरियाल ने बता दिया।

सुनकर रोमांचित सा हो उठा अवतार। आंखों से दिलचस्पियां झांक रही थीं। बोला---"बबलू द्वारा राजदान की हत्या का सीधा-सादा नजर आने वाला यह मामला तो तुम्हारे यह बताने के बाद अचानक रहस्यमय मोड़ ले गया है। साबित होता है राजदान धनकुबेर ही नहीं था, बहुत ही ज्यादा घिसा हुआ था। मरने से पहले ही अखिलेश को लेटर लिख दिया पट्ठे ने। उसे मालूम था कब, कौन, क्यों और कैसे उसका मर्डर करेगा और उसने करवा लिया। मर्डर करवा लिया अपना। जीते जी अपने संभावित हत्यारों का कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि रोका तक नहीं। मर जाने दिया खुद को। यह सब सुनकर तो लगता है या तो अपने अंतिम समय में राजदान सनक गया था या... या दुनिया का सबसे आश्चर्यजनक शख्स था वह। क्यों? क्यों किया उसने ऐसा? क्यों हो जाने दिया अपना मर्डर और फिर क्यों उसकी इन्वेस्टीगेशन के लिए अखिलेश को नियुक्त कर गया?"

"अखिलेश इन्हीं सवालों के जवाब तलाशने की कोशिश कर रहा है।"

"करनी ही चाहिए। सवाल वाकई दिलचस्प हैं। मुमकिन है जवाब इससे भी दिलचस्प हो। मगर मुझे इस झमेले से क्या लेना-देना? बबलू ने मारा हो या काले चोर ने। मेरे लिए इतना काफी है राजदान अब इस दुनिया में नहीं है और उसकी बीवी पर लाइन मारी जाये तो वह लाइन पर आ
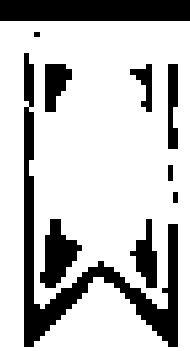
सकती है।"

"तुम्हें भले ही लेना-देना न हो मगर मुझे है।"

"मतलब?"

"मैंने यह सब तुम्हें एक खास मकसद से बताया है।"

"मकसद स्पष्ट करो।"

"दोस्त होने के नाते अखिलेश तुम्हें सब कुछ बतायेगा। यह भी कि इस दिशा में अब तक वह कितनी प्रगति कर चुका है और आगे क्या सोच रहा है, किस रास्ते पर कदम बढ़ाने वाला है। तुम्हें चौबीस घंटे उसके साथ रहना है और...

"उसकी हर गतिविधियों की रिपोर्ट तुम्हें देनी है।"

ठकरियाल मुस्कराया---"समझदार हो।"

"तुम पुलिस वालों की यह सबसे गंदी आदत होती है।"

"मतलब?"

"चौबीस घंटे यही सोचते रहते हो---कहां, किस तरह अपना मुखबिर फिट किया जाये?"

"तुम मुखबिर नहीं, उसके साथ रहने वाले मेरे जासूस होगे।"

"एक ही बात होती है इंस्पेक्टर साहब। एक ही बात होती है।" अवतार ने कहा---"वैसे क्या मैं जान सकता हूं तुम अखिलेश की गतिविधियों पर नजर क्यों रखना चाहते हो?"

"ताकि उससे पहले केस हल कर सकूं।"

"ओह!... समझ गया। प्राइवेट डिटेक्टिव और पुलिस वालों में हमेशा लगी रहती है।"

"ऐतराज तो नहीं है तुम्हें कोई?"

"मुझे क्या एतराज होगा?"

"अखिलेश तुम्हारा बचपन का याड़ी है।"

"वह बचपन का है, जो बीत चुका है। तुम ताजे-ताजे दोस्त बने हो। फायदेमंद हो। वह साला भला क्या फायदा कर सकता है मेरा! बल्कि जैसा कि तुमने बताया---नुकसान ही कर सकता है और फिर, रिश्ता बचपन का हो या एक सेकण्ड पुराना। केवल और केवल दौलत की गांठ ही बांधकर रख सकती है उसे। वह गांठ तुम्हारे और मेरे बीच बंध चुकी है। तुमसे दोस्ती निभाकर मैं इस विला का मालिक

बनने वाला हूं और मुझसे दोस्ती निभाकर तुम होने वाले हो---मालामाल। साथ ही पाने वाले हो दुनिया के सबसे अनोखेकेस को अखिलेश से पहले हल करने का तमगा।... तो निचोड़ ये निकला इंस्पेक्टर साहब---आप मुझसे दोस्ती निभाने पर मजबूर हैं, मैं आपसे। एक-दूसरे को धोखा देने का मतलब होगा---दोनों का बंटाधार। ऐसा न तुम चाहोगे न मैं। सो, वही होगा जो चाहते हो। अब सीधे-साधे बताओ---अखिलेश मिलेगा कहां?"

"मेरा मोबाइल नम्बर नोट करो। ठीक दो बजे उस पर फोन करना। तब बताऊंगा।"

ठकरियाल ने बता दिया।

"ओ.के.।" गिल ने कहा---"वैसे क्या मैं इस सावधानी की वजह जान सकता हूं?"

"कौन सी सावधानी?"

"अखिलेश का पता अभी नहीं बता रहे, दो बजे बताओगे।"

"पता करना पड़ेगा न।"

"ओह! तो अभी तक जनाब को उसका पता तक मालूम नहीं।"

ठकरियाल केवल मुस्कराकर रह गया।

"अब सवाल रह गया हुस्न की परी और उसके देवर का। उन्हें क्या पढ़ाओगे तुम?"

"पढ़ाने से मतलब?"

"एक हत्यारे को। बैंक लुटेरे को। वांटेड मुजरिम को तुमने छोड़ क्यों दिया?"

बड़ी ही अजीब मुस्कान उभरी ठकरियाल के होठों पर। बोला---"तुम्हें यह गलतफहमी कैसे हो गयी गिल प्यारे कि ठकरियाल तुम्हें छोड़ देने वाला है?"

"क्या मतलब?" अवतार बुरी तरह चौंका---"क्या इतनी सब बातों के बावजूद तुम...

वाक्य पूरा न हो सका अवतार का।

उससे पहले ही ठकरियाल के रिवाल्वर की मूठ का प्रहार उसकी कनपटी पर हुआ।

रंग-बिरंगे तारे नाच गये अवतार की आंखों के सामने।

यूं लड़खड़ाया जैसे कैपेसिटी से कई गुना ज्यादा पी गया

शराबी लड़खड़ाया हो।

मस्तिष्क पर काली चादर खिंचती चली गई। अंत तक गिल की ब्राउन आंखों में आश्चर्य का भाव था। दिमाग में सवाल---सारी बातें तय हो जाने के बावजूद ठकरियाल ने यह किया तो किया क्यों?

अवतार के बेहोश जिस्म को कंधे पर डाले ठकरियाल बैठक में पहुंचा।

उन्हें इस पोजीशन में देखकर दिव्या और देवांश की आंखों में हैरत के भाव उभर आये।

देवांश ने पूछा---"क्या है ये सब?"

"नजर नहीं आ रहा, बैंक लुटेरा बेहोश हो चुका है।"

"मगर कैसे?"

"मैंने किया।"

"क-क्यों?"

"और क्या यूं ही छोड़ देता? गिरफ्तार नहीं करता इसे?"

"ओह!"

दिव्या ने पूछा---"लेकिन एकान्त में बातें क्या कीं इसने?"

"रिश्वत देने की बात कर रहा था ताकि मैं गिरफ्तार न करूं।"

देवांश ने ठकरियाल की तरफ संदिग्ध नजरों से देखते हुए कहा---"और तुमने पेशकश ठुकरा दी?"

"नहीं।"

"क-क्या मतलब?" उसके अजीब जवाब पर दोनों चौंक पड़े।

"ये वो मोहरा है जिससे हम राजदान को मात देने वाले हैं।"

"बात कुछ समझ में नहीं आ रही।"

ठकरियाल ने अवतार का बेहोश जिस्म चांदनी पर डाला। एक सिगरेट सुलगाई और कहना शुरू किया---"हम जान चुके हैं, राजदान ने सारा गेम बबलू और अपने तीन पुराने दोस्तों के बेस पर खेला है। भट्टाचार्य, वकीलचंद और अखिलेश। इनमें भी सबसे प्रमुख अखिलेश है अर्थात् सारी बागडोर उसी के हाथ में है। वही इन सबको बल्कि पूरे मिशन को हैंडिल कर रहा है।"

"राजदान के क्लोन को भूल रहे हो तुम।"

"मतलब?"

"मेरे विचार से तो असली बागडोर उसके हाथ में है।" देवांश ने कहा---"अखिलेश पर मौजूद राजदान के लेटर पर गौर करो। कातिलों के रूप में हमारे नाम नहीं लिखे हैं उसमें अर्थात् पूरी जानकारी उससे भी छुपाई गई है जबकि क्लोन की जानकारी पर गौर किया जाये तो स्पष्ट हो जाता है---उससे कुछ नहीं छुपा है। वह सब पता है उसे जो राजदान को पता था। ऐसी अवस्था में किसे राजदान का प्रमुख मोहरा कहोगे?"

ठकरियाल ने बड़ी ही विचित्र मुस्कान के साथ कहा---"अब मेरे पेट में दर्द हो रहा है।"

"मतलब?"

"गोला सा उठ रहा है गैस का। जी चाह रहा है---उस भेद को बता ही दूं जिसे रात से अब तक पचाये घूम रहा हूं।"

"क्या पचाये घूम रहे हो?"

"असल में अखिलेश ही राजदान का क्लोन है।"

"क-क्या?" दोनों के मुंह इस तरह खुले रह गये जैसे टी.वी. पर आने वाले किसी सीरियल के आज के एपीसोड का अन्त हुआ हो।
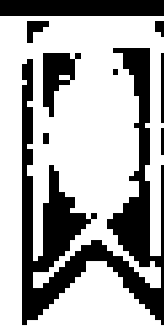
"यही!" ठकरियाल बोला---"मुझे पूरा विश्वास था यह भेद जानने के बाद तुम दोनों की यही हालत हो जायेगी। अब मुद्राओं को ठीक करो। सीरियल की अगली कड़ी प्रस्तुत करनी है।"

"म-मगर...।" देवांश का आश्चर्य कम होकर नहीं दे रहा था---"यह बात तुम कैसे कह सकते हो?"

"क्योंकि खोपड़े में दिमाग है मेरे। वह दिमाग जिसे राजदान की तूफानी चालों ने कुछ देर के लिए 'फ्रीज' कर दिया था। रात के बाद से उसके कलपुर्जों ने फिर से हिलना-डुलना शुरू कर दिया है।"

"हम कुछ समझे नहीं।"

ठकरियाल को उन दोनों पर अपने दिमाग की 'धाक' जमाना ही जरूरी लग रहा था। इसलिए थोड़े ड्रॉमेटिक अन्दाज में बोला---"मैंने रात ही ताड़ लिया था उसे।"

"मगर कैसे?" अधीर हो चुका देवांश लगभग चीख पड़ा।

"अपनी नाक से।" ठकरियाल ने थोड़ा सस्पैंस और बनाया। दोनों के मुंह से हैरान स्वर निकला---"न-नाक से?"

"सोचो।.... भला नाक से कैसे पहचान सकता है कोई किसी

को?"

"प-प्लीज! प्लीज ठकरियाल, ज्यादा सस्पैंस मत बनाओ।" दिव्या उतनी ही बेचैन नजर आने लगी जितनी ठकरियाल कर देना चाहता था---"बताओ तुमने उसे कैसे पहचाना?"

"सुल्फे की गंध आ रही थी उसके मुंह से।"

एक बार फिर 'फ्रीज' हो गये दिव्या और देवांश।

ठकरियाल ने कहना जारी रखा---"तब, जब मैं और वह गुत्थमगुत्था हुए फर्श पर लुढ़क रहे थे।"

दोनों में से अब भी कोई मुंह से आवाज न निकाल सका।

"लकवा मार गया क्या?" ठकरियाल ने पूछा।

देवांश चौंका। बोला---"क्या तुम्हें पूरा यकीन है, वह वही है?"

"पूरे से भी ज्यादा।"

"लेकिन।" दिव्या बोली---"कैसे हो सकता है ऐसा? क्लोन को तो सबकुछ मालूम है। यह भी कि राजदान की मौत के जिम्मेदार हम दोनों हैं। जबकि अखिलेश के पास जो लेटर

है, उसमें हमारी तरफ इशारा तक नहीं किया गया है।"

"दो लेटर नहीं लिखे हो सकते उसे राजदान ने?"

"दो लेटर?"

"एक वह जिसमें सबकुछ लिखा हो। अपना क्लोन बनकर ड्रामा करने के निर्देश हों और दूसरा वह जो उसने हमें दिखाया।"

"दो लेटर्स का फायदा?"

"दूसरा लेटर उसने अखिलेश को लिखा ही इस निर्देश के साथ होगा कि उसे हमें दिखा दे।"

"क्यों?"

"ताकि हम और आतंकित हों। हलकान हों। चैन की एक सांस तक न आये हमें। इस सारे खेल के पीछे एकमात्र यही तो मकसद है उसका। वरना, एक ही झटके में करना चाहें तो उसके प्यादे क्या नहीं कर सकते? जो सबकुछ जानते हैं, जिनके पास पाइप पर चढ़ते तुम्हारा फोटो है, उन्हें सच्चाई उजागर करने में एक से ज्यादा पल नहीं लगेगा तो क्यों? एक ही कारण समझ में आता है---उनका मकसद एक ही झटके में खेल खत्म करना नहीं है। उनका मकसद

है---हमसे खिलवाड़ करते रहना। हमारे बीच दरार डाल देना। अविश्वास की ऐसी खाई खोद देना जिसमें आपस में लड़कर गिरें और गर्त हो जायें।"

"यही। बिल्कुल यही कहना चाहता हूं मैं भी मगर दिव्या समझने को ही तैयार नहीं है।" देवांश कहता चला गया---"अभी तक शक कर रही है मुझ पर। फंस गई है उनकी चाल में।"

"मगर अब!" ठकरियाल अपनी धुन में कहता चला गया---"उनका यही मंसूबा उन्हें लेकर डूबने वाला है। उनके इरादे हमारे लिए वरदान बनने वाले हैं।"

"वह कैसे?"

"जरा सोचो, अगर उन्होंने हमारे साथ खिलवाड़ करने का इरादा न किया होता। सीधे-सीधे हमारे किये की सजा देने की ठानी होती तो क्या हम इस वक्त जेल में नहीं होते?"

"पक्के तौर पर होते।"

"जबकि अब हमारे पास उन्हें मात देने वाला मोहरा है।"

देवांश ने बेहोश अवतार की तरफ इशारा करके पूछा---"वो?"

"यस।"

"कैसे मात देना चाहते हो इसके जरिए?"

"मेरे और इसके बीच सौदा हो चुका है। मैं इसे गिरफ्तार नहीं करूंगा। कानून के हवाले नहीं करूंगा, बदले में यह उनके बीच जायेगा। अखिलेश से मिलेगा। दोस्त है ही उनका। बहुत जल्द उनका विश्वास जीत लेगा। उनके हर इरादे की भनक हमें लगती रहेगी।"

"मगर... अभी तो कह रहे थे तुमने इसे गिरफ्तार कर लिया है।"

"तुम्हारी नजरों में।"

"मतलब?"

"कुछ बातों के मतलब बगैर बताये भी समझ जाया करो।" ठकरियाल ने मुस्कुराकर कहा---"अब यह तो मैंने इसे बताया नहीं है कि हम तीनों ही एक ही थाली में लुढ़क रहे बैंगन हैं। इसने कहा---अगर तुम मुझे गिरफ्तार नहीं करोगे तो बैठक में जो दो शख्स हैं उन्हें क्या जवाब दोगे? वे जान चुके हैं मैं हत्यारा, बैंक लुटेरा और जाने क्या-क्या हूं? मैंने यह कहते हुए इसकी कनपटी पर रिवाल्वर का दस्ता जड़ दिया कि 'लो', उनकी नजर में तुम्हें गिरफ्तार किये लेता

हूं।"

"गुड!" सारी सिच्वेशन समझ में आने के बाद देवांश के मुंह से निकला।

"लेकिन... जैसा कि तुमने कहा---अखिलेश को राजदान का क्लोन होने के नाते सब मालूम है।" दिव्या बोली---"इस अवस्था में तो हो सकता है, वह इसे भी सब कुछ बता दे। यदि इसे मालूम हो गया हम तीनों मिले हुए हैं तो..

"यही तो देखना है। यह कि---वे इसे क्या बताते हैं?"

"दो और बड़े खतरे हैं हमारे सामने।" देवांश ने कहा।

"उन्हें भी उगलो।"

"पहला---पुराना दोस्त होने के नाते मुमकिन है ये उनसे मिल जाये।"

"ऐसा नहीं होगा। कारण---यह उनमें से नहीं है जो रिश्ता नातों या पुरानी दोस्ती के नाम पर खुद को कुर्बान कर देते हैं। पक्का मुजरिम बन चुका है। निहायत ही प्रैक्टिकल और खालिस प्रोफेशनल आदमी है। दीवाना है दौलत का। केवल अपना फायदा देखता है और फायदा इसे मेरा साथ देने में है। इस नतीजे पर मैं इसके 'कहने' के बेस पर नहीं, बल्कि

उस बायोडेटा के बेस पर पहुंचा हूं जो इस वक्त भी थाने में पड़ी फाइलों के बीच धूल चाट रहा है। खुद को कानून से बचाने के लिए। जेल की हवा खाने से रोकने के लिए यह मेरा साथ देगा। अखिलेश एण्ड कम्पनी इसका कोई भला नहीं कर सकती।"

"और अगर इसने किसी का भी साथ नहीं दिया?"

"मतलब?"

"तुमने इसे पहचान लिया है। इस बात से अंदर से अंदर डरा हुआ तो होगा ही ये। क्या पता यही फैसला कर डाले---मैं इस झमेले में ही क्यों पडूं? और...गधे के सींग की तरह मुंबई से गायब हो जाये।"

ठकरियाल ने बड़ी ही रहस्यमय मुस्कान के साथ कहा---"ऐसा हरगिज नहीं करेगा ये।"

"कारण?"

"न ही पूछो तो बेहतर होगा। बस यकीन करो मुझ पर, फरार होने का विचार तक इसके दिमाग में नहीं आयेगा।"

"मगर क्यों?" देवांश ने कहा---"इसकी जगह मैं होता तो ऐसे हालात में यकीनन यही करता।"

"भले ही तुम्हारे दिमाग में दिव्या के जरिए राजदान की अकूत दौलत का मालिक बनने का विचार आ चुकता?"

"इसका क्या मतलब?"

जवाब में ठकरियाल ने उन्हें अवतार गिल के पूरे इरादे बता दिये। सुनने के बाद दिव्या बोली---"यकीनन यह इसी चक्कर में है। डोरे डालने की कोशिश कर रहा था मुझ पर।"

"अब बोलो, क्या ये अपना इतना बड़ा मिशन छोड़कर फरार होने के बारे में सोचेगा?"

"लेकिन।" देवांश बोला---"वह धन है ही कहां जिसके भ्रम में उसने ये मंसूबे बनाये हैं?"

"हम इसे क्यों बतायें वह धन कहीं है ही नहीं।"

"मेरा मतलब---किसी दूसरे माध्यम से भी तो पता लग सकता है इसे। उस वक्त...

"उस वक्त से पहले मेरे हाथ इस सहित अखिलेश एण्ड कम्पनी की गर्दन तक पहुंच चुके होंगे। मुख्य काम होगा---उनके पास मौजूद हर उस चीज को हासिल करके नष्ट कर देना जिसके बूते पर वे यह माने बैठे हैं कि जिस

क्षण चाहेंगे सच्चाई को उजागर कर देंगे। बबलू को बेकुसूर सिद्ध करके हमें राजदान का हत्यारा बना देंगे। वे चाहे राजदान के लेटर्स हों, केसिट्स हों या पाइप पर चढ़ते तुम्हारा फोटो। वह सबकुछ नष्ट होते ही उनकी हालत बगैर हाथ-पैर के आदमी जैसी होगी। जो वे जानते हैं, उसे केवल कह सकेंगे। सिद्ध नहीं कर सकेंगे। और कोर्ट में किसी के कहने से कुछ नहीं होता। उस वक्त हम ठीक उसी तरह उनकी चीख-चिल्लाहट और कसमसाहट का मजा लूटते पांच करोड़ का भोग करेंगे जैसे अब तक उन्होंने हमारी कमजोरियों का मजा लूटा है।"

दिव्या और देवांश को विश्वास आकर नहीं दे रहा था कि वह दिन आयेगा।

ठकरियाल उस वक्त सादे लिबास में था।

सिर पर एक ऐसी कैप जो चेहरे के अधिकांश भाग को छुपाये हुए थी।

पिछले करीब एक घण्टे से वह सेन्टूर होटल की लॉबी में बैठा सिगरेट फूंक रहा था।

पता कर चुका था---अखिलेश अपने सुईट में है।

ठकरियाल को उसके बाहर निकलने का इन्तजार था।

करीब सवा घण्टे बाद इंतजार खत्म हुआ।

अखिलेश को लिफ्ट से निकलकर लॉबी में कदम रखते देखा उसने।

हालांकि उसका ध्यान ठकरियाल की तरफ बिल्कुल नहीं था, इसके बावजूद कैप कुछ और ज्यादा चेहरे पर झुका ली। चेहरा सेन्टर टेबल की तरफ कर लिया, मगर आंखें उठाकर लगातार अखिलेश की तरफ देख रहा था।

उस अखिलेश पर जो सीधा रिसेप्शन पर पहुंचा। रिसेप्शनिस्ट ने मुस्कराकर उसका स्वागत किया। अखिलेश ने अपनी 'रूम-की' सौंपी और लॉबी के मुख्य द्वार की तरफ बढ़

गया।

दरबान ने सेल्यूट मारने के साथ दरवाजा खोला।

उधर वह होटल से बाहर निकला, इधर ठकरियाल के जिस्म में जैसे बिजली भर गई।

करीब-करीब आधी बची सिगरेट सेन्टर टेबल पर रखी एशट्रे में कुचली। फुर्ती के साथ खड़ा हुआ और उसी लिफ्ट की तरफ बढ़ गया जिससे अखिलेश निकला था।

छठी मंजिल पर पहुंचा।

फिर, सुईट नम्बर छः सौ बारह के बंद दरवाजे पर।

मुश्किल से दो मिनट बाद वह 'मास्टर-की' की मदद से सुईट के अंदर था।

जाहिर है---सुईट शानदार था। खूबसूरत और कीमती फर्नीचर से सजा। फर्श पर ईरानी कालीन। दीवारों पर कीमती पेन्टिंग्स। दो कमरों का सुईट था वह। बैडरूम और ड्राइंगरूम। बैडरूम में बैड, ड्रेसिंग टेबल और कई स्टूल। ड्राइंगरूम में सोफा सेट और डायनिंग टेबल। दोनों कमरों में टी.वी. और रेफ्रिजरेटर। खिड़कियों पर कीमती और मोटे पर्दे खिंचे हुए थे।

दोनों कमरों का निरीक्षण करने के बाद वह डायनिंग टेबल की तरफ बढ़ा। उसने बीचो-बीच रखी फलों की टोकरी से एक सेब उठाया। उसमें 'बुड़क' मारता खिड़की की तरफ बढ़ा। पर्दे का एक कोना हटाकर बाहर झांका।

कांच के पार एक तरफ शांताक्रुज एयरपोर्ट और दूसरी तरफ मुंबई का विहंगम दृश्य नजर आ रहा था। नीचे नजर आ रहा था---सेन्टूर का स्वीमिंग पूल।

रंग-बिरंगे अधोवस्त्रों से सजे अनेक स्त्री-पुरुष थे वहां।

कुछ जलस्नान कर रहे थे, कुछ धूपस्नान।

सेब उसने उसी दृश्य का अवलोकन करते खाया।

उसके बाद सुईट की तलाशी लेनी शुरू की। हड़बड़ाहट की तो बात ही दूर, जल्दी तक में नजर नहीं आ रहा था वह। इतने आराम से तलाशी में जुटा हुआ था जैसे उसका अपना सुईट हो। काफी तलाश के बावजूद राजदान के लेटर्स और पाइप पर लटके देवांश की फोटो जैसी महत्वपूर्ण सामग्री नहीं मिली। हां, कैनन का एक कैमरा जरूर मिला।

उसने खोलकर देखा।

रील नहीं थी।

बैडरूम की वार्डरोब तक पहुंचा। उसे खोलते ही आंखें चमक उठीं।

स्केल की चौड़ाई जितनी काली-सफेद पट्टियों वाला गाऊन एक हुक पर टंगा हुआ था।

ठकरियाल ने गाऊन की जेबों में हाथ डाला। एक जेब से उस ब्राण्ड के सिगार की डिब्बी बराबद की जिस ब्राण्ड का सिगार राजदान पीता था। म्यूजिक लाइटर भी मौजूद था।

वे दोनों चीजें उसने वापस जेब में डाल दीं।

दराज खोली।

उसमें एक खूबसूरत बॉक्स था। छोटा सा। नीले शनील चढ़ा।

बॉक्स उठाया। उसे खोलते ही ठकरियाल के होंठ बेध्यानी में सीटी बजा उठे।

यह वह सीटी थी जिसे आदमी मस्त होकर बजाता है।

राजदान का फेसमास्क उसके सामने था।

ठकरियाल ने उसे उठाकर ध्यान से देखा।

बहुत ही बारीक झिल्ली जैसा था वह।

मगर मजबूत!

फट नहीं सकता था।

कान और सिर के बाल तक मौजूद थे उसमें। आंखों की जगह दो छेद।

ठकरियाल उसे लिए ड्रेसिंग टेबल के सामने पहुंचा। अपने चेहरे पर फिट करना चाहा मगर नहीं हो सका। उसका अपना फेस फेसमास्क से थोड़ा चौड़ा था। कुछ देर किसी कलाकार की कला के उस शानदार नमूने को देखता रहा, फिर वापस वार्डरोब के नजदीक आया। मास्क को वापस बॉक्स में रखने के बाद वार्डरोब का दरवाजा बंद

किया।

जेब में पड़ा मोबाइल बज उठा।

मोबाइल निकाला।

स्क्रीन पर नजर आ रहा नम्बर पढ़ा।

नम्बर अंजान था।

रिस्टवाच पर नजर डाली। पूरे दो बजे थे।

होठों पर मुस्कान फैल गयी।

मोबाइल ऑन किया। कहा---"वक्त के काफी पाबंद मालूम पड़ते हो अवतार प्यारे।"

"वक्त से पहले होश आ गया तो कर भी रहा हूं फोन वरना तुमने तो लुढ़का ही दिया था।" दूसरी तरफ से वाकई अवतार गिल की आवाज उभरी---"बड़े बेमुरव्वत दोस्त हो यार! अच्छी खासी चल रहीं बातों के बीच आक्रमण कर बैठे। आक्रमण भी ऐसा कि दिन में तारे दिखा दिये।"

"वह जरूरी था, यार।" हंसते हुए ठकरियाल ने कहा---"बहरहाल, दिव्या और देवांश को तो यह दिखाना ही था न कि मैं रिश्वतखोर पुलिसिया नहीं बल्कि वो हूं जो एक हत्यारे को, बैंक लुटेरे को गिरफ्तार किये बगैर नहीं रह सकता।"

"होश में आने के बाद बात समझ में आ चुकी है। उस वक्त अचानक समझ में नहीं आई थी जब तुमने हमला किया। उस वक्त तो लगा था---अचानक ये कैसी पलटी खा बैठे तुम?"

"आश्चर्य के भाव देखे थे मैंने तुम्हारी आंखों में।" ठकरियाल
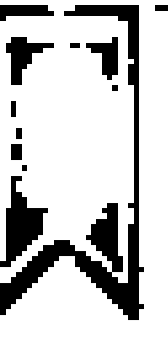
अब भी हंस रहा था---"और तुम्हारी बुद्धि पर तरस खाया था।"

"खैर! क्या हुआ था उसके बाद?"

"होता क्या? मैंने उनसे कहा---'गिरफ्तारी से बचने के लिए रिश्वत की पेशकश कर रहा था। मैंने लिटा दिया।
मुझे..ठकरियाल को रिश्वत देगा गधा! जानता नहीं मैं रिश्वत को हराम समझता हूं।'

"तुमने मुझे गधा कहा?"

"कहना पड़ा। और कुछ कहना पड़ता तो वह भी कह देता।"

"संतुष्ट हो गये वे?"

"तुम्हें गधा कहने के बावजूद न होते?"

"यानी उनकी समझ में मैं इस वक्त हवालात की हवा खा रहा हूं।"

"हां।"

"रिवाल्वर कहां है मेरा?"
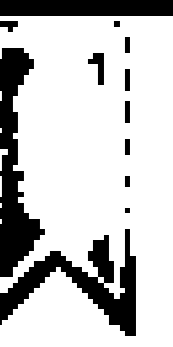
"मेरे पास है। मिलने पर दे दूंगा।"

"जल्दी मिलना। उसके बगैर मैं खुद को विधवा औरत सा लगता हूं।"

"दिव्या को क्या देखा, तुम्हें तो ख्वाब में भी विधवा औरतें नजर आने लगीं।"

"दुखती रग पर हाथ मत रखो, प्रोग्राम बताओ आगे का।"

"कहां से बोल रहे हो?"

"उस कचरा बॉक्स के नजदीक एक पी.सी.ओ. है जिसमें तुम मेरे बेहोश जिस्म को कचरा समझकर डाल गये थे। होश में आने के बाद रिस्टवाच देखी और बस यहीं तक आया हूं।"

"हुलिया ठीक है?"

"सदाबहार।"

"तो अपने दिमाग की इलैक्ट्रानिक डायरी में नोट करो---होटल सेन्टूर, सुईट नम्बर छः सौ बारह।"

"हो गया नोट। तुम कहां हो?"

"अपने इलाके की गश्त पर हूं।" ठकरियाल ने कहा---"सरकारी नौकर हूं। बहरहाल ड्यूटी भी बजानी पड़ती है। अखिलेश से मुलाकात खत्म होते ही फोन करके रिपोर्ट देना।"

"जरूर दूंगा। अपना तीन लाख का रिवॉल्वर भी तो लेना है तुमसे।" इन शब्दों के साथ दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया गया।

डोर लॉक में चाबी घूमने की आवाज सुनाई दी।

दरवाजा खुला।

कुछ लोगों के बोलने-चालने की आवाज उभरी।

वे अंदर आ चुके थे।

दरवाजा वापस बंद हुआ।

ठकरियाल ने रेफ्रिजरेटर के पीछे से झांककर देखा---वे अखिलेश, भट्टाचार्य और वकीलचंद थे।

ठकरियाल ने पुनः खुद को रेफ्रिजरेटर के पीछे समेट लिया।

वह दीवार और रेफ्रिजरेटर के बीच खाली स्थान में छुपा था।

सोफे पर पसरते वकीलचंद ने पूछा---"रात क्या रहा?"

"दिव्या और देवांश के बीच दरार पड़ चुकी है।" आवाज अखिलेश की थी।

"जल्द ही यह दरार रंग लायेगी, वही होगा जो राजदान ने सोचा था।"

"वाकई! राजदान के साथ किया बहुत बुरा इन कमीनों ने।" ठकरियाल ने भट्टाचार्य की आवाज साफ-साफ पहचानी---"तुम लोग तो खैर दूर थे, मैंने सब कुछ अपनी आंखों से देखा है। दुख बस इस बात का है कि इतना नजदीक रहने के बावजूद न मैं खुद वक्त रहते उन्हें पहचान सका, न ही राजदान ने कुछ बताया।"

वकीलचंद ने कहा---"बताया तो कमबख्त ने मुझे भी कुछ नहीं था। बस इतना ही कहा---वकीलचंद, तू देख ही रहा है। हफ्ता-दस दिन से ज्यादा का मेहमान नहीं हूं मैं। एक लड़का है। बबलू। सोलह साल उम्र है उसकी। वह जान है मेरी। टुकड़ा है जिगर का। उससे उतना ही प्यार करने लगा हूं जितना एक बाप अपने बेटे से करता होगा। मुझे शक है---कुछ लोग उसे एक हत्या के झूठे इल्जाम में फंसायेंगे। पुलिस थाने में उसे टार्चर कर सकती है लेकिन याद रखना, अगर उसे एक चांटा भी पड़ा तो वह मेरे कलेजे पर चलाई गई गोली के समान होगा। तेरा काम होगा---उसकी रक्षा करना। केस कोर्ट तक जाये तो उसे बेकुसूर साबित करना। मैं तब होऊं, न होऊं, तुझे कवच बनकर हर वक्त साये की तरह उसके साथ रहना है।... मैंने खूब पूछा, जानना चाहा---'क्या डाऊट है तुझे? किसका कत्ल होने वाला है? कौन लोग, क्यों फंसाने वाले हैं बबलू को? मगर एक सवाल का भी तो जवाब नहीं दिया जालिम ने। मैं तो सोच तक नहीं सकता था वह खुद अपने ही कत्ल की बात कर रहा

है।"

"मुझे लिखे लेटर में राजदान ने साफ लिखा है।" अखिलेश ने कहा---चाहूं तो मरने से पहले भी मैं दिव्या और देवांश को पकड़वा सकता हूं। खुद को बचा सकता हूं मरने से। मगर अखिलेश, तीन कारण हैं ऐसा न करने के।
पहला---एड्स की उस स्टेज का मरीज हूं कि वैसे ही हफ्ता दस दिन से ज्यादा जिन्दा नहीं रहूंगा। दूसरा---दिव्या और देवांश को उस अवस्था में देखने के बाद दस दिन तो क्या, दस मिनट जिन्दा रहना मेरे लिए मौत से ज्यादा कष्टप्रद है। और तीसरा---वे मेरे मर्डर के प्रयास में जेल चले जायें, यह कोई सजा नहीं होगी उनके लिए। मैं तो ये भी नहीं चाहूंगा कि मेरे बाद वे मुझे आत्महत्या के लिए प्रेरित करने या मेरी हत्या करने के इल्जाम में जेल जायें। असल में जेल इतने घिनौने अपराधियों के लिए कोई सजा नहीं होती। मौत या फांसी तो एक तरह से मुक्ति होती है ऐसे लोगों के लिए। इनकी सजा तो ये है... ये कि इनकी जिन्दगी को ही मौत में बदल दिया जाये। सुनने में अजीब लग रहा होगा
तुझे---लेकिन सोचकर देख---अगर किसी की उन सांसों को ही जिसे वह जिन्दगी समझ रहा है, मौत में बदल दिया जाये तो कैसा लगेगा उसे? तुझे यही काम करना है। ऐसी अवस्था में पहुंचा देना है दोनों को कि मौत उन्हें जिन्दगी और जिन्दगी मौत नजर आने लगे। ऐसा कैसे होगा---इसी लेटर में विस्तार से लिख रहा हूं।'... और तुम जानते हो राजदान

ने पूरा प्लान विस्तार से लिखा है।"

"काश!" भट्टाचार्य बोला---"अवतार भी इस मौके पर हमारे साथ होता।"

तभी।

कॉलबेल बजने की आवाज गूंजी।

वकीलचंद ने कहा---"कौन आ गया?"

"मैं देखता हूं।" अखिलेश की आवाज के साथ किसी के सोफे से उठने की आवाज उभरी।

ठकरियाल को पूरा विश्वास था---आगन्तुक अवतार ही होगा।

कितना कारगर रहा था उसका यहां छुपना?

सारे रहस्य। राजदान का पूरा प्लान पर्त-दर-पर्त खुलते वह अपने कानों से सुनने वाला था।

रोमांचित सा हो उठा वह। यह सोचकर कि अब---

अब जाकर पकड़ बनी है उसकी इस झमेले पर।

राजदान ने भले ही लाखों कल्पनाएं कर ली होंगी मगर यह कल्पना हरगिज नहीं कर पाया होगा कि वह इस स्पॉट पर अखिलेश के कमरे में रेफ्रिजरेटर के पीछे आ छुपेगा।

सारी बातें सुन लेगा उनकी।

यह बात वह सोच भी कैसे सकता था कि महज सुल्फे की गंध से ठकरियाल राजदान बने शख्स को ताड़ जायेगा। यह तो उसकी अपनी 'एप्रोच' हुई। उसी एप्रोच के कारण इस वक्त वह वहां था।

दूसरी बात---इनकी आपसी बातों से जाहिर है, अवतार के बारे में राजदान सहित किसी को कुछ मालूम नहीं था अर्थात् राजदान उसे वकीलचंद या अखिलेश की तरह कान्टेक्ट नहीं कर पाया था।

वह खुद अपने प्लान से मुम्बई आया था।

राजदान ने भला कहां कल्पना की होगी अवतार अखबार में उसकी मौत की खबर पढ़कर आ पहुंचेगा! ठकरियाल के चंगुल में फंस जायेगा!

अब।

अब जाकर बिखरी है राजदान की शतरंजी बिसात।
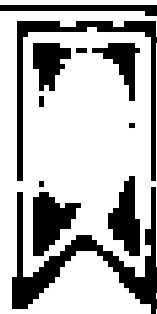
इन दो घटनाओं की कल्पना करने का उस पर कोई आधार नहीं था।

अब आयेगा खेल का मजा!

ठकरियाल इतना ज्यादा रोमांचित हो उठा कि दांत भींचकर बड़बड़ाया---'मरे हुए आदमी! अब देखूंगा मैं तुझे। राजदान, तेरे इन प्यादों को एक चाल में चित्त कर दूंगा मैं।"

वह रेफ्रिजरेटर के पीछ से झांकने का लोभ संवरण न कर सका।

रेफ्रिजरेटर ऐसे कोण पर रखा था कि हल्का सा झांकते

ही कमरे के मुख्य दरवाजे का नजारा साफ देखा जा सकता था। अखिलेश दरवाजे के नजदीक पहुंचा। तक तक एक बार और कॉलबेल बज चुकी थी। दरवाजा खोला। सामने अवतार खड़ा था। वह कुछ बोला नहीं। अखिलेश की तरफ देखता खड़ा-खड़ा केवल मुस्कराता

रहा। अखिलेश ने कहा---"किससे मिलना है आपको?"

"पहचान बेटे!" अवतार ने कहा। "म-मतलब?" अखिलेश के मुंह से निकला। "दुनिया कहती है तू प्राइवेट डिटेक्टिव बन गया है।"

अवतार ने कहा---"बड़ी पहुंची हुई चीज है। मैं कहता हूं---आज भी अकल से पैदल है तू। जब मुझे नहीं पहचान रहा तो...

"अबे...!" अखिलेश चौंका---"कहीं अवतार तो नहीं

है तू?"

"ये हुई न बात! ये हुई ना मेरे यार की पारखी नजर....।"

"अबे! अबे तूने पगड़ी उतार दी। दाढ़ी कटवा दी और

बीस साल बाद। अचानक सामने आकर कहता है---पहचान मुझे। साले---कैसे पहचानूं? सरदार से मोना बन गया।"

"हां मेरे यार! हां! तेरी बिरादरी में शामिल हो गया मैं।" कहने के साथ अवतार ने लपककर अखिलेश को बांहों में भर लिया था। अखिलेश की बाहें भी उसके जिस्म के चारों तरफ लिपट गईं। उसे हवा में उठाकर चिल्लाया वह---"अबे वकीलचंद भट्टाचार्य! देखो! देखो! अपना चौथा यार भी आ गया।"

वकीलचंद और भट्टाचार्य इस तरह सोफों से उछल-उछलकर दरवाजे की तरफ लपके जैसे अपने घर में निकले प्राचीन खजाने की खबर सुन ली हो।

भट्टाचार्य ने कहा---"बड़ा शैतान है ये हरामजादा तो! मैंने नाम लिया और हाजिर हो गया।"

"अबे! अबे तुम दोनों भी यहीं हो? मजा आ गया यारों मजा आ गया।"

उसके बाद।

रेफ्रिजरेटर के पीछे छुपे ठकरियाल ने बचपन के दोस्तों का भावनात्मक मिलन देखा।

वे तीनों तो खैर खुश थे ही मगर, अवतार भी उनसे कम खुश और रोमांचित नजर नहीं आ रहा था। उसका इतना खुश होना ठकरियाल के दिल को जोर-जोर से धड़का गया।

शंका उभरी---उन्हीं में तो नहीं मिल जायेगा वह?

ऐसा हो गया तो?

बस 'तो' से आगे वह सोच न सका।

ऐसा बिल्कुल नहीं लग रहा था अवतार एक्टिंग कर रहा है।

दोस्तों से मिलने पर वास्तविक खुशी से झूमता नजर आ रहा था वह।

अब धड़कते दिल से ठकरियाल को उनके बीच होने वाली बातों का इंतजार था।

"आओ!" अखिलेश ने कहा---"बैडरूम में बैठते हैं।"

दोनों कमरों के बीच का दरवाजा पार करके वे अंदर वाले रूम में चले गये।

रेफ्रिजरेटर के पीछे छुपे ठकरियाल को हालांकि उनकी आवाज अब भी आ रही थी परन्तु शब्द स्पष्ट नहीं थे। और.. कम से कम अब उनके बीच होने वाली बातें सुनना बहुत जरूरी था।

वह रेफ्रिजरेटर के पीछे से निकला।

दबे पांव उस दरवाजे की तरफ बढ़ा जिसके पार वे थे।

अब वह उनमें से किसी के द्वारा देख लिये जाने के खतरे के प्रति उतना सुरक्षित नहीं था जितना रेफ्रिजरेटर के पीछे था मगर, खतरा उठाने के अलावा कोई रास्ता भी नहीं था।

यह बात तो उसकी नॉलिज में होनी ही चाहिए थी कि अवतार का रुख क्या रहने वाला है?

खुद ठकरियाल का आगे का सारा प्लान इसी सवाल के

जवाब पर निर्भर था।

सो, दरवाजे के नजदीक पहुंचा।

दीवार से पीठ टिकाकर खड़ा हो गया।

दिल 'धाड़-धाड़' की आवाजों के साथ पसलियों से टकरा रहा था।

“अब बता प्यारे।” कुछ देर बाद अखिलेश की आवाज उभरी---“कैसे पहुंच गया यहां?”

अवतार ने वही कहा जो दिव्या और देवांश को बताया था अर्थात् उसने कलकत्ता के अखबार में राजदान के मर्डर की खबर पढ़ी और यह सोचकर मुंबई के लिए रवाना हो गया कि शायद पुराने दोस्तों में से किसी से मुलाकात हो जाये। जवाब में वकीलचंद ने कहा---“और देख ले। अंततः यहां मिल ही गए चारों यार! लेकिन यह होटल वाला पता किसने बताया?”

“इंस्पेक्टर ठकरियाल ने।” अवतार ने कहा।

तीनों के मुंह से एक साथ निकला---“ठकरियाल ने?”

“हां। मैं संवेदना व्यक्त करने विला पर पहुंचा ही था कि कुछ देर बाद वह भी आ गया। मेरा परिचय पूछा। मैंने बता दिया---राजदान के बचपन का यार हूं। सुनकर वह बोला---‘कमाल की बात है, एक-एक करके राजदान के बचपन के चारों दोस्त इकट्ठे हो गये। भट्टाचार्य तो खैर यहां पहले ही से था। वकीलचंद को उसने अपनी मौत से एक दिन पहले बुलाया। अखिलेश को मौत के बाद और अब तुम... क्या तुम भी राजदान के बुलावे पर आये हो? तब मैंने कहा---‘नहीं, मैं अखबार में उसकी मौत की खबर

पढ़कर आया हूं।'"

"खैर!" अखिलेश ने पूछा---"आजकल कर क्या रहा है कलकत्ता में?"

अवतार ने उल्टा प्रश्न किया---"मेरी हालत से अंदाजा नहीं हो रहा तुझे?"

"मतलब?" एक साथ तीनों ने पूछा था।

"बेरोजगार हूं।" अवतार के जवाब ने ठकरियाल के दिल में खुशियों के अनार छोड़ दिये---"कुछ दिन पहले तक एक प्राइवेट फर्म में काम करता था। किसी बात पर मालिक से खटक गई। साले ने निकालकर बाहर खड़ा कर दिया। वैसे अगर मैं माफी मांग लेता तो वह वापस नौकरी पर रख सकता था मगर उस वक्त वैसी कोई जरूरत महसूस नहीं हुई मुझे। वो तो बाद में तब नौकरी की कीमत पता लगी जब दूसरी नौकरी के लिए लोगों से मिलने निकला। निकला क्या भटकता ही रह गया। आज दो महीने हो गये, नौकरी नहीं मिली। जमा-पूंजी भी खत्म...

"घबराता क्यों है याड़ी। अब तू यारों के बीच पहुंच चुका है।" वकीलचंद ने कहा---"पूना की कचेहरी में अपनी पिलती है। जिस मजिस्ट्रेट की कोर्ट में रहूंगा, फिट करा

दूंगा। खूब नोट पीटेगा।"

"अबे---नौकरी क्यों करेगा अपना यार।" अखिलेश बोला---"अपनी डिटेक्टिव एजेंसी जो चला रखी है मैंने। उसी में काम करेगा। मेरे कंधे से कंधा मिलाकर। तुम देखना---चंद ही दिनों में अपने से भी बड़ा जासूस बना दूंगा इसे।"

"वो सब तो ठीक है अखिलेश मगर यार, एक बड़ी अजीब बात बताई इंस्पेक्टर ने।" ठकरियाल के हिसाब से अवतार बिल्कुल ठीक जा रहा था---"कहने लगा---तुझे राजदान का कोई लेटर मिला है जो उसने अपनी मौत से पहले लिखा था। बकौल उसके लेटर के द्वारा राजदान ने तुझे अपने मर्डर की इन्वेस्टीगेशन के लिए नियुक्त किया है। कहता है बबलू...

"यह सब ठकरियाल ने बताया?"

"हां।"

"कब?"

"कब से मतलब?"

"किन बातों के चलते यह जिक्र छेड़ा उसने?"
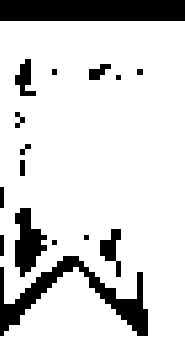
"जब उसने बताया---तुम चारों यहीं हो तो मारे खुशी के मैं झूम उठा। बार-बार तुम्हारा पता पूछने लगा। तब बताया---अखिलेश को तो राजदान ने खुद लेटर लिखकर दिल्ली से यहां बुलवाया है।"

"समझ गया। उसने लेटर के बारे में तुझे तब बताया जब बताने के अलावा कोई चारा नहीं रहा।" अखिलेश ने वकीलचंद और भट्टाचार्य पर नजर डालने के साथ कहा---"उसने महसूस किया होगा कि अवतार यदि यहां आ ही गया है तो हम लोगों से मिले बगैर वापस जाने से रहा। तब उसने यह सोचकर बता दिया होगा---न बताने से फायदा भी कुछ नहीं, हम लोग बता ही देंगे।"

"मगर चक्कर क्या है? तुझे मिले राजदान के लेटर का जो मजमून उसने मुझे बताया, उसने मेरी खोपड़ी घुमाकर रख दी है। मैंने इंस्पेक्टर से काफी पूछा। उसने हर सवाल का एक ही जवाब दिया---राजदान को कैसे पता था कि कौन लोग क्यों और कब उसकी हत्या करने वाले हैं? पता था तो अपनी हत्या होने क्यों दी उसने? ऐसे अनेक सवाल थे। इंस्पैक्टर ने कहा---'उन सवालों का मैं तुम्हें क्या जवाब दूं जो खुद मेरे ही लिए पहेली बन गये हैं। मेरे हिसाब से तो राजदान की हत्या बबलू ने की है। मुकम्मल सुबूत भी मिल गये हैं और इकबाले जुर्म भी कर लिया उसने। बस इतनी सी बात है कि हवालात से फरार हो गया। मगर कब तक

फरार रहेगा, एक दिन तो कानून के हाथ उस तक पहुंचेंगे ही। रही राजदान के लेटर की बात---मुझे तो लगता है अपने अंतिम समय में वह थोड़ा सनक गया था---'इस बारे में बाकी बातें तुम अपने दोस्त से ही करो तो बेहतर होगा। सेन्टूर होटल के सुईट नम्बर छः सौ बारह में ठहरा है वह।'

"और तू यहां चला आया?"

"और कहां जाता?"

"यारो!" अखिलेश बोला---"हम इतने सालों बाद फिर इकट्ठा हुए, झूम उठने लायक बात है ये मगर, दुख की बात ये है---हमारे बीच आज पांचवां याड़ी नहीं है। दुर्भाग्यवश हम उसकी मौत के कारण इकट्ठे हुए हैं। या एक तरह से यूं भी कहा जा सकता है---उसी ने इकट्ठे किये हैं। कितना अच्छा होता यदि खुशी के किसी मौके पर मिले होते।"

"लेकिन अखिलेश।" आवाज वकीलचंद की थी---"कामयाब तभी होगा हमारा यह मिलन जब उस काम को मुकम्मल तौर पर अंजाम देंगे जो वह सौंप गया है।"

"मैं वकीलचंद से पूरी तरह सहमत हूं।" भट्टाचार्य की

आवाज में भावुकता का पुट था---"सारी दुनिया को छोड़ दिया उसने। अपने पुराने दोस्तों पर भरोसा करके मरा है। हम सबको उसके भरोसे पर खरा उतरकर दिखाना है। ऐसी सजा देनी है उसके हत्यारों को---ठीक ऐसी, जैसी वह चाहता था। और सचमुच वैसी ही बल्कि उससे भी कुछ ज्यादा ही कड़ी सजा के हकदार हैं। मेरे देखते ही देखते जब बेकसूर बबलू पकड़ा गया तो मारे हैरत के मेरा बुरा हाल था। सारे सुबूतों के बावजूद मुझे विश्वास नहीं हो रहा था उसने यह सब किया है मगर कर क्या सकता था? मुझ बेवकूफ ने तो तब भी उनके हक में ही गवाही दी जो असल में मेरे दोस्त के हत्यारे थे। क्या करता? अंजान था मैं। मरने से पहले साले ने मुझे कुछ बताया ही नहीं था लेकिन अब.... जब तू सबकुछ बता चुका है तो.... तो राजदान को हमारी सच्ची श्रद्धांजली यही होगी। यह कि---उसके हत्यारों को वही सजा मिले जो वह चाहता था। जिसकी उम्मीद राजदान ने मरने से पहले हमसे लगाई थी।"

"मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा।" अवतार ने कहा---"आखिर क्या बातें कर रहे हो तुम?"

"किसी की भी समझ में तब तक कुछ नहीं आयेगा जब तक पूरा किस्सा शुरू से नहीं बताया जायेगा।" अखिलेश ने कहा---"मेरी डिटेक्टिव एजेंसी में तो अब तुझे शामिल होना ही है। तो यूं समझ तेरी एंट्री इसी केस से हो रही है।

हालांकि इस केस पर हम जासूस होने के नाते नहीं, राजदान के दोस्त होने के नाते काम कर रहे हैं।"

"मेरी समझ में अब भी कुछ नहीं आया।"

"बात को यूं समझ।" कहने के बाद अखिलेश ने ऐसी सांस ली जैसे वह बहुत लम्बी कहानी सुनाने की तैयारी कर रहा हो। बोला---"राजदान की हैसियत का अंदाज तो उसके टीन-टप्पर देखकर तुझे हो ही गया होगा। अपनी पत्नी और भाई को वह उतना ही प्यार करता था जितना मजनू लैला से या रांझा हीर से करने का दम भरता था। एक और शख्स है---बबलू। वह उसे उतना ही प्यारा था जितना एक पिता को अपना बेटा होता है। दुर्भाग्य से राजदान को एड्स हो गया।"

"एड्स?" अवतार चौंका।

"सुनता रह! टोका-टाकी मत कर बीच में।" अखिलेश कहता चला गया---"असल में उसका दुर्भाग्य उसी दिन से शुरू हो गया था मगर पता बाद में लगा। कनाडा से एड्स लेकर आया था वह। आते ही हमला हुआ। इन्वेस्टीगेशन के लिए इंस्पेक्टर ठकरियाल मैदान में आ गया। अनेक घटनाओं के बाद पता लगा---हमले के पीछे देवांश था।"

"द-देवांश?"

"तू फिर बीच में टपका?"

"मगर यार, उस साले को तो मैं अभी-अभी मातम में डूबा देखकर आया हूं। कह रहा था---क्या बतायें, किस्मत खराब थी हमारी।"

"ऐसे लोग एक्टिंग अमिताभ से भी ज्यादा बेहतरीन करते हैं।"

"खैर... उसके बाद?"

"ठकरियाल ने पता लगाया---देवांश विचित्रा नाम की एक वेश्या के लपेटे में लिपटा हुआ था। विचित्रा और उसकी मां पहले ही राजदान से खुन्दक रखती थीं। देवांश को अपने जाल में फंसाने के पीछे उन मां-बेटी के दो उद्देश्य थे। पहला---राजदान से बदला लेना। दूसरा---विचित्रा का देवांश की बीवी बन बैठना ताकि राजदान के बाद सारी जायदाद की मालकिन बन जाये।"

"क्यों, राजदान के बाद तो सब कुछ दिव्या का होना चाहिए था।"

"दिव्या को विचित्रा, देवांश और शांतिबाई के प्लान के

मुताबिक राजदान की हत्या के इल्जाम में फंसना था।"

"ओह! उसे यूं रास्ते से हटाने का प्लान बनाया था उन्होंने।"

"मगर यह प्लान परवान नहीं चढ़ सका। समय से पहले ही ठकरियाल हकीकत तक पहुंच गया। यह हकीकत उसने राजदान को बताई। कहा---'मुझे आपके छोटे भाई को गिरफ्तार करना पड़ेगा।' ऐसा सुनकर खेल गया राजदान। तड़प उठा। बोला---'नहीं इंस्पेक्टर, तुम मेरे छोटे भाई को गिरफ्तार नहीं करोगे। इस बात को यहीं भूल जाओ। समझो कुछ हुआ ही नहीं।"

हैरान अवतार ने कहा---"राजदान ने यह बात उस शख्स के बारे में कही जो उसकी... खुद उसकी हत्या करना चाहता था?"

"बात केवल कही नहीं, ठकरियाल से ऐसा कराया भी। इससे तुम समझ सकते हो, वह देवांश को कितना टूटकर चाहता होगा। ठकरियाल एक रिश्वतखोर पुलिसिया है। वह फौरन समझ गया---राजदान से मोटे नोट ऐंठे जा सकते हैं। राजदान की भावनाओं का दोहन करते हुए उसने देवांश को गिरफ्तार न करने के बदले पचास लाख रुपये मांगे।"

"और राजदान ने दिये?" मारे आश्चर्य के अवतार का बुरा हाल था।

"हां।"

"कमाल का आदमी था अपना यार। एक साला मेरा बड़ा भाई था!" अवतार कहता चला गया---"मेरे हक की एक पाई नहीं दी मुझे। सुई की नोंक के बराबर जगह नहीं दी बाप के घर में।"

"पचास लाख राजदान के उसे गिरफ्तार न करने के लिए दिये, साथ ही हिदायत दी---यह बात देवांश को पता न लगे। ऐसा हुआ तो वह हीन भावना का शिकार होगा।"

"पागल... पागल था राजदान।"

"इतना ही नहीं, जब ठकरियाल ने कहा---शांतिबाई और विचित्रा जीवित रहीं तो वे फिर देवांश को अपने जाल में फंसा सकती हैं। तब... राजदान ने पच्चीस लाख और दिये। उनके एवज में ठकरियाल ने मां-बेटी को समुद्र में डुबोकर मार डाला।"

"अच्छा किया।"

"मगर किस्सा यहां खत्म नहीं हुआ। बल्कि देवर-भाभी में

अवैध संबंध हो गये।"

"ओह!" अवतार की आंखों के सामने दिव्या का खूबसूरत चेहरा नाच उठा।

दरवाजे के पीछे छुपा खड़ा ठकरियाल एहसास कर सकता था दिव्या के बारे में ऐसा सुनकर अवतार को कैसा लगा होगा।

जिस ढंग से अखिलेश ने बताना शुरू किया था उससे स्पष्ट था---अवतार को सबकुछ, एक-एक प्वाइंट का पता लगने वाला था। ठीक उसी तरह जैसे अभी-अभी दिव्या के करेक्टर के बारे में पता लगा था ठकरियाल को। अब इंतजार इस बात का था जब अवतार को पता लगेगा---राजदान का सबकुछ बीमारी के फेर में या तो खत्म हो चुका है या गिरवी पड़ा है तो उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

यह पता लगने पर झटका तो निश्चित लगेगा उसे कि न वह दौलत मौजूद है जिसके वह चक्कर में था, न ही वह औरत उतनी पवित्र है जितनी समझ रहा था।

यह सब जानने के बाद क्या फैसला करेगा वह?

उसी के साथ रहेगा?

दोस्तों का साथ देगा?

या, मुम्बइ से फरार होने की कोशिश करेगा?

ठकरियाल का आगे का सारा प्लान अवतार के फैसले पर निर्भर था। इसलिए वह अखिलेश के हर शब्द को धड़कते दिल से सुनता रहा। उसने अभी-अभी कहा था---"देवर भाभी के अवैध सम्बन्धों की जानकारी राजदान को बिल्कुल नहीं हो सकी थी। कुछ तो उसका बिजनेस पहले ही से क्राइसेज में चल रहा था। फाइनेंसर्स का काफी पैसा चढ़ा हुआ था। जो रहा-सहा था, या बचे-कुचे स्रोतों से आ रहा था, वह महंगे इलाज की भेंट चढ़ता जा रहा था। एक ही चिंता समाये जा रही थी राजदान को। यह कि---यदि दिव्या और देवांश इसी तरह कर्ज में डूबते चले गये तो उसके बाद उनका क्या होगा। उम्मीद की एक किरन थी---राजदान की बीमा पॉलिसी। पांच करोड़ की पॉलिसी थी वह।"

"प-पांच करोड़!" अवतार ने दोहराया।

"मगर वह तीस अगस्त के बाद लैप्स हो रही थी। इकतीस तारीख को किश्त ड्यू थी। किश्त इतनी मोटी थी कि दी नहीं जा सकती थी। अब राजदान की चिंता थी---अगर वह तीस अगस्त के बाद मरा तो इस पालिसी के पैसे भी दिव्या और देवांश को नहीं मिल पायेंगे। अतः उसने आत्महत्या

करने का फैसला कर लिया। ठीक उस वक्त जिस वक्त वह आत्महत्या करने वाला था, दिव्या और देवांश के अवैध सम्बन्धों का पता लगा। कैसे पता लगा, उसने क्या-क्या देखा, क्या-क्या गुजरी उस पर---यह सब मुझे लिखे लेटर में विस्तारपूर्वक लिखा है। मगर यहां इतना ही बता देना काफी समझता हूं जो मंजर उसने देखा, उसने पागल सा कर दिया था राजदान को। सारी रात अंगारों पर लोटता रहा। उस आग ने अब तक के राजदान को जलाकर राख कर दिया। अगले दिन के सूर्य की पहली किरणों के साथ एक नये राजदान का जन्म हुआ। उस राजदान का जिसने अपनी पत्नी और भाई के विश्वासघात का उन्हें ऐसा सबक देने की ठान ली थी जिसे सुनने के बाद शायद ही दुनिया के कोई देवर-भाभी इस गर्त में गिरने के बारे में सोचे। पूरा प्लान बना लिया था उसने। ऐसा हैरतअंगेज प्लान जिसे सुनकर तेरे दिमाग के सभी खिड़की दरवाजे खुल जायेंगे। मुझे लिखे लम्बे लेटर में उसने लिखा---'अखिलेश! मेरे यार! दिव्या और देवांश के विश्वासघात के बाद पागल सा हो गया हूं मैं। समझ नहीं पा रहा, इस दुनिया में किस पर यकीन किया जाये, किस पर नहीं। ऐसे विकट समय में जाने कैसे मुझे अपने बचपन के दोस्तों की याद आई है। सच कहूं---भूला तो कभी था ही नहीं तुम्हें। बचपन के दोस्तों को कभी कोई भूल भी नहीं पाता मगर उतनी शिद्दत से याद भी कभी नहीं आई जितनी आज आ रही है। सच कहा है किसी

ने---बचपन के दोस्त भगवान का रूप होते हैं। और आदमी पूजा भले ही करता रहे मगर अपने सुखों के दिन में उतनी शिद्दत से भगवान को याद नहीं करता जितनी शिद्दत से बुरा वक्त आने या दुखों से घिर जाने पर खुद-ब-खुद याद आने लगती है। कुछ ऐसा ही है मेरे साथ। जाने क्यों, दिलो-दिमाग ने एक साथ चीखकर कहा---'आज तेरे बचपन के यार साथ होते तो जो कुछ तेरे साथ हुआ है, जी भरकर बदला लेते उसका।' बहुत याद आ रही है तुम सबकी। तेरी, और अवतार की। वकीलचंद से मिल चुका हूं। भट्टाचार्य तो खैर मेरे पास है ही। मैं नहीं जानता था तुम तीनों कहां हो, क्या कर रहे हो? बावजूद इसके जाने क्यों लगा---तुम चाहे जहां चाहे जिस हाल में हो---मेरी आवाज सुनते ही दौड़े चले आओगे। मुझे विश्वास है---मुझ पर हुए जुल्म का बदला अगर भावनाओं की गहराई में उतरकर कोई ले सकता है तो वे दुनिया में केवल... और केवल तुम हो। तू, वकीलचंद, भट्टाचार्य और अवतार। यही सोचकर भट्टाचार्य से पूछा---'क्या तुझे अखिलेश, अवतार या वकीलचंद के बारे में कुछ पता है? भट्टाचार्य को केवल वकीलचंद के बारे में पता था। उसी ने उसका पूना का फोन नम्बर दिया। मैंने फोन मिलाया। जैसी कि उम्मीद थी---मारे खुशी के उछल पड़ा वकीलचंद। मेरे बुलावे पर तुरंत मुंबई आ गया। मैंने उससे तेरे और अवतार के बारे में पूछा। अवतार की उसके पास भी कोई खैर-खबर नहीं है। हां, तेरे बारे में जरूर

बताया और जो बताया उसे सुनकर बांछें खिल गईं। तू तो ठीक वही बना बैठा है जिसकी मुझे जरूरत है। अब मेरा पूरा प्लान बन चुका है। एक छोटा सा मगर महत्वपूर्ण काम वकीलचंद को सौंपा है। काफी सवाल किये उसने मगर मैंने जवाब नहीं दिये। असल में उसे या भट्टाचार्य को पूरा प्लान बता भी नहीं सकता। बता दिया तो वे मरने ही नहीं देंगे मुझे। मरने तो तू भी नहीं देता, इसलिए तुझे बुलाया नहीं। केवल यह लेटर लिख रहा हूं। यह लेटर जो तुझे मेरी मौत के बाद मिलेगा अर्थात् मुझे बचाने का कोई चांस नहीं होगा तेरे पास। अब उस प्लान के बारे में सुन जो मैंने अपने दुश्मनों को मजा चखाने के लिए बनाया है और जिस पर तुम सबको अमल करना है। बीमा कम्पनी को मैं एक लेटर लिख चुका हूं। उसमें लिखा है---सुसाइड की कंडीशन में मेरी पॉलिसी का क्लेम किसी को न दिया जाये। स्वाभाविक मौत या मर्डर की कंडीशन में क्लेम की हकदार मेरी नोमिनी दिव्या होगी। उनतीस तारीख की रात को मैं दिव्या और देवांश को एक साथ अपने कमरे में बुलाऊंगा। उनसे साफ-साफ कहूंगा कि मैं क्या कुछ जान चुका हूं। जाहिर है उनके पैरों तले से जमीन खिसक जायेगी। मैं उन्हें बीमा कम्पनी को लिखे अपने लेटर के बारे में भी बताऊंगा। और तब---उनकी आंखों के सामने आत्महत्या कर लूंगा। साइलेंसरयुक्त अपने उसी रिवाल्वर से करूंगा जिसे अपने बैंक लॉकर से निकालकर ला चुका हूं। साइलेंसरयुक्त

रिवाल्वर से सुसाइड करने का कारण होगा---अपनी मौत पर तत्काल शोर-शराबा न करना। बहरहाल, आत्महत्या को हत्या बनाने का टाइम तो मिलना ही चाहिए दिव्या और देवांश को। मुझे यकीन है---बीमा कम्पनी से पांच करोड़ ऐंठने के फेर में वे मेरी सुसाइड को मर्डर साबित करने के जाल में जरूर उलझेंगे। इतना ही यकीन इस बात पर भी है कि मेरे हत्यारे के रूप में पेश करने के लिए उनके दिमाग में बबलू के अलावा कोई दूसरा नाम नहीं आ सकता। कारण---वे बबलू से बेइंतिहा नफरत करते हैं और पहले से ही यह मान बैठे हैं वह किसी दिन लॉकर पर हाथ साफ जरूर करेगा मगर, अभी वे ढंग से कुछ सोच भी नहीं पाये होंगे कि कमरे की तरफ से बंद बाथरूम को कोई बहुत आहिस्ता से खटखटायेगा। होश उड़ जायेंगे पट्ठों के। यही तो चाहता हूं मैं। खटखटाने वाला इंस्पेक्टर ठकरियाल होगा। कारण---मैं पहले ही फोन कर चुका होऊंगा कि ठीक एक बजे उसे चोरों की तरह बाथरूम के रास्ते से मेरे पास पहुंचना है। वह पहुंचेगा---इस बात का विश्वास मुझे इसलिए है क्योंकि जानता हूं---पैसे का बहुत बड़ा लालची है वह। ठकरियाल दरअसल मेरा तीसरा शिकार है। उसे लालच के जाल में फंसाने के लिए मैं बाथरूम में पांच लाख रुपये और एक लेटर छोड़ दूंगा। तब तक वह यह नहीं जान पायेगा मैं मर चुका हूं। जाहिर है---फीस के एवज में वह वही करेगा जो मैं लेटर में लिखूंगा। लेटर में लिखे मुताबिक

वह विला के मेनगेट पर पहुंचकर कॉलबेल बजायेगा। मारे हड़बड़ाहट के दिव्या और देवांश का बुरा हाल हो जायेगा। स्वाभाविक है---उस कम समय में वे जितना भी कर सकेंगे, घटनास्थल में ऐसी फेर-बदल जरूर करेंगे जिससे आत्महत्या---हत्या नजर आये। वे यह भी चाहेंगे---बैल बजाने वाला अंदर न ही आये, उन्हें सोता समझकर लौट जाये, परन्तु ठकरियाल ऐसा नहीं करेगा। लेटर में लिखे मेरे निर्देश के मुताबिक वह तब तक बैल बजाता रहेगा जब तक दरवाजा खुल नहीं जायेगा। मजबूर दिव्या और देवांश को दरवाजा खोलना पड़ेगा और.. दरवाजा खोलते ही होश फाख्ता हो जायेंगे पट्ठों के। अफसोस, उस वक्त उनके पीले चेहरे देखने के लिए मैं जीवित नहीं होऊंगा। मगर जहां भी होऊंगा, सच कहता हूं अखिलेश---सुकून महसूस कर रहा होऊंगा। अंदर मेरी लाश पड़ी होगी। दरवाजे पर पुलिस इंस्पेक्टर खड़ा होगा। मैं कल्पना कर सकता हूं उनकी हालत की। ठकरियाल उन्हें जिन्न नजर आ रहा होगा। स्वाभाविक रूप से उनकी कोशिश होगी ठकरियाल मेरे बैडरूम में न पहुंच सके ताकि सुबह तक अपने प्लान को अमल में लाने का समय मिल जाये मगर, मैंने भी ठान ली है, मर भले ही चुका होऊंगा लेकिन चैन से एक भी सांस नहीं लेने दूंगा उन्हें। इसीलिए राजदान को बाथरूम से मिले लेटर में यह निर्देश होगा---'भले ही दिव्या और देवांश तुम्हें रोकने की चाहे जितनी कोशिश करें, चाहे जितने बहाने बनायें परन्तु

तुम्हें वहां पहुंचना है क्योंकि जिस सोफे पर मैं विराजमान होऊंगा, उसके पीछे से तुम्हें एक पैकिट मिलेगा जिसमें कुछ नई जानकारियां और आगे के लिए निर्देश होंगे।' यह सब मैं लिखूंगा ही इसलिए ताकि वहां पहुंचने के लिए ठकरियाल की क्यूरोसिटी बढ़ जाये। तो तय है---ठकरियाल बैडरूम में पहुंचेगा। वह एक भ्रष्ट पुलिसिया भले ही हो किन्तु जिस ढंग से उसने समय से पहले विचित्रा, शांतिबाई और देवांश के कुचक्र को पकड़ा, उसकी रोशनी में कह सकता हूं---वह एक ब्रिलियेंट इन्वेस्टीगेटर है। दिव्या और देवांश भले ही चाहे जितनी चालाकियां बरत चुके हों मगर घटनास्थल पहुंचने और वहां का निरीक्षण करने के बाद वह यकीनन बहुत कुछ समझ जायेगा। उसके सवाल पूरे समय दिव्या और देवांश के चेहरों पर हवाइयां उड़ाये रखेंगे। यही मेरा मकसद है। रही-सही बातें ठकरियाल मेरा दूसरा लेटर समझा देगा। केसिट में मेरे ठहाका लगा-लगाकर हंसने और दिव्या तथा देवांश से सम्बोधित कुछ शब्द होंगे। ठकरियाल मेरे निर्देशों का पालन करेगा। इसका विश्वास मुझे दो कारणों से है। पहला---मेरे पांच लाख हलाल करने में उसे कोई बुराई नजर नहीं आ रही होगी। दूसरा---खुद उसके जेहन में भी चक्कर को समझने की क्यूरोसिटी पैदा हो चुकी होगी। यहां के बाद आयेगी वह स्थिति जहां से ठकरियाल का दिमाग पलटा खायेगा। यह स्थिति तब आयेगी जब ठकरियाल को पता लगेगा---इस सारे झमेले के पीछे पांच करोड़ का

चक्कर है। मैं अच्छी तरह जानता हूं। ठकरियाल एक निहायत की लालची किस्म का शख्स है। किसी हालत में वह खुद को पांच करोड़ या उसके किसी एक हिस्से को हासिल करने के लालच से दूर नहीं रख पायेगा। तुम भी सोचो अखिलेश, जिस शख्स ने दिल से यह मानने के बावजूद कि उसने मेरे जैसा भाई दुनिया में पहले कभी नहीं देखा, देवांश को गिरफ्तार न करने के पचास लाख ले लिये। क्या वह शख्स केवल इसलिए पांच करोड़ का लालच छोड़ देगा कि मैंने दिव्या और देवांश को गिरफ्तार करने के लिए पांच लाख दिये हैं? नहीं। हरगिज ऐसा नहीं करेगा वह। इतनी नैतिकता उसमें दूर-दूर तक नहीं है। दूसरी तरफ---पांच करोड़ या उसका एक हिस्सा हथिया लेना उसे सूजी का हलवा खा लेने जितना आसान नजर आ रहा होगा क्योंकि खुद वही तो होगा उस सारे केस का विवेचनाधिकारी। नहीं---वह किसी हालत में हाथ आये इतने सुनहरे मौके को गंवाना नहीं चाहेगा। यहां मैं ठकरियाल को इस झमेले में फंसने के एक मुख्य कारण का जिक्र जरूर करना चाहूंगा। असल में देवांश ने पहले विचित्रा के और बाद में दिव्या के फेर में पड़कर मेरे मर्डर की कोशिश भले ही की हो। भले ही आर्थिक हालात ने उसे पांच करोड़ कमाने के लालच में फंसाया हो मगर दिल उसका चूहे जैसा है, बेहद डरपोक है वह। और... दिव्या भी कोई बहुत बहादुर नहीं है। भले ही हालात ने इनसे घिनौनी से घिनौनी हरकतें करा दी हों परन्तु

घाघ क्रिमिनल तो ये हैं नहीं। सो, मुझे डाउट है--- ये ठकरियाल के प्रेशर के समक्ष टूट सकते हैं। घुटने टेक सकते हैं उसके सामने। फैसला कर सकते हैं कि बस! बहुत हो चुका। अब जेल जाने में ही भलाई है। मैं नहीं चाहता उनका यह इरादा परवान चढ़े। ऐसा हो गया तो सारा प्लान ही बिखर जायेगा मेरा। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। इसीलिए ठकरियाल को झमेले में फंसाया है। वह घुटा हुआ है। घाघ है। छोटे-मोटे झटकों से विचलित होने वाला नहीं है। दिव्या और देवांश अगर उस मानसिक स्थिति में आये भी जिसका जिक्र ऊपर कर चुका हूं तो तब तक ठकरियाल को बीमा कम्पनी से रकम ऐंठना चुटकी बजाने जितना आसान नजर आना शुरू हो चुका होगा। उन हालात में कमान वह खुद संभाल लेगा। किसी हालत में सरेंडर नहीं करने देगा। दिव्या और देवांश को अर्थात् मेरा प्लान पुनः उसी पटरी पर दौड़ पड़ेगा जिस पर मैं दौड़ाना चाहता हूं। तब... ठकरियाल उससे पूछेगा---'हत्या के इल्जाम में तुम किसे और कैसे फंसाना चाहते थे?' वे बतायेंगे। क्योंकि बुनियादी बात---यानी---शिकार के रूप में बबलू को पेश करने की बात बिल्कुल करेक्ट होगी इसलिए ठकरियाल को भी जंचेगी। उसी प्लान को अंजाम देगा वह। हां, यह हो सकता है---वह बबलू को फंसाने के लिए दिव्या और देवांश के मुकाबले कुछ ज्यादा ही ठोस सुबूत बिछाये मगर इससे मेरे प्लान पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। बल्कि और मजबूती ही आयेगी क्योंकि मैं

तो खुद चाहता हूं---इस स्पॉट पर उन्हें अपना प्लान कामयाब होता नजर आये। इसके लिए मैं आज ही रात बबलू को अपने बाथरूम में बुलाऊंगा। अपना खून पिचकारी में भरकर उसके कपड़ों पर डालूंगा। वह चौंकेगा। समझ नहीं पायेगा मेरी हरकत को। अनेक सवाल करेगा मगर मैं केवल इतना कहूंगा---अपने दुश्मनों को मजा चखाने के लिए ऐसा कर रहा हूं। जानता हूं... बगैर पूरी बात जाने भी बबलू वही करेगा जो मैं कहूंगा। मेरे खून से सने कपड़ों को ले जाकर वह अपने बैड के गद्दे के नीचे रख देगा। सब कुछ क्लियर होने के बाद दिव्या, देवांश और ठकरियाल के बीच फैसला होगा---'अब बबलू को फंसाने की कार्यवाई की जाये।' तब तक मेरा एक आदमी जिसका नाम समरपाल है, बैडरूम के आस-पास पहुंच चुका होगा। छुपकर वह यह सुन लेगा कि वे लोग बबलू को फंसाने के लिए क्या प्रपंच रच रहे हैं।"

"समरपाल कौन है?" अवतार ने पूछा।

"राजदान का विश्वस्त। उसकी फर्म का चीफ एकाउन्टेंट।"

"ओ.के.।" अवतार ने कहा---"आगे बढ़!"

अखिलेश ने पुनः कहना शुरू किया---"राजदान आगे लिखता है---देवांश का मोबाइल यह कहकर बबलू को दे

दूंगा कि मैं उस पर किसी भी समय तुमसे कान्टेक्ट कर सकता हूं। और मेरा मोबाइल समरपाल पर रहेगा। उसका काम होगा---इन लोगों का पूरा प्लान मेरी आवाज में बबलू को बताना और यह निर्देश देना कि वह वही सब करता चला जाये जो दिव्या, देवांश और ठकरियाल चाहें। समरपाल मेरी आवाज की नकल बाखूबी कर सकता है। वह फोन पर बबलू को और भी बहुत सारी बातें समझायेगा जो उसे थाने से फरार होने तक तक करनी हैं। यहां मैं तुझे यह बता देना जरूरी समझता हूं बबलू जो भी कर रहा होगा यह समझकर कर रहा होगा कि चाचू जिंदा हैं। मरने वाला चाचू का क्लोन है जो एक स्टेज आर्टिस्ट था। यदि बबलू को हकीकत बता दी गई तो मारे सदमे के उसका बुरा हाल हो जायेगा और उससे वह काम नहीं लिया जा सकेगा जो लेना है। जिसके बगैर प्लान आगे बढ़ ही नहीं सकता। दिव्या, देवांश और ठकरियाल का प्लान चाहे जो बने मगर बबलू को फंसाने के लिए कम से कम मेरा रिवाल्वर और लॉकर के जेवरात उसके कमरे में पहुंचाने उनके लिए जरूरी होंगे ताकि पुलिस कार्यवाई के दरम्यान बाद में उन्हें वहां से बरामद दिखाकर बबलू को पुख्ता ढंग से फंसाया जा सके। ये दोनों चीजें देवांश या ठकरियाल में से कोई बबलू के फ्लैट में पहुंचाने की कोशिश करेगा। यह कोशिश बबलू के कमरे की खिड़की के माध्यम से की जायेगी---इस बात का दावा मैं इसलिए कर सकता हूं क्योंकि दिव्या जानती है बबलू को खिड़की

खोलकर सोने की आदत है। ऐसे मौकों पर आदमी अपनी जानकारियों का ही इस्तेमाल करता है। और... इमारत के टैरेस पर होगा समरपाल। उसे मैं निर्देश दूंगा---तुम्हें बबलू के कमरे में पहुंचने वाले शख्स की फोटो तब खींचना है जब वह अपना काम करने के बाद वापस लौट रहा हो। इस निर्देश के दो उद्देश्य होंगे। पहला---मैं चाहता हूं देवांश या ठकरियाल अपने काम को पूरी शांति के साथ अंजाम देने में कामयाब हो। यदि पहले फोटो खींचा गया तो मुमकिन है मारे दहशत के वह काम को अंजाम ही न दे पाये। ऐसा हुआ तो मेरा प्लान आगे नहीं बढ़ पायेगा। और... फोटो खींचने का निर्देश इसलिए दूंगा जिससे उसके होश फाख्ता हो जायें। उसी के नहीं, उसकी बातें सुनकर बाकी दो के भी पैरों तले से जमीन खिसक जाये। शायद बार-बार लिखने की आवश्यकता नहीं है, मैं नहीं चाहता मेरे मरने के बाद वे चैन की एक भी सांस ले सकें। मुमकिन है, फोटो वाली घटना के बाद दिव्या और देवांश एक बार फिर घबराकर विचलित हों परन्तु मुझे पता है----ठकरियाल उन्हें सरेण्डर नहीं करने देगा। उसके बाद, अगले दिन सुबह बबलू को गिरफ्तार किया जायेगा। यहां मैं ऐसा जाल बिछा दूंगा कि दिव्या, देवांश और ठकरियाल की बुद्धियां तिगनी का नाच नाच जायेंगी। बबलू को फंसाने के लिए उन्होंने उसके कमरे में जो सुबूत प्लान्ट किये होंगे उनके अलावा भी मेरे खून से सने बबलू के कपड़ों के रूप में ऐसा एक और बेहद पुख्ता

सुबूत बरामद होगा जिससे वह मेरा हत्यारा साबित हो जायेगा। इतना ही नहीं, खुद बबलू कहेगा---हां, ज्वेलरी की खातिर मैंने ही चाचू की हत्या की है। पूरी कहानी सुनायेगा वह। वह कहानी जो समरपाल मेरी आवाज में उसे मोबाइल पर समझा चुका होगा। एक बार फिर, मैं यह सोच-सोचकर रोमांचित हुआ जा रहा हूं---उस वक्त क्या हालत होगी इन तीनों की जब बबलू इकबाले जुर्म कर रहा होगा। कुछ भी तो समझ में नहीं आ रहा होगा कमीनों के। ऐसी ही... कदम-कदम पर ऐसी ही सजाएं देना चाहता हूं मैं इन्हें। ऐसी सजाएं कि अपना हर सांस इन्हें बोझ नजर आने लगे। इनकी ऐसी ही हालत मेरा वह लेटर भी करेगा जो इन्हें बाकायदा रजिस्टर्ड डाक से मिलेगा। उसमें लिखा होगा---'अगर तुमने मेरी हत्या के इल्जाम में बबलू को फंसाया है तो अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल कर चुके हो।' उधर बबलू को निर्देश होंगे---जब वे पूछें, तुम्हारे कमरे में राजदान के खून से सने कपड़े कहां से आ गये? क्यों कर रहे हो झूठा इकबाले जुर्म? तब वह, सारी हकीकत खुलकर बता दे जो वह जानता होगा। ऐसे निर्देश मैं बबलू को इसलिए दिलवाऊंगा ताकि उसकी ताजा स्वीकृति 'तीनों' के दिमाग के फ्यूज ही उड़ा डाले। एक बार को तो यह बात उनके दिमाग पर चढ़े भूत की तरह नाचेगी कि राजदान जीवित है, मरने वाला उसका क्लोन था। कभी इस बात को सच मानेंगे तो कभी मेरे द्वारा फैलाया गया झूठ का जाल।

फैसला नहीं कर पायेंगे सच्चाई क्या है? हर कदम पर खड़ा नया सवाल, नई मुसीबतें उन्हें चैन से नहीं जीने देंगी। उनकी बेचैनी, उनकी व्यग्रतायें उन्हें बबलू को टार्चर करने के लिए मजबूर करेंगी मगर तब, वहां पहुंचेगा मानवाधिकार द्वारा नियुक्त किया हुआ वकीलचंद। उसका पार्ट मैं यह लेटर लिखने से पहले ही उसे समझा चुका हूं। वकीलचंद बबलू को टॉर्चर नहीं होने देगा। देवांश वाला मोबाइल बबलू उन्हें बरामद करा ही चुका होगा। समरपाल मेरी आवाज में उनसे बात करेगा। एक बार फिर होश उड़ जायेंगे उनके। मैंने समरपाल को एक बड़ा सा पैकेट दिया है। पैकेट में स्केल की चौड़ाई के बराबर काली-सफेद पट्टियों वाला एक गाऊन, मेरे ब्राण्ड के सिगार की एक डिब्बी, म्यूजिकल लाइटर, वह साबुन, परफ्यूम और आफ्टर शेव लोशन जैसी चीजें हैं जिन्हें मैं इस्तेमाल किया करता हूं। साथ ही है---विग सहित मेरे चेहरे का फेसमास्क। इसे मैंने एक बहुत ही निखरे हुए कारीगर से तैयार कराया है। इन सबकी मदद से राजदान बनकर उसे सबसे पहले बबलू के मां-बाप से मिलना है क्योंकि बबलू की गिरफ्तारी सबसे ज्यादा उन्हीं को साल रही होगी। बबलू की एक गर्ल फ्रैन्ड है---स्वीटी। जितना बबलू को पता होगा उतना ही उसे भी पता होगा। वह बबलू के मां-बाप को असलियत समझाने की कोशिश करेगी। मगर मैं समझ सकता हूं---इतनी छोटी बच्ची की बातों पर वे विश्वास नहीं कर पायेंगे। इसलिए समरपाल को पहुंचना है

वहां। उन्हें यकीन दिलाना है कि वह राजदान ही है और इसलिए राजदान की हत्या के इल्जाम में फंसे बबलू को कोई खतरा नहीं है। समरपाल उन्हें न केवल यह विश्वास दिलायेगा कि बबलू खतरे से बाहर है, जो वह कर रहा है राजदान के प्लान के मुताबिक कर रहा है। बल्कि स्वीटी सहित उन्हें अण्डरग्राउण्ड भी कर देगा क्योंकि बहुत जल्द ही ठकरियाल को उनकी तलाश होगी। अब तू पूछेगा---ठकरियाल को उनकी तलाश क्यों होगी? जवाब में समरपाल का इण्टरकाम सुन---स्वीटी, सत्यप्रकाश और सुजाता बहन को अण्डरग्राउण्ड करने के बाद उसे मेरे ही रूप में रामोतार नामक एक पुलिसिए से मिलना है। यह ठकरियाल का मुंहचढ़ा हवलदार है। सौदा चाहे कितने में पटे। उसके द्वारा बबलू को हवालात से फरार कराना है। बबलू की फरारी के बाद, तू समझ सकता है---ठकरियाल के पास बबलू पर दबाव बनाने के लिए एक ही रास्ता होगा---उसके मां-बाप और स्वीटी को उठा लेना। उसका यह मंसूबा परवान न चढ़े इसीलिए समरपाल उन्हें अण्डरग्राउण्ड कर देगा।'

यहां मैं यह समझा देना भी जरूरी समझता हूं---जिस वक्त समरपाल के निर्देशों के मुताबिक रामोतार बबलू को फरार करने के मिशन पर काम कर रहा होगा, उस वक्त वकीलचंद भी हवालात में होगा। समरपाल रामोतार को क्लोरोफार्म की एक शीशी देगा और कहेगा---काम करने से

पहले इसके जरिए वकीलचंद को बेहोश करना जरूरी है। थाने से निकलते ही बबलू को राजदान बना समरपाल मिल जायेगा। वहां से वह उसे वहां ले जायेगा जहां उसने सत्यप्रकाश, सुजाता और स्वीटी को छुपा रखा होगा। उन सबको वहीं छोड़कर मेरे निर्देशों के मुताबिक समरपाल विला में पहुंचेगा। किचन लॉन और विला में उत्पात मचा देना है उसे। डरा-डराकर बेहाल कर देना है दिव्या और देवांश को। इतना ज्यादा कि उन्हें राजदान के जीवित होने का भ्रम होने लगे। अपने हर तरफ उन्हें मैं ही मैं नजर आऊं। एहसास तो हो कमजर्फों को कि उन्होंने कितना घिनौना काम किया है। कम से कम समरपाल को मैं यह समझाने की जरूरत महसूस नहीं करता कि यह सब कैसे करना है। वह सक्षम है। समझदार है। जानता हूं---हालात के मुताबिक वह ड्रामे को शानदार ढंग से अंजाम दे लेगा। बस उद्‌देश्य समझा दिया है अपना---त्राहि-त्राहि कर उठें ये जलील। जो प्लान मैंने बनाया है, उसके मुताबिक---जिस रात इधर ये सब चल रहा होगा उसी रात जब ठकरियाल अपने फ्लैट पर पहुंचेगा तो उसका स्वागत मेरी आवाज की एक ऑडियो कैसिट करेगी। अपनी मेज की दराज से उसे मेरा लेटर मिलेगा। वह लेटर---जो उस मौके को ध्यान में रखकर मैं लिख चुका हूं। वहां होने वाले सारे ड्रामे को समरपाल पहले ही प्लांट कर चुका होगा। एक बार फिर इस ड्रामे के दो उद्‌देश्य होंगे। पहला---ठकरियाल को पुनः इस उलझन में

फंसा देना, राजदान जीवित है या नहीं। दूसरा---उसी वक्त उल्टे पांव ठकरियाल को वापस थाने भेजना। लेटर में लिखा होगा---जिस वक्त तुम ये लेटर पढ़ रहे हो उस वक्त थाने से बबलू को फरार करने की प्रक्रिया चल रही है।' यह पढ़ते ही वह थाने फोन करने की कोशिश करेगा। मगर कर नहीं पायेगा। क्योंकि समरपाल पहले ही उसका तार तोड़ चुका होगा। उसे उसी वक्त थाने पहुंचाने के पीछे पुनः मेरे दो उद्देश्य हैं। पहला---उसे आराम न करने देना। दूसरा---उसके हाथों रामोतार की गिरफ्तारी। यह गिरफ्तारी मैं इसलिए चाहता हूं ताकि रामोतार सार्वजनिक रूप से राजदान के जीवित होने का बयान दे और बीमा कम्पनी के लोग अगर क्लेम का पैसा दिव्या को देने के बारे में सोच रहे हों तो भटक जायें।"

अखिलेश ने जब ऐसा कहा तो ठकरियाल के होठों पर मुस्कान फैल गई।

यह मुस्कान यह सोचकर फैली थी कि कम से कम कहीं तो वह राजदान की सोचों से अलग काम कर सका। रामोतार को गिरफ्तार न करने के अपने फैसले पर मुस्करा उठा वह।

अखिलेश कहता चला जा रहा था---"मगर ऐसा हुआ नहीं। ठकरियाल ने रामोतार को गिरफ्तार नहीं किया। एक ही

कारण हो सकता है---राजदान की उम्मीद के मुताबिक ठकरियाल रामोतार को ताड़ ही नहीं सका। यहां के बाद राजदान ने लिखा है---'अखिलेश, तेरा काम यहीं से शुरू होता है। तेरा मुख्य काम है---मेरे बिखरे हुए सभी मोहरों को जोड़कर एक प्लेटफार्म पर लाना। सबसे पहले तुझे भट्टाचार्य के घर पहुंचकर उससे मिलना है। वकीलचंद को भी मैंने वहीं पहुंचने के लिए कहा है। इस तरह उस रात तुम तीनों वहां मिलोगे। भट्टाचार्य और वकीलचंद के दिमागों में बहुत सारे सवाल होंगे। तुझे उनके सभी सवालों के जवाब खुद-ब-खुद मिल जायेंगे। मेरे निर्देशों के मुताबिक अगली सुबह समरपाल भी वहां पहुंच जायेगा। इसके बाद का मिशन तुम सब एक-दूसरे को विश्वास में लेकर पूरा करोगे। संभवतः उसी दिन मेरी लाश पोस्टमार्टम से मिलेगी। अंतिम संस्कार किया जायेगा। इससे पहले ही तुझे विला में पहुंचना है। उन्हें वह लेटर दिखाना है जिसके मुताबिक मैंने तुझे अपनी हत्या की इन्वेस्टीगेशन के लिए नियुक्त किया होगा। इस आशय का लेटर इस लेटर के साथ मैं तुझे अलग से भेज रहा हूं। उस लेटर को पढ़कर और तेरे बारे में जानकर एक बार फिर उनके हाथों के तोते उड़ जायेंगे। अब कदम-कदम पर यह शंका दीमक बनकर उनके दिमागों को कचोटना शुरू कर देगी कि जाने किस पल हकीकत तक पहुंच जाये। जाने कब बबलू को बेगुनाह साबित करके उन्हें सूली का रास्ता दिखा दे। ऐसी शंकाएं आदमी को खोखला

कर डालती हैं और यही मैं चाहता हूं---अंदर से खोखले होते चले जायें वे। तेरा टैरर उनके सिर पर भय का भूत बनकर नाचे। जरा ध्यान से पढ़ उस लेटर को जो तुझे उन्हें दिखाना है। उसमें कहीं भी मैंने आत्महत्या का जिक्र नहीं किया है। उसे पढ़कर उन्हें लगेगा मैं तेरे जरिए उन्हें अपनी हत्या के इल्जाम में फंसाना चाहता हूं। एक बार फिर बुरी तरह उलझ कर रह जायेंगे वे। समझ नहीं पायेंगे---मैं खुद को जीवित साबित करके बीमा कम्पनी के रुपये को रोक देने के मिशन पर काम कर रहा हूं या उन्हें अपनी हत्या के इल्जाम में फंसाने के? दुश्मन को अगर इस किस्म की उलझनों में फंसा दिया जाये तो वह ठीक से सोच नहीं पाता अपने हक में करे तो करे क्या? दूसरी तरफ यह सवाल भी उनके दिमागों को कचोट रहा होगा---'जब खुद हमारे पास राजदान के ऐसे कई लेटर्स हैं जिनके मुताबिक उसने सुसाइड की है तो अखिलेश भला हमें हत्या के जुर्म में कैसे फंसा सकता है?' मेरा उद्देश्य उन्हें इसी किस्म के ऊटपटांग सवालों में उलझाये रखना है। एक और खास बात---मैं नहीं जानता तुझे किसी किस्म के नशे की लत है या नहीं? मगर, उन तीनों से मुलाकात के वक्त तुझे यह दर्शाना है कि तू सिगरेट में सुल्फा भरकर पीता है।"

अवतार कह उठा---"इसका क्या मतलब?"

"फिलहाल सुनता रह, स्टोरी के एण्ड में खुद-ब-खुद समझ

जायेगा।" रहस्यमय मुस्कान के साथ अखिलेश कहता चला गया —"इस वक्त बस इतना ही कह सकता हूं, राजदान ने लेटर चाहे जितना लम्बा लिखा हो मगर फालतू एक भी बात नहीं लिखी। मुझे 'सुल्फई' भाई होने का निर्देश देने के बाद उसने लिखा है---'उसी रात राजदान के रूप में समरपाल को फिर विला जाना है। अगर तब तक दिव्या और देवांश इस नतीजे पर पहुंच चुके हों कि पिछली रात उन्हें डराने की कोशिश करने वाला राजदान नहीं, उसका क्लोन था तो समरपाल नये सिरे से उन्हें यह विश्वास दिला देगा कि वह क्लोन नहीं, राजदान ही है। वहां क्या करना है, कैसे करना है---यह समरपाल की हैडेक है मगर उद्देश्य होना चाहिए---दिव्या और देवांश के बीच दरार पैदा कर देना। अविश्वास की ऐसी खाई खोद देना जिसमें गिरकर अंततः वे गर्क हो जायें।'"

"और वही समरपाल रात वहां करके आया है।" भट्टाचार्य ने कहा।

"वह भी करके आया है और तारों भरी रात में चिलचिलाती धूप वाली दोपहर का एहसास भी कराकर आया है उन्हें।"

"इसका क्या मतलब हुआ?" अवतार ने पूछा।

"राजदान के निर्देशों के मुताबिक वह उन्हें बताकर आया है,

न उनके पास राजदान की हैंड राइटिंग में लिखा कोई कागज है, न ही उसकी आवाज की कैसेट। उन्हें राजदान ने जितने भी लेटर लिखे थे सब उड़ने वाली इंक से लिखे थे। वैसी ही कैसिट्स थीं। तुम समझ सकते हो, यह जानकर उन्हें रात में सूरज नजर आ गया होगा। यह खौफ अब उन्हें हिलाये दे रहा होगा कि मैं उन्हें राजदान का हत्यारा साबित करूंगा और उनके पास इस सच्चाई तक को साबित करने वाला कोई सुबूत नहीं है कि राजदान ने वास्तव में आत्महत्या की है।"

"बेचारे!" वकीलचंद बड़बड़ाया।

अखिलेश की रहस्यमय मुस्कान में इजाफा होता जा रहा था। बोला---"लेकिन यह जानकर तुम्हें आश्चर्य होगा कि राजदान का असली प्लान यह भी नहीं है।"

"कमाल की बात है।" अवतार कह उठा---"फिर क्या प्लान है उसका?"

"पिछली रात जब समरपाल राजदान बना हुआ था और देवांश के साथ खिलवाड़ कर रहा था तो अचानक वहां ठकरियाल पहुंच गया। उससे समरपाल की हाथापाई हुई। यह सब उनकी नजर में 'अचानक' हुआ मगर मेरी और समरपाल की नजरों में नहीं। हमें मालूम था---देर-सवेर

टकरियाल को वहां पहुंचना है। राजदान के लेटर में लिखे प्लान के मुताबिक दिव्या और देवांश को बातों में लगाये रखकर समरपाल को तब तक वहां रुकना था जब तक टकरियाल पहुंच न जाये। उसकी गोली से बचने के लिए बुलेट प्रूफ जैकेट पहनकर गया था वह। मैंने उससे जानबूझकर हाथापाई की...।"

"क्यों?"

"ताकि गुत्थमगुत्था के दरम्यान वह समरपाल का मुंह सूंघ सके।"

"मुंह सूंघने से क्या मिलना था उसे?"

"सुल्फे की गंध मिली होगी। इससे वह इस नतीजे पर पहुंचा होगा कि राजदान का क्लोन अखिलेश है।"

"ओह! तो इसलिए राजदान ने तुझे उनके सामने सुल्फा भरी सिगरेट पीने के निर्देश दिये थे?"

दरवाजे के पीछे छुपे खड़े टकरियाल के रोंगटे खड़े हो गये।

दिमाग में ख्याल उभरा---'हे भगवान, कितने बड़े धोखे में फंस गया मैं! वह सब भी मरे हुए राजदान के प्लान के मुताबिक हुआ था?'

अवतार ने पूछा---"बात हवा के तूफानी झोंके की तरह खोपड़ी के ऊपर से गुजर रही है यार। भला ऐसा क्यों चाहता था राजदान कि ठकरियाल तुझे राजदान का क्लोन समझे?"

"मान ले ऐसा हो गया हो। अर्थात् उसने 'राजदान' के मुंह से सुल्फे की गंध सूंघ ली हो। जान गया हो वह मैं हूं। उस अवस्था में ठकरियाल क्या करेगा?"

"करेगा क्या?" अवतार ने कहा---"सबसे पहले अपने संदेह की पुष्टि करेगा। वह जानता ही है तू सेन्टूर होटल के इस सुईट में है। 'सयाना' होगा तो तेरी गैरमौजूदगी में यहां आयेगा। जांच-पड़ताल करेगा। सुईट की तलाशी लेगा ताकि उसके संदेह को विश्वास में बदलने वाला कोई सूत्र मिल जाये। हमारे बीच होने वाली बातों को सुनने की चेष्टा भी कर सकता है।"

"ये सारी कल्पनाएं राजदान मरने से पहले ही कर चुका था?" अखिलेश ने विस्फोट सा किया---"अपने लेटर में उसने लिखा है---'जब तुम होटल के कमरे में ये बातें कर रहे होगे तो ठकरियाल वहीं छुपा इन बातों को सुन रहा होगा'।"

"क-क्या?" अवतार, भट्टाचार्य और वकीलचंद एक साथ

चौंक पड़े।

उन सबसे ज्यादा बुरी तरह चौंका दरवाजे के पीछे खड़ा ठकरियाल।

हे भगवान!

क्या यह सच है?

इस वक्त, जो वह यहां खड़ा उनकी बातें सुन रहा है यह भी राजदान के प्लान के मुताबिक है?

मरने से पहले वह शैतान यह भी जानता था?

यह कि इस स्पाट पर वह छुपकर उनकी बातें सुनेगा?

अखिलेश की बात से तो ऐसा ही लगता है।

कुछ सुझाई नहीं दिया ठकरियाल को, दिमाग जाम होकर रह गया था।

"यहां यह मत समझ बैठना, समरपाल सचमुच सुल्फे का धसकी है।" अखिलेश कहता चला गया---"जिस तरह राजदान ने दिन में मुझे सुल्फा पीने का निर्देशा दिया था उसी तरह रात में समरपाल को पीकर विला में पहुंचने के

लिए कहा था ताकि सूंघते ही टकरियाल खुद को तीरअंदाज समझता हुआ इस नतीजे पर पहुंच जाये कि वह राजदान के क्लोन को 'ताड़' चुका है। अगर वह मेरी गैरमौजूदगी में यहां पहुंचा होगा तो सूइट की तलाशी में वे सभी चीजें। मिली होंगी जिनसे राजदान बना जा सकता है।"

"लेकिन उसे इस भ्रमजाल में फंसाने से फायदा क्या होने वाला है?"

"सोच---राजदान की सोचों के मुताबिक क्या अपनी कामयाबी के नशे में चूर वह इस वक्त यहीं-कहीं छुपा हमारी बातें नहीं सुन रहा होगा?"

टकरियाल के जहन में बड़ी तेजी से विचार कौंधा---'भाग! भाग टकरियाल! तू जो यह सोच रहा था कि तू अपने टेलेन्ट से यहां पहुंचा है, वह गलत है। बहुत बड़ी खुशफहमी का शिकार हो गया तू। तू तो यहां भी आया है तो सिर्फ उस जाल में फंसकर।'

घबराकर उसने तेजी से पलटना चाहा।

पलटकर भाग जाना चाहा।

मगर।

पीठ पर जोरदार ठोकर पड़ी।

हलक से चीख निकली।

मुंह के बल बैडरूम में बिछे कालीन पर जा गिरा वह।

अवतार, भट्टाचार्य और वकीलचंद चौंक पड़े।

हड़बड़ाकर अपने स्थानों से खड़े हो गये।

नजरें ठकरियाल पर स्थिर थीं।

उस ठकरियाल पर जो अभी तक पेट के बल कालीन पर पड़ा था। आश्चर्य के जितने भाव उसके चेहरे पर थे उतने ही अवतार, भट्टाचार्य और वकीलचंद के चेहरों पर भी थे।

खुद अखिलेश तक हैरान नजर आ रहा था। उसके मुंह से निकला---"इसका मतलब यह यहीं था। कमाल हो गया यह तो। हैरतअंगेज तरीके से कदम-कदम पर ठीक वही हो रहा है जो मरने से पहले राजदान न केवल सोच चुका था बल्कि लेटर में मुझे लिख भी चुका था। बस अवतार का जिक्र नहीं है उसके लेटर में। लिखा है---'जब तू वकीलचंद और भट्टाचार्य को यह सब बता रहा होगा, ठकरियाल सुईट में कहीं छुपा बातें सुन रहा होगा। इसलिए समरपाल को अपने साथ सुईट में मत लाना। उसकी ड्यूटी ठकरियाल पर नजर रखने के लिए लगाना क्योंकि तेरे अंतिम शब्द सुनकर वह घबरा जायेगा। भागने की कोशिश करेगा मगर, समरपाल भागने नहीं देगा उसे।'"

दरवाजे पर समरपाल नजर आया।

उसके होंठों पर मुस्कान थी।

हल्की लंगड़ाहट के साथ आगे बढ़ता हुआ बोला---"इस बात पर आश्चर्य मुझे भी है कि हर कदम पर केवल वही हुआ जो राजदान साहब अट्ठाइस तारीख को सोच चुके थे मगर अस्वाभाविक कहीं कुछ भी नहीं है। उन्होंने प्लान ही ऐसा बनाया था कि हर कदम पर वही होना था, जो हुआ। इस अंतिम घटना को ही लो---कितना स्वाभाविक था सबकुछ। मेरे मुंह से सुल्फे की गं ध सूंघकर इसे यह समझना ही था, क्लोन अखिलेश है। यह समझने के बाद इसे यहां आना ही था। तलाशी लेनी ही थी सुईट की। आप लोगों की बातें सुनने के लिए रुकना ही था।"

बुरी तरह बौखलाये ठकरियाल ने अपने स्थान पर पड़े ही पड़े दायां हाथ धीरे-धीरे अपनी बैल्ट की तरफ सरकाना शुरू किया।

वहां उसकी सर्विस रिवाल्वर थी।

परन्तु।

हाथ अभी दूर ही था कि अखिलेश ने आगे बढ़कर उस पर अपना जूता रख दिया।

ठकरियाल समझ गया---यह पैंतरा भी नहीं चलेगा।

अखिलेश झुका। उसके पेट और बैल्ट के बीच फंसा रिवाल्वर निकालकर अपने कब्जे में लिया और कहा---"उठकर खड़े हो जाओ इंस्पेक्टर साहब। सम्मान पूर्वक बैठो।"

ठकरियाल ने हुक्म का पालन किया।

एक-एक नजर सभी पर डाली उसने।

अवतार पर भी। जानने की कोशिश की---'अब' उसका क्या रुख है?

मगर जान न सका।

उसके चेहरे पर केवल.... और केवल आश्चर्य के भाव थे। समरपाल ने पूछा---"अगर तुम्हें इतना सब इतनी पहले से मालूम था तो मरने ही क्यों दिया अपने मालिक को?"

"मुझे रात के एक बजे सबकुछ पता लगा, तब तक राजदान साहब मर चुके थे।"

"मतलब?"

"उनतीस अगस्त की शाम चार बजे राजदान साहब ने मुझसे फोन पर कहा---समरपाल, रात के एक बजे तुम्हें चौकीदार से छुपकर 'राजदान एसोसिएट्स' के ऑफिस में पहुंचना है।

वहां हम तुम्हें मिलेंगे।' मैंने बहुत से सवाल किये, किसी का जवाब नहीं दिया उन्होंने। यह भी कहा---'सर, आपकी तबीयत तो वैसे ही ठीक नहीं है। कहां रात के एक बजे ऑफिस आते फिरेंगे। मैं विला ही आ जाता हूं', उन्होंने मुझे डांट दिया। कहा---'सवाल मत करो समरपाल, केवल वह करना है, जो हमने कहा है।' इस हुक्म के बाद उन्होंने फोन काट दिया। "

"फिर?"

"ठीक एक बजे आफिस पहुंचा। वहां राजदान साहब नहीं बल्कि उनकी टेबल पर एक चाबी के नीचे उनका लेटर रखा था। लेटर मेरे नाम था। पहली लाइन पढ़ते ही हकबका उठा मैं। लिखा था---'समरपाल, जब तक तुम इस लेटर तक पहुंचोगे तब तक मैं मर चुका होऊंगा। उसके बाद---लेटर में थोड़े हेर-फेर के साथ लगभग वही सब लिखा था जो उन्होंने अखिलेश को लिखे लेटर में लिखा है। मुझे कब, कहां, क्या करना है---सारे निर्देश विस्तारपूर्वक थे। लिखा था---'इस काम के लिए तुम्हें ही चुनने के पीछे दो कारण हैं। पहला...तुम हमेशा मेरे विश्वस्त और वफादार साथी रहे हो। दूसरा---तुम्हारी कद-काठी मुझसे मिलती है। बस अपनी लंगड़ाहट पर थोड़ा काबू पाना होगा। जिस चाबी से दबा ये लैटर तुम्हें मिला है वह मेरी पर्सनल अलमारी की चाबी है। उसे खोलो! उसमें तुम्हें एक पैकिट, मेरा मोबाइल फोन, कुछ

रुपये और कैमरा मिलेगा। पैकिट में वह सबकुछ है जिसके इस्तेमाल से तुम राजदान बन सकते हो। कैमरा उस शख्स का फोटो खींचने के लिए है जो बबलू के कमरे में उसे फंसाने वाले सुबूत प्लान्ट करेगा। पैसे इस मिशन पर खर्च होंने। वहां से मैं सीधा विला पहुंचा। करीब डेढ़ बजा था उस वक्त। दिव्या, देवांश और ठकरियाल उस वक्त लॉबी में थे।"

"बबलू, स्वीटी, सत्यप्रकाश और सुजाता कहां हैं?" अवतार ने पूछा।

हल्की मुस्कान के साथ समरपाल ने ठकरियाल की तरफ इशारा करके कहा---"राजदान साहब की तरफ से इसके सामने बताने की परमीशन नहीं है।"

"मानना पड़ेगा यारो! अपना वह यार था पहुंचा हुई चीज जिसका नाम राजदान था।" अवतार कह उठा---"मैं तो खैर इत्तेफाक से यहां पहुंच गया मगर पहुंचने के बाद जो कुछ जाना है, तबियत ग्लैड हो गई। पहली बार महसूस किया---आदमी अगर ब्रिलियेन्ट हो तो किसी खास मकसद को पूरा करने के लिए मरने के बाद भी अपने वफादार यार-दोस्तों में जिन्दा रह सकता है। क्या प्लान बनाया है पट्ठे ने! अट्ठाइस अगस्त को ही जानता था---इस वक्त, यह शख्स तुम सबके बीच बेबस हुआ बैठा होगा। मगर...

"मगर?"

"यह सोचकर दिमाग एक बार फिर अटक जाता है कि यहां से आगे क्या प्लान है अपने यार का? उसने यहां यह सिच्वेशन क्रियेट की तो क्यों की? अर्थात्---क्यों जानबूझकर इस 'स्पॉट' पर आप सबका भेद ठकरियाल पर खोला?"

"क्योंकि राजदान के मुताबिक इसकी सजा पूरी हो चुकी है।"

"मतलब?"

उसके सवाल का जवाब देने की जगह अखिलेश ठकरियाल की तरफ बढ़ा। उसके नजदीक पहुंचकर बोला---"इतना तो तुम समझ ही गये होगे कि यहां अपने पैरों से चलकर जरूर आये हो मगर अपनी मर्जी से नहीं आये। बाकायदा 'सुल्फाई' निमंत्रण देकर बुलाये गये हो।"

"पकड़ा जाने से पहले तो यह यही सोच रहा होगा---अपनी मर्जी से आया है।" वकीलचंद ने कहा---"बल्कि यह सोचकर अंदर ही अंदर फूला नहीं समा रहा होगा कि---क्या तीर मारा है। सुल्फे की गंध से ही ताड़ गया, क्लोन अखिलेश है।"

ठकरियाल के पास चुप रहने के अलावा कोई चारा नहीं

था।

जीवन में पहले कभी इतनी बुरी तरह नहीं फंसा था वह।

अखिलेश बोला "अपने लेटर में राजदान ने तुम्हें खुद इंटेलीजेन्ट शख्स कहा है। इसलिए मैं समझता हूं तुम खुद समझ रहे होगे कि जितना मसाला हमारे पास है, अगर चाहें तो उसके इस्तेमाल से तुम्हें फांसी के फंदे तक पहुंचा सकते हैं। बड़ी आसानी से हम यह साबित कर देंगे कि दिव्या और देवांश ने राजदान की हत्या की। एक पुलिस ऑफिसर होने के बावजूद तुमने पांच करोड़ के फेर में न केवल उनका साथ दिया बल्कि बेकुसूर बबलू को फंसाने का षड्यंत्र भी रचा।"

ठकरियाल अब भी चुप रहा।

"जवाब दो इंस्पेक्टर, मैंने ठीक कहा या गलत?"

"बस इतना ही कह सकता हूं।" ठकरियाल बोला---"मैं जीवित लोगों से कभी नहीं हारा। एक मरे हुए आदमी ने कदम कदम पर शिकस्त दी है।"

"जिस चक्रव्यूह में तुम फंसा चुके हो, बात अब यहां केवल हार जीत तक सीमित नहीं रह गई बल्कि जिन्दगी और मौत के बीच अटकी हुई है। जिन्दगी और मौत में से तुम्हें किसी

एक को चुनना है।"

"क्या कहना चाहते हो?"

"अवतार ने अभी-अभी तुम्हारे सामने एक सवाल किया था। यह कि तुम्हें यहां क्यों बुलाया गया? क्यों सारे भेद खोले गये तुम पर? मेरा जवाब था---'राजदान के मुताबिक इसकी सजा पूरी हो चुकी है।' हकीकत यही है। राजदान ने अपने लेटर में लिखा है---'अखिलेश, टकरियाल ने केवल मुझसे रिश्वत लेने का जुर्म किया था। यह जुर्म इतना संगीन नहीं है कि उसे मौत दी जाये। देखा जाये तो तुम्हारे चंगुल में फंसने तक वह अपने जुर्म की मुकम्मल सजा भोग चुका होगा। इसलिए तुम उसे एक ऑफर दोगे। मौत से बचने का ऑफर। यह उसकी मर्जी होगी, ऑफर कुबूल करे या न करे। तुम्हारा काम होगा जैसा वह चाहे, वैसा करना'।"

"मैं समझ नहीं पा रहा हूं, कैसे ऑफर की बात कर रहे हो तुम?"

"बड़ी सीधी सी बात है, तुम्हें दिव्या और देवांश के खिलाफ हमारी मदद करनी होगी। उनकी सजा अभी पूरी नहीं हुई है।"

"और अगर मैंने मदद नहीं की तो तुम लोग मुझे फांसी के

फंदे पर पहुंचा दोगे।"

"ठीक लिखा है राजदान ने---वाकई ब्रिलियेन्ट हो।"

"मदद करने की सूरत में?"

"दिव्या और देवांश की सजा पूरी होने के बाद हम लोग अपनी-अपनी दुनिया में लौट जायेंगे। भविष्य में कभी किसी को भनक तक नहीं लगेगी---राजदान मर्डर केस के दरम्यान तुमने ऐसा कुछ किया था जो नहीं करना चाहिए था।"

"सजा क्या देनी चाहते हो उन्हें?"

"हम कौन होते हैं सजा देने वाले। सजा तो मरने से पहले राजदान मुकर्रर कर गया है।"

"मैं उसी सजा के बारे में पूछ रहा हूं।"

"अभी तो अपना फैसला भी नहीं सुनाया तुमने।"

"फैसला सुनाने के बाद बता दोगे?"

"अगर तुमने ऑफर ही कुबूल न किया तो..

"मैं ऑफर कुबूल करने की सूरत में पूछ रहा हूं।"

"नहीं। क्लाईमेक्स के बारे में नहीं बताया जायेगा।" अखिलेश ने स्पष्ट कहा---"इजाजत ही नहीं है राजदान की तरफ से। हां, अगले या जरूरत पड़ी तो इससे अगले स्टैप के बारे में जरूर बताया जा सकता है।"

"क्या लिखा है राजदान ने? मैं ये ऑफर कुबूल करूंगा या नहीं करूंगा?"

"करोगे।"

"अगर न करूं?"

"राजदान ने लिखा है---'ऐसा हो नहीं सकता'।"

"कारण भी लिखा है कुछ?"

"इसे पढ़ लो।" कहने के साथ अखिलेश ने अपनी जेब से एक कागज निकालकर उसे पकड़ा दिया।

ठकरियाल ने कागज लिया। खोला पढ़ा। लिखा था---

"ठकरियाल, मेरा यह लेटर अखिलेश तुम्हें तब देगा जब तुम पूरी तरह उसके, भट्टाचार्य, वकीलचंद और समरपाल के चंगुल में फंस चुके होगे। नाज-नखरे भले ही तुम चाहे जितने दिखाओ, चाहे जितनी एक्टिंग करो मगर मैं जानता

हूं, अंततः मेरे दोस्तों का ऑफर मंजूर करोगे। इसलिए नहीं कि तुम मौत से डरते हो बल्कि इसलिए क्योंकि---हरामी नम्बर एक हो तुम। समझ चुके हो---इस मिशन से अब पांच करोड़ तो क्या, पांच फूटी कौड़ी भी तुम्हारे हाथ लगने वाली नहीं हैं। ऐसे में भला तुम दिव्या और देवांश का साथ क्यों देने लगे? कोई सगे वाले तो हैं नहीं ये तुम्हारे। और फिर तुम तो उनमें से हो जो अपने स्वार्थ की खातिर सगे वालों तक की गर्दन नापने से न हिचकें।"

तुम्हारे द्वारा इस ऑफर को कुबूल करने के पीछे एक दूसरा कारण भी होगा। यह कि---जब तुम्हें यह नजर आयेगा, ऑफर कुबूल न करने की सूरत में मेरे दोस्त तुम्हें यहां से उठाकर सीधे बड़े पुलिस अफसरों की अदालत में ले जाकर पटकने वाले हैं तो तुम सोचोगे---इससे बेहतर इन्हें चकमा दिया जाये। फिलहाल ऑफर कबूल करने की एक्टिंग की जाये। मौका लगते ही इन्हें बताया जाये कि ठकरियाल क्या चीज है? अर्थात् मौके की तलाश में तुम ऑफर कबूल करने का नाटक करोगे। मगर फिलहाल---करोगे ऑफर कुबूल ही। ना कुबूल नहीं कर सकते क्योंकि उसमें नुकसान ही नुकसान हैं, फायदा एक भी नहीं है और तुम जैसा हरामी आदमी वह काम कर ही नहीं सकता जिसमें फायदा न हो।

इसके बावजूद मेरी सलाह है---ऐसा कोई इरादा अपने जेहन में मत रखना। जितने हरामीपन तुम कर सकते हो, उस

सबसे मैंने अपने दोस्तों को आगाह कर दिया है और वे हमेशा तुम्हारे पैंतरे का जवाब देने के लिए तैयार रहेंगे। अपनी किसी भी चाल के जवाब में तुम्हें केवल और केवल नुकसान ही उठाना पड़ेगा। आगे तुम्हारे मर्जी। वैसे, अपने दोस्तों से मैंने कह दिया है---अपने करेक्टर के विरुद्ध अगर ठकरियाल अंत तक सच्चे दिल से तुम्हारा साथ दे तो उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचाना क्योंकि सचमुच---मेरी नजर में जितना गुनाह तुम्हारा था, उतनी सजा काट चुके हो। इसीलिए यहां तुम्हें मौका दिया जा रहा है।"

तुम्हारा–राजदान।

ठकरियाल ने लेटर पढ़ा। फिर चेहरा ऊपर उठाया और बोला---"तुम्हारा राजदान तो साला सीधे-सीधे आदमी के दिलो-दिमाग में झांकता है। उसे पढ़ता है जो हालात के मुताबिक आदमी सोच रहा होता है।"

"मुझे जवाब चाहिए।" अखिलेश ने लेटर उसके हाथ से वापस लेते हुए कहा---"ऑफर मंजूर है या नहीं?"

"रह ही क्या गया इस लेटर के बाद! मुझे मंजूर है। लेकिन...

"लेकिन?"

"यकीन मानो---ऑफर कुबूल करते वक्त मेरे दिमाग में तुम्हें देखलेने या वक्त आने पर मजा चखाने जैसी कोई बात नहीं है बल्कि..

"फिलहाल हमारे लिए तुम्हारा ऑफर कुबूल कर लेना काफी है।" अखिलेश ने उसकी बात काटकर कहा---"भविष्य बतायेगा तुमने ऐसा क्यों किया है। वैसे राजदान हमें बता चुका है---तुम वह सांप हो जो अपने बिल में भी सीधे नहीं चलते। तुमसे हर पल सतर्क रहने की सलाह अपने लेटर में उसने कई बार दी है, वही हम करने वाले हैं।"

"ये लो! ये रहा तुम्हारा राजदान!" कहने के साथ ठकरियाल ने काली-सफेद पट्टियों वाला नाइट गाऊन और नीले शनील से मंढ़ा डिब्बा डायनिंग टेबल पर डाल दिया। ऐसा करते वक्त उसके होंठों पर वह मुस्कान थी जो मैराथन की दौड़ जीतने वाले के चेहरे पर होती है।

इस समय वे विला की लॉबी में थे। देवांश ने पूछा---"डिब्बे में क्या है?"

"खोलकर देखो।"

देवांश आगे बढ़ा। डिब्बा उठाया। खोला। और होंठों से सिसकारी निकल गई। थोड़ी दूर खड़ी दिव्या ने पूछा---"क्या है उसमें?"

जवाब में देवांश ने कुछ कहा नहीं। हाथ डालकर डिब्बे से राजदान का फेसमास्क निकाल लिया। उसे देखकर दिव्या के होंठों से भी सिसकारी निकल गई। आंखों में आश्चर्य मिश्रित खुशी थी। मुंह से निकला---"हे भगवान! इससे डरा रहा था वह हमें?"

"गाऊन की जेब में राजदान के ब्राण्ड की सिगार की डिब्बी, म्यूजिकल लाइटर, उसके द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला परफ्यूम और आफ्टर शेव लोशन भी है।"

"यह सब कहां से मिला तुम्हें?" देवांश ने पूछा।

"जाहिर है---सेन्टूर होटल के सुईट नम्बर छः सौ बारह से। मेरा अनुमान बिल्कुल ठीक निकला। अखिलेश ही कर रहा था यह सारा ड्रामा।"

"और तुम इस सारे सामान को उठाकर यहां ले आये?"

"ताकि भविष्य में वह कभी इसके इस्तेमाल से तुम्हें डरा न सके।"

"लेकिन जब वह इस सारे सामान को अपने कमरे से गायब पायेगा तो..

"तो?"

"क्या उसका सीधा शक हम ही पर नहीं जायेगा?"

"केवल शक जायेगा। विश्वासपूर्वक कुछ नहीं समझ सकेगा वह। क्योंकि उसने मुझे देखा नहीं है। बहुत हलकान किया है हरामजादे ने हमें, थोड़ा हलकान तो वह भी होना चाहिए।"

"मतलब?"

"कल्पना करो उस सीन की जब वह इस सारे सामान को

वहां से गायब पायेगा जहां रखा था। किस कदर अवाक रह जायेगा वह? खोपड़ी घूमकर रह जायेगी पट्ठे की। पैरों तले से जमीन सरक जायेगी। पहली बार एहसास होगा उसे---हमला हम भी कर सकते हैं।"

"मगर..

"अजीब आदमी हो यार तुम। कामयाबी पर भी डर रहे हो।"

"मैं सोच रहा हूं, इनके गायब होने पर कहीं वह इतना न बौखला जाये कि..

"कि?"

"फाइनल स्ट्रोक ही मार बैठे।"

"फाइनल स्ट्रोक से मतलब?"

"अगर उसने मेरे फोटो को ही इस्तेमाल कर लिया तो खेल खत्म हो जायेगा।"

"क्या खेल खत्म हो जायेगा? ज्यादा से ज्यादा जेल चले जायेंगे हम तीनों। राजदान की हत्या का मुकदमा चलेगा। क्या फर्क पड़ता है तुम्हारे प्वाइंट ऑफ व्यू से? तुम तो शुरू से

ही इस झमेले से निकलने के लिए जेल जाने की सलाह दे रहे हो। वह तो मैं और दिव्या ही हैं जिन्होंने तुम्हारे प्रस्ताव को नहीं माना और कदम-कदम पर हैरान होने के बावजूद जूझते रहे। और अब देख रहा हूं, जेल जाने के खौफ से सबसे ज्यादा तुम्हीं डरे हुए हो।"

"यह वही स्थिति है इंस्पेक्टर!" दिव्या ने देवांश पर व्यंग्य किया---"कि जिन्दगी से आजिज आ चुका आदमी मौत मांगता तो रहता है मगर जब मौत झपटती है तो पूरे दमखम के साथ उससे दूर भागने की कोशिश करता है।"

देवांश शिकायती अंदाज में दिव्या को देखता रह गया।

"वैसे घबराओ मत। वैसा कोई इरादा नहीं है उसका।"

"कैसे कह सकते हो?

"मैं समझा नहीं।"

"सारी बातें सुनकर आया हूं उनकी।"

"ब-बात?"

"समरपाल भी उनसे मिला हुआ है।"

"समरपाल?"

"हां! समरपाल।" एक-एक शब्द पर जोर देता ठकरियाल कहता चला गया---"अखिलेश, भट्टाचार्य, वकीलचंद और समरपाल। चारों मिलकर काम कर रहे हैं। खुशी की बात ये है अब उन्होंने अवतार को भी अपने में शामिल कर लिया है। मुझे नहीं पता तुम्हें यह जानकर कैसा लगेगा कि तुम्हारा फोटो समरपाल ने ही खींचा था।"

"अ-आज फिर क्या पता लगाकर लाये हो तुम? पूरी बात क्यों नहीं बताते?"

"कोशिश तो वही कर रहा हूं मगर तुम बताने ही नहीं दे रहे। बार-बार बीच में टपक पड़ते हो।"

"देव! अब तुम बीच में बिल्कुल नहीं बोलोगे।" दिव्या ने देवांश को चेतावनी सी देने के बाद ठकरियाल से कहा---"हां इंस्पेक्टर, बताओ---तुम्हें कैसे-कैसे, क्या पता लगा?"

दिव्या की अधीरता को समझकर होठों ही होठों में मुस्करा उठा ठकरियाल। बोला---"अखिलेश के सुईट की तलाशी लेकर चुका ही था कि वकीलचंद, भट्टाचार्य और समरपाल के साथ वह अखिलेश भी सुईट में आ धमका। मैं फुर्ती से

रेफ्रिजरेटर के पीछे छुप गया। उनकी बातें सुनने लगा। बातें अभी अधूरी ही थीं कि अवतार पहुंच गया। जाहिर है---उसे देखकर वे झूम उठे। पागल से हो गये खुशी से। कुछ देर औपचारिक बातें होती रहीं। वे लोग उससे पूछते रहे---आजकल कहां है, क्या कर रहा है? अवतार ने कहा---"कुछ दिन पहले तक एक प्राइवेट फर्म में काम करता था, फिलहाल बेरोजगार हूं।"

"यानी उसने उन्हें अपना असली परिचय नहीं दिया?"

"देव।" दिव्या गुर्राई---"तुम फिर बीच में बोले?"

उन दोनों के बीच छत्तीस के आंकड़े को महसूस करके ठकरियाल मुस्करा उठा। बोला---"मैंने पहले ही कहा था, वह उनका साथ नहीं देगा क्योंकि हमारा साथ देने पर मजबूर है। उसके द्वारा उन्हें अपना असली परिचय न देने से जाहिर है---भविष्य में भी वह हमारा साथ देगा। और उसके साथ देने का मतलब है---कामयाबी बहुत जल्द हमारे कदम चूमने वाली है।"

"वैरी गुड।" पहली बार देवांश के चेहरे पर जोश, खुशी और उम्मीद नजर आई।

दिव्या ने पूछा---"बातें क्या कर रहे थे वे?"

"ठीक उस वक्त मेरी मौजूदगी कारगर साबित हुई जब वहां अवतार पहुंचा। वह न पहुंचता तो आपस में उन्हें उतनी डिटेल में बात करने की जरूरत ही नहीं थी। औपचारिक बातों के बाद जब अवतार ने पूछा वे किस चक्कर में उलझे हुए हैं तो उसे समझाने के लिए उन्हें वह सब डिटेल में बताना पड़ा जो हुआ था और राजदान के निर्देश पर जो कुछ वे कर रहे हैं। तभी तो यह पता लगा कि तुम्हारा फोटो खींचने वाला समरपाल था।"

"और क्या पता लगा?"

"हमें जेल भेजने का उनका कोई इरादा नहीं है, अपने ही स्तर पर बदला लेना चाहते हैं वो।"

"वही तो पता होना चाहिए हमें, उनके दिमाग में किस किस्म का बदला लेने की बात है?"

तभी ठकरियाल का मोबाइल बज उठा।

इस वक्त मोबाइल का बजना न दिव्या को अच्छा लगा न देवांश को।

ठकरियाल ने उसे जेब से निकाला। स्क्रीन पर नजर आ रहा नम्बर पढ़ा और ऑन करने के साथ 'हैलो' कहा। दूसरी तरफ से उभरने वाली आवाज को सुनते ही बोला---"हां

अवतार, मिले उनसे?"

यह महसूस करते ही दिव्या और देवांश के दिल व्यग्रता की ज्यादती के कारण जोर-जोर से धड़कने शुरू हो गये कि दूसरी तरफ अवतार है। ठकरियाल ने मोबाइल पर अभी-अभी पूछा था---"क्या रिपोर्ट है?" दूसरी तरफ से कुछ कहा जाने लगा। दिव्या और देवांश उसे नहीं सुन सकते थे। मारे बेचैनी के कान गर्म हो गये थे उनके। ठकरियाल 'हां' 'हूं' कर रहा था। वे उसकी भाव-भंगिमाओं से पता लगाने की कोशिश कर रहे थे दूसरी तरफ से क्या कहा जा रहा है? मगर, ज्यादा सफल नहीं हो पा रहे थे। अचानक ठकरियाल हंसा। हंसी थोड़ी खिसियानी सी थी। बोला---"इसलिए नहीं बताया था क्योंकि जानता था---वहां पहुंचने पर उन्हीं के मुंह से तुम्हें सब कुछ पता लग जायेगा। अब तो ये बताओ सबकुछ जानने के बाद तुम्हारा क्या इरादा है?" जवाब में पुनः दूसरी तरफ से कुछ कहा जाने लगा।

ठकरियाल ध्यान से सुनता रहा। सुनने के बाद बोला---"मुझे तुम्हारा फैसला सुनकर खुशी हुई।"

दूसरी तरफ से पुनः कुछ कहा गया।

ठकरियाल बोला---"वैरी गुड गिल! वैरी गुड! इसी तरह तुम
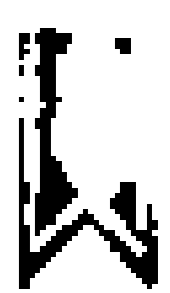
अपना काम करते रहो, समझ लो कानून तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। हां! हां! फिक्र मत करो, मैं तुम्हारा साथ दूंगा। अब ये बताओ, उनका प्लान क्या है?"

दूसरी तरफ से फिर कुछ कहा जाने लगा। दिव्या और देवांश की व्यग्रता चर्म पर पहुंचने लगी थी। उन्होंने देखा---सुनते-सुनते गंभीर हो गया ठकरियाल। थोड़ा फिक्रमंद भी नजर आने लगा। एक बार मरी सी आवाज में कहा गया---"हां! हां! सुन रहा हूं। तुम कहते रहो।" दूसरी तरफ से फिर कुछ कहा गया।सुनने के बाद ठकरियाल ने कहा---"बड़े कमीने हैं साले। मैं सोच भी नहीं सकता था कि वे इतने नीचे गिर जायेंगे...। हां! हां! वो मैं समझता हूं। कोशिश करूंगा...। अच्छा बाबा! पक्का होगा ऐसा। अभी तो मजबूर हूं मैं। एक बार सुबूत हाथ लग जाये। तब बताऊंगा ठकरियाल क्या चीज है। तुम जल्दी से जल्दी सबूतों तक पहुंचने की कोशिश करना।"

उसके बाद पुनः उसने दूसरी तरफ से कहा जाने वाला कुछ सुना और फिर, 'ओ.के.' कहकर सम्बन्ध विच्छेद कर दिया। एक सेकण्ड भी तो जाया नहीं किया दिव्या ने। पूछा---"क्या कह रहा था?"

"हम सफलता के बहुत नजदीक हैं।"

"म-मतलब?" देवांश रोमांचित नजर आया।

टकरियाल ने कहा---"यह पूछो मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं?"

"क्यों कह रहे हो?" दिव्या ने पूछा।

"क्योंकि हमारा अवतार नाम का मोहरा बिल्कुल सही पटरी पर चल रहा है।"

"प्लीज! खुलकर समझाओ।"

"हालांकि उसने ऐसी कोई बात नहीं बताई जो मुझे पहले से मालूम न हो। रेफ्रिजरेटर के पीछे छुपा हुआ था मैं। सब कुछ अपने कानों से सुना है! मगर, अवतार को क्या मालूम मैं कहां था? उसने वही सब बातें बताईं जो वहां हुई हैं। न कुछ छुपाया, न झूठ बोला। इससे जाहिर है वह हमारे साथ है, वही कर रहा है जो हम चाहते हैं। मैंने पहले ही कहा था---उसे हमारा ही साथ देना पड़ेगा। मगर, थोड़ा नाराज भी था मुझसे।"

"नाराज क्यों?"

"कहने लगा---बड़े घुटे हुए हो इंस्पेक्टर। दिव्या और देवांश के साथ मिलकर खुद ही सब कुछ किये बैठे हो और मुझे भनक तक नहीं लगने दी। बगुला भगत बने बात कर रहे

थे। अब मेरी समझ में वह असली कारण आया जिसकी वजह से तुमने मुझे इनके बीच भेजा है। इनके और तुम्हारे बीच तो बाकायदा जंग चल रही है।"

"ओह!" देवांश के मुंह से निकला।

"मालूम था, यह सब तो होगा ही। जब मैं उसे उनके बीच भेजूंगा तो सबकुछ पता तो लगेगा ही उसे। हंसकर यही कह दिया---'क्या बताता? जानता ही था---अब उनके पास जा रहे हो तो खुद-ब-खुद पता लग जायेगा।'

"सब कुछ पता लगने के बाद भी वह..

"वही पूछा मैंने।... दरअसल उसके पास हमारा साथ देने के अलावा कोई रास्ता नहीं है। दो कारण हैं, पहला---कानून से उसे सिर्फ मैं बचा सकता हूं। दूसरा---उसकी नजर तुम पर और तुम्हारी दौलत पर है।" कहते वक्त उसने अपनी आंखें दिव्या पर जमा दीं---"बड़ा कारण यही है।"

"ठकरियाल!" देवांश ने शंका व्यक्त की---"कहीं ऐसा न हो, हम आसमान से गिरकर खजूर में अटक जायें।"

"मतलब?"

"आगे चलकर अवतार के इरादे हमारे लिए मुसीबत बन

सकते हैं।"

"वक्त आने पर उससे भी निपट लिया जायेगा। फिलहाल उन चारों से निपटना जरूरी है।"

देवांश ने पुनः कुछ कहना चाहा मगर ठकरियाल ने उसे मौका दिये बगैर कहना शुरू कर दिया "पता नहीं किस बेवकूफ ने निगेटिव अंदाज में कहा है इस कहावत को? मेरे ख्याल से तो आसमान से गिरकर खजूर में अटकना अच्छा ही होता है। जरा सोचो---आदमी अगर आसमान से सीधा जमीन पर आ गिरे तो बचेगा क्या? केवल ये नश्वर शरीर। वह भी अंजर-पंजर हुआ पड़ा। आत्मा तो साली अंतरिक्ष की तरफ कूच कर जायेगी। खजूर में अटकने का मतलब है आदमी जिन्दा बच जायेगा और फिर वह वहां से गिरा भी तो मरेगा नहीं। मरहम पट्टी के बाद चंगा होने के चांस हैं। एक बार गिरकर मरने से बेहतर है किश्तों में गिरकर जिन्दा बच लिया जाये।"

"मैं तुमसे सहमत हूं इंस्पेक्टर।" दिव्या ने कहा "अवतार जो भी हालात क्रियेट करेगा उनसे उसी वक्त निपट लिया जायेगा। उसके बारे में हमें अभी से सोचकर हलकान नहीं होना चाहिए। फिलहाल हमारे लिए 'उनका' प्लान जानना और उससे निपटना जरूरी है। तुमने अभी तक वे बातें नहीं बताईं जो उनके बीच हुईं, जिन्हें तुमने रेफ्रिजरेटर के पीछे

छुपकर सुना।"

"वही बताने वाला था कि फोन आ गया।" ठकरियाल ने कहा---"बातें तो खैर बहुत लम्बी हैं मगर निचोड़ यही निकला---वकीलचंद, भट्टाचार्य और समरपाल राजदान के प्लान पर कंधे से कंधा मिलाये काम कर रहे हैं। अखिलेश उन्हें लीड कर रहा है। मरने से पहले राजदान ने अखिलेश को एक लम्बा लेटर लिखा था। तुम्हारे और उसके बीच कब, क्या, क्यों और कैसे हुआ तथा बदला लेने के लिए उन्हें क्या करना है, सब विस्तारपूर्वक लिखा है। बस यूं समझ सकती हो---अब तक उन्होंने जो भी कुछ किया है, वही सब राजदान के लेटर में लिखा है। वही सब उन्होंने अवतार को बताया जो मैंने भी सुना। हैरत की बात केवल यह है कि कम से कम अब तक कदम-कदम पर वही हुआ है जो राजदान पहले ही सोच चुका था या निर्धारित कर चुका था। परन्तु अब मेरी गारन्टी है, सबकुछ उसकी सोचों के उलट होने वाला है। कारण है---अवतार नाम के हमारे मोहरे का दुश्मन की सेना में घुस जाना। राजदान द्वारा बिछाई गई शतरंज की बिसात में वह कहीं था ही नहीं। जरूर होता---बशर्ते राजदान को उसका एड्रेस मिल जाता।"

"मैंने पूछा था, वे हमसे किस किस्म का बदला लेना चाहते हैं?" दिव्या बोली।

"हां। यही है महत्वपूर्ण बात।" कहने के बाद चुप हो गया ठकरियाल। जेब से निकालकर एक सिगरेट सुलगाई। उन्हें भी ऑफर की। दिव्या ने इंकार कर दिया, देवांश ने ले ली।

काफी देर तक बेचैनी के साथ उसके आगे बोलने का इंतजार करते रहे मगर वह नहीं बोला। किसी बहुत ही गहरे सोच में डूबा नजर आ रहा था वह।

दिव्या जब सस्पैंस को झेल न सकी तो बोली---"अटक क्यों गये इंस्पेक्टर? बोलो!"

"केवल इसलिए हिचक रहा हूं क्योंकि तुम्हें शॉक लगेगा।"

"म-मुझे?" दिव्या का दिल धाड़-धाड़ करने लगा।

"हां!" ठकरियाल ने उसकी आंखों में झांका---"तुम्हें!"

"बोलते क्यों नहीं?" वह चीख पड़ी---"बोलो तो सही!"
ठकरियाल ने बहुत आहिस्ता से कहा---"आज रात वे यहां आयेंगे।"

"यहां?"

"हां।"

"चारों?"

"पांचों। अवतार भी होगा।"

"अवतार?... उसे तो यही मालूम है न कि हमारी नॉलिज के मुताबिक वह हवालात में है?"

"अब उसकी नॉलिज में मैंने तुम्हें बता दिया है कि वह जमानत पर छूटकर अपने दोस्तों से जा मिला है।"

"ओह!" दिव्या ने कहा---"यहां आकर क्या चाहेंगे वे?"

"तुम्हें नंगी नचाना।"

"क-क्या?" दिव्या के हलक से चीख निकल पड़ी।

देवांश के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

"बकौल अखिलेश, राजदान ने अपने लेटर में यही लिखा है।" ठकरियाल कहता चला गया---"यह कि कैबरे डांस कराना है तुम्हें दिव्या से। कैबरे भी वह नहीं जो अच्छे होटलों में होता है। बल्कि वह जो भाई लोगों के घटिया और तीसरे दर्जे के होटलों में होता है। वह, जिसमें डांसर एक-एक करके अपने सारे कपड़े उतार देती है। बचे-कुचे दर्शक उतारते हैं। राजदान ने अपने लेटर के जरिए उन्हें

हिदायत दी है---'एक भी रेशा... कपड़े का एक भी रेशा बाकी नहीं बचना चाहिए दिव्या के जिस्म पर! नितांत नंगी नाचनी चाहिए वह तुम्हारी महफिल में। चारों तरफ तुम होगे। तुम! मेरे दोस्त। अगर वह खुद कपड़े न उतारे तो तुम सबको नोंच डालने हैं। डांस के दरम्यान अश्लील हरकतें तक करने पर मजबूर करना है उसे ठीक उसी तरह---जैसे थर्ड क्लास होटलों की कैबरे डांसर्स फ्लोर पर करती हैं। यही! यह सजा है उस वेश्या की। जिसने मेरी वफाओं की धज्जियां उड़ाई, उसे मेरे दोस्तों की महफिल में नंगी नाचना होगा।'"

सफेद पड़ चुका था दिव्या का चेहरा।

मानो बूंद-बूंद खून निचोड़ लिया गया हो।

यूं कांप रही थी वह जैसे जूड़ी का मरीज कांपा करता है।

ठकरियाल के चुप होने के बावजूद न वही कुछ बोल सकी, न देवांश।

ठकरियाल ने चहलकदमी सी करते हुए सिगरेट में कश लगाया। काफी देर की खामोशी के बाद बोला---"हद कर दी राजदान ने! ऐसी उम्मीद मुझे भी नहीं थी कि...

"नहीं!" दिव्या चीख पड़ी---"मैं नहीं नाचूंगी।"

दोनों चुप रहे।

"सुन लिया तुमने?" चीखने के साथ-साथ वह रो भी पड़ी थी---"हरगिज नहीं नाचूंगी मैं।"

एक बार फिर दोनों में से कोई कुछ नहीं बोला। लॉबी में खामोशी छाई रही। ये खामोशी जब लम्बी हो गई तो ठकरियाल ने देवांश से कहा---"समझाओ इसे।"

देवांश अवाक्!

"क्या समझाओ? क्या समझाने के लिए कह रहे हो इससे?" दिव्या बिफर पड़ी---"यह कि मैं उनके सामने नंगी नाचूं? कैबरे करूं? अश्लील हरकतें करूं? उफ्फ! नहीं! ऐसा कभी नहीं होगा।"

"दिव्या, दिल से नहीं, दिमाग से काम लो।"

"क्या काम लूं?... क्या काम लूं दिमाग से?... तुम मर्द हो। क्या फर्क पड़ता है तुम्हें मेरे उनकी महफिल में नंगी नाचने से? तुम्हें तो अब भी अपने ढेरों फायदे नजर आ रहे होंगे।अरे, मुझसे पूछो। एक औरत से पूछो ये कैसी सजा है!"

"मैं समझ सकता हूं दिव्या!" ठकरियाल ने कहा---"समझ

सकता हूं इस वक्त तुम पर क्या गुजर रहा है मगर..

"मगर?" वह दहाड़ी।

"समझने की कोशिश करो हालात को!"

"कुछ नहीं समझना! कुछ नहीं समझना मुझे!" कहने के बाद वह देवांश की तरफ घूमी। बोली---"तुम्हीं ठीक कह रहे थे देव! शुरू से तुम्हीं ठीक रहे थे। इस लालच में हमें फंसना ही नहीं चाहिएं था। पड़ना ही नहीं चाहिए था झमेले में! हालांकि शुरू से यही बात चल रही है! बार-बार यही बात सामने आई कि राजदान का मकसद हमें जेल भेजना नहीं है! फांसी नहीं कराना चाहता वह हमें। उसने तो खुद ही कहा था---'जी चाहता है अपने हाथों से तुम दोनों की खोपड़ियां खोल दूं। इस काम को करने से दुनिया की कोई ताकत इस वक्त मुझे रोक भी नहीं सकती। मगर नहीं, इतनी आसान सजा नहीं दे सकता मैं तुम्हें। तुम्हारे खून से अपने हाथ रंगने का मैं जरा भी ख्वाहिशमंद नहीं हूं। जो गुनाह तुमने किया है उसकी सजा इतनी आसान नहीं हो सकतीकिदो धमाके हों और तुम्हें हर मुसीबत से निजात मिल जाये...। शांतिबाई और विचित्रा से कहीं ज्यादा घृणित वेश्या हो तुम। वे कम से कम कोठे पर तो बैठी थीं। तुम तो मेरे दिल में बैठकर अपनी गोद में किसी और को बैठाये रहीं। तुम जैसी तवायफ के लिए यह सजा कोई सजा नहीं कि मैं

गोली मारूं और तुम्हारा गंदा शरीर मेरे कदमों में आ गिरे। तुम्हारी सजा तो वो है, जो मैंने मुकर्रर की है! जो कदम-कदम पर तुम्हें मारेगी। याद रखना मेरी बात---मरने के बाद अगर मैंने तुम्हें तड़प-तड़पकर मरने पर मजबूर नहीं कर दिया तो मेरा नाम राजदान नहीं। सच ही कहा था उसने। उसने तो जिन्दगी ही मौत से बद्तर बना दी मेरे लिए। मगर...मगर उसके इतना कहने के बावजूद मैं नहीं समझ पाई उसके दिमाग में क्या है? कितनी घिनौनी सजा देनी चाहता है वह मुझे। समझ जाती तो वहीं, उसके कदमों में गिर जाती। गिड़गिड़ाकर खुद को गोली मारने के लिए कहती। नहीं मारता तो रिवाल्वर छीन लेती उससे। खुद ही खुद को गोली मार लेती। मगर, वो वक्त निकल चुका है। अब तो एक ही रास्ता है देव, वही रास्ता जो तुम शुरू से सुझा रहे हो। आओ... एस.एस.पी. के पास जाकर सरेण्डर कर देते हैं। सब कुछ बता देते हैं उसे। सब कुछ। लोगों को हमारे अवैध सम्बन्धों के बारे में भी पता लगता है तो लगे। उस जलालत भरे कलंक के साथ भी जिया जा सकता है। लेकिन...लेकिन वह नहीं हो सकता जो वे चाहते हैं। जो राजदान मुकर्रर करके मरा है।"

देवांश कुछ बोल न सका। पत्थर की शिला की मानिन्द खड़ा था वह।

"तुम कुछ बोल क्यों नहीं रहे?' दिव्या दहाड़ी---"एसएस.पी.

के पास चलते क्यों नहीं मेरे साथ?"

"दिव्या।" वह बोला---"हमें जल्दबाजी में फैसला नहीं करना चाहिए।"

"क-क्या?... क्या मतलब?" दिव्या के हलक से किल्ली निकल गई---"क्या तुम यह कहना चाहते हो उनके बीच मेरे नंगे नाचने के प्रस्ताव पर विचार किया जा सकता है?"

"मेरा मतलब यह नहीं है।"

"और क्या मतलब है तुम्हारा?"

"रात अभी दूर है, हमें इस मुसीबत से निकलने का रास्ता सोचना चाहिए।"

"क्या रास्ता सोचोगे तुम? रास्ता और है ही क्या? दो ही तो विकल्प हैं। या तो मैं नंगी होकर नाचूं या एस.एस.पीके पास चली जाऊं।" बिफरे हुए अंदाज में वह चीखती चली गई---"समझ गई मैं। समझ गई तुम क्या चाहते हो। समझ तो मैं उसी वक्त गई थी जब खुद को माफ होता देखकर मुझे मारने के लिए तैयार हो गये थे। ठकरियाल की तरह तुम पर भी क्या फर्क पड़ता है मेरे किसी के सामने नंगी नाचने से? उफ्फ! कितनी बड़ी भूल की मैंने तुमसे प्यार करके। हीरे को ठोकर मारकर मैंने कांच को गले लगा

लिया। तुम कुत्ते हो! जलील हो! स्वार्थी हो तुम!"

"दिव्या!" देवांश गर्जा---"जुबान को लगाम दो।"

"क्यों...क्या कर लेगा तू मेरा?" दिव्या जैसे पागल हो चुकी थी---"अरे, तुझमें तो अपने भाई का एक अंश तक नजर नहीं आ रहा मुझे। उन मां-बाप की औलाद तू हो नहीं सकता जिनका राजदान था। उसने मुझसे प्यार किया तो इतना टूटकर कि तेरे साथ मुझे देखकर पागल हो उठा..और एक तू है गैरों के सामने नंगी नचाने को तैयार है मुझे। अरे, कम से कम यह तो सीख लिया होता राजदान से कि प्यार कैसे किया जाता है। जिससे प्यार किया जाता है उसके लिए...

"प्यार?" देवांश दांत भींचकर गुर्रा उठा---"उसे प्यार कहती है तू? लगभग नंगी आई थी तू मेरे कमरे में। इसके बावजूद मैंने कुछ नहीं किया। तू ही पके फल की तरह गोद में आ गिरी थी मेरी। दरवाजा बंद करके पलटी और आ लिपटी मुझसे। उसे प्यार कहती है तू? सुनना ही चाहती है तो सुन---वह प्यार नहीं 'आग' थी तेरे जिस्म की जिसे शान्त करने तू मेरे कमरे में आई थी। वह आग जिसे राजदान एड्स के कारण बुझा नहीं पा रहा था। प्यार का मतलब तो तूने नहीं सीखा कभी। सीखा होता तो सारा जीवन राजदान की बेवा बनकर गुजार देती। उसी वक्त पकड़वा देती मुझे

जब तूने मुझे बाथरूम में अपना जिस्म देखते पाया था। ठीक ही कहा था राजदान ने---तू वेश्या है। शांतिबाई और विचित्रा से कहीं ज्यादा घृणित वेश्या।"

दिव्या लम्बे-लम्बे नाखून वाली जख्मी बिल्ली की तरह झपटी थी देवांश पर। दोनों हाथों से उसका गिरेबान पकड़कर हिस्टीरियाई अंदाज में चिल्लाई---"कमीने! कुत्ते! गाली देता है मुझे। वेश्या कहता है। अरे जलील तो तू है। सूअर है तू। मुझे झरने पर नहाते छुप-छुपकर कौन देख रहा था? तू था वह! तू! शर्म नहीं आई तुझे अपने उस भाई की पत्नी को उन नजरों से देखते हुए जिसने तेरे प्यार की खातिर बाप तक बनने से इंकार कर दिया था?"

इससे पहले कि जवाब में देवांश भी कुछ कहे...।

इससे पहले कि उनमें हाथापाई शुरू हो जाये...।

ठकरियाल ने दिव्या को पकड़कर एक झटके से अलग किया। चीखा---"क्या बेहूदगी है ये? यही! यही सब तो चाहता था राजदान। इसी सब की बुनियाद रखने के बाद मरा है वह।"

"तू ही कौन सा दूध का धुला है?" दिव्या सचमुच आपे में नहीं रही थी---"खाकी वर्दी पहनता है मगर जहां दौलत देखी कि लार टपक जाती है तेरी। हम तो उसी वक्त

सरेण्डर करने को तैयार थे। तूने ही मजबूर किया। असल में तो तू ही है दौलत की गंदी नाली में गिजबिजाने वाला कीड़ा।"

चटाक।

ठकरियाल का भरपूर चांटा उसके गाल पर पड़ा।

अवाक रह गई दिव्या।

जैसे खिलौने में भरी चाबी समाप्त हो गई हो।

रोना-पीटना। चीखना-चिल्लाना सब बंद।

हकबकाई सी वह केवल ठकरियाल की तरफ देखती रह गई थी। उस ठकरियाल की तरफ जिसने उसे इस हालत में देखकर झंझोड़ते हुए कहा---"होश में आओ दिव्या! होश में आओ।"

अचानक फूट-फूटकर रो पड़ी वह।

दोनों हाथों से चेहरा छुपाकर वहीं, सोफे पर ढेर हो गई।

दस मिनट तक यही स्थिति रही।

वह रोती रही।

न ठकरियाल कुछ बोला, न देवांश।

ठकरियाल तो खैर दिव्या को भड़ास निकालने का मौका देना चाहता था मगर देवांश इसलिए चुप था क्योंकि वर्तमान हालात में बोलने के लिए उसे कुछ सूझ ही नहीं रहा था।

दिव्या के अपशब्दों ने खुद उसी को गुस्से से भर दिया था।

आहिस्ता-आहिस्ता चलता ठकरियाल दिव्या के नजदीक पहुंचा। तब तक उसकी रुलाई केवल सिसकियों में बदल चुकी थी। ठकरियाल ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा---"मुझे वह जरा भी बुरा नहीं लगा तो तुमने मेरे बारे में कहा क्योंकि जानता हूं उस वक्त तुम अपने आपे में नहीं थीं। बड़ी भयंकर स्थिति थी वह। उस अवस्था में आदमी अगर ज्यादा देर रह जाये तो सचमुच दिमाग क्रैश हो सकता है। उसी से बचाने के लिए मुझे चांटा मारना पड़ा। माफ कर दो मुझे।"

"मगर मैं उनके सामने नहीं नाचूंगी।" बिफरकर कहने के साथ वह एक झटके से खड़ी हो गई।

"मत नाचना। कोई जबरदस्ती तो नचा नहीं सकता किसी को किसी के सामने मगर..

"फिर मगर?"
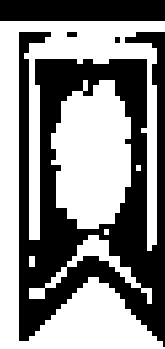
“कम से कम बातें तो पूरी सुन सकती हो मेरी।”

वह गुर्राई---“मुझे कुछ नहीं सुनना।”

“ये बात तो गलत है।” ठकरियाल उसे बहुत ही सुलझी हुई टैक्निक से हैंडिल कर रहा था---“जिस मिशन पर हम निकले थे, तीनों में से किसी भी बाकी दोनों को बीच मंझधार में छोड़कर यूं पलायन कर जाना या जिद पर अड़ जाना ठीक नहीं है। एक-दूसरे के पार्टनर हैं हम और पार्टनर जैसा ही 'बिहेव' करना चाहिए।”

“वह मिशन अब रह ही कहां गया है जिस पर हम निकले थे।” ठकरियाल की बातों में आकर दिव्या ने बोलना शुरू कर दिया---“बीमा कम्पनी से पांच करोड़ मिलने का अब सवाल ही कहां रह गया?”

“क्यों... क्यों नहीं रह गया सवाल?”

दिव्या उसकी तरफ देखती रह गई।

ठकरियाल ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहना शुरू किया---“बल्कि मैं तो कहता हूं उम्मीद ही अब बंधी है। बल्कि दावा है मेरा अब हमें उस रकम तक पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता।”
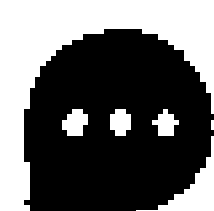
"तुम्हारे ऐसे दावे मैं कई बार सुन चुकी हूं।"

"एक बार और सुन लो।"

"बहलाना चाहते हो मुझे?"

"बहला नहीं रहा पगली, समझाना चाहता हूं। मगर..

"मगर?"

"सुनो तो समझो।"

लट्ठमार अंदाज में कहा उसने---"कहो क्या कहना है?"

"कोशिश करो समझने की। अभी तक तो हम उन्हीं के जाल में फंसे हुए थे बल्कि, राजदान का जाल कहा जाये तो ज्यादा बेहतर होगा। पहली बार उन पर हावी होने की पोजीशन में आये हैं। डायनिंग टेबल पर पड़े उस सामान को देखो और विचार करो क्या अब भी वे राजदान को जीवित प्रचारित करके बीमा कम्पनी को 'कन्फ्यूज्ड' कर सकते हैं? नहीं न? हम उस सामान के जरिए बड़ी आसानी से साबित कर देंगे, तुम्हारे दुश्मन लोग नहीं चाहते तुम्हें क्लेम का पैसा मिले इसलिए राजदान के क्लेम का प्रपंच रचा गया। यह हमारी पहली कामयाबी है। इसे कम करके मत आंको।"
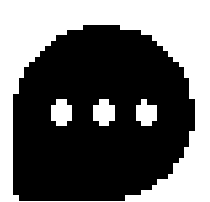
"अकेले एक फोटो के जरिए वे जब चाहेंगे..

"वही...वही समझाना चाहता हूं मैं। बात अकेले फोटो की नहीं है। राजदान के उन लेटर्स की भी है जो उनके पास हैं। उनके बेस पर वे जब चाहें हमारे सारे इरादों पर पानी फेर सकते हैं। मेरे और अवतार के बीच मोबाइल पर अभी ये ही सब बातें हो रही थीं। जितना जरूरी फोटो और सारे लेटर्स को अपने कब्जे में लेना है उतना ही जरूरी यह पता लगाना भी है कि अखिलेश ने स्वीटी और उसके मां-बाप को कहां रखा है। सोचो, अगर एक बार वह सब हमारे कब्जे में आ जायें तो लाख सिर पटकने के बावजूद वे क्या कुछ कर सकेंगे हमारा?"

"सब्जबाग मत दिखाओ इंस्पेक्टर। ऐसा नहीं हो सकता।"

ठकरियाल ने दृढ़तापूर्वक कहा---"ऐसा होकर रहेगा।"

"कोई वजह भी तो हो।"

"तुम वजह की बात कर रही हो... मैं और अवतार एक तरह से पूरी स्कीम बना चुके हैं।"

"स्कीम?"

"जरा सोचो---दुश्मन की सेना के बीच, उनके किले में घुसा

प्यादा भी कितना तूफान उतार देता है। और अवतार को हम ज्यादा नहीं, वजीर कह सकते हैं। कारण है---उस पर उन चारों का अटूट विश्वास। केवल एक ही गड़बड़ी हो सकती थी। यह कि अवतार हमें धोखा दे जाये। वैसा हो नहीं सकता, कई बार बता चुका हूं उसके अपने स्वार्थ हैं। मोबाइल पर यही कहा उसने---वह फोटो, लेटर्स और बबलू के ठिकाने का पता लगाने की कोशिश कर रहा है। मैं जानता हूं इतनी समझदार तुम हो। समझ सकती हो उनका दोस्त, उनका विश्वासपात्र होने के कारण अवतार के लिए यह सब कितना आसान है। किसी भी पल... किसी भी पल कामयाब हो सकता है वह। इधर सारे सबूत उसके हाथ में आये, बबलू को ठिकाने का पता लगा कि मैं फोर्स के साथ छापा मारकर एक फरार मुजरिम को बरामद कर लूंगा।"

कन्विंस होती नजर आई दिव्या। उसकी आंखों में आशा की ज्योति नजर आने लगी थी।

ठकरियाल ने गर्म लोहे पर चोट की---"मैं यही समझाने की कोशिश कर रहा हूं दिव्या। यही कि हम मुकम्मल कामयाबी के कितने नजदीक हैं। इस वक्त हममें से किसी को किसी छोटी सी बात को लेकर जिद पर नहीं अड़ जाना चाहिए। बेवकूफी होगी ये। लगभग हाथ लग चुकी सफलता को खुद ही हाथ से फिसला देना होगा। आश्चर्य मुझे इस बात पर है कि इतनी समझदार होने के बावजूद तुम इतनी सीधी-सादी

बात को समझ क्यों नहीं पा रही हो?"

"उनके सामने नंगी नाचने को तुम छोटी बात कह रहे हो?"

यही थी वह स्थिति जिसमें ठकरियाल दिव्या को लाना चाहता था। जिस प्रस्ताव को सुनकर वह पूरी तरह भड़क गई थी। किसी की कुछ सुनने को ही तैयार नहीं थी। उस पर 'अब' वह डिस्कस करने को तैयार थी। बोला---"मुझे मालूम है ये कितनी बड़ी बात है। क्या गुजर सकती है एक औरत पर गैर मर्दों के सामने नंगी होकर नाचते वक्त। जैसा राजदान ने लिखा है, वैसा तो भारतीय नारी बैडरूम में अपने पति के सामने भी नहीं कर सकती। इसीलिए तो लिखा है कमीने ने। इसी बात को सुनकर मैंने मोबाइल पर अवतार से कहा था---'बड़े कमीने हैं साले। मैं तो सोच भी नहीं सकता था वो इतने नीचे गिर जायेंगे।' जवाब में अवतार ने कहा था---'कमीने वे नहीं राजदान था, जिसने लेटर में ऐसा करने के लिए लिखा।' इतना कहने के बाद वह बोला---'यह बात बार-बार मुझे भी अंदर तक कचोटे जा रही है कि दिव्या को ...उस दिव्या को सबके सामने नंगी होकर नाचना पड़ेगा, जिसे लेकर मैंने जाने कितने ख्वाब बुन डाले हैं। उस दृश्य की कल्पना करके दिल बैठा जा रहा है मेरा। पूरी कोशिश करूंगा वे क्षण आयें ही नहीं।"

"वह क्या कर सकता है?"

"उसने कहा है---रात होने से पहले मैं सारे सबूतों को अपने कब्जे में करने और बबलू के ठिकाने का पता लगाने की पूरी कोशिश कर रहा हूं। जैसे ही पता लगेगा, तुम्हें फोन करूंगा। ग्रीन सिग्नल दूंगा। तुम फौरन छापा मारकर बबलू को गिरफ्तार कर लेना। तब देखेंगे इन सालों को कि कैसे दिव्या को नंगी करके नचायेंगे।"

दिव्या की जान में जान पड़ गई। मुंह से निकला---"क्या ऐसा हो सकता है?"

"यही तो मैं कहना चाहता था।" बहुत देर बाद देवांश बोला---"यह भी मुमकिन है रात तक कोई..

"तुम चुप रहो!" एक बार फिर गुर्राहट निकली थी दिव्या के हलक से। साथ ही, उसे खा जाने वाली नजरों से देखती रह गई थी वह। आंखों से कुछ वैसी चिंगारियां निकल रही थीं जैसी वैल्डिंग करते वक्त निकला करती हैं। देवांश कुछ कहने वाला था कि 'बात कहीं बिगड़ जाये' इस खौफ के मारे ठकरियाल ने उसे चुप ही रहने का इशारा किया।

देवांश कसमसाकर रह गया।

चेहरा साफ-साफ कनपटियों तक दहकता नजर आ रहा था।

"क्यों नहीं हो सकता?" ठकरियाल ने जल्दी से

कहा---"हमारा नसीब अच्छा हुआ तो जरूर हो सकता है। तुम जानती हो---अवतार तुम्हारे प्रति दिल में कैसी भावनाएं रखता है। मैं तो कहता हूं, उस सबको टालने की वह भरपूर कोशिश करेगा। पूरी शिद्दत से। मर जो मिटा है तुम पर। मगर, साथ ही उसने कहा है मुकम्मल कोशिश के बावजूद अगर मैं रात तक कामयाब नहीं हो सका तो मजबूरी है दिव्या को वह करना ही पड़ेगा, जो वे चाहते हैं क्योंकि उसने नहीं किया तो ये लोग जबरदस्ती नंगी करेंगे उसे और सफलता के इतने नजदीक पहुंचकर इन्हें वह मौका देना बेवकूफी होगी। उस अवस्था में तो बस एक ही बात सोची है मैंने, अगर इन अनहोनी को न टाल सका। नाचना ही पड़ा दिव्या को तो तब जब सारे सुबूत मेरे कब्जे में होंगे, इन सब सालों को नंगा करके नचाऊंगा। देखूंगा ये मर्द होने के बाद भी शर्म से जमीन में गड़ते हैं या नहीं?"ज

यह सोचकर दिव्या का चेहरा एक बार फिर सफेद पड़ गया कि अंततः उसे नाचना पड़ ही सकता है। बोली---"लेकिन जब वह उनका दोस्त है। पूरी तरह विश्वासपात्र है उनका तो फिर सुबूतों और बबलू तक पहुंचने में इतनी देर क्यों लग रही है?"

"इतना ही कह सकता हूं---इस मामले में अखिलेश थोड़ी 'एक्स्ट्रा प्रिकोशंस' बरत रहा है। सुबूत उसी के कब्जे में हैं। बबलू का पता उसने अवतार को ही नहीं, वकीलचंद,

भट्टाचार्य और समरपाल को भी नहीं बताया है। मेरे सामने वकीलचंद ने पूछा था “बबलू को कहां रखा है? अखिलेश ने पूछा चिंता मत करो। वे सुरक्षित हैं। कोई नहीं पहुंच सकता वहां। इसके बाद अवतार का सीधे पूछना उसे शक के दायरे में फंसा देगा। गुप्त तरीके से पता लगाना है उसे।”

“ओह! इसका मतलब अखिलेश दोस्तों पर भी पूरा विश्वास नहीं कर रहा?”

“मुमकिन है, यह निर्देश भी उसे राजदान के लेटर ने ही दिया हो।”

“हे भगवान!” दिव्या के अंतर्मन से दुआ निकली---“जल्दी से जल्दी कामयाब कर दे अवतार को।”

ठकरियाल इस एक ही वाक्य से समझ गया---दिव्या हन्ड्रेड परसेन्ट न सही मगर, फिफ्टी परसेंट जरूर तैयार हो चुकी है। बोला---“अवतार ने मुझसे कहा था---‘अगर मजबूरी ही आ गयी तो तुम्हें दिव्या को तैयार करना होगा।’ मैंने कहा था---‘कोशिश करूंगा।’ वह बोला---‘कोशिश नहीं, पक्के तौर पर होना चाहिए यह काम। आज नहीं तो कल जो कामयाबी मिलती हमें साफ नजर आ रही है उसे गवां नहीं सकते। उसकी इस बात पर मैंने कहा था---‘अच्छा बाबा। पक्का! पक्का होगा ऐसा!’

एक बार फिर दिव्या को काटो तो खून नहीं।

रात के बारह बजे तक दिव्या ठकरियाल से हजारों बार पूछ चुकी थी---"अवतार का फोन आया?"

ठकरियाल ने हर बार इंकार में गर्दन हिलाई।

उसके इंकार पर अब तो सफेद की जगह काला पड़ने लगा था दिव्या का चेहरा।

सवा बारह बजे वे विला पर आ धमके।

अखिलेश, वकीलचंद, भट्टाचार्य, अवतार और समरपाल।

दिव्या को लगा---उसे सूली पर चढ़ाने के लिए जल्लाद आ पहुंचे हैं।

मौत की छाया, उसके चेहरे पर ही नहीं, दिलो-दिमाग तक पर कत्थक कर रही थी।

"आप लोग सब साथ-साथ?" ठकरियाल ने कहा---"रात के इस वक्त?"

अखिलेश बोला---"रात के इस वक्त तुम क्या कर रहे हो यहां?"

ठकरियाल अचकचाया।

अखिलेश बोला---"अब ड्रामेबाजी खत्म ही कर दी जाये तो बेहतर है...। कान खोलकर सुनो मिस्टर ठकरियाल। हम जानते हैं तुम रात के इस वक्त यहां इसलिए हो क्योंकि इन दोनों के पाप में बराबर के हिस्सेदार हो। बीमा कम्पनी से पांच करोड़ ऐंठने के लालच में तुमने बबलू को फंसाया।"

"क-क्या बात कर रहे हो तुम?" दिव्या और देवांश के सामने यह सारी एक्टिंग जरूरी थी।

"वो जो राजदान का लेटर मैंने तुम्हें दिखाया था।" दिव्या और देवांश को सुनाने के लिए अखिलेश कहता चला गया---"जिसमें हत्यारों के नाम नहीं लिखे थे। जिसके मुताबिक मुझे इन्वेस्टीगेशन करके बबलू को बेकुसूर साबित करना था। उसे तो राजदान ने केवल उस स्पॉट पर तुम्हें दिखाने के लिए लिखा था। असल लेटर तो वो है, वो जो मैंने तुम्हें दिखाया ही नहीं। जिसमें तुम तीनों की हर करतूत विस्तारपूर्वक लिखी है और यह भी लिखा है, हमें क्या करना है।"

"य-यानी तुम शुरू से जानते हो राजदान ने किन हालात में आत्महत्या की? किस तरह दिव्या और देवांश ने उसे हत्या का रंग देना चाहा? किस तरह मेरी एन्ट्री हुई..

"और फिर किस तरह तुमने पलटा खाया।" अखिलेश ने

कहा---“किस तरह बबलू को फंसाया। पाइप पर बंदर की तरह लटक रहे देवांश का फोटो खींचने वाला ये रहा। ये!” कहने के साथ उसने समरपाल को आगे कर दिया।

“अगर तुम यह सब शुरू से जानते थे तो अब तक नाटक क्यों करते रहे?”

“राजदान का ऐसा ही निर्देश था।”

“राजदान का निर्देश?”

“उसी के निर्देश पर इस वक्त यहां आये हैं।”

“क्यों?”

इस क्यों के जवाब में अखिलेश ने वही कहा जो ठकरियाल दिन में बता चुका था तो दिव्या दिन की तरह ही बिफर पड़ी। ठकरियाल उसे पहले ही समझा चुका था---उन पर यह जाहिर कर देना दुनिया की सबसे बड़ी बेवकूफी होगी कि वे उनके आगमन और आगमन के कारण को पहले से जानते थे।

इसीलिए एक्टिंगशुरू की थी उसने।

और।

जोरदार एक्टिंग इसलिए भी हो पाई कि मानसिक रूप से वह अभी-अभी पूरी तरह उनकी महफिल में नाचने के लिए तैयार नहीं थी। उधर, अखिलेश एण्ड पार्टी जानती थी---उनके चंगुल में फंसा ठकरियाल दिव्या और देवांश को न केवल यह बता चुका है कि वे रात को आयेंगे बल्कि काफी हद तक दिव्या को तैयार भी कर चुका है। परन्तु प्लान के मुताबिक यह बात उन पर जाहिर नहीं की जानी थी। इसलिए जब दिव्या बिफरी तो झपटकर अखिलेश ने बाल पकड़ लिये उसके। गुर्राया---"ना-नुकुर की तो तीनों को इसी वक्त पुलिस के हवाले कर दिया जायेगा।"

"मिस्टर अखिलेश।" ठकरियाल ने हस्तक्षेप किया---"मैं समझ गया तुम लोग क्या चाहते थे। ऐसे निर्देश शायद राजदान ने इसलिए दिये हैं क्योंकि दिव्या ने उससे बेवफाई की थी मगर, उसके लिए इतनी जलील हरकतें करने की जरूरत नहीं है जितनी कर रहे हो। थोड़ा टाइम दो हमें। मैं दिव्या को समझाने की कोशिश करता हूं।"

"ये लो---।" अखिलेश ने दिव्या को ठकरियाल की तरफ धकेला---"समझा दो इसे। और ज्यादा टाइम नहीं है हमारे पास। एक घण्टे के अंदर किचन लॉन में पहुंच जानी चाहिए।"

ठकरियाल ने दिव्या को संभाला।

एक साथ दोनों की नजरें अवतार की तरफ उठी थीं।

उसकी आंखों में अफसोस था।

बहुत ही हल्का इशारा किया उसने। जिसका अर्थ था---'वही करो, जो ये चाहते हैं।'

"और तुम भी।" वकीलचंद ने देवांश से कहा।

"म-मैं?" देवांश हकला गया।

"उसके साथ सारे कपड़े उतार कर किचन लॉन में पहुंच जाओ।" भट्टाचार्य ने कहा।

"म-मगर मैं क्यों?" देवांश के हलक से किल्ली निकल गई।

"क्यों? भाई लोगों के होटलों का कैबरे नहीं देखा कभी?" आगे बढ़कर समरपाल ने दांत पीसते हुए कहा था---"वहां लड़की अकेली डांस नहीं करती। लड़का भी साथ होता है। वे अभिसार नहीं करते मगर अभिसार जैसी क्रियायें करते हैं। अलग-अलग आसनों की मुद्राएं बनाते हैं। वही सब करना है तुम दोनों को।"

"ल-लेकिन।" देवांश बुरी तरह हकला रहा था---"अभी-अभी तोतुमने कहा था-राजदान ने केवल दिव्या को नचाने के
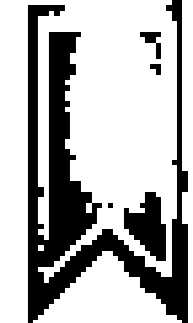
निर्देश दिये हैं।"

"तुझे हम राजदान की मर्जी से नहीं अपनी मर्जी से नचायेंगे।"

"अपनी मर्जी से?"

"यहीं शायद थोड़ी चूक कर गया हमारा यार।" अखिलेश ने कहा---"जब तुम दोनों का गुनाह बराबर का है तो सजा एक को कम, दूसरे को ज्यादा क्यों? या शायद जोड़े वाला कैबरे उसने कभी देखा ही न हो। शरीफ था न अपना दोस्त। जाता ही कब था ऐसी जगहों पर? मगर हमने देखा है। और तूने भी जरूर देखा होगा। वही सब लटके-झटके चाहिएं हमें तुझसे। दोस्त की चूक को दोस्त पूरा नहीं करेंगे तो कौन करेगा? कान खोलकर सुन ले... नाचना तुझे भी है।"

देवांश के होश फाख्ता हो गये।
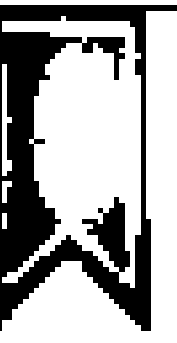
"नहीं! नहीं! इंस्पेक्टर!" दिव्या चीखती रह गई मगर ठकरियाल ने पूरी चीखें भी नहीं निकलने दीं उसके मुंह से। शराब की बोतल का मुंह दिव्या के मुंह में ठूंस दिया। साथ ही कहा---"पी जा! पी जा इसे! अब सिर्फ यही तेरी मदद कर सकती है।"

कुछ शराब उसके कपड़ों पर बिखरी। ज्यादातर हलक में उतरती चली गई।

ठकरियाल को मालूम था ये क्षण आयेंगे। उसने पहले से ही व्हिस्की की बोतलों में मुनासिब पानी मिलाकर रखा था। शुरू में दिव्या को जबरदस्ती पिलानी पड़ी मगर बाद में, तब जबकि उसकी समझ में यह बात आ गई कि अब वह इस चक्रव्यूह से निकल नहीं सकती। तब जबकि खुद उसे भी लगा---व्हिस्की वाकई उसकी मदद कर सकती है, खुद ही बोतलें उठा-उठाकर पीने लगी। बीच में उसने ठकरियाल से एक सिगरेट मांगी।

ठकरियाल ने सिगरेट बाकायदा सुलगाकर दी।

अब उसे यहां इसलिए रहना था कि दिव्या जरूरत से ज्यादा न पी जाये।

पीती-पीती गिर ही न पड़े वह। बेहोश न हो जाये।

“मैं नाचूंगी। मैं नाचूंगी इंस्पेक्टर।” नशे की झोंक में वह कहती चली जा रही थी---“मगर भूल मत जाना अपना वादा। याद रखना---उन सबको भी मेरे सामने नंगा करके नचाना है तुम्हें।”

“बेवकूफी भरी बातें मत करो दिव्या।” ठकरियाल गुर्राया---“अगर तुम्हारे मुंह से निकला ऐसा एक भी लफ्ज उसके कानों में पड़ गया तो सारे प्लान पर पानी फिर जायेगा। चुप हो जाओ एकदम। मुंह सिल लो अपना। अभी हमारे बोलने का वक्त नहीं है।”

“श-शी-शीऽऽऽ।” मुंह से शी की आवाज निकालकर उसने अपनी अंगुली होंठों पर रख ली। अब उसकी हर हरकत बता रही थी शराब दिमाग को नचाने लगी है।

उसने सिगरेट में एक कश लगाया।

नजर दीवार पर टंगे राजदान के फोटो पर पड़ी।

जाने क्या आया दिमाग में कि दीवार की तरफ बढ़ी। फोटो के ठीक सामने पहुंच गई। नजर उसी पर थी।

फोटो में राजदान मुस्करा रहा था।

“हंस रहे हो तुम?.... हंस रहे हो मुझ पर?” व्हिस्की की

तरंग में वह कहती चली गयी---"खूब हंसो! खूब हंसो मेरे देवता! मैंने काम ही ऐसे किये हैं। धोखा दिया न तुम्हें? मति मारी गई थी मेरी। देखो... देखो तुमसे बेवफाई करके तुम्हारी गुड़िया ने खुद को क्या बना लिया? एक तुम क्या नहीं रहे इस विला में? कितने लोग घुस आये हैं। तुम्हारा साया सिर पर नहीं रहा तो सचमुच वेश्या ही बन गई मैं तो। नंगी होकर नाचूंगी उनके बीच। वे कहते हैं---ऐसा तुम कह गये हो? जरूर कह गये होगे। लेकिन इस मंजर को अपनी आंखों से देखते तो देख नहीं सकते थे। अपने ही हाथों से गोली मारकर इस जिल्लत से मुक्ति दिला देते अपनी गुड़िया को।" वह चुप हो गई, चुपचाप देखती रही राजदान के फोटो को। नशे की तरंग में जाने क्या सोच रही थी? फिर, अचानक उसने फोटो के समक्ष हाथ जोड़ दिये। दायें हाथ की अंगुलियों के बीच हालांकि सुलगी हुई सिगरेट थी। उसकी परवाह किये बगैर बहुत ही भावुक स्वर में कहती चली गई वह---"सचमुच मैंने तुम्हारे साथ बहुत बुरा किया मेरे साथी! मुझे माफ कर दो राजदान। घुटने टिकाकर भीख मांगती हूं मैं तुमसे।" कहने के साथ उसने वाकई अपने घुटने फर्श पर टिका दिये---"मुझे माफ कर दो। गले से लगा लो अपने। प्यार करो राजदान। सिर पर हाथ फेरो मेरे, तुम्हारा हाथ अपने सिर पर मुझे बहुत अच्छा लगता है।" कहने के साथ सचमुच वह बुरी तरह रो पड़ी थी। इस कदर कि ठकरियाल भी भावुक हो उठा।

तभी भड़ाक से कमरे का ढुका हुआ दरवाजा खुला।

दोनों ने एक साथ चौंककर उधर देखा।

हालांकि देवांश के पीछे कोई नहीं था। फिर भी, कुछ ऐसे अंदाज में दाखिल हुआ था वह जैसे किसी ने जोर से धक्का दिया हो। न ठकरियाल की तरफ देखा, न दिव्या की तरफ।

सीधा सेन्टर टेबल की तरफ लपका।

वहां, जहां व्हिस्की की बोतल रखी थी।

एक बोतल उठाई।

मुंह से लगाई और गटकता चला गया।

किचन लॉन का पत्ता-पत्ता जगमगा रहा था।

झरने झर रहे थे।

फव्वारे उछल रहे थे।

पत्थरों से टकराकर बहता पानी मधुर संगीत बिखेर रहा था।

सबसे ऊंचे झरने के पीछे। कृत्रिम पहाड़ के उस पार।

वहां, जहां स्वीमिंग पूल था।

वह पूल कम, पहाड़ों से घिरी झील ज्यादा मालूम पड़ता था।

चारों तरफ ऊंचे-ऊंचे पहाड़ बनाये गये थे। इतने ऊंचे कि पूल से उनके पार नहीं देखा जा सकता था।

पहाड़ों पर जगह-जगह तेज रोशनियों वाले बल्ब लगे थे।

सबका फोकस पूल की तरफ था।

पूल का पानी जगमगा रहा था। रोशनी की परछाइयां हौले-हौले हिल रहे पानी को चीरकर उसके फर्श पर पड़ रही थीं। पूल के समीप एक बहुत बड़ा चबूतरा था।

चबूतरे पर मनसद बिछाया गया था।

गोल तकिये रखे गये थे।

उन तकियों पर कोहनियां टिकाये मसनद पर बैठे थे---अखिलेश, भट्टाचार्य, वकीलचंद, समर और अवतार। ऐसे लग रहे थे पांचों जैसे रियासतों के मालिक हों।

पूल वाले इलाके में आने के लिए जो एकमात्र रास्ता था वह गुफा जैसा था। बहुत ही विशाल पत्थर को बीच से काटकर बनाया गया था वह। वहां की भव्यता को देखने से पता लगता था---राजदान दिव्या को कितना प्यार करता होगा।

"अभी तक नहीं आये...।" अवतार उठकर खड़ा होता हुआ बोला---"मैं देखता हूं सालो को...।"

कोई कुछ नहीं बोला।

अवतार तेज कदमों के साथ गुफा की तरफ बढ़ा।

रोशनी के लिए गुफा की छत में जगह-जगह बल्ब लगे हुए थे।

अभी वह गुफा के मध्य में ही था कि सामने से आता ठकरियाल नजर आया।

अवतार ने कड़क आवाज में पूछा---"इतनी देर क्यों हो रही है?"

"बस हो गया सारा इन्तजाम।" ठकरियाल ने कहा।

"वे दोनों कहां हैं?"

"आते ही होंगे।"

"म्यूजिक?"

"आप रिमोट से चालू कर सकते हैं।"

तभी उसके अत्यन्त नजदीक पहुंच चुका अवतार फुसफुसाया---"रिवाल्वर कहां है मेरा?"

ठकरियाल न बगैर कुछ कहे---जेब से रिवाल्वर निकालकर उसे दे दिया।

अवतार ने चैम्बर खोला---सभी गोलियां अपनी जगह मौजूद थीं।

"कामयाबी मिली?" ठकरियाल ने पूछा।

"अभी कुछ नहीं हुआ।" कहने के साथ अवतार ने रिवाल्वर अपने पेट और बैल्ट के बीच ठूंसा तथा जोर-जोर से प्रोग्राम

जल्दी शुरू करने के लिए कहता वापस पूल की तरफ घूम गया।

मसनद पर पहुंचकर अपने स्थान पर बैठा ही था कि सारी लाइटें एक साथ गुल हो गयीं।

पलकें झपकीं।

एक पहाड़ पर लगी सर्च लाइट ऑन हुई।

उसका दूधिया प्रकाश दायरा ठीक गुफा के मुहाने पर स्थिर था।

अचानक वातावरण को तेज संगीत लहरियों ने झंझोड़ दिया।

ऐसा लग रहा था जैसे चारों तरफ सीना ताने खड़े पहाड़ों पर पत्थर के पीछे स्टीरियो सैट छुपाकर रखे गये हों। उन्हीं से आ रही थी संगीत की आवाज।

संगीत बेहद उत्तेजक था।

होता क्यों नहीं?

खुद वही तो लेकर आये थे वह केसिट।

फिर।

गुफा के मुहाने पर।

प्रकाश के दायरे के बीचो-बीच दिव्या नजर आई।

बहुत ही झीने, सफेद लिबास में थी वह।

"नाच!" ऊंची आवाज में अखिलेश ने हुक्म सा दिया---"संगीत के साथ नाच!"

और।

नशे में धुत्त दिव्या ने नाचना शुरू कर दिया।

जैसे-जैसे वह नाचती हुई आगे बढ़ी, प्रकाश दायरा उसके साथ चल दिया।

चलता क्यों नहीं?

सर्च लाइट का रिमोट अखिलेश के हाथ में जो था।

एक-एक रिमोट पांचों पर था।

इधर उत्तेजक संगीत पर नाचती दिव्या उनके बीच पहुंची।

उधर, समरपाल ने जोर से कहा---"देवांश कहां है?"

अवतार ने अपने रिमोट का बटन दबाया।

गुफा के मुहाने पर लाल रंग का प्रकाश दायरा बिखर गया।

देवांश नजर आया।

जिस्म पर सिफ 'वी शेप' का अण्डरवियर था।

अखिलेश, वकीलचंद, भट्टाचार्य, अवतार और समरपाल ठहाके लगा-लगाकर हंसने लगे।

अंदाज देवांश की खिल्ली उड़ाने वाला था।

"नाच!" वकीलचंद चीखा।

बड़े ही बेढंगे अंदाज में हाथ-पांव फेंकने शुरू कर दिये देवांश ने।

वह भी मसनद की तरफ बढ़ा।

साथ ही, लाल दायरा भी।

टकरियाल भी गुफा का द्वार पार करके पूल क्षेत्र में आ गया था। इधर, दिव्या बेसुधी के आलम में डांस कर रही थी।
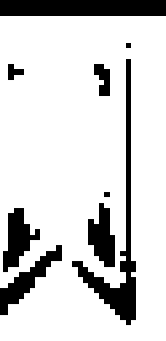
भट्टाचार्य, वकीलचंद और समरपाल ने भी अपने-अपने रिमोट बटन दबाये।

हरी, पीली और नीली रोशनियां भी बिखर गयीं।

अब वे पांचों रंग के प्रकाश दायरे एक-दूसरे से गड्ड-मड्ड मसनद पर थिरक रहे थे और दिव्या तथा देवांश भी। दिव्या के कदम तो फिर भी किसी हद तक संगीत के साथ थिरक रहे थे परन्तु देवांश की ऊंटपटांग हरकतों और संगीत का कोई तालमेल नहीं था।

किसी को कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ी।

दिव्या ने पहले अपना गाऊन उतारकर एक तरफ फेंका।

फिर ब्रा।

और अंत में पैंटी।

आदमजात नंगी हो गई वह।

नशे में धुत्त पागलों की तरह नाच रही थी।

तालियां पीटते पांचों एक साथ, एक सुर में कहने लगे---"शेम! शेम! शेम! शेम!"
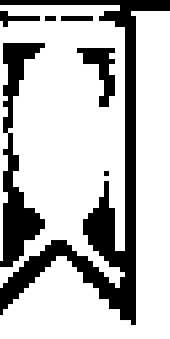
दिव्या को देखकर देवांश ने भी अण्डरवियर उतार दिया।

पांचों के ठहाके तेज हो गये।

साथ ही---"शेम-शेम।" की आवाजें भी।

अखिलेश, ठकरियाल, भट्टाचार्य और समरपाल उस अजीबोगरीब दृश्य का पूरा लुत्फ ले रहे थे।

अखिलेश ने ऊंची आवाज में कहा---"वन! टू! थ्री!"

एक साथ सभी प्रकाश दायरे लुप्त हो गये।

पूल पर बिखरी रह गयी केवल आकाश पर चमक रहे चांद की चांदनी।

चांदनी में उछल-कूद कर रहे वे दोनों भूत से लग रहे थे।

फिर।

अखिलेश ने एक दूसरा रिमोट संभाला।

बटन दबाया।

म्यूजिक बजा।

वे दोनों रुक गये।

दूसरा बटन दबाया।

सामने वाले पहाड़ के लम्बे विशाल पत्थर के शीर्ष पर रखा टी.वी. ऑन हो गया।

राजदान का चेहरा नजर आया उस पर।

वह ठहाका लगा-लगाकर हंस रहा था।

सारे पहाड़ एक साथ मिलकर राजदान के ठहाके उगलने लगे।

आंसुओं से सराबोर चेहरा लिये दिव्या टी.वी. स्क्रीन की तरफ ही देख रही थी।

वहां, जहां ठहाके लगाता राजदान नजर आ रहा था। ठहाकों के बीच राजदान ने कहा---"देख दिव्या बाई! जरा नजर तो डाल अपने संगमरमरी जिस्म पर! उस जिस्म पर जिस पर तुझे नाज था। जिसकी आग बुझाने के लिए तूने मुझे धोखा दिया। मुझे आज भी वो मंजर याद है। वो मंजर... जब मैंने तुझे इसी अवस्था में देवांश की बांहों में देखा था। जाम-से-जाम टकराते पाया था। यही! यही किचन लॉन है वह। यही किचन लॉन जिसे जाने कितने अरमानों के साथ
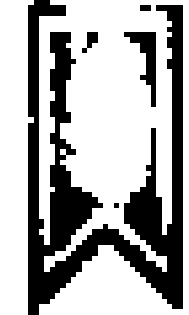
तेरे लिए बनवाया था। सिर्फ तेरे लिए! और तूने मुझे यहीं, खुद को किसी और की बाहों में दिखा दिया! अब देख उसी किचन लॉन में तू अपने सारे कपड़े उतारे मेरे दोस्तों के बीच खड़ी है। इनमें से किसी को भी तेरे जिस्म को पाने की ख्वाहिश नहीं है जिस पर तुझे नाज था। जिसके बूते पर मुझ मरते हुए आदमी से चैन से मरने का अधिकार भी छीन लिया। मेरे दोस्त बतायेंगे तुझे तेरे इस जिस्म की औकात। वकीलचंद, भट्टाचार्य, अखिलेश, समरपाल---इसे बताओ, किसके लायक है इसका यह घिनौना जिस्म।"

चारों एक साथ उठे।

अपनी बात पूरी करने के बाद टी.वी. स्क्रीन पर नजर आ रहा राजदान पुनः ठहाके लगाने लगा था। वे दिव्या के नजदीक पहुंचे।

और फिर।

जैसे चारों को मालूम था क्या करना है।

लगभग एक ही साथ उनके मुंह से निकला---"आक् थू!"

चारों ने थूक दिया दिव्या के जिस्म पर।

राजदान के ठहाके बुलन्द होते चले जा रहे थे।

"इसी लायक है तेरा जिस्म! इसी लायक!" चारों ने घृणापूर्वक एक साथ कहा।

उफ्फ।

इतना अपमान!

इतनी जलालत!

सह नहीं सकी दिव्या।

झपटकर उसने ठकरियाल के होलेस्टर से उसका सर्विस रिवाल्वर खींचा।

बिजली की सी गति से अपनी कनपटी पर लगाया।

और।

धांय!

एक फायर की आवाज से मुकम्मल किचन लॉन गूंज गया।

परन्तु यह गोली दिव्या की जान नहीं ले सकी।

क्योंकि।

उससे पहले ही अखिलेश उसकी कलाई पकड़कर उमेठ चुका था।

गोली एक पत्थर पर जाकर लगी थी।

चटाक्।

ठकरियाल का एक भरपूर चांटा दिव्या के गाल पर पड़ा।

एक चीख के साथ वह मसनद पर जा गिरी।

गिरी... तो वहीं पड़ी रह गई।

या तो वह बेहोश हो गयी थी या नशे की ज्यादती के कारण उठ नहीं पा रही थी।

टी.वी. पर नजर आ रहे राजदान के ठहाके बुलंद और बुलंद होते चले गये।

एक गाड़ी में वे पांचों होटल सेन्टूर की तरफ जा रहे थे। गाड़ी समरपाल ड्राइव कर रहा था।

अखिलेश, वकीलचंद, भट्टाचार्य और समरपाल चटखारे ले

लेकर उसी घटना पर चर्चा कर रहे थे जिसे कुछ देर पहले अंजाम देकर आये थे।

अवतार खामोश था।

अंततः अखिलेश ने पूछ ही लिया---"अवतार, तू खामोश क्यों है?

"थूकने के लिए भी नहीं उठा उस पर।" भट्टाचार्य बोला।

उसने गंभीर स्वर में पूछा---"सच कहूं?"

"अबे...। झूठ बोलेगा हमसे?" वकीलचंद ने कहा।

"मुझे अच्छा नहीं लगा वह सब।"

भट्टाचार्य बोला---"मुझे यही लग रहा था।"

"क्यों?" अखिलेश ने पूछा।

"एक औरत का इतना अपमान... पहले उसे नंगी नचाना और फिर, उस पर थूकना। उफ्फ!"

"वह औरत नहीं नागिन है।" समरपाल बोला।

"तू ऐसा इसलिए कह रहा है क्योंकि तू नहीं जानता---उसने

राजदान के साथ क्या किया?"

"कुछ भी किया हो अखिलेश---लेकिन जो हम करके आये हैं, वह बहुत घृणित था।"

एकाएक अखिलेश के हलक से गुर्राहट सी निकली---"समरपाल!"

"हां।"

"गाड़ी भट्टाचार्य के फार्म हाउस की तरफ घुमा ले।"

"क्यों?"

"इसे उसकी करतूत दिखानी जरूरी हो गयी है जिसे यह

औरत कह रहा है।" समरपाल ने तेजी से 'यू टर्न' लिया।

फार्म हाऊस कई बीघे में फैला हुआ था। लोहे वाले गेट से एक सड़क चली गई थी। उस पर दौड़ती गाड़ी कई मोड़ घूमने के बाद एक छोटी सी इमारत के बाहर पोर्च में जाकर रुकी।

सफेद पत्थरों से मंढ़ी खूबसूरत डिजाइन वाली इमारत फार्म हाऊस के बीचो-बीच बनी हुई थी। चांदनी के कारण वह ताजमहल की मानिन्द तो नहीं, फिर भी दमक रही थी।

सभी गाड़ी के दरवाजे खोलकर बाहर निकले।

इमारत के बंद मुख्यद्वार पर पहुंचे।

भट्टाचार्य ने कॉलबेल बजाई।

कुछ देर बाद दरवाजा खुला।

दरवाजा खोलने वाला सत्यप्रकाश था।

"आप लोग?" उसके मुंह से निकला---"रात के इस वक्त? राजदान साहब कहां हैं?"

"वे सुबह आयेंगे।"

"और ये?" उसका इशारा अवतार की तरफ था।
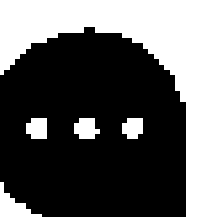
"राजदान का एक और दोस्त है।" कहने के साथ वह अंदर दाखिल हो गया।

अवतार समझ गया---वह सत्यप्रकाश होगा।

दो कारण थे।

पहला---वह जानता था, चार लोग अभी भी राजदान को जिन्दा समझ रहे थे।

सत्यप्रकाश, सुजाता, बबलू और स्वीटी।

दूसरा---उनमें इस उम्र का सत्यप्रकाश ही हो सकता था।

अवतार यह भी समझ गया---वह इन चारों को राजदान के दोस्त के रूप में जानता है।

और यह भी कि बबलू, सुजाता और स्वीटी भी यहीं होंगे।

तो यहां रखा हुआ है इन लोगों ने इन्हें!

वे अंदर पहुंचे।

अवतार का अनुमान ठीक ही था---छोटी सी लॉबी में सुजाता, बबलू और स्वीटी मिले।
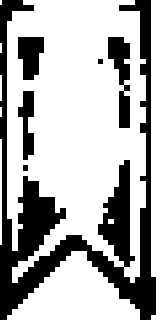
शक्लों से ही लग रहा था---वे अभी-अभी सोते से जागे हैं।

"आपकी नींद में खलल डालने के लिए माफी चाहते हैं मास्टर जी।" अखिलेश ने कहा---"मगर एक जरूरी बात पर डिसकस करने यहां इसी वक्त आना जरूरी था। हम अंदर वाले कमरे में हैं। आप बगैर डिस्टर्ब हुए अपने कमरों में जाकर सो सकते हैं।"

सुजाता बोली---"लेकिन हमें राजदान भैया से पूछना था---आखिर यूं कैदियों की तरह यहां कब तक पड़े रहेंगे। लोग सोच रहे होंगे हम कहां गायब हो गये। इसके मां-बाप तो जरूरत से ज्यादा ही परेशान होंगे।" उसका इशारा स्वीटी की तरफ था।

"बस एकाध दिन की बात और है, राजदान का मिशन पूरा हो जायेगा। सुबह वह खुद यहां जायेगा। आप उससे बात कर सकंती हैं। वैसे, वह स्वीटी के मां-बाप को समझा चुका है।"

सुजाता चुप रह गयी।

बाकियों में से भी कोई कुछ नहीं बोला।

लॉबी से दो गैलरियां फूटती थीं।

एक दायीं तरफ को, दूसरी बायीं तरफ को।

सत्य प्रकाश आदि बायीं तरफ बढ़े। अखिलेश एण्ड कंपनी दायीं तरफ।

एक कमरे में पहुंचे।

कमरा काफी बड़ा था।

जरूरत का सभी सामान था वहां।

भट्टाचार्य एक तिजोरी जैसी अलमारी की तरफ बढ़ा जो दीवार के अंदर फिक्स थी।

केवल दरवाजा नजर आ रहा था उसका। दरवाजा लोहे का था। मजबूत। वैसा, जैसा जौहरियों की तिजोरी का होता है। जिसमें वे अपना कीमती सामान रखते हैं। दरवाजे में कोई 'की-हॉल' नहीं था।

केवल एक हैंडिल था। गोल डायल युक्त।

अवतार देखते ही समझ गया वह 'नम्बर लॉक' तिजोरी है। भट्टाचार्य ने नम्बर डायल करके उसे खोला।

अवतार ने एक ही नजर में देख लिया---तिजोरी में बहुत से

कागजों का एक बण्डल, कुछ ऑडियो कैसिट्स और एक वीडियो कैसिट थी।

समझते देर न लगी उसे---यही है वह 'खजाना' जिसकी उसे तलाश थी।

अंदर ही अंदर खुद को रोमांचित महसूस किया उसने।

मगर।

उस रोमांच का एक भी लक्षण चेहरे पर नहीं उभरने दिया। पूछा---"ये सब क्या है?"

"दिव्या, देवांश और ठकरियाल के गलों के फंदे।"

"मतलब?"

"वे लेटर्स हैं जो राजदान ने मरने से पहले समरपाल और मुझे लिखे थे। इनमें वह लम्बा लेटर भी है जिसके ज्यादातर अंश मैं तुम्हें बता चुका हूं, जिसे पढ़ने के बाद अदालत सब कुछ समझ जायेगी किसने क्या किया। अगर यह कहा जाये तो गलत नहीं होगा---उसे पढ़ने के बाद और इस केस का फैसला लिखने के बीच जज को किसी से कोई सवाल पूछने की जरूरत शेष नहीं रह जायेगी। पाइप पर लटके देवांश का फोटो भी है और आडियो कैसिट्स में है---राजदान की

आवाज।"

"वीडियो कैसिट में?"

"वह दिखाने लाये हैं तुझे।" बताने के बाद अखिलेश ने कहा---"भट्टाचार्य, उसे वी.सी.आर. में लगा।"

भट्टाचार्य ने तिजोरी से केसिट उठाई।

हुक्म का पालन किया।

सभी टी.वी. के सामने सोफा सेट पर बैठ गये।

कमरे की लाइट ऑफ कर दी गई।

स्क्रीन पर फिल्म शुरू की गई।

अवतार को चौंक जाना पड़ा।

फिल्म के मुताबिक राजदान के बैडरूम में सिगार का धुवां भरा पड़ा था। सारी लाइटें ऑन थीं। इतना ज्यादा प्रकाश था वहां कि कालीन पर पड़ी सुई को भी दूर से देखा जा सकता था। राजदान सोफे पर बैठा था। जिस्म पर था---काली-सफेद पट्टियों वाला उसका पसंदीदा गाऊन। तरोताजा था वह। देखने ही से लगता था---कुछ ही देर

पहले नहाया है। शेव भी बनाई थी उसने। अंगुलियों के बीच फंसा अभी-अभी एक सिगार सुलग रहा था। चेहरे पर वेदना सी थी---चौंकाने वाली बात थी उसके सामने पड़ी सेन्टर टेबल पर व्हिस्की की बोतल, सोडे की बोतलें, आईस बकेट, काजू और बादाम की प्लेटें, तथा एक ऐसा गिलास जिसमें आधा पैग अभी भी था। कांच के बाकी दो गिलास खाली थे। वे उल्टे रखे हुए थे।

अचानक कमरे का दरवाजा खुला।

हड़बड़ाये हुए से दिव्या और देवांश अंदर दाखिल हुए।

उस दृश्य को देखकर ऐसे हकबकाये नजर आये कि काफी देर तक मुंह से आवाज न निकल सकी। राजदान ने ही पूछा उनसे---“पियोगे?”

“अ-आप!” देवांश के मुंह से निकला---“भैया आप व्हिस्की पी रहे हैं?”

और।

इसके बाद।

टी.वी. स्क्रीन पर राजदान के अंत के वही दृश्य फिल्म की मानिन्द चलते चले गये जिन्हें मेरे पाठक ‘कातिल हो तो

ऐसा में पढ़ चुके हैं!

अखिलेश अपने स्थान से उठा।

वी.सी.आर. और टी.वी. ऑफ किया।

कमरे की लाइट ऑन करने के साथ कहा---"देखा..देखा तूने कितने बेहया हैं ये दोनों?" अखिलेश ने अवतार से कहा---"क्या इस तरह भी कभी किसी की पत्नी और भाई ने किसी को मारा होगा? क्या अब भी तू यही कहेगा जो हम करके आये वह ठीक नहीं था? अरे मैं तो कहता हूं कुछ भी नहीं था वो। एड्स के कारण तिल-तिल करके मर रहे अपने उस यार की कल्पना कर जिसकी बीवी ने अपने उरोज उसके छोटे भाई के सामने तानकर उन्हें चुसकने के लिए कहा। इसके मुकाबले तो अभी हम कुछ भी नहीं कर सके हैं।"

"मगर!" भभकते चेहरे के साथ अवतार ने पूछा---"यह फिल्म खींची किसने?"

"खुद राजदान ने।"

"राजदान ने?"

"कैमरा कमरे के एक रोशनदान पर लगा था। दिव्या और देवांश को अपने कमरे में आने के लिए कहने के बाद उसने

रिमोट से उसे ऑन कर दिया था।”

“कैसेट तुम्हारे पास कहां से आई?”

“राजदान साहब के आफिस से बरामद मेरे नाम लिखे गये लेटर में उन्होंने दूसरी बातों के अलावा यह भी लिखा था---‘मैंने अपने अंत की वीडियो फिल्म बनाने का पूरा प्रबन्ध कर लिया है। वीडियो कैमरा तुम्हें मेरे बैडरूम के एकमात्र रोशनदान से मिलेगा। रिमोट मेरी लाश के नजदीक सोफे के अंदर धंसा हुआ। मौका लगते ही तुम्हें उन सबको वहां से हटा लेना है। बेहतर है ठकरियाल के घटनास्थल पर पहुंचने से पहले इस काम को कर लो क्योंकि ठकरियाल की नजर तेज है। वह इस सब तक पहुंच गया तो सारे किये-धरे पर पानी फिर जायेगा’।”

“ओह!”

“पढ़ते ही मैं विला की तरफ दौड़ पड़ा। छुपता-छुपाता टैरेस पर पहुंचा और ठीक तब जब दिव्या और देवांश लॉबी में ठकरियाल से उलझे हुए थे, मैं कमरे में पहुंचा। राजदान साहब का हुक्म बजाने के बाद उनके कमरे में पहुंचने से पहले बाहर।”

अवतार को एक बार फिर मानना पड़ा---राजदान का प्लान

बहुत सॉलिड था।

अचानक वह एक झटके के साथ सोफे से खड़ा हुआ और कमरे में चहलकदमी सी करता बोला---"इस सबके बावजूद अगर मैं ये कहूं तुम सबके सब चारों महाबेवकूफ हो तो तुम्हें कैसा लगेगा?"

"मतलब?"

"वह औरत जिसे तुमने नागिन कहा, मेरी जिन्दगी में आई अब तक की सभी औरतों से ज्यादा खूबसूरत है। वह औरत हजार-हजार गुना खूबसूरत हो ही उठती है जिसने दौलत का लिबास पहन रखा हो। पांच करोड़ की हुंडी है वह। पूरे पांच करोड़ की। और तुम उसे नंगी नचा रहे हो। थूक रहे हो उस पर। तुम्हें बेवकूफ न कहूं तो और क्या कहूं?"

"अवतार!" हैरान अखिलेश दहाड़ उठा---"ये क्या बक रहा है तू?"

"वही!... जो तुमने सुना।" कहने के साथ अवतार ने रिवाल्वर निकालकर उन पर तान दिया।

भौंचक्के रहे गये चारों।

मारे आश्चर्य के बुरा हाल था।

बुद्धियां कुंठित होकर रह गईं। फटी-फटी आंखों से अवतार की तरफ यूं देखते रह गये जैसे अचानक उसके सिर पर सींग नजर आने लगे हों।

"आहा... हा... हा...।" पूरी तरह सतर्क अवतार गुर्राया---"हरकत नहीं अखिलेश। हरकत मत करना। मेरी अंगुली ट्रेगर पर है। बाल बराबर जुम्बिश की जरूरत पड़ेगी। हमेशा के लिए मुंह फाड़े पड़ा मिलेगा तू यहां।"

अखिलेश का हाथ जहां का तहां रुक गया।

"हाथ ऊपर उठा लो!" वह गर्जा---"सब... जो नहीं उठायेगा उसे फर्श पर लिटा दूंगा।"

सबके हाथ स्वतः हवा में उठते चले गये।

चेहरों पर से आश्चर्य नाम की वस्तु कम होने का नाम नहीं ले रही थी। अवतार के वैसे रुख की तो कल्पना तक नहीं की थी उन्होंने जैसा सामने आया था। अंततः अखिलेश ने ही खुद को थोड़ा नियंत्रित करके कहा---"अवतार! तू पागल हो गया यार। क्या कर रहा है ये?"

"अभी तक नहीं समझा?" उसके होठों पर कुटिल मुस्कान थी।

"समझ तो गये हैं कमीने मगर विश्वास नहीं कर पा रहे हैं।" वकीलचंद भावुक स्वर में कह उठा---"यकीन नहीं हो रहा बचपन का कोई दोस्त ऐसा भी हो सकता है। ऐसा, जो दोस्तों पर ही रिवाल्वर तान दे। मारने पर अमादा हो जाये।"

"गाली दी, तो भेजा उड़ाकर रख दूंगा वकील साहब!" अवतार ने दांत पीसे---"दोस्ती की बात करते हो मुझसे। उससे... जिसने दुनिया के नजदीक से नजदीक रिश्ते को दौलत की चौखट पर सिर टकरा-टकराकर दम तोड़ते देखा है। मैं किसी दोस्ती-वोस्ती को नहीं मानता।"

"वो तो हमें नजर आ ही रहा है।" भट्टाचार्य ने कहा---"मानता होता तो यह सब नहीं करता तू। अपने लेटर्स में जो मार्मिक अपील राजदान ने हमसे की है, वैसी ही तुझसे भी की है। बार-बार नाम लिखा है तेरा। दिल में यही मलाल लिये मर गया बेचारा मेरे चौथे यार का पता नहीं मिला।मिल जाता तो उसे भी शरीक करता अपने इस मिशन में।"

"गलती मुझ ही से हुई जो बगैर छानबीन किये तुझ पर इतना विश्वास कर बैठा।" अखिलेश खुद ही से नाराज नजर आ रहा था---"कारण एक... और सिर्फ एक ही आस्था थी। वही जो राजदान के दिल में थी। यह कि बचपन के

दोस्त भगवान का रूप होते हैं। सारी दुनिया धोखा दे सकती है, प्रेमी-प्रेमिका बदल सकते हैं मगर बचपन का प्यार नहीं बदल सकता। कितना अटूट विश्वास था राजदान का इस बात पर कि उसने सारी दुनिया को छोड़कर दोस्तों पर भरोसा किया। अपने लेटर में बार-बार लिखा है गधे ने---'यार अखिलेश, बस एक ही बात का अफसोस है, अपने चौथे यार का कोई पता निशान न मिल सका। पता नहीं कहां होगा हमारा अवतार? मेरी मौत के बाद भी अगर किसी तरह उसका पता लगे तो मेरा ये लैटर जरूर पढ़ाना उसे। शामिल कर लेना इस मिशन में। चारों मिलकर मुझ पर हुए जुल्म का बदला लोगे तो लगेगा चार यारों के कंधे पर सवार होकर जा रहा हूं---श्मशान की तरफ। ऐसा नसीब..

"बस मिस्टर जासूस... बस!" अवतार ने उसकी बात काटी---"मुझे भावुक करने का यह पैंतरा कम से कम मुझ पर बिल्कुल नहीं चलेगा। सिर पटककर मर जाओगे, भावुकता के जाल में नहीं फंसा सकोगे मुझे। जिस दुनिया में मैं हूं, वहां पहुंचे शख्स की सबसे पहले यही भावना 'ताक' पर रखी जाती है।"

"कौन सी दुनिया में है तू?" अखिलेश ने उसके अंदर घुसना चाहा।
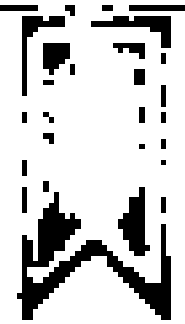
"मुझे तो ठकरियाल का ही कोई सगा-सम्बन्धी लग रहा है।" वकीलचंद कह उठा---"जिस लालच में वह फंसा था उसी में यह फंसा नजर आ रहा है। पांच करोड़ पर इस कदर लार टपक रही है इसकी कि चारों को मारने पर आमादा है। मगर याद रख अवतार---वे पांच करोड़ किसी के हाथ नहीं लगेंगे। राजदान की हाय पड़ी हुई है उन पर। अभिशप्त हो चुके हैं। जो उन्हें हासिल करने की कोशिश करेगा वो इस दुनिया से गारत हो जायेगा।"

"दिव्या को भूल रहा है तू। उसे, जिसे नागिन कह रहा था।"

"मतलब?"

"हजारों नहीं तो सैकड़ों लड़कियों को उस हालत में जरूर देखा है मैंने जिस हालत में कुछ देर पहले दिव्या को दिखाकर लाये हो। भोगा है उन्हें। मगर दावे से कह सकता हूं वैसी फीगर उनमें से किसी की नहीं थी जैसी अभी-अभी उस टी.वी. पर देखी है। वाह! शादी-शुदा होने के बावजूद क्या मेंटेन करके रखा है उसने खुद को। पत्नी बनने के लायक न सही मगर बार-बार रौंदी जाने लायक जरूर है वह। मुझे हमेशा से ऐसी ही लड़कियां पसंद हैं। ऐसी---जो खुद बढ़कर खुद को चूमने के लिए कहें। देवांश के लिए क्या समर्पण था उसमें। बहुत जल्द वो समर्पण मेरे लिए होगा।"

"देखा...देखा भट्टाचार्य?" अखिलेश का चेहरा भभक उठा---"हम जिस जिस्म को देखकर शेम, शेम कर रहे थे। थूक रहे थे, यह उसकी फीगर देख रहा था। जिस दृश्य में हमें राजदान की वेदना नजर आ रही थी, उस दृश्य में दिव्या का समर्पण नजर आ रहा था इसे। मुझे तो लगता है---तवायफों का दलाल है ये।"

"ठीक पहचाना याड़ी। ठीक पहचाना मुझे।" वह हंसा---"कुछ दिन यह धंधा भी किया था।"

"मतलब?" अखिलेश की आंखें सिकुड़कर गोल हो गईं।

"छोड़ मेरी हकीकत! सुनेगा तो पेशाब निकल जायेगा तेरा। बकवास बहुत हो चुकी। अब तुम सब दीवार की तरफ मुंह करके खड़े हो जाओ।"

अखिलेश ने पुनः कुछ कहना चाहा परन्तु अवतार ने मौका नहीं दिया।

पुनः दीवार की तरफ घूम जाने के लिए कहा।

लहजा ऐसा था, जिससे जाहिर था---हुक्म का पालन नहीं किया गया तो वह किसी भी हद तक जा सकता है। सो अखिलेश सहित सभी हाथ उठाये दीवार की तरफ घूम गये।

रिवाल्वर की नोक पर अवतार ने उन सबकी जेबें खाली कर दीं।

अन्य सामान के अलावा सभी के पास एक-एक रिवाल्वर था।

उन पर नजर रखे वह फोन की तरफ बढ़ा।

एक हाथ में रिवाल्वर था। दूसरे से ठकरियाल का मोबाइल नम्बर रिंग किया।

"क्यों मारा?... क्यों मारा चांटा मुझे?" नशे में धुत्त दिव्या ठकरियाल पर यूं झपटी जैसे उसे कच्चा चबा जायेगी।

भन्नाये हुए ठकरियाल ने एक चांटा और जड़ दिया।

इसके अलावा चारा ही नहीं था कोई।

दिव्या कुछ और बिफर गई। लम्बे-लम्बे नाखूनों से चेहरा नोंचने पर आमादा हो गई उसका। ठकरियाल ने उसकी दोनों कलाइयां पकड़ीं। चीखा---"होश में आओ दिव्या! होश में आओ। खुद को गोली मारने की कोशिश की थी तुमने। चांटा नहीं मारता तो क्या करता?"

"तू कौन होता है मुझे चांटा मारने वाला?" दिव्या ने दांत किटकिटाये---"मैं मरूंगी। मरना है मुझे। साले थूकते हैं मुझ पर। क्या मैं इतनी बुरी हूं?... क्या मैं इतनी बुरी हूं?" कहने के बाद वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

एक पल में भूल गयी, पहले पल वह ठकरियाल को कच्चा चबा जाना चाहती थी।

यही हालत थी उसकी।

पल में तोला, पल में माशा।
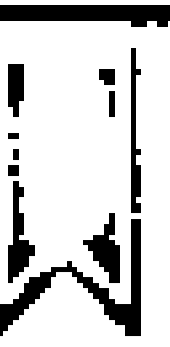
कभी रोने लगती।

कभी हंसने लगती।

मारे गुस्से के कभी चिल्लाने लगती।

ठकरियाल समझ सकता था---उसकी ऐसी हालत नशे की ज्यादती के कारण थी। सच्चाई ये है इस वक्त खुद उसके दिल में दिव्या के लिए सहानुभूति सी उमड़ रही थी।

उसकी हालत देखकर दुख हो रहा था उसे।

शायद ही पहले कभी किसी औरत की ऐसी दुर्दशा हुई हो।

नशे की हालत में बार-बार यही बुदबुदा रही थी वह---"मैं घृणा के लायक हूं। उन्होंने थूक दिया मुझ पर। मैं जीना नहीं चाहती। मर जाने दो मुझे। प्लीज, मर जाने दो।"

अभी तक नग्न थी वह।

मगर अब कोई परवाह नहीं थी उसे इस बात की।

कई बार खुद ठकरियाल ने गाऊन से जिस्म ढकना चाहा।

बार-बार खुद उसी ने गाऊन दूर फैंक दिया।
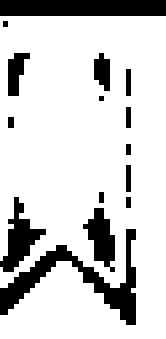
देवांश मसनद पर पड़ा था।

चित।

नंगा।

बेहोशी के आलम में जाने क्या-क्या बुदबुदा रहा था वह।

ठकरियाल को कई बार लगा---दिव्या भी इसी हालत में पहुंच जाये तो बेहतर है।

एक बार फिर वह उसके नजदीक पहुंचा। कंधे पर हाथ रखकर बोला---"खुद को संभालो दिव्या। जो वे कर सकते थे, कर चुके। अब जो करेंगे, हम करेंगे।"

"क्या करोगे?... क्या करोगे तुम?" एक बार फिर वह बिफरकर खड़ी हो गई।

तभी ठकरियाल का मोबाइल बज उठा।

उसने जेब से निकालकर ऑन किया।

दूसरी तरफ अवतार था। उसने कहा---"फतह!"

"क-क्या?" ठकरियाल के हलक से चीख निकल गई। उस एकमात्र शब्द का मतलब अच्छी तरह समझने के बावजूद

विश्वास नहीं आया उसे। मुंह से निकला---"क्या कह रहे हो अवतार?"

"क्यों? मतलब नहीं समझते फतह का? फतह का मतलब फतह। सारे सुबूत मेरे हाथ लग चुके हैं। बबलू एण्ड फैमिली भी यहीं है और ये...ये मेरे सामने खड़े हैं। हाथ ऊपर। मुंह दीवार की तरफ।"

"म-मुझे यकीन नहीं आ रहा।" मारे खुशी के ठकरियाल की आवाज बुरी तरह कांप रही थी---"मुझे यकीन नहीं आ रहा अवतार। अभी तो गये हो यहां से। और अब कामयाबी की सूचना दे रहे हो। इतनी जल्दी! इतनी जल्दी कैसे हो गया ये सब?"

"बारात लेकर पहुंच जाओ यहां। यकीन भी आ जायेगा।" दूसरी तरफ से कहा गया।

"कहां हो तुम? कहां आना है मुझे?"

"भट्टाचार्य फार्म हाऊस है ये।" कहने के बाद अवतार ने पता समझा दिया।

"मैं आ रहा हूं। तब तक होशियार रहना। कोई चालाकी न दिखा पायें वे।" कहने के बाद उसने सम्बन्ध विच्छेद किया। खुशी से पागल सा होकर दिव्या से कहा---"तुमने सुना!

तुमने सुना दिव्या! अवतार कामयाब हो गया। सब कुछ उसके कहने में है। अब वही होगा जो हम चाहेंगे।"

"मैं थूकना चाहती हूं उन पर।" वह बड़बड़ाई।

ठकरियाल को लगा---उससे बात करके इस वक्त वह समय ही जाया करेगा।

एक ही डर था।

जितनी 'फ्रस्टेटिड इस वक्त वह है, कहीं आत्महत्या न कर ले। वही न रही तो पांच करोड़ का सपना बेकार हो जायेगा।

वे पांच करोड़ जो अब एक तरह से उसकी मुट्ठी में कैद थे। इस स्टेज पर पहुंचने के बाद अगर उन्हें दिव्या की आत्महत्या के कारण गंवाना पड़े तो---भला इससे बड़ी बेवकूफी क्या हो सकती है!

वह यहां न रहा तो वह सुसाइड कर सकती है।

क्या करे वह?

क्या करे?

और फिर।

एक ही बात सूझी उसे।

वही किया।

एक जोरदार कराट दिव्या की कनपटी पर रसीद की।

एक हिचकी के साथ वह बेहोश हो गई।

लहराकर उसका शरीर मसनद पर गिरने वाला था कि ठकरियाल ने संभाला। अपने कंधे पर लादा और लम्बे-लम्बे कदमों के साथ गुफा के मुहाने की तरफ बढ़ गया।

अगले दिन सुबह ठकरियाल फोन पर रणवीर राणा को रिपोर्ट दे रहा था---"सर, आपके आशीर्वाद से मैंने पिछली रात बबलू को भी वापस गिरफ्तार कर लिया है। और उसके किडनेपर्स को भी।"

"कौन लोग हैं वे?"

"राजदान के दोस्त हैं।"

"राजदान के दोस्त? उन्होंने क्यों किडनेप किया उसे?"

"कहानी लम्बी है। मगर है दिलचस्प।"

"क्या हत्यारा बबलू ही है?"

"जी।"

"और वो... वो जो अखिलेश पर लेटर था।"

"फर्जी था, राजदान ने नहीं लिखा उसे।"

"फिर किसने लिखा?"

"अखिलेश ने अपने किसी साथी से लिखवाया था।"

"खुद अखिलेश ने?" राणा का चौंका हुआ स्वर---"उसने ऐसा क्यों किया?"

"सर! बड़ा गहरा है वो। दिल्ली से मुंबई प्राइवेट डिटेक्टिव की हैसियत से केवल हमें अर्थात पुलिस को झांसा देने के लिए आया था। झांसा तो उसने अपने दोस्तों को भी दिया। उनकी नजर में वह राजदान के बचपन का दोस्त होने के नाते उसके हत्यारे से बदला देने के लिए आया था। परन्तु मजे की बात ये है, उसके मुंबई आने की असली वजह यह भी नहीं थी।"

"बड़ी रहस्यमय बातें कर रहे हो तुम। असली वजह क्या थी?"

"उस पर बाद में चर्चा करूंगा। पहले इनका प्लान सुन लें।"

"बोलो।"

ठकरियाल ने एक नजर हवालात में बंद अखिलेश, वकीलचंद, भट्टाचार्य और समरपाल पर डाली। कुछ नहीं कर सकते थे वे। सलाखों के पीछे बंद थे। उनकी तरफ धूर्त मुस्कान उछालने के बाद फोन पर कहना शुरू किया---"आप तो जानते हैं, शुरू में भट्टाचार्य को विश्वास नहीं था राजदान का हत्यारा बबलू हो सकता है। लेकिन जब सारे

सुबूत मिल गये तो यकीन करना पड़ा। यह खबर उसने समरपाल और पूना स्थित अपने दोस्त वकीलचंद को दी। वकीलचंद ने दिल्ली स्थित अखिलेश को। इस सच्चाई ने वकीलचंद और भट्टाचार्य का खून खौला दिया कि बबलू ने उनके बचपन के दोस्त की हत्या कर दी है। समरपाल भी उन्हीं में शामिल हो गया। इन्हें यह गंवारा नहीं था इनके दोस्त के हत्यारे को सजा कानून दे। बबलू को ही नहीं, बल्कि उसके पूरे परिवार को ये अपने हाथों से सजा देना चाहते थे। प्लान अखिलेश ने बनाया, उस प्लान के मुताबिक वकीलचंद मानवाधिकार आयोग की तरफ से नियुक्त होकर थाने में आ धमका और रात के वक्त मेरे थाने से जाते ही बबलू को फरार करा दिया। उस वक्त बबलू को यही लगा वह उसका मददगार है। थाने में बाहर निकलते ही उसे भट्टाचार्य ने दबोच लिया और ले जाकर अपने फार्म हाऊस में कैद कर लिया। इधर, समरपाल ने ऐसा खेल खेला जिसे सुनकर आपको भी उतना ही आश्चर्य होगा जितना मुझे हुआ।"

"खेल के बारे में बताओ।"

"राजदान का क्लोन बन गया वह।"

"क-क्लोन?"

"इनके कब्जे से न सिर्फ ठीक वैसा ही गाऊन मिला है जैसा राजदान की डैड बॉडी पर था बल्कि उसी के ब्राण्ड की सिगार की डिब्बी, वैसा ही म्यूजिकल लाइटर जैसा राजदान यूज करता था, परफ्यूम और आफ्टर शेव लोशन की शीशियां भी मिली हैं। राजदान के फेसमास्क को देखकर तो आप हैरान रह जायेंगे। एकदम परफैक्ट मास्क है। समरपाल को यह सब पहनाकर भी देख चुका हूं। हन्डरेड परसेन्ट नहीं तो नाइन्टी परसेन्ट जरूर वह राजदान नजर आता है।"

"राजदान बनने से उसे फायदा क्या हुआ?"

"सबसे पहले वह बबलू के पास पहुंचा। उस वक्त स्वीटी भी वहां थी। बबलू के मां-बाप उस राजदान को अपने सामने देखकर हैरान रह गये जिसकी हत्या के जुर्म में हम लोग उनके बेटे को पकड़ ले गये थे। राजदान बनकर ही बात की समरपाल ने उनसे। कहा---मेरे दुश्मनों ने मेरी हत्या करके बबलू को फंसाने का प्रपंच रचा था। जिसके बारे में समय रहते मुझे पता लग गया। मैंने उनके ऊपर चाल चल डाली। उन्हें इस भ्रम में फंसा दिया जैसे मैं मर गया होऊं। अब मेरा मकसद उनसे बदला लेना है। आप लोगों को चिंता करने की जरूरत नहीं है। देख ही रहे हैं मैं जिन्दा हूं। सो, बबलू का बाल तक बांका नहीं हो सकता। वैसे भी मैंने उसे हवालात से निकाल लिया है। पुलिस दबाव डालने के लिए आप लोगों को उठा सकती है इसलिए आप मेरे साथ चलें।

बस कुछ ही दिन की बात है। अपने दुश्मनों को मजा चखाने के बाद मैं खुद कानून के समक्ष पेश होकर सारी हकीकत बता दूंगा। कुछ उसकी बातों में आकर पुलिस के डर से और बबलू से मिलने की ललक के कारण वे उसके साथ चल दिये। स्वीटी को भी वह पुलिस द्वारा परेशान करने का भय दिखाकर साथ ले गया और उन्हें भी भट्टाचार्य के फार्म हाऊस में कैद कर लिया।"

"बबलू के साथ ही।"

"जी।"

"राजदान को देखकर बबलू की क्या हालत हुई होगी?"

"वही।... जो ये लोग करना चाहते थे।"

"मतलब?"

"इन लोगों का मकसद था, उन्हें डरा-डराकर दहशत से मार डालना। आप समझ ही सकते हैं, जिसे बबलू अपने हाथों से मार चुका था, उसे जीवित देखकर मारे खौफ के क्या हाल हुआ होगा उसका।"

"अखिलेश इस प्लान में कहां फिट होता है?"
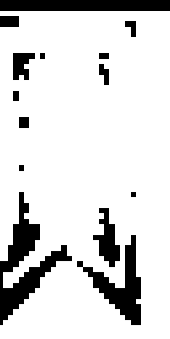
"प्लान ही उसका है सर, सारा प्लान ही उसका है। समरपाल, भट्टाचार्य और वकीलचंद तो केवल प्यादे हैं उसके।"

"मतलब?"

"प्रत्यक्ष में उसका काम था---पुलिस और पूरे समाज को भ्रमित कर देना। वह राजदान के एक ऐसे लेटर के साथ सामने आया जिसने मुझे भी हैरान कर दिया और आपको भी। उसे पढ़कर लगता था हत्यारा बबलू नहीं है बल्कि एक से ज्यादा लोग हैं और राजदान ने इन्वेस्टीगेशन के लिए मरने से पूर्व खुद ही उसकी नियुक्ति की। मगर जांच के बाद मैंने लेटर को फर्जी पाया है।"

"वह कैसे?"

"सबसे पहले मैंने उससे कहा---'अगर यह लेटर तुम्हें डाक से मिला था तो इसका एनवलप तो होगा तुम्हारे पास? वह बगलें झांकने लगा। मेरा इरादा एनवलप पर लगी डाकखाने की मोहर देखकर यह पता लगाने का था कि असल में उसे कब पोस्ट किया गया? बाद में कहने लगा---'एनवलप मैंने फाड़ दिया था। मुझे बात जंची नहीं। सोचा---इतना सुलझा हुआ जासूस भला उस एनवलप को कैसे फाड़ सकता है। जिससे यह साबित होता हो कि लेटर राजदान ने मरने से
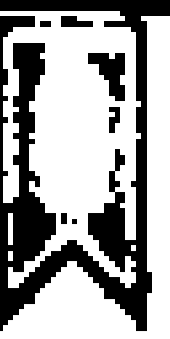
पहले लिखा था। सो, जांच की। लेटर की राइटिंग राजदान की राइटिंग से मिलाई। यह लेटर जिसने भी लिखा है, राइटिंग मिलाने की कोशिश जरूर की गई। मगर काफी फर्क है। राइटिंग एक्सपर्ट तो सारी कलई ही खोल देगा।'

"सोच तो उस वक्त हम भी रहे थे---कोई शख्स भला अपने मर्डर की इन्वेस्टीगेशन के लिए जासूस क्यों नियुक्त करेगा? बल्कि अगर किसी को पता लग जाये कि फलां वक्त, फलां लोग मेरी हत्या करने वाले हैं तो क्यों होने देगा अपनी हत्या? समय रहते पकड़वा क्यों नहीं देगा ऐसे लोगों को? मगर, लेटर में यह भी लिखा था---'इस रहस्य तक भी तुम्हीं को पहुंचना है कि मैंने अपनी हत्या क्यों होने दी?'

"यह सब लेटर को विश्वसनीय बनाने के लिए और हमें भ्रमित करने के लिए लिखा गया था जो कि हम हुए भी।"

"लेकिन सवाल यह उठता है वह राजदान का हत्यारा साबित किसे करना चाहता था?"

"यही सर। यही है असली सवाल।" कहते हुए ठकरियाल ने एक बार फिर सलाखों के पीछे मौजूद अखिलेश आदि की तरफ कुटिल मुस्कान उछाली---"बिल्कुल सही पकड़ा आपने।"

"मतलब?"

"अखिलेश के निशाने पर दिव्या और देवांश थे।"

"क-क्या?"

"सच्चाई यही है सर।"

"मगर क्यों? उनसे क्या दुश्मनी है उसकी?"

"औरत की चाह।"

"औरत की चाह?"

"जो किसी समय अखिलेश ने दिव्या पर प्रकट की थी।"

"हुआ क्या था?"

"दिव्या जी ने खुद बताया---राजदान से उनकी शादी को अभी तीन ही महीने हुए थे कि एक दिन राजदान साहब का पुराना दोस्त मिलने आया। दोस्त ने उसकी खूब आवभगत की। दिव्या जी ने भी। शायद इसी कारण गलतफहमी हो गई उसे। राजदान की गैर-मौजूदगी में पट्‌ठे ने दिव्या को पकड़ ही जो लिया। लगा मुहब्बत का राग अलापने। दिव्या जी हैरान। परेशान। समझाने की कोशिश की---'ये क्या बेवकूफी

कर रहे हो अखिलेश। मैं तुम्हारे दोस्त की पत्नी हूं। मगर, उसकी समझ में कुछ आता ही कहां है जिसके सिर पर वासना का भूत ताण्डव कर रहा हो। दिव्या जी रजामंदी से नहीं मानीं तो जबरदस्ती पर उतर आया। हाथापाई शुरू हो गई। दिव्या ने करारे-करारे जड़ दिये पांच सात। संयोग से तभी राजदान साहब पहुंच गये। जमकर तू-तू मैं-मैं हुई दोस्तों में। बाद में अखिलेश यह कहकर चला गया---देख लूंगा तुम्हें।"

"ओह।"

"जाहिर है---उसके बाद दोस्तों के बीच कोई सम्बन्ध नहीं रहा। राजदान अपनी दुनिया में मगन हो गया। अखिलेश अपनी। दिमाग तो उस वक्त घूमा जासूस साहब का जब वकीलचंद ने फोन पर राजदान के मर्डर और बबलू की गिरफ्तारी की खबर सुनाई। वकीलचंद क्योंकि राजदान का सच्चा दोस्त था। अतः फोन पर रोष भरे स्वर में कहा---'जी चाहता है, उस लड़के का खून पी जाऊं।' इस एक वाक्य ने पूरा मौका दे दिया अखिलेश को। दिमाग तो तेज है ही उसका। चुटकियों में दिव्या से बदला लेने की स्कीम बना डाली। वकीलचंद से कहा---ठीक कह रहे हो तुम। सजा तो उस लड़के को हमें अपने हाथों से ही देनी चाहिए। वकीलचंद बोला---'चाहता तो मैं यही हूं। मगर समझ में नहीं आ रहा ऐसा हो कैसे सकता है? भट्टाचार्य

और राजदान का वफादार चीफ एकाउंटेंट समरपाल भी यही चाहता है।' तब, अखिलेश ने उसे पूरी स्कीम समझाई। बबलू को हवालात से फरार करने की स्कीम। उसके मां-बाप को उठाने की स्कीम और फिर... फर्जी लेटर के साथ खुद भी आ धमका। यहां मैं स्पष्ट कर देना चाहूंगा---अखिलेश के असली इरादे की भनक भट्टाचार्य, वकीलचंद और समरपाल को भी नहीं थी। वे बेचारे तो यही सोच रहे थे---वे अपने यार के हत्यारे से बदला लेने के मिशन पर काम कर रहे हैं। वे तो सोच भी नहीं सकते थे---बदले के मिशन की आड़ में दिव्या से अपनी पुरानी खुंदक निकाल रहा है।

"वकीलचंद और भट्टाचार्य को राजदान और अखिलेश के झगड़े के बारे में नहीं पता था?"

"राजदान साहब ने कभी बताया नहीं और अखिलेश को बताने की जरूरत क्या पड़ी थी?"

"मगर, देवांश से क्या दुश्मनी थी उसकी?"

"एक औरत को बदनाम करने के लिए, उसकी चारित्रिक हत्या करने के लिए कम से कम एक मर्द तो चाहिए ही था, सर।" ठकरियाल पर जवाब तैयार था---"और ये मर्द भला देवांश से बेहतर उसे कहां मिल सकता था? एक ही छत के नीचे रहते हैं। देवर-भाभी का रिश्ता है। इस रिश्ते के ऐसे

सम्बन्धों पर लोग यकीन भी कुछ जल्दी ही कर लेते हैं। राजदान साहब की कार में जब बम रखा गया था तब मैंने भी शक किया था। छानबीन की थी इस ऐंगिल पर। पाया---उनके बीच मां-बेटा जैसा रिश्ता था।"

"कहानी क्या बनाना चाहता था अखिलेश?"

"दिव्या और देवांश को राजदान का मर्डर उस पर अपना भेद खुल जाने के कारण करना पड़ा। खुद को बचाने के लिए बबलू को प्लान्ट कर दिया। जब अखिलेश का यह प्लान परवान चढ़ता तो सबको पता लगता। भट्टाचार्य, वकीलचंद और समरपाल को भी। तब वे भी यही सोचते एक बेगुनाह के खून से हाथ रंगते वे बाल-बाल बचे हैं। दुआएं देते अखिलेश को।"

"लेकिन असली कातिल अर्थात् बबलू क्या सोचता?"

"हैरान तो जरूर होता। मन ही मन सोचता भी यह क्या गड़बड़-झाला हो गया मगर, चुप रहता। क्यों बोलेगा ऐसे हालात में कोई? बोलकर क्यों कानून के फंदे में फंसना चाहेगा?"

"उसने तो खुद थाने में सब कुछ कुबूल किया था।"

"वह तब की बात थी जब उसे बचाव का कोई रास्ता नजर
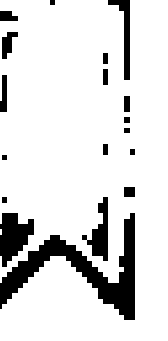
नहीं आ रहा था।"

"अपनी कहानी के फेवर में सुबूत क्या पेश करने वाला था अखिलेश?"

"उसके पास से दिव्या और देवांश के कुछ फोटो बरामद हुए हैं जिनमें वे आपत्तिजनक मुद्रा में नजर आ रहे हैं। मैं उन्हें एक्सपर्ट को दिखा चुका हूं। उसकी रिपोर्ट के मुताबिक फोटो ट्रिक फोटोग्राफी से तैयार किये गये हैं।"

"अपनी तरफ से काफी सॉलिड प्लान बनाया था उसने।"

"जासूस है सर। वह भी सुलझा हुआ। जिसकी दिल्ली में बड़ी धाक है।" अखिलेश की तरफ जहरीली मुस्कान के साथ देखता वह कहता चला गया---"उसका अंतिम पैंतरा सुनेंगे तो मजा ही आ जायेगा आपको।"

"वह क्या?"

"वह पट्ठा मुझे ही लपेटने के चक्कर में है।"

"तुम्हें?"

"जी।"
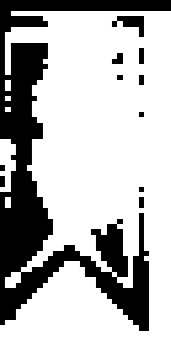
"क्यों?"

"इस वक्त जो मैं ये सारी कलई खोल रहा हूं तो भला मुझसे बड़ा दुश्मन कौन है उसका?"

"तुम्हारा वह क्या बिगाड़ सकता है?"

"मुझे मालूम है कुछ नहीं बिगाड़ सकता मगर कोशिश तो कर ही रहा है।"

"क्या कोशिश कर रहा है?"

"जैसे ही मैंने उसका कच्चा चिट्ठा खोला तो भड़ककर कहने लगा---'मुझसे उलझकर तुम अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल कर रहे हो इंस्पेक्टर। मैं ये साबित कर दूंगा---तुम भी दिव्या और देवांश से मिले हुए हो'।"

"क्यों?"

"मोटी रकम जो दे रहे हैं वे मुझे।"

"तुम्हें?"

"अब कौन समझाये सर---मुंबई पुलिस के सिपाहियों से लेकर कमिश्नर साहब तक जानते हैं, सूरज पश्चिम से उदय
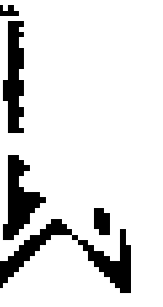
हो सकता है, ठकरियाल रिश्वत नहीं ले सकता।"

"बकौल उसके... रिश्वत लेकर तुमने क्या किया?"

"बबलू को फंसाने में मदद की उनकी। पूरी कहानी गढ़ ली है पट्ठे ने। खुद बबलू के मुंह से सुनवायेगा---रात के वक्त पाइप के जरिए देवांश उसके कमरे की खिड़की पर पहुंचा। पेपरवेट अंदर फैंका। रबरबैण्ड की मदद से उस पर एक कागज लिपटा हुआ था। राजदान का लेटर था वह। उसके मुताबिक बबलू बाथरूम के रास्ते से राजदान के बैडरूम में पहुंचा। पूरा किस्सा बतायेगा किस तरह मैंने उसे खुद को राजदान का भ्रम कराकर गहने दिये, रिवाल्वर पर अंगुलियों के निशान लिये आदि। मैंने पूछा---'राजदान का लेटर कहां से लाओगे? कहने लगा---'उसी से तैयार करा लूंगा जिससे वह तैयार कराया था जिसने तुम्हारी और एसएस.पी. खोपड़ियां घुमा दी थीं। कोर्ट में उसके फर्जी साबित होने से मेरी ही बात को बल मिलेगा। साबित हो जायेगा---तुमने फर्जी लेटर के जरिए बबलू को बुलाया। मैंने हंसकर कहा---'यानी अभी तुम्हारे पास लेटर नहीं है। बाद में तैयार कराओगे? बोला---'एक दिन में तो खत्म हो नहीं जायेगा मुकदमा। जमानत पर छूटते ही ऐसे बहुत से काम कर लूंगा मैं जिनके जवाब देने तुम्हें भारी पड़ जायेंगे। बबलू को कोर्ट में मेरा पढ़ाया कहना ही पड़ेगा क्योंकि इसी में उसकी भलाई है। ऐसे ही तो बेकसूर साबित होगा वह।' मैंने कहा---'अब

तुम खिसियानी बिल्ली की तरह खम्बा नोंच रहे हो। मगर इस तरह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकोगे। कोर्ट कहानियों पर नहीं सुबूतों पर ध्यान देती है। जो तुम्हारे पास हैं नहीं।' कहने लगा---'सुबूत कैसे पैदा किये जाते हैं यह मैं तुम्हें मुकदमे के दरम्यान बताऊंगा इंस्पेक्टर।' फिलहाल मेरे पास उसकी चुनौती स्वीकार करने के अलावा रास्ता ही क्या है सर। धमकियों से डरकर छोड़ तो सकता नहीं उसे।"

"अखिलेश का सारा प्लान खुलने के बाद भट्टाचार्य, वकीलचंद और समरपाल का क्या रुख है?"

"शुरू में तो यह पता लगने पर वे भौंचक्के रह गये कि उन्हें राजदान के हत्यारे से बदला लेने के जुनून में फंसाकर वह किस तरह अपना उल्लू सीधा कर रहा था मगर अब... जब उसने यह समझाया---यदि तुमने मेरा साथ न दिया तो लम्बे लद जाओगे। वे भी उसके सुर से सुर मिलाकर कोर्ट को वही कहानी सुनाने वाले हैं जो उसने गढ़ी है।"

"वह कहानी क्या है?"

"यही कि---राजदान को अपने कत्ल के बारे में पहले ही पता लग गया था। उसने न केवल अखिलेश को नियुक्त किया बल्कि वकीलचंद को बबलू को हवालात से फरार करने का काम सौंपा। समरपाल को फोन करके अपने ऑफिस

बुलाया। वहां उसे राजदान का लेटर, कैमरा, रुपये और वह सामान मिला जिसके जरिए राजदान का क्लोन बन सकता था।"

"भला राजदान को मरने के बाद अपना क्लोन बनाने से क्या फायदा था।"

"जवाब हर सवाल का तैयार कर रखा है पट्ठे ने। भट्टाचार्य, वकीलचंद, समरपाल और बबलू को ही नहीं, उसके मां-बाप और स्वीटी को भी अच्छी तरह पढ़ा दिया है किसे क्या कहना है। आपके उपरोक्त सवाल के जवाब में समरपाल कहेगा---'राजदान के लेटर में बबलू को सेफ करने, उसके मां-बाप और स्वीटी को आश्वस्त करने तथा दिव्या और देवांश को डराने के लिए लिखा था।' जाहिर है, उन सभी का फायदा इसी स्टोरी को सच्ची साबित करने में है अतः सब एक ही सुर में बोलेंगे। मैंने समरपाल से कहा---'कोर्ट तुमसे राजदान का लेटर मांगेगी।' अखिलेश ने तपाक से कहा---'हम कहेंगे, हमारी स्टोरी को सच्ची साबित करने वाले सारे सुबूत तुमने नष्ट कर दिये हैं।"

"वह कहेगा और... कोर्ट मान लेगी?"

"जरा कोई पूछे उससे। मगर...

"मगर?"

"सर! बात में कोई सच्चाई हो तो सुबूत भी हों। सुबूत जब हैं ही नहीं तो मुल्जिम लोग कोर्ट में इसके अलावा और कह भी क्या सकते हैं कि जो सबूत थे उन्हें पुलिस ने नष्ट कर दिया है।"

"बस यही सोचकर फिक्रमंद हूं सर, जासूस का बच्चा जाने कब कौन सा पैंतरा चल जाये! काफी चालाक है वह।"

"तुम फिक्र मत करो।" राणा ने कहा---"आवश्यक पूछताछ के बाद कोर्ट में पेश करते हैं उन्हें। उनकी लम्बी-लम्बी कहानियां पहले दिन तो कोर्ट सुनने से रही। मुकदमे के दरम्यान उठेंगी ये बातें। तब की तब देखी जायेगी।"

"जैसा हुक्म सर।" ठकरियाल ने मुस्तैदी से कहने के साथ रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

ये सारी बातें उसने अपनी ऑफिस टेबल के एक कोने पर बैठे-बैठे की थीं।

रिसीवर रखने के साथ सीधा खड़ा हो गया। नजरें सलाखों के उस पार मौजूद अखिलेश, भट्टाचार्य, वकीलचंद और समरपाल पर केन्द्रित थीं। भद्दे होठों पर कुटिल मुस्कान। चहलकदमी सी करता उनके नजदीक पहुंचा। फोन पर उसने

जो कुछ कहा था, उसे सुनकर वकीलचंद, भट्टाचार्य और समरपाल के चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं। वे स्वप्न तक में नहीं सोच सकते थे कि इस सारे मामले को ऐसा मोड़ भी दिया जा सकता है।

हां, अखिलेश का चेहरा मारे गुस्से के जरूर भभक रहा था।

उसी से नजरें मिलाकर पूछा ठकरियाल ने---"कैसी रही?"

"वक्त बतायेगा इंस्पेक्टर।" अखिलेश गुर्राया---"मैंने भी कच्ची गोलियां नहीं खेली हैं।"

"क्या बतायेगा वक्त?... तुम सब, वो साला बबलू, उसके मां-बाप और स्वीटी बार-बार वही कहोगे न जो सच है। मगर सिर्फ कहोगे। सुबूत तो सारे तुम्हारा पांचवां यार ले उड़ा। तुममें से किसी के भी पास ऐसा कोई सुबूत नहीं है जिससे साबित कर सको जो कह रहे हो वह सच है या वाकई तुमसे वह सब करने के लिए राजदान ने कहा था। बबलू जो कहेगा उसे सुबूतों के अभाव में हत्यारे का प्रलाप माना जायेगा। उसके मां-बाप और स्वीटी वह कहेंगे ही जो उनके साथ हुआ है अर्थात् राजदान का क्लोन बनकर समरपाल उन्हें भट्टाचार्य के फार्म हाऊस पर ले गया। खुद समरपाल को भी कुबूल करनी पड़ेगी यह बात। फर्क केवल ये होगा---वह घटना का कारण कुछ और बता रहा होगा।

मैं कुछ और। उसके पास अपनी बात प्रूव करने का सुबूत नहीं होगा और मेरे पास होंगे सुबूत ही सुबूत। एनवलप जैसे सभी सुबूत अवतार के कब्जे में हैं। वो जो लेटर तुमने मुझे और एस.एस.पी. को दिखाया था, उसे फाड़ चुका हूं मैं। उसकी जगह उसी मजमून का लेटर किसी और से लिखवा लिया है। जो एक्सपर्ट के पास पहुंचने के बाद फर्जी साबित होना ही होना है। क्लाईमेक्स तो तुम तब देखोगे जब मैं कोर्ट में मास्क बनाने वाले किसी कारीगर को भी पेश कर दूंगा। मेरे डंडों से जान बचाने के लिए वह सीना ठोककर कहेगा---'हां समरपाल ने मुझ ही से बनवाया था राजदान का फेसमास्क'।"

समरपाल का चेहरा पीला पड़ गया।

"अजीब हादसा हो गया तुम लोगों के साथ।" ठकरियाल ने चुटकी ली---"हवन करने के फेर में हाथ जला बैठे। वैसे..छकाया बहुत तुम्हारे मरे हुए दोस्त ने मुझे। इतना तो ठकरियाल को कोई जिन्दा आदमी भी नहीं छका सका था। साला जो चाल चलता दो कदम चलने पर पता लगता---पट्ठा मरने से पहले ही सोच चुका था कि मैं ये करूंगा। हाथ-पांव तक हिलाने मुश्किल कर दिये थे उसने। मगर, अफसोस---अंत में उसे शिकस्त खानी ही पड़ी। यह कल्पना नहीं कर पाया बेचारा कि एक ही झटके में उसके सारे मोहरे सींखचों के पीछे नजर आयेंगे।"

“उस हरामजादे अवतार की वजह से हो गया ये सब। न वह बचपन की दोस्ती पर थूकता, न इस वक्त तू इतना अकड़ रहा होता।”

“उसे भी देखना है मुझे। एक-एक करके सभी को देखूंगा।” कहने के बाद वह हंसा और हंसता हुआ ऑफिस से बाहर निकल गया।

सत्य प्रकाश, सुजाता, बबलू और स्वीटी हवालात नम्बर दो में बंद थे।

दोपहर के एक बजे।

उस वक्त देवांश बैठक में था जब ठकरियाल का फोन आया।

जो हुआ था, सुनकर पहले तो विश्वास ही नहीं हुआ उसे।

अनेक सवाल किये।

ठकरियाल सबके संतुष्टिजनक जवाब देने के बाद बोला---"अब इन सबको लेकर मुझे कोर्ट जाना है। जेल भेजकर ही विला पर आऊंगा।"

मारे खुशी के झूम उठा देवांश।

रिसीवर रखने के बाद, एक पल के लिए भी बैठक में बैठा नहीं रह सका। इच्छा हुई---'यह खबर फौरन दिव्या को पता लगनी चाहिए।'

वह उठा।

बैठक का मुख्य द्वार अंदर से बंद किया और भीतरी दरवाजा क्रॉस करके लगभग दौड़ता हुआ दिव्या के कमरे में

जा पहुंचा।

वह अभी भी बैड पर बेसुध पड़ी थी।

जिस्म पर एक चादर थी।

वह जानता था---चादर के नीचे दिव्या अभी भी नग्न अवस्था में है।

नजदीक पहुंचकर आहिस्ता से उसके कंधे पर हाथ रखा। हौले से झंझोड़ते हुए पुकारा। दिव्या कुनकुमाई। देवांश ने पुनः झंझोड़ते हुए पुकारा। काफी प्रयासों के बाद उसने आंखें खोलीं। देवांश को देखते ही चौंकर उठ बैठी। मुंह से निकला---"त-तुम?"

देवांश ने उसकी आंखों में अपने लिए उमड़ता नफरत का सागर देखा था।

एक ही क्षण में सारी खुशी जाने कहां काफूर हो गयी।

दिव्या ने उसके चेहरे से नजरें हटाईं। वाल क्लॉक की तरफ देखा। दिमाग को झटका सा लगा। उफ्फ! दिन का सवा बज गया। फिर, आंखों के सामने रात के दृश्य तैर गये।

दिलो-दिमाग ग्लानि से भर गया।

कितनी भयानक रात थी।

उसका नंगी होकर नाचना।

शैतानों का उसे देखकर 'शेम-शेम' कहना।

राजदान के ठहाके। सुलगते शब्द।

फिर।

उसके दोस्तों का थूकना।

खुद से घृणा होती चली गई दिव्या को। सब कुछ किसी भयानक सपने की तरह याद था उसे। इधर, देवांश को लगा---जब तक वह खुशखबरी नहीं देगा तब तक बातें करना तो दूर, दिव्या उसकी तरफ देखना तक गंवारा नहीं करेगी, अतः उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए बोला---"अभी-अभी ठकरियाल का फोन आया था।"

दिव्या ने बहुत ही उपेक्षित भाव से उसकी तरफ देखा।

"खुशखबरी सुना रहा था।" देवांश ने उसकी उत्सुकता जगानी चाही।

वह अब भी चुप रही।

देवांश ने एक ही झटके में कह दिया---"हमें कातिल या

गुनेहगार साबित करने वाले चारों के पास जितने भी सुबूत थे सब अवतार के कब्जे में आ चुके हैं। उसकी इन्फॉरमेशन पर ठकरियाल ने भट्टाचार्य के फार्म हाऊस पर छापा मारा। वे चारों वहीं थे। बबलू, उसके मां-बाप और स्वीटी भी। ठकरियाल ने चारों को गिरफ्तार कर लिया है।”

देवांश को उम्मीद थी, जब वह यह सब बतायेगा तो भले ही दिव्या चाहे जितने विषाद में हो, मारे खुशी के उछल पड़ेगी। मगर, वह अब भी संगमरमर के बुत की तरह एकटक उसकी तरफ देख रही थी। कोई भी तो भाव नहीं उभरा चेहरे पर। न खुशी का न गम का। देवांश को आश्चर्यमिश्रित निराशा हुई। लगा---बात अभी पूरी तरह शायद दिव्या की समझ में नहीं आई है। सो बोला---“वह जाल टूटकर पूरी तरह बिखर गया है जो राजदान हमारे चारों तरफ बुन गया था। सारे हालात अब हमारी मुट्ठी में हैं। समझने की कोशिश करो दिव्या---वह सब हो चुका है जो अवतार को मोहरा बनाकर ठकरियाल करना चाहता था।”

“अगर वह सब हो भी गया है।” दिव्या ने ताना सा मारा---“तो तुमने क्या किया है?”

देवांश की जुबान तालू में जा चिपकी।

कुछ कहते नहीं बन पड़ा उस पर।

“मेरे सिर में बहुत तेज दर्द है। नहाना चाहती हूं।” कहने के बाद देवांश के जवाब की प्रतीक्षा किये बगैर वह बैड से उठी और बाथरूम की तरफ बढ़ गई।

चादर बेड पर ही पड़ी रह गयी थी।

इस बात की बाल बराबर परवाह नहीं की उसने कि तन पर एक भी कपड़ा नहीं है। देवांश की आंखों ने उसे बाथरूम की तरफ बढ़ते देखा जरूर था। परन्तु उन्होंने दिमाग को दिव्या के नग्न होने का मैसेज नहीं दिया।

कैसे देतीं?

दिमाग तो दिव्या द्वारा पहुंचाये गये आघात से चोटिल हुआ पड़ा था।

ठीक ही तो कहा दिव्या ने, उसने क्या किया है?

जी चाहा---किसी अंधे कुएं में कूदकर अपनी जान दे दे।

बहुत देर तक बेड पर उसी पोजीशन में बैठा रहा।

दीनू काका आकर यह न कहता कि चार-पांच लोग मिलने आये हैं तो जाने कब तक बैठा रहता। वह उठा और इस तरह कमरे से बाहर निकल गया जैसे कोई अपने सबसे प्रिय

की चिता को अग्नि देने के बाद मसान से बाहर निकला हो।

दिव्या सीधी शॉवर के नीचे जाकर खड़ी हो गयी थी।

ठंडे पानी ने असर दिखाया।

शरीर की नसों ने खुलना शुरू किया।

उसे अच्छा क्यों नहीं लग रहा था देवांश का बोलना? जो उसने कहा, उसे सुनकर खुशी सी तो हुई उसे मगर उस खुशी को जाहिर करने का जी क्यों नहीं चाहा? दिमाग में एक साथ बहुत से सवाल भी कौंधे थे। वे सवाल जिनके दिमाग जवाब चाहता था परन्तु मन नहीं हुआ देवाश से पूछने का।

बार-बार एक ही इच्छा हो रही थी---वह उसके सामने से उठकर चला जाये।

कह न सकी तों... खुद बाथरूम में आ गई थी।

क्या वह सच कह रहा था?

अवतार कामयाब हो गया है?

नौबत ऐसी आ गई है कि ठकरियाल उन दरिन्दों को जेल भेजने की तैयारी में जुटा है?

अगर वाकई ऐसा हो गया तो?

तो?

इस 'तो' से आगे वह कोशिश के बावजूद नहीं सोच पाई।

असल में रात के दृश्य बार-बार उसकी सोचों के बीच अवरोध बनकर आ खड़े होते थे।

समझ ही नहीं पा रही थी रात जो हुआ, उसके लिए अभी भी दहाड़े मार-मारकर रो पड़ना चाहिए या उस पर खुश होना चाहिए जो कुछ देर पहले देवांश ने बताया।

कोशिश के बावजूद वह रात के दृश्यों को अपने मस्तिष्क पटल से छिटक नहीं पा रही थी।

कुछ वैसी ही हालत हो गयी थी जैसी दिव्या और देवांश को साथ देखकर राजदान की हुई थी। ठहाके लगाता राजदान। कानों में गूंजती 'शेम-शेम'। उस पर थूकते अखिलेश, वकीलचंद, अवतार, भट्टाचार्य और समरपाल। उफ्फ! यह सब पीछा क्यों नहीं छोड़ रहे थे उसका?

एकाएक ख्याल आया---उसे ठकरियाल से फोन पर बात करनी चाहिए।

मालूम तो करना चाहिए हुआ क्या है?

बेचैन सी हो गयी वह।
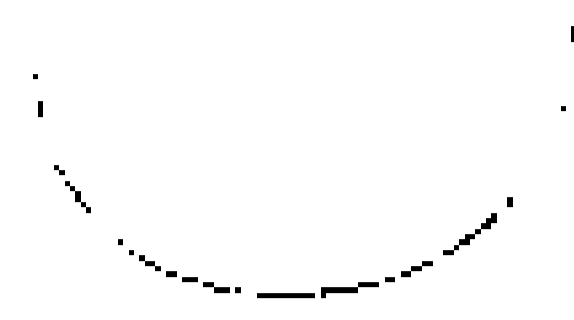
नहाने में भी मन नहीं लगा।

शॉवर बंद करके ड्रेसिंग में आयी।

टॉवल से जिस्म पौंछा।

वार्डरोब खोली। राजदान द्वारा खरीदा गया एक से एक कीमती लिबास सामने था। हाथ बढ़ाया। याद किया---अब यह सब कहां पहन सकती है वह। उसे तो सफेद साड़ी पहननी है। सफेद ब्लाऊज।

यदि कुछ और पहना और किसी ने देख लिया तो?

यह सोचकर खीझ सी हुई कि देखने वाला क्या सोचेगा?

फिर।

मन विद्रोही हो उठा।

कमरे से बाहर ही क्यों निकलेगी वह?

कौन आ रहा है यहां देखने?

सो।

उसने एक चुस्त जींस और ढीला-ढाला टॉप पहन लिया।

बाल संवारे और ड्रेसिंग का दरवाजा खोलकर कमरे में कदम रखा ही था कि ठिठक जाना पड़ा। नजर बैड के नजदीक पड़ी चेयर पर चिपककर रह गयी थी।

वहां कोई बैठा था। बाथरूम के दरवाजे की तरफ पीठ थी उसकी। दायें हाथ के बीच सुलगी हुई सिगरेट। धुवां एक टेढ़ी-मेढ़ी लकीर की शक्ल में उठ रहा था। "कौन है?" दिव्या ने कहा। एक झटके से खड़ा होने के साथ वह पलट भी गया। अवतार था वह। मगर वह अवतार बिल्कुल नहीं जिसे

उसने पहली बार देखा था। नहाया-धोया था।

रेशमी बाल सलीके से कढ़े हुए।

जिस्म पर हल्के पीले रंग की टी-शर्ट। काली पैंट और कुछ ही देर पहले की गई पॉलिश से चमचमा रहे जूते। उसके होंठ सुर्ख और बहुत रसीले थे। सीना बाहर। पेट अंदर। ब्राउन आंखों में जगमगाहट।

एक पल को तो अवाक् सी खड़ी रह गयी दिव्या।
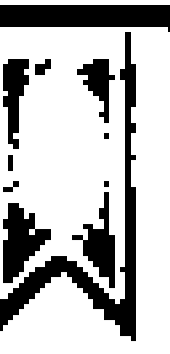
अगले पल मुंह से निकला---"त-तुम?"

"जी।" बहुत शालीनतापूर्वक कहा उसने।

दिव्या ने खुद को नियंत्रित किया। आवाज में कड़ाई लाती हुई बोली---"यहां क्यों आये हो?"

"तुमसे माफी मांगने।"

"माफी?"

"रात मैं भी था उन लोगों के बीच।"

"फिर?"

"उसी के लिए माफी मांगने आया हूं।"

"क्या जरूरत थी इसकी?" विषाद की ज्यादती के कारण दिव्या का चेहरा बिगड़ने सा लगा था।

"मुझे वह सब अच्छा नहीं लग रहा था।"

"झूठ बोल रहे हो।"

"मेरा सच अगर तुम्हें झूठ लगता है तो झूठ ही सही।"

"अगर सच है तो देख क्यों रहे थे? आये ही क्यों थे उनके साथ? तुम्हें तो पहले ही मालूम था तुम लोग मुझे नंगी नचाने आ रहे हो?"

"हां, मालूम था।"

"फिर?"

"मजबूर था। उस वक्त उनके सामने खड़ा हो जाता तो मेरा मिशन पूरा नहीं हो सकता था।"

"मिस्टर गिल!" एकाएक दिव्या का लहजा कुछ ज्यादा ही कठोर हो उठा---"प्रभावित करने की कोशिश मत करो मुझे। मैं तुम्हारी फितरत से अच्छी तरह वाकिफ हूं। उन सबसे ज्यादा हरामी हो तुम। हत्यारे। बैंक लुटेरे। कॉल गर्ल्स का धंधा करने वाले। जब तुम्हारे होटल में वो धंधा होता था तो कैबरे भी जरूर होता होगा।"

"होता था।"

"तब तो आदत पड़ी हुई होगी तुम्हें औरत का नंगा जिस्म देखने की?"

"हां।"

"फिर काहे की माफी मांगने चले आये? नया क्या हो गया तुम्हारे लिए?"

"वे जो होटलों में कैबरे करती हैं। वे, जिनके नंगे बदन को देखने में मैं पूरा-पूरा लुत्फ लेता हूं। या अगर यूं भी कहूं, उन जिस्मों को देखने का मुझे चस्का लग चुका है तो गलत नहीं होगा मगर, वे जो भी करती हैं---अपनी मर्जी से करती हैं। खुशी से करती हैं। प्रोफेशन है उनका। वो सब करते वक्त वे अंदर से तड़प नहीं रही होतीं। आंखों में आंसू नहीं होते उनकी। वे घरेलू नहीं, बाजारू होती हैं। या हो चुकी होती हैं। बस! यही नया था और शायद यही नयापन मुझे अच्छा नहीं लगा।"

"कह चुके जो कहना था?"

"जी।"

"अब तुम जा सकते हो।"

"ओ.के.।" हल्की सी मुस्कान के साथ कहा उसने। सिगरेट का अंतिम सिरा सेन्टर टेबल पर रखी ऐशट्रे में कुचला और कमरे की खुली खिड़की की तरफ बढ़ गया।

"रास्ता उधर है।" दिव्या ने कहा।

वह ठिठका। बोला---"मैं इधर से ही आया था।"

"क्यों?" दिव्या की आंखें सुकड़ीं।

"उधर से आता तो बैठक में बैठा देवांश रोक लेता और माफी मुझे उससे नहीं, तुमसे मांगनी थी।" कहने के बाद वह खिड़की पर पैर रखकर दूसरी तरफ कूदने ही वाला था कि दिव्या ने कहा---"एक मिनट मिस्टर गिल।"

वह पुनः ठिठका। पलटा।

"सुना है रात तुम कामयाब हो गये?"

"ठकरियाल या देवांश बता ही चुके होंगे।"

"इतनी जल्दी कैसे मिल गई कामयाबी?"

एक बार फिर उसके सुर्ख और रसीले होठों पर मुस्कान फैल गई। बोला---"मैं सच बोलूंगा तो तुम्हें झूठ लगेगा।"

"मतलब?"

"केवल तुम्हारी वजह से इतनी जल्दी कामयाबी मिल पाई।"

"मेरी वजह से?"

"यकीनन।"

"बनाने की कोशिश कर रहे हो मुझे। मैं तो उस वक्त तुम्हारे आस-पास भी नहीं थी। धुत्त पड़ी थी नशे में।"

"कारण बनने के लिए किसी का आसपास होना जरूरी नहीं होता।"

"मतलब?"

"यहां से लौटते वक्त गाड़ी में मैंने अखिलेश से वही कहा जो कुछ देर पहले तुमसे कहा है। यह कि जो हम करके आये हैं बहुत घृणित था वह। मुझे अच्छा नहीं लगा। सुनकर भड़क उठा अखिलेश। बोला---'तुझे कुछ मालूम भी है दिव्या और देवांश ने क्या किया है?" मैं बोला---'कुछ भी किया हो मगर वह इतना घृणित नहीं हो सकता।' उसे तैश आ गया। अच्छे भले होटल जा रहे थे। समरपाल से गाड़ी भट्टाचार्य के फार्म हाऊस की तरफ मोड़ने को कहा। हालांकि वह सब कहते वक्त मुझे इस बात का कोई इल्म नहीं था। परिणाम ये निकलेगा। इतनी जल्दी उस 'खजाने' तक पहुंच जाऊंगा। जिसकी मुझे तलाश थी। मैंने तो दिल की बात कही थी। उसने मंजिल तक पहुंचा दिया।... अब कहो, इतनी जल्दी कामयाबी तुम्हारी वजह से मिली या नहीं?"
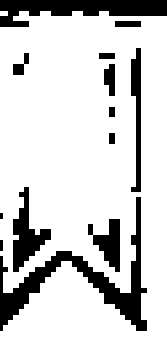
"वहां ले जाकर उसने तुम्हें क्या दिखाया?"

"वह फिल्म जिसमें वह सब था जो उनतीस अगस्त की रात को राजदान के बैडरूम में हुआ। तुम दोनों का उस कमरे में जाना। उसके और तुम्हारे बीच हुई बातचीत। तुम्हारे द्वारा उसे हार्ट अटैक से मार डालने की कोशिश और अंततः उसके द्वारा की जाने वाली आत्महत्या।"

"व-वो सब भी 'शूट' था?" मारे आश्चर्य के दिव्या का बुरा हाल हो गया।

मुंह से स्वतः अनेक सवाल निकलने लगे।

अवतार बेहिचक सबके जवाब देता चला गया।

जाहिर है, दिव्या के सवाल तभी खत्म हुए जब सारी बातें उसकी समझ में आ गयीं। जब सारी बातें समझ में आ गईं तो यह भी समझ में आ गया---एक ही झटके में वह राजदान के जाल से पूरी तरह बाहर निकल आई है।

और अब... बीमा कम्पनी से पांच करोड़ मिलने में उसे कोई अड़चन नजर नहीं आ रही थी। बोली---"क्या उस रात की फिल्म देखकर भी तुम्हें नहीं लगा, राजदान ने अपने दोस्तों की महफिल में जो मुझे नंगी नचाने का फैसला लिया, वह ठीक ही था?"

"नहीं।"

"क्यों?" दिव्या की आंखें सुकड़ गईं।

"बहुत स्पष्ट कहूं तो जवाब यही है---मर्द कभी अपने गिरेहबान में झांककर नहीं देखता। राजदान कनाडा से एड्स लाया था। जाहिर है---गंदी वेश्याओं में मुंह मारा होगा उसने। ऐसा करना गुनाह नहीं था उसकी नजरों में। लेकिन पत्नी का कहीं और चली जाना गुनाह था। इतना बड़ा गुनाह कि वह उसे दोस्तों की महफिल में नंगी नचाने के बीज बो गया। ये मर्द का औरत पर जुल्म नहीं तो और क्या है?"

दिव्या देखती रह गयी अवतार की तरफ।

उसकी बात बहुत ही अच्छी लगी थी उसे।

न्याय संगत। इंसाफ वाली।

ठीक ही तो है---राजदान को अपने गिरेहबान में भी तो झांककर देखना चाहिए था।

और।

जो दिव्या के साथ हो रहा था वह कोई नई बात नहीं थी।

जब सामने वाला हमारे मन की, हमारे पक्ष की बात कहता है, भले ही वह चाहे कितनी गलत हो हमें अच्छी लगती है। कहने वाला 'अपना' नजर आने लगता है।

अपना हितैषी। शुभचिंतक।

लगता है---'बस यही है वह शख्स जो मुझे समझ सका।'

कुछ ऐसे ही भाव अवतार के लिए दिव्या के मन में भी उमड़े।

जी चाहा---उसके कंधे पर सिर रखकर फूट-फूटकर रो पड़े जिसने उसकी भावनाओं को समझा है। जजबातों को जाना है।"

मगर तभी।

याद आया---अवतार हत्यारा है। बैंक लुटेरा। वेश्याओं का दलाल। वांटेड।

वह तो यहां आया ही उस पर डोरे डालने के लिए है।

उसे फंसाने। शीशे में उतारने।

क्योंकि वह धनवान है। हुण्डी है पांच करोड़ की।
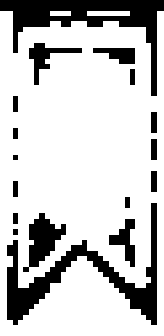
ठकरियाल का एक-एक शब्द याद आता चला गया।

सतर्क हो गयी वह।

एहसास हुआ---अवतार ने जो कुछ कहा, अपने दिल की गहराइयों से नहीं बल्कि उसे शीशे में उतारने के लिए कहा है। वह बेवकूफ बना रहा है उसे। जाल में फंसा रहा है अपने।

नहीं।

उसे इस घुटे हुए क्रिमिनल की बातों में नहीं आना है।

यह सब दिमाग में आते ही चेहरा सख्त होता चला गया। हलक से गुर्राहट निकली---"मिस्टर गिल, आप जो मेरी नजरों में खुद को दुनिया का सबसे अलग मर्द साबित करने की कोशिश कर रहे हैं, यह कोशिश कामयाब नहीं होगी।"

"मतलब?"

"आखिर तुम्हारी कौन लगती हूं मैं जो उनके बीच मुझे नंगी नाचते देखकर अच्छा नहीं लगा।"

"मैं नहीं समझता इस वक्त तुममें सच सुनने की ताकत है।"

"क्यों... कहां से कमजोर नजर आ रही हूं मैं?"

"सचमुच सुनना चाहती हो तो सुनो।" अवतार ने उसे बहुत ध्यान से देखा और अपनी ब्राउन कलर की चमकदार आंखें उसके चेहरे पर गड़ाकर कहता चला गया---"छंटा हुआ क्रिमिनल हूं मैं। एक नम्बर का हरामी। दौलत का दीवाना। औरतखोर... झूठ नहीं बोलूंगा तुमसे, मैं यहां राजदान की मौत पर मातमपुर्सी करने नहीं बल्कि उसकी दौलत पर हाथ साफ करने आया था।"

मन ही मन हैरान रह गई दिव्या।

उसने स्वप्न तक में नहीं सोचा था अवतार अपने बारे में सीधे-सीधे इतने नंगे शब्दों में सब कुछ बताना शुरू कर देगा। जो उसे छुपाना चाहिए था, उसे साफ-साफ कहता चला गया---"औरतों को शीशे में उतारने के मामले में मुझे महारत हासिल है। मेरी नजरों में खूबसूरत औरत वैसी नहीं होती थी जैसी तुम हो। बल्कि वह होती थी जो दौलत की चाशनी में लिपटी हो। सोचा था---राजदान मेरा ही हमउम्र था। ताजा-ताजा बेवा हुई उसकी पत्नी की उम्र भी ज्यादा नहीं होगी। भले ही चमड़ी से चाहे जितनी बदसूरत हो, उसे पटाऊंगा। अपने कब्जे में कर लूंगा उसे, मौका लगते ही दौलत पर हाथ साफ कर लूंगा।"
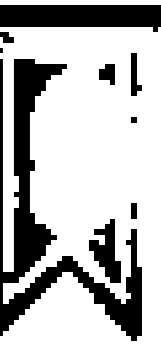
"और उस मिशन पर तुम यहां आते ही लग गये थे।" दिव्या के मुंह से स्वतः व्यंगात्मक लहजा निकला---"मुझ पर नजर पड़ते ही डोरे डालने शुरू कर दिये थे।"

"बेशक। तुम्हें देखते ही मैंने अपना काम शुरू कर दिया था मगर..

"मगर?"

"थोड़ा परिवर्तन आ गया था विचारों में। ...थोड़ा कहना भी शायद गलत होगा। मेरे करेक्टर को देखते हुए अगर उसे 'बड़ा परिवर्तन' कहा जाये तो ज्यादा ठीक होगा।" वह कहता चला गया---"तुम पर नजर पड़ते ही मुझे लगा---नहीं, खूबसूरती वह नहीं होती जिसे मैं आज से पहले तक खूबसूरती समझता रहा। खूबसूरती तो वह होती है जो इस लम्हा मेरे सामने बैठी है। सच दिव्या जी, हजारों लड़कियां देखी हैं मैंने। सैंकड़ों को भोगा है। मगर सच ये है कि तुमसे ज्यादा..

"औरत को शीशे में उतारने के अपने हथकंडों को मुझसे दूर रखो।" दिव्या गुर्राई।

"बीच में मत बोलो। प्लीज! वह कहने दो जो मेरा दिल चाह रहा है। कम से कम सुन लेने से तुम्हें कोई नुकसान नहीं

होने वाला। अपनी कसम खाकर कहता हूं---तुम्हें देखकर पहली बार मेरे दिमाग में यह ख्याल आया---मुझें शादी कर लेनी चाहिए।"

"तुम्हारे ही शब्दों में कहूं---अगर मैं दौलत की चाशनी में लिपटी औरत न होती। अगर पांच करोड़ की बीमा पॉलिसी न होती मेरे पीछे तो क्या तब भी तुम्हारे दिमाग में मुझसे शादी करने का ख्याल आता!"

"अगर आता तो उसे छिटक देता। नहीं करता तुमसे शादी।"

उसके अनोखे जवाब पर दिव्या चौंक गई। मुंह से निकला---"क्यों?"

"क्योंकि दौलत के महत्व को मैंने देखा है। दर-दर की ठोकरें खाकर उसकी अहमियत को समझा है। निःसन्देह खूबसूरती वही है जो तुममें है मगर बुरा मत मानना---पैसे के अभाव में मर्द को यह खूबसूरती बदसूरती लगने लगती है। दोनों ही जरूरी हैं। इसलिए मुझे लगा---मुझे तुमसे शादी कर लेनी चाहिए। दिमाग में विचार कौंधे---अवतार, कब तक चोरियां, डकैतियां और मर्डर करके पुलिस के डर से दुम दबाये इधर से उधर भागता रहेगा? कब तक करता रहेगा कॉल गर्ल्स रैकेट चलाने जैसे घटिया धंधे? मंजिल तेरे सामने हैं---तेरे
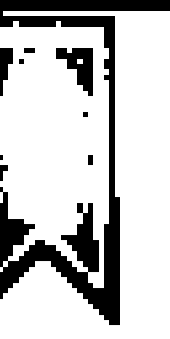
द्वारा देखी गई अब तक की सबसे खूबसूरत औरत और पांच करोड़ रुपये। वे पांच करोड़ जिनके बूते पर तू इस औरत के साथ इण्डिया से बाहर जा सकता है। इसे पत्नी बनाकर चैन से रह सकता है। बच्चे पैदा कर सकता है। परिवार बसा सकता है अपना।"

"मिस्टर गिल! बहुत दूर तक सोच गये तुम।"

"हां। शायद ठीक ही कहा तुमने।" हवा में उड़ता अवतार मानो सचमुच धरती पर आ गिरा---"मगर...मगर दिव्या जी, आखिर गलत क्या सोचा मैंने? क्यों नहीं हो सकता ऐसा? तुमने कहा था---'आखिर तुम्हारी कौन लगती हूं मैं जो उनके बीच मुझे नंगी नाचते देखकर अच्छा नहीं लगा?' जवाब शायद यही है। तुम्हें देखकर मैं वह सोच बैठा जो पहले कभी किसी औरत को देखकर नहीं सोचा था। तुम्हारे हालात भी तो ऐसे ही हैं कि शायद तुम्हें भी अब इस शहर में रहना रास न आये। इस देश से बाहर ही कहीं बसेरा हो सकता है हमारा।"

इस बार दिव्या ने कुछ कहा नहीं। केवल देखती रही अवतार की तरफ। उस अवतार की तरफ जिसका समूचा चेहरा इस वक्त भावनाओं की ज्यादती के कारण भभक रहा था।

अभी वह विचारों में ही गुम थी कि अवतार ने पूछा---"क्या

सोचने लगीं तुम?"

"तुम्हें मेरे और देवांश के सम्बन्ध मालूम हैं न?"

"मुझे सब मालूम है मगर यह सच्चाई तुम्हें कुबूल करनी चाहिए कि पांच करोड़ कमाने की दिशा में न आज तक वह कुछ कर सका न ही ठकरियाल। मैं न होता तो तुम तीनों इस वक्त भी राजदान के जाल में फंसे छटपटा रहे होते। जो किया, मैंने किया बल्कि अब भी सारे सुबूत मेरे पास हैं। मैं चाहूं तो बीमा कम्पनी से एक पाई नहीं मिल सकेगी किसी को।"

दिव्या के होठों पर कटु मुस्कान उभर आई। बोली---"तुम तो अगले ही पल अपनी औकात पर उतर आये।"

"मतलब?"

"एक पल पहले तक तुम मेरे प्रेमी नजर आ रहे थे मगर दाल गलती न देखकर धमकी देने लगे। यही तो होती है क्रिमिनल की फितरत!"

"पहली बात---मैं क्रिमिनल हूं, क्रिमिनल रहूंगा। अपनी औकात के ऊपर कभी चढ़ा ही नहीं था जो उतर आने वाली बात कही जाये। हां, मन में तुम्हारे प्रति कुछ भावनाएं थीं जिन्हें मैंने बगैर लाग लपेट के कहा। मानना न मानना,
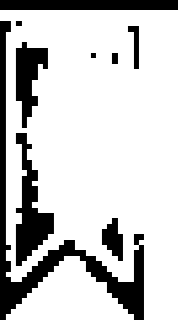
तुम्हारे अख्तियार की बात है। दूसरी बात---जो तुम्हें धमकी लगी वह धमकी नहीं हकीकत है। ठंडे दिमाग से सोचना। वैसे तुम न मिलीं तो मर नहीं जाऊंगा मैं। ऐसा भी नहीं है कि तुम्हारी दीवानगी में फंसा अपना वह हिस्सा तुम पर कुरबान कर जाऊंगा जिस पर मेरा हक बनता है।"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा, तुम किस किस्म की बात कर रहे हो?"

"अगर समझ में नहीं आ रहा तो कमी मेरी है। फिर भी, एक बार और कोशिश करता हूं।" कहने के बाद अवतार ने एक सिगरेट सुलगाई। समझाने वाले अंदाज में बोला---"बहुत साफ-साफ मेरे दिमाग में दो बातें हैं। पहली---रकम मिलते ही हम उसमें से ठकरियाल का हिस्सा दें और यह मुल्क छोड़ दें। ठकरियाल का हिस्सा देना इसलिए जरूरी है क्योंकि उसकी मदद के बगैर हमारे इरादे परवान नहीं चढ़ सकते। दूसरी---अगर तुम मेरी पत्नी बनना स्वीकार नहीं करतीं तो रकम के तीन हिस्से होंगे। मेरा, ठकरियाल का और तुम्हारा। तुम्हारा इसलिए क्योंकि रकम को आना ही तुम्हारे हाथ में है। अपना हिस्सा लेकर मैं फिर अपनी दुनिया में लौट जाऊंगा।"

"यानी किसी भी हालत में देवांश को हिस्सा देकर राजी नहीं हो?"

"किस बात का हिस्सा दिया जाये उसे? उसने किया ही क्या है?"

दिव्या के पास चुप रह जाने के अलावा कोई चारा नहीं था।

"तो दो रास्ते हैं मेरे पास। पहला---तुम्हारे साथ इण्डिया से निकल जाना। दूसरा---अपने हिस्से के साथ अपनी दुनिया में लौट जाना। दूसरे रास्ते पर बढ़ना पड़ा तो अफसोस होगा क्योंकि मैं वाकई तुमसे प्यार करने लगा हूं और क्राइम की दुनिया छोड़कर सचमुच तुम्हारे साथ सुकून भरी जिन्दगी जीना चाहता हूं। वैसे अभी टाइम है। सलाह तुम्हें भी यही दूंगा---फैसला पहले रास्ते के पक्ष में करो। अब इस शहर में देवांश के साथ रहना तुम्हें रास नहीं आयेगा। सारा हिस्सा तो कर्जदार ही हड़प कर जायेंगे। बेहतर यही है---कर्जदारों के लिए देवांश को छोड़ दो। मेरे साथ निकल चलो। राजदान से कुछ ज्यादा ही प्यार करने वाला साबित होऊंगा मैं।"

फोन की घंटी बजी।

देवांश ने रिसीवर उठाया। कहा---"हैलो।"

"मैं बोल रही हूं।" दूसरी तरफ से आवाज आई। "कौन?"

"ओह! आवाज तक याद नहीं रही मेरी?"

"कौन हो तुम?" देवांश गुर्राया---"क्या बक रही हो?"

"विचित्रा बोल रही हूं हुजूर।"

"व-विचित्रा?" बुरी तरह चौंक पड़ा वह।

"विनीता। तुम्हारी विनीता।"

"ब-बकती हो तुम... त-तुम भला...।" देवांश बुरी तरह हकला उठा था।

"मुझे मालूम था। मेरी आवाज सुनकर तुम इसी तरह बौखला उठोगे। तुम्हारे भाई ने ठकरियाल के हाथों मेरा और मेरी मां का मर्डर जो करा दिया था।"

"म-मर्डर करा दिया था?... भैया ने? मगर क्यों?"
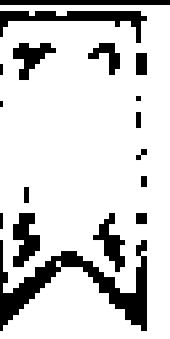
"ताकि तुम अपने हाथ हमारे खून से न रंग सको।"

"विनीता, ये क्या ऊट-पटांग बक रही हो तुम? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

"जानती हूं। तुम्हारी समझ में इसलिए नहीं आ रहा क्योंकि तुम्हें सचमुच नहीं मालूम मेरे और मां के साथ हुआ? मगर हमें मारते वक्त ठकरियाल ने सब कुछ बता दिया था। अपने भाई के मुंह से हमारी हकीकत सुनने के बाद तुम आग का गोला बने हमें तलाश करते घूम रहे थे। राजदान को डर था अगर मैं या मां तुम्हें कहीं नजर आ गई तो तुम अपने हाथों में मार डालोगे। राजदान ऐसा नहीं चाहता था। वह सोचता था अगर तुमने ऐसा किया तो हत्या के इल्जाम में फांसी पर चढ़ जाओगे। ऐसा कभी हो ही न सके, यह सोचकर राजदान ने ठकरियाल को पच्चीस लाख रुपये दिये। हमारी हत्या के लिए दी गई थी वह रकम। और अपनी तरफ से ठकरियाल ने हमें समुद्र में डुबोकर मार भी डाला। मगर मारने वाले से बचाने वाले के हाथ लम्बे होते हैं देवांश। मां के बारे में तो कह नहीं सकती। मर गई या मेरी तरह कहीं जिन्दा है मगर मैं हूं और इस वक्त तुमसे बातें कर रही हूं।"

देवांश के दिमाग ने चकरघिन्नी की तरह घूमना शुरू कर दिया था।

उसे याद आया---इस बात का जिक्र कई बार आ चुका है कि राजदान ने ठकरियाल को किसी काम के पैसे दिये थे। ठकरियाल ने भी कहा। राजदान को सोने के अंडे देने वाली मुर्गी बताया। खुद राजदान के लेटर्स में भी ऐसा जिक्र था।

तो इस काम के पैसे दिये थे राजदान ने उसे?

वह अभी सोचों में ही गुम था कि दूसरी तरफ से आवाज उभरी---"क्या सोचने लगे देवांश? शायद रास नहीं आ रही मेरी आवाज।"

"मैं तुमसे मिलना चाहता हूं।"

"मिलना तो मैं भी चाहता हूं तुमसे मगर..

"मगर?"

"अपने कुछ सवालों के जवाब मिल जाने के बाद।"

"कैसे सवाल?"

"मैं सब कुछ मान सकती हूं। मगर यह नहीं मान सकती, राजदान का हत्यारा बबलू हो सकता है!"

"म-मतलब?"

"यकीनन तुम्हीं ने मारा है उसे। फंसा बबलू को दिया। मगर, ये क्या बेवकूफी की देवांश? उसके बाद तो जायदाद दिव्या की होगी। करना तुम्हें वही चाहिए था जो हमारा प्लान था। राजदान की हत्या के इल्जाम में दिव्या फंसनी चाहिए थी। ताकि जायदाद सीधी तुम्हारी हो जाती और प्लान भी वही सबसे अच्छा था। दिव्या के उरोजों के निप्पल्स पर जहर लगा दिया जाता। राजदान उन्हें चूसता और मर जाता। दिव्या पकड़ी जाती। ये मर्डर रिवॉल्वर से करने की सलाह किसने दी तुम्हें?"

"नहीं।" देवांश ने कहा---"ये मर्डर मैंने नहीं किया।"

"दाई से पेट छुपाने की कोशिश मत करो देवांश। मैं तुम्हारी फितरत से खूब अच्छी तरह वाकिफ हूं।" वह कहती चली गई---"ठकरियाल से कैसे पार पाये? बहुत ही हरामजादा पुलिसिया है वो। वक्त से पहले ही ताड़ गया था कि तुम दिव्या के निप्पल्स पर जहर लगाने वाले हो। वैसे उस दिन, बाथरूम में तुम यह काम पूरा कर पाये थे या नहीं?"

"विनीता प्लीज! प्लीज ये बातें फोन पर मत करो। दिव्या के कानों तक पहुंच गईं तो गजब हो जायेगा।" दांत भींचकर देवांशबोला---"तुम हो कहां? मैं वहीं तुमसे मिलने आ जाता हूं।"

"क्यों... कत्ल करना चाहते हो मुझे?"

"क-कैसी बातें कर रही हो विनीता?"

"कहा तो यही था ठकरियाल ने कि हमारी हकीकत जानने के बाद तुम हमें मारने के लिए पागलों की तरह ढूंढते फिर रहे थे।"

"झूठ बोला होगा उसने।"

"चलो। मान लेती हूं। हम आज रात ग्यारह बजे मिल सकते हैं।"

"कहां?"

"बैण्ड स्टैण्ड पर एक स्टीमर खड़ा होगा। उसके अंदर।"

"ओ.के.। मैं पहुंच जाऊंगा।"

"नेक इरादों के साथ।" दूसरी तरफ से चेतावनी दी गई---"इस बात को अच्छी तरह समझ लेना देवांश। इस बार मैं किसी धोखे का शिकार होने वाली नहीं हूं। मेरे खात्मे के इरादे से आये तो खुद खत्म हो जाओगे।"

"भला मैं क्यों तुम्हें..

दूसरी तरफ से रिसीवर रख दिया गया।

"अब तो यकीन आया तुम्हें कि मैं झूठ नहीं बोल रहा था?" ठकरियाल ने कहा।

माऊथपीस से रूमाल हटाते वक्त दिव्या का चेहरा बुरी तरह भभक रहा था। मारे गुस्से के नथुने बार-बार फूल-पिचक रहे थे। ऐसी हालत हो गई उसकी कि बहुत कुछ कहने की इच्छा के बावजूद मुंह से आवाज नहीं निकल पा रही थी। पुनः ठकरियाल ने ही कहा---"उस रात वह ड्रेसिंग में तुम्हारा जिस्म देखने के लिए नहीं--- बल्कि तुम्हारे निप्पल्स पर जहर लगाने के लिए छुपा हुआ था। यह काम तुम्हारे द्वारा पकड़े जाने से पहले वह कर भी चुका था। तुम्हारी ब्रा की कटोरियों पर जहर टपका चुका था वह। जिसे बाद में तुमने पहना। इस तरह जहर तुम्हारे निप्पल्स पर पहुंच गया। मंसूबा यही था उनका कि राजदान उन्हें चुसककर मर जायेगा और अगली सुबह तुम हत्या के इल्जाम में पकड़ी जाओगी।"

वह गुर्रा उठी---"मैं तुम्हारे कहने के बावजूद विश्वास नहीं कर पा रही थी उसने ऐसा किया होगा। यही सोच रही थी---शायद तुम भी अवतार की तरह देवांश को उसका हिस्सा देने के पक्ष में नहीं हो इसलिए मुझे इसके खिलाफ भड़का रहे हो। मगर... मगर वह तो वाकई कभी किसी का सगा नहीं हो सकता।"
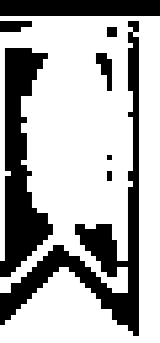
"इसीलिए मेरी सलाह है---तुम्हें देवांश का नहीं, अवतार का साथ देना चाहिए।"

दिव्या के जबड़े कसे रहे।

"भले ही वह क्रिमिनल सही। बैंक लुटेरा और हत्यारा सही लेकिन जैसा कि पहले ही बता चुका हूं।" एक पल ठहरकर ठकरियाल ने पुनः कहा---"तुम्हारा दीवाना हो चुका है। सचमुच शादी करना चाहता है तुमसे। घर बसाना चाहता है। जिस स्टेज पर तुम हो, उस पर ऐसा आदमी मिला..

"उसके बारे में बाद में सोचूंगी इंस्पेक्टर। फिलहाल मुझे देवांश के बारे में सोचना है।"

"उसके बारे में सोचने के लिए क्या अब भी कुछ रह गया है?"

"इतनी आसानी से पीछा नहीं छोडूंगी मैं उसका।"

"मतलब?"

"राजदान के क्लोन की बातों में आकर उसने मुझ पर रिवाल्वर ताना। अपने स्वार्थ की खातिर मुझे उन दरिन्दों के बीच नंगी नचाने को तैयार हो गया। इस सबके लिए मैं उसे माफ कर सकती थी मगर उस गुनाह के लिए कभी माफ

नहीं कर सकती जिसका रहस्य मुझ पर अभी–अभी खुला है। राजदान की हत्या के इल्जाम में मुझे ही फांसी करा देना चाहता था हरामजादा। नहीं! वह किसी हालत में माफी का हकदार नहीं है। ऐसे कमीने को तो..

दांत पीसकर रह गई वह। सेन्टेंस अधूरा छोड़ दिया।

"क्या कहना चाहती हो?" ठकरियाल ने पूछा।

"इंस्पेक्टर!" दिव्या के जबड़ें भिंच गये---"मैं उसका खात्मा चाहती हूं।"

"दिव्या!" ठकरियाल ने अपने हलक से चीख सी निकाली---"ये क्या कह रहे हो तुम?"

"नहीं...। वह इस दुनिया में और सांसें लेने का अधिकारी नहीं है।"

"लेकिन...।" ठकरियाल ने जानबूझकर इस शब्द से आगे कुछ नहीं कहा।

"वैसे भी।" दिव्या अपनी ही धुन में गुर्राती चली गई---"अब जबकि हम तीनों उसका हिस्सा न देने के अंतिम फैसले पर पहुंच चुके हैं, उसे जिन्दा नहीं छोड़ा जा सकता। जिन्दा रहा और उसे उसका हिस्सा नहीं मिला तो बखेड़ा करेगा। एस.

एस. पी. के पास पहुंचकर सारे भेद खोल देगा।"

"बात तो ठीक है। मगर..

"क्या बार-बार एक ही शब्द पर अटक रहे हो?"

"होगा कैसे?"

"तरकीब तुम सोचो। करूंगी मैं।"

"त-तुम?"

"हां मैं। मैं अपने हाथों से सजा दूंगी उस कमीने को।" दिव्या के चेहरे पर इस वक्त नफरत का ज्वालामुखी धधकता नजर आ रहा था---"मेरी जिन्दगी को तबाही के रास्ते पर पटकने वाला वही है। वही है वह जो इतने दिनों तक मेरे शरीर को भोगता रहा और मुझे इल्म तक नहीं होने दिया कि एक दिन उसी ने मुझे फांसी पर चढ़ाने के सारे इन्तजाम कर लिये थे। मुझे तुम्हारी मदद चाहिए इंस्पेक्टर। केवल इतनी मदद कि वे हालात क्रियेट कर दो जिनमें मैं अपने सीने में धधकती आग को शांत कर सकूं।"

होंठों पर छुपी सी मुस्कान लिए ठकरियाल ने कहा---"देखा जाये तो हालात क्रियेट हो चुके हैं।"

"मतलब?"

"अभी-अभी फोन पर हुई वार्ता के मुताबिक वह रात के ग्यारह बजे विचित्रा से मिलने बैण्ड स्टैण्ड पर पहुंचेगा।" ठकरियाल कहता चला गया---"हालांकि पहले वहां जाने का हमारा कोई इरादा नहीं था मगर अब... सचमुच एक स्टीमर खड़ा किया जा सकता है। जगह भी सबसे माकूल वही रहेगी उसके खात्मे की। लाश को समुद्र में डाल देना। जिस तरह आज तक विचित्रा और उसकी मां की डैड बॉडी नहीं मिली, उसी तरह उसकी भी नहीं मिलेगी। आहार बन जायेगी मछलियों की। लोग सोचेंगे---वह कर्जदारों के डर से कहीं भाग गया है।"

"यही ठीक रहेगा लेकिन..

"अब तुम अटकने लगीं इस शब्द पर।"

"मुझे एक मददगार की जरूरत होगी।"

"क्यों?"

"कहीं भी कोई गड़बड़ हो तो संभाली जा सके।"

"अवतार इस मामले में तुम्हारा सबसे बेहतरीन मददगार साबित हो सकता है।"

"नहीं। अभी मैं उसे अपने साथ किसी काम में इन्वाल्व नहीं करना चाहती।"

"वजह?"

"विश्वास के काबिल नहीं लगता वह मुझे।"

"तो बाकी बचा मैं।"

"और एक रिवाल्वर।" दिव्या के चेहरे पर चट्टानी कठोरता विराजमान थी।

"शुरू में तो इस बात पर यकीन करने को तैयार ही नहीं थी कि देवांश ने राजदान की हत्या की मंशा से उसके निप्पल्स पर जहर लगाया था ताकि वह हत्या के इल्जाम में पकड़ी जाये। तब मैंने उसी तरकीब का इस्तेमाल किया जो तुमने बताई थी। कहा---'तुम विचित्रा बनकर खुद देवांश से फोन पर बात कर सकती हो।' वह बोली---'भला मैं विचित्रा की आवाज में कैसे बोल सकती हूं?' तब मैंने उसे माऊथपीस पर रुमाल रखकर बात करने की सलाह दी। कहा---'इस तरह कम से कम तुम्हारी आवाज तो पहचान नहीं पायेगा वह। विचित्रा को मरे छः महीने से ज्यादा हो चुके हैं। इतने अर्से बाद फोन पर किसी की आवाज के बारे में कन्फ्यूजन हो सकता है।'

"तो उसने बात की?" अवतार ने पूछा।

"हां।"

"उसके बाद?"

"उसके बाद तो ऐसी भड़की कि मुझे उसे देवांश के मर्डर तक लाने के लिए जरा भी मेहनत नहीं करनी पड़ी बल्कि अगर यह कहूं तो ज्यादा ठीक होगा, खुद वही उसके खात्मे की तलबगार हो उठी। उसे अपने ही हाथों से मारकर अपने कलेजे की आग ठंडी करना चाहती है।"
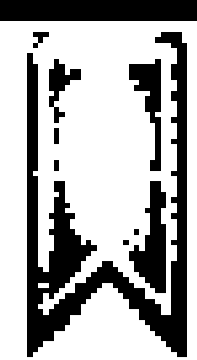
"इससे बेहतरीन सिच्वेशन और हमारे लिए क्या होगी?" बड़ी ही जानदार मुस्कान के साथ कहने के बाद अवतार ने सिगरेट में एक भरपूर कश लगाया, गाढ़े धुवें से ठकरियाल के फ्लैट के ड्राइंगरूम को दूषित करता बोला---"मुझे यही उम्मीद थी। ठीक यही कि उस सबके जानने के बाद वह पूरी तरह भड़क उठेगी।"

"दिव्या ने केवल एक रिवाल्वर और मेरा साथ चाहा है।"

"वो तो हमारे प्लान के मुताबिक भी तुम्हें रहना ही था ताकि पासे अगर उल्टे पड़ने लगें तो तुम संभाल लो।"

"पाले उल्टे पड़ने से मतलब?"

"भूल गये विचित्रा और उसकी मां का अंत? तुम उन्हें बड़े कॉन्फिडेंस के साथ मारने के लिए समुद्र के बीच में ले गये थे। मगर एक बार को तो वहां ऐसे पाले पलटे कि उल्टी वे ही दोनों तुम पर हावी हो गईं। जान बचाने के लाले पड़ गये थे तुम्हारे सामने। बड़ी मुश्किल से उन पर काबू पाकर अपने मिशन में कामयाब हो सके।"

चौंकते हुए ठकरियाल ने पूछा---"तुम्हें यह सब कैसे मालूम?"

"अखिलेश को लिखे हुए राजदान के लेटर में सब लिखा

है।"

"इतने विस्तार से?"

"हर घटना विस्तार से लिखी है उसने ताकि उसके दोस्तों को एक-एक बात पता रहे। विचित्रा और उसकी मां का काम तमाम करके लौटने के बाद तुमने राजदान को सारी घटना डिटेल में सुनाई होगी। लेटर में उसने उसी अंदाज में लिखी है।"

"ओह!"

"तुम मर्द थे। दिव्या बेचारी तो फिर भी औरत है। क्या देर लगती है पासे पलटते! पता लगा---मारना दिव्या देवांश को चाहती थी मगर देवांश दिव्या को मार बैठा। ऐसा हो गया तो पांच करोड़ हमेशा के लिए गर्क हो जायेंगे। ठन-ठन गोपाल बनकर रह जायेंगे हम सब। बहरहाल, बीमे की रकम आनी तो दिव्या के एकाउन्ट में ही है। वह न रही तो.."

"शुभ-शुभ बोलो।"

"इसीलिए तुम्हारा वहां रहना जरूरी है। ताकि पासे अगर पलटने लगें तो उन्हें फिर उलट दो। याद रहे---देवांश की लाश समुद्र में गर्क करके ही लौटना है तुम्हें।"

"तुम भी साथ रहते तो क्या बुराई थी?"

"मैं ऐसे कामों से तब तक दूर ही रहता हूं जब तक दूर रहकर काम चलता रहे।" कहते वक्त अवतार के रसभरे होंठों पर चित्ताकर्षक मुस्कान थी---"मेरे प्रतिनिधि के रूप में तुम जो होगे।"

"ठीक है प्यारे, जब तक सारे सुबूत तुम्हारे कब्जे में हैं---तब तक चलाते रहो हुक्म।" ठकरियाल कहता चला गया---"करना ही पड़ेगा वह जो कहोगे मगर, सतर्क रहना। बता चुका हूं---वे चारों जमानत पर छूट गये हैं।"

"जमानत हो जाने का मतलब ये नहीं है हम उनके जाल से निकल गये।" कहने के साथ अखिलेश बड़ी गहराई से कुछ सोचता हुआ महसूस हो रहा था---"जल्द ही कुछ करना होगा वरना सारे मौके हमारे हाथों से निकल चुके होंगे।"

"ये ठकरियाल भी साला निकला वाकई ऊंची चीज।" वकीलचंद कह उठा---"राजदान ने अपने लेटर में बार-बार उसके लिए 'ब्रिलियेन्ट' शब्द यूज किया था। क्या कहानी बनाई है कम्बख्त ने! वकील होने के बावजूद मैं सोच तक नहीं सकता था कि उन्हीं घटनाओं के आधार पर हमें ही मुल्जिम बनाकर कोर्ट में पेश किया जा सकता है जिन्हें हम अपने फेवर में बता रहे थे। जैसे बबलू, स्वीटी, सत्यप्रकाश और सुजाता के किडनैपर्स साबित कर दिया पट्ठे ने हमें।"

"ये सब उस साले अवतार की वजह से हुआ है जिसकी आंखों में बचपन की दोस्ती का कोई लिहाज ही नहीं निकला।" भट्टाचार्य ने कहा---"विश्वास में अंधे हुए रहे हम। हमें उसी वक्त उसके टेक्ट समझ जाने चाहिए थे जब वह दिव्या पर थूकने के लिए हमारे साथ खड़ा नहीं हुआ था।"

"सबसे ज्यादा फिक्र तो मुझे बबलू की हो रही है।" समरपाल बोला---"हम लोग जमानत पर छूट गये। सत्यप्रकाश, सुजाता और स्वीटी को ठकरियाल ने मुल्जिम बनाया ही नहीं मगर

मुख्य मुल्जिम होने के कारण अदालत ने बबलू की जमानत मंजूर नहीं की। जेल चला गया बेचारा। उस वक्त पहली बार मैंने उस लड़के के चेहरे को पीला पड़ते देखा था। राजदान का सारा प्लान तो बिखर ही चुका है। अब उस बेकसूर को बचाना हमारी ड्यूटी है।"

"इसीलिए तो कह रहा हूं।" अखिलेश बोला---"पुरानी बातों को दोहराते चले जाने से कोई फायदा नहीं। आगे के बारे में सोचना चाहिए। वक्त हाथ से निकल गया तो न खुद को बचा सकेंगे, न बबलू को।"

"किया क्या जाये?"

"किसी भी तरह से सारे सुबूत पुनः हासिल करने के अलावा कोई चारा नहीं है।"

"सुबूतों को अपने पास छोड़ा ही क्यों होगा उन्होंने?"

"मतलब?"

"मेरे ख्याल से तो नष्ट कर दिये होंगे ताकि..

"नहीं।" अखिलेश बोला---"अवतार ने उन्हें नष्ट नहीं किया होगा। उस वक्त तक करेगा भी नहीं जब तक बीमा कम्पनी से मिलने वाली रकम हड़प न ले।"

"बात समझ में नहीं आई।"

"मेरा एक्सपीरियेंस कहता है---अपराधियों के बीच पड़ी रकम हमेशा बंदरों के बीच पड़ी गुड़ की भेली साबित होती है। एक भी बंदर गुड़ की भेली को खा नहीं पाता जबकि सभी उसे खाने के फेर में आपस में लड़ मरते हैं। अवतार के पास जो भी सुबूत हैं उन्हें वह तब तक किसी हालत में नष्ट नहीं कर सकता जब तक उसके हाथ इच्छित रकम न लग जाये। उन सुबूतों का इस्तेमाल वह दिव्या, देवांश और ठकरियाल पर हावी होने के लिए करेगा। एक तरह से ब्लैकमेल करेगा उन्हें। कहेगा---अगर तुमने मुझे मेरी इच्छित रकम नहीं दी तो ये सारे सुबूत पुलिस के पास पहुंच जायेंगे।"

"इस धमकी से डरकर तो वे पांच के पांच करोड़ उसके हवाले कर सकते हैं।"

"वे चाहें भी तो इतना आसान नहीं होगा।"

"कारण?"

"दिव्या और देवांश के अपने हालात हैं। जिस आर्थिक संकट में इस वक्त वे है, उसमें उन्हें पैसा चाहिए ही चाहिए। दूसरी तरफ ठकरियाल है जो किसी कीमत पर अपना हिस्सा नहीं

छोड़ेगा। ऐसी अवस्था में केवल तभी तक सबकुछ ठीक-ठाक रहता है जब तक कोई ओवरस्मार्ट न बने। लालच में न फंसे। ईमानदार बना रहे। यह न सोचे---किसी और का हिस्सा या सारी रकम ऐंठ सकता हूं। मगर, अपराधियों में ऐसी प्रवृति जरा कम ही पाई जाती है। निन्यानवे परसेन्ट केसों में झगड़े होते हैं। इसलिए मैंने ऐसे लोगों के बीच पड़ी रकम की तुलना बंदरों के बीच पड़ी गुड़ की भेली से की है। हमें उनके बीच होने वाले इन्हीं हालात का फायदा उठाना है।"

"कैसे?"

"एक ही रास्ता है---इन सब पर नजर रखी जाये।"

रात के ग्यारह बजे।

देवांश बैण्ड स्टैण्ड पहुंचा।

उस वक्त वहां चारों तरफ अंधेरा छाया हुआ था।

वातावरण में सागर के गर्जने का शोर गूंज रहा था।

समुद्र किनारे पड़े विशाल काले पत्थर दैत्य से नजर आ रहे थे।

आगे बढ़कर वह उनमें से एक पत्थर पर चढ़ गया---समुद्र की दिशा में दूर तक देखा।

दृष्टि के अंतिम छोर तक पानी ही पानी था।

किनारे से थोड़ी दूर, लहरें आपस में गुंथ रही थीं।

जो जीत जाती दौड़कर किनारे पर आती और वहां पड़े पत्थरों से सिर टकराकर दम तोड़ देती। पानी के सफेद झाग चारों तरफ बिखरे रह जाते। यह सिलसिला अनवरत जारी था।

मगर!

देवांश को न इस सिलसिले से मतलब था, न इस बात का होश कि विला के बैण्ड स्टैण्ड तक लगातार एक 'वेगन आर' ने उनका पीछा किया था।

'वेगन-आर' में था ठकरियाल।

गाड़ी उसने एक पेड़ की आड़ में खड़ी की थी। वहां से लगभग दौड़ता हुए उस दिशा में लपका जिधर देवांश बढ़ा था।

उस वक्त वह एक पत्थर की बैंक में छुपा देवांश की तरफ देख रहा था जब अपने आस-पास हल्की सी सरसराहट महसूस की।

वह सतर्क हो गया।

आवाज किसी इंसानी जिस्म के रेंगने की थी।

वह पलटना ही चाहता था कि---

"घबराओ मत। ये मैं हूं।" आवाज अखिलेश की थी।

"त-तुम...? तुम भी यहां पहुंच गये?"

"क्योंकि मेरा शिकार भी यहीं है।"
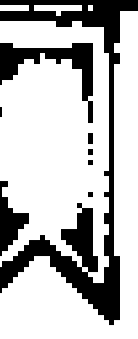
"कौन? ठकरियाल!"

"हां।"
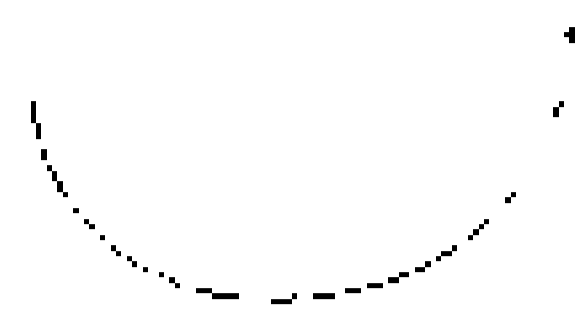
"कहां है?"

"जहां इस वक्त देवांश है, वहां से करीब एक फर्लांग दूर समुद्र में एक स्टीमर खड़ा है। उसी के अंदर गया है वह। लो...देवांश भी उधर ही चल दिया।"

सचमुच।

स्टीमर पर नजर पड़ते ही एक से दूसरे पत्थर पर कूदता देवांश उस तरफ बढ़ गया था।

"क्या चक्कर है ये?" समरपाल बड़बड़ाया---"ठकरियाल भी यहीं आया है, देवांश भी।"

"मेरे ख्याल से खेल शुरू हो चुका है।"

"कैसा खेल?"

"उनके द्वारा एक-दूसरे को 'डाज' देने का।"

"मैं कुछ समझा नहीं।"

"मेरे ख्याल से देवांश यहां दिव्या से छुपकर आया होगा। अर्थात् दिव्या को नहीं बताया होगा उसने कि..

"तुम ठीक कह रहे हो। ठीक इसी तरह, दिव्या भी देवांश से छुपकर विला से निकली थी।"

"क्या मतलब?" अखिलेश हौले से चौंका।

"मैं और भट्टाचार्य उस वक्त विला के फ्रन्ट लॉन की हैज के पीछे छुपे हुए थे। दिव्या तैयार होकर बाहर निकली। वहां मौजूद आफताब से कहा---'मैं कहीं जा रही हूं। दो-तीन घण्टे में लौट आऊंगी। देवांश पूछे तो कह देना तुम्हें नहीं मालूम।' उसके यह कहने से जाहिर है---देवांश से बगैर बताये..

"भट्टाचार्य उसके पीछे गया है?" अखिलेश ने पूछा।

"हां। ...जो तय हो चुका है, भला उसमें कोताही कैसे हो सकती है?"

"उनका एक-दूसरे से छुपकर निकलना ही इस बात का द्योतक है कि वे अलग-अलग दिशाओं में चल पड़े हैं। एक-दूसरे को डॉज देने की कोशिश में हैं क्योंकि ठकरियाल भी उसी स्टीमर में है जिसकी तरफ इस वक्त देवांश बढ़ रहा है। इससे स्पष्ट है---वे दोनों मिलकर कोई खिचड़ी पका

रहे हैं।"

"मुमकिन है दूसरी तरफ दिव्या और अवतार मिल रहे हों।"

"उसी साले का ठिकाना नहीं मिल रहा!" दांतों पर दांत जमाये अखिलेश कह उठा---"उसके ठिकाने का पता लगाने का काम मैंने वकीलचंद को सौंपा है।"

"उसकी कोई रिपोर्ट आई?"

"नहीं।"

"आओ। देवांश के पीछे चलते हैं।"

खुद को पत्थरों की बैक में रखे वे उसके पीछे लपके।

स्टीमर के अंदर या बाहर की कोई भी लाइट ऑन नहीं थी।

अंधेरे में अंधेरे का ही एक हिस्सा बना, लहरों पर खड़ा हिचकोले खा रहा था वह।

कुछ देर देवांश उसकी तरफ देखता रहा।

फिर।
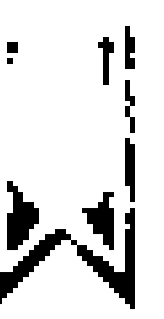
घुटनों-घुटनों पानी से गुजरकर उस तरफ बढ़ा।

"क्या किया जाये?" समरपाल फुसफुसाया।

जवाब में अखिलेश अभी कुछ कहने ही वाला था कि बगल वाले पत्थर की बैक से शी-शी की आवाज उभरी।

जैसे कोई उनका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करना चाहता हो।

"कौन है?" अखिलेश फुसफुसाया।

"ठकरियाल और देवांश को देखकर मैं समझ गया था, तुम दोनों भी आसपास ही कहीं होने चाहिएं।" भट्टाचार्य के मुंह से निकली आवाज के साथ उन्होंने उसे पत्थर पर रेंगकर इधर ही आते देखा था।

"तुम भी यहां?" अखिलेश के मुंह से चौंका हुआ स्वर निकला---"यानी दिव्या भी यहीं आई है?"

"स्टीमर के अंदर है।"

"बात समझ में नहीं आई। वे दोनों एक ही जगह से यहां आये। मगर अलग-अलग। एक-दूसरे से छुपकर। चक्कर क्या है ये? ऐसा है तो स्टीमर के अंदर एक-दूसरे को

देखकर उनकी क्या हालत होगी?"

अखिलेश ने पूछा---"अवतार को तो यहां आते नहीं देखा तुमने?"

"नहीं।" भट्टाचार्य ने कहा।

"जब ये तीनों आ गये हैं तो मुमकिन है वह भी आये।" समरपाल ने संभावना व्यक्त की।

"मुझे भी कुछ ऐसा ही लगता है।" भट्टाचार्य बोला---"स्टीमर में शायद वे अपने आगे के प्लान पर विचार-विमर्श करने वाले हैं।"

"एक बार नजर आ जाये साला---।" अखिलेश दांत भींचकर गुर्रा उठा---"उसके बाद मैं उसका पीछा तभी छोडूंगा जब सारे सुबूत हासिल कर लूंगा।"

"वही तो।" भट्टाचार्य ने कहा---"ये साले सब 'फुलंगन' तो हमारी नजरों में हैं। जड़ एक बार भी नजर नहीं आई। जड़ तो वही है क्योंकि सारे सुबूत उसी के पास हैं।"

"तुम दोनों यहीं ठहरो।" एकाएक अखिलेश बोला---"मैं स्टीमर की तरफ जाता हूं।"
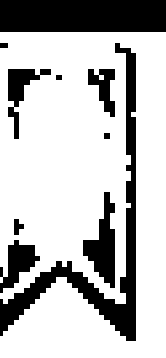
“स्टीमर की तरफ?”

“उनके बीच होने वाली बातें सुनना जरूरी है।” कहने के साथ उसका पतला जिस्म छिपकली की मानिन्द पत्थरों से निकलकर रेत पर रेंग गया।

“ध्यान से।” समरपाल ने धीमी आवाज में कहा---“वे देख न लें।”

इस मामले में अखिलेश उन सबसे ज्यादा होशियार था।

पांच मीटर के बाद तो वह खुद भट्टाचार्य और समरपाल को ही नजर आना बंद हो गया।

उधर, देवांश स्टीमर के अंदर जा चुका था।

इधर, रेत पर रेंगने के बाद अखिलेश पानी में उतरा और इतने धीरे से उतरा कि जरा भी आवाज उत्पन्न न हो सकी। घुटनों-घुटनों पानी में वह अपने सारे शरीर को भिगोये तेजी से स्टीमर की तरफ बढ़ रहा था। इसके लिए उसे अपनी हथेलियों और घुटनों पर चलना पड़ रहा था।

अचानक स्टीमर का इंजन स्टार्ट हुआ।

अखिलेश को अपनी सारी मेहनत पर पानी फिरता नजर
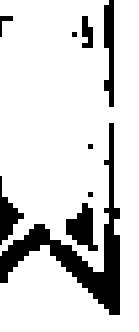
आया।

स्टीमर से करीब दस मीटर इधर था वह अभी।

रफ्तार बढ़ाई।

मगर व्यर्थ।

स्टीमर ने एक तेज झटका खाने के बाद पानी पर दौड़ना शुरू कर दिया था।

अखिलेश उछलकर खड़ा हुआ।

दौड़ना चाहा।

मगर। कहां स्टीमर, कहां वह?

सागर की छाती पर दौड़ते दैत्य की मानिन्द वह उससे दूर होता चला गया।

धाड़! धाड़! धाड़!

अपना दिल धड़कने की आवाज देवांश ठीक इस तरह सुन सकता था जैसे स्टेथिस्कोप पर सुन रहा हो। साथ ही, अपनी पसलियों से भी टकराता महसूस दे रहा था उसे।

स्टीमर के अंदर पहुंचते ही उसने जेब से टार्च निकाल ली थी।

उसका प्रकाश दायरा मुकम्मल केबिन में गर्दिश करने लगा।

सोफा, सेन्टर टेबल, लकड़ी के फर्श पर बिछे कार्पेट और दीवारी पर लगी पेन्टिंग्स आदि से अनुमान लगाया---इस कक्ष को ड्राइंग रूम की तरह इस्तेमाल किया जाता है। प्रकाश दायरा एक दरवाजे पर स्थिर हो गया। वहां मोटे और कीमती कपड़े का पर्दा झूल रहा था।

देवांश दबे पांव उसी तरफ बढ़ा।

पर्दे का एक कोना हटाकर टॉर्च के प्रकाश से अंदर का निरीक्षण किया।

वह बैडरूम था।

खाली।

इसी तरह---वह डायनिंग और किचन आदि में भी पहुंचा।

जब कहीं कोई नजर नहीं आया तो आवाज दी---"विनीता! विनीता!"

कहीं से कोई आवाज नहीं उभरी।

खुद उसी की आवाज घूम-घूमकर उसके कानों में लौट आई।

तभी।

इंजन स्टार्ट होने की आवाज उभरी।

वह चौंका।

जोर से चीखा---"कौन है? कौन है?... विनीता!"

अचानक झटका लगा।

तीव्र झटका।

कार्पेट पर गिर गया वह।

संभलकर फुर्ती से उठा।

तब तक स्टीमर ने दौड़ना शुरू कर दिया था।

इस बीच देवांश की आंखें काफी हद तक अंधेरे में देखने की अभ्यस्त हो चुकी थीं।

जम्प सी लगाकर कॉरीडोर में पहुंचा।

फिर आंधी-तूफान की तरह दौड़ता चला गया।

रुखा चालक कक्ष की तरफ था।

वहां पहुंचते ही एक झटके से कक्ष का दरवाजा खोला।

चालक सीट पर बैठे शख्स के सिर का केवल निचला हिस्सा नजर आया उसे।

कोई औरत तो वह हरगिज नहीं थी।

"क-कौन हो?" देवांश ने कांपती आवाज में दहाड़ने की कोशिश की---"कौन हो तुम?"

"बस! बहुत भाग दौड़ कर चुके।" इस आवाज के साथ उसने रिवाल्वर की ठंडी और कठोर नाल का एहसास अपनी कनपटी पर किया। साथ ही दिव्या की आवाज भी पहचान ली थी।

बौखला सा उठा वह। "द-दिव्या?" मुंह से
निकला---"त-तुम?"

"दिव्या नहीं, विनीता बोल।" दिव्या के हलक से व्यंग्य

निकला---"विनीता से मिलने आये थे न यहां।"

देवांश ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि---'कट'
की आवाज के साथ सारा स्टीमर जगमगा उठा।

मेन स्विच ऑफ था जिसे ठकरियाल ने ऑन कर दिया।

एक पल को तो चौंधिया गया वह। अगले पल जब ठकरियाल
को पहचाना तो हलक से चीख सी निकल
गई---"त-तुम?... तुम भी यहां हो?"

ड्राइव करता ठकरियाल हंसा।

बड़ी ही भयानक हंसी थी वह।

उसके दांत इस वक्त सामान्य से ज्यादा लम्बे नजर आये।

रिवॉल्वर उसके मस्तक की तरफ ताने दिव्या ठीक सामने
आकर खड़ी हो गयी थी।

देवांश की हालत ऐसी थी कि मुंह से आवाज तक न निकाल

सका।

स्टीमर दौड़ा चला जा रहा था।
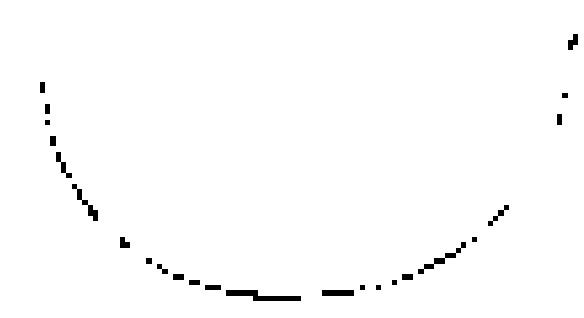
साथ ही, पानी पर उसकी रोशनियां दौड़ रही थीं।

"तुझसे बड़ा जलील मैंने अपनी लाइफ में नहीं देखा।" दांत भींचकर दिव्या कह उठी---"कमीने, विचित्रा के साथ मिलकर राजदान की हत्या का षड्यंत्र रचा। मेरे निप्पल्स पर जहर पहुंचाया ताकि मैं फांसी के फंदे पर झूल जाऊं। और... छः महीने का लम्बा टाइम गुजर जाने के बावजूद उसके बारे में कभी मुझे बताया नहीं। भोगता रहा मुझे।"

"म-मैंने कई बार कोशिश की दिव्या। मगर.."मगर?"

"हर बार हिम्मत जवाब दे गई।"

"इन बातों का कोई फायदा नहीं दिव्या।" ठकरियाल ने कहा----"काम पूरा करो अपना।"

"न-नहीं! नहीं! दिव्या मुझे माफ कर दो।" देवांश उसके कदमों में बैठ गया।

"खबरदार!" रिवाल्वर का मुंह उसके सिर पर रखती दिव्या गुर्राई---"खबरदार, जो कोई चालाकी दिखाने की कोशिश

की। मेरी अंगुली की बाल बराबर हरकत तुम्हारे सिर को राजदान के सिर की तरह बिखेर देगी।"

देवांश सूखे पत्ते की मानिन्द कांप रहा था।

ड्राइव करता ठकरियाल गर्जा---"भावुकता के भंवर से निकलो दिव्या। ऐसी ही बेवकूफियों के कारण पासे पलट जाते हैं। शूट कर दो। मौका ही मत दो कोई।"

"चिंता मत करो ठकरियाल। बहुत धोखे दे चुका ये। अब मैं इसके किसी धोखे का शिकार नहीं होऊंगी। स्टीमर को जरा वहां तो पहुंचा दो जहां लाश पानी में हमेशा के लिए गर्क हो सके।"

"स्टीमर ऐसी जगह पहुंच चुका है।" ठकरियाल दहाड़ा---"काफी गहरा पानी है यहां।"

"तो ये लो।" कहने के साथ देवांश ने दिव्या के सामने हाथ फैला दिया, जो रिवॉल्वर दिव्या ने अभी तक उस पर तान रखा था उसे बड़े प्यार से देवांश के हाथ पर रख दिया और देवांश ने उसे ठकरियाल के पिछले भाग की तरफ तानते हुए अपना वाक्य पूरा किया---"आ गयी तुम्हारी मंजिल!"

"क-क्या मतलब?" ठकरियाल के होश उड़ गये।

"तुम मेरे नहीं, अपने मर्डर के प्लान पर काम कर रहे थे बेवकूफ! अपनी लाश को खुद दफनाने आये हो तुम यहां।" कहने के साथ---

धांय! धांय!!

अंगुली को दो बार जुम्बिश दी उसने।

दोनों गोलियां ठकरियाल के भेजे में उतर आईं।

मामले को ठीक से समझने का या कुछ कहने का कोई मौका नहीं मिला उसे।

चारों तरफ खून के छींटे छितरा गये।

लाश ड्राइविंग सीट पर झूलती रह गयी।

"अब तो नहीं कहोगी तुम कि मैंने कुछ नहीं किया?" देवांश ने मुस्कराते हुए दिव्या की तरफ देखा।

दिव्या ने अपनी एड़ियां ऊपर उठाईं। पंजों पर खड़ी हुई, उचकी। बांहें देवांश की गर्दन के चारों तरफ लपेटीं और होंठ, उसके होठों पर रख दिये।

पानी का कलेजा चीरता स्टीमर बगैर चालक के दौड़ा चला

जा रहा था।

"मैं बीमा कम्पनी से आ रहा हूं।" अधेड़ आयु के एक सूटेड-बूटेड आदमी ने देवांश की तरफ हाथ बढ़ाते हुए कहा---"बी.एन. सब्बरवाल।"

देवांश के सारे रोयें एक साथ खड़े हो गये। मारे खुशी के झूम उठा वह मगर उस खुशी का जर्रा मात्र भी चेहरे पर नहीं उभरने दिया। गमगीन आंखों से चौड़े मुंह वाले उस शख्स की तरफ देखता रहा जिसकी दोनों कलमों के बाल सफेद हो चुके थे। मरियल से स्वर में बोला---"बैठिए।"

सब्बरवाल जूते उतारकर चांदनी पर बैठ गया।

"कहिए!" देवांश ने पूछा।

"पता नहीं आपकी नॉलिज में है या नहीं...।" सब्बरवाल ने कहा---"राजदान साहब की एक पॉलिसी थी। पांच करोड़ रुपये की।"

"हां। मेरी नॉलिज में है।"

"चैक लाया हूं उसका।" उसने अपने कोट की जेब से कुछ कागज निकालते हुए कहा।

देवांश को पहली बार एहसास हुआ कि अपनी खुशी को छुपाना कितना कठिन काम है। फिर भी दिल की सारी
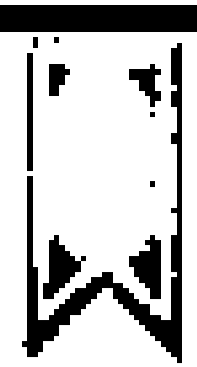
खुशियां छुपाये उदासीन स्वर में कहा---"दे दीजिए।"

"मिसेज राजदान को बुलाना पड़ेगा आपको।"

"जी?"

"लिखत–पढ़त का मामला है न, हमारे रिकार्ड के मुताबिक नोमिनी वे ही हैं। चैक सौंपते वक्त मुझे इन पेपर्स पर उनके साइन लेने होंगे।"

"बुलाता हूं।" कहने के साथ वह इस तरह उठा जैसे इस काम में भी कष्ट हुआ हो।

मगर।

लॉबी में पहुंचते ही इस कदर दिव्या के कमरे की तरफ उड़ता चला गया जैसे जिस्म में पंख लग गये हों। खुले हुए दरवाजे में धक्का मारकर घुसने ही वाला था कि ठिठक जाना पड़ा।

अंदर से अवतार की आवाज आई थी।

गुर्राते से स्वर में अभी–अभी कहा था उसने---"मैं आखिरी बार पूछ रहा हूं मिसेज दिव्या, ठकरियाल कहां है?"

"बहुत हो चुका मिस्टर गिल। सुनना ही चाहते हो तो सुनो।" दिव्या की आवाज उससे ज्यादा कड़क थी---"उसे हमने वहां पहुंचा दिया जहां तुम दोनों देवांश को पहुंचाना चाहते थे।"

"दोनों?" अवतार का चौंका हुआ स्वर---"दोनों से क्या मतलब?"

"तुम्हारा चौंकना। खुद को हैरान दिखाना। ये एक्टिंग मेरे सामने नहीं चलेगी मिस्टर गिल।" साफ महसूस हो रहा था वह दांत भींच-भींचकर बोल रही है---"इतनी बेवकूफ भी नहीं हूं कि तुम्हारी साजिश को न समझ जाऊं। एक तरफ तुम मुझे अपनी बीवी बनाकर इण्डिया से बाहर ले जाने के सब्जबाग दिखाते हो, दूसरी तरफ ठकरियाल मेरे जेहन में यह ठूंसने की कोशिश करता है कि तुम मुझ पर मर-मिटे हो। शादी करना चाहते हो मुझसे और इसी में मेरी भलाई है। न तुम देव को हिस्सा देने को तैयार हो, न ठकरियाल था। जाहिर है---एक ही पटरी पर दौड़ रहे थे तुम। मेरे दिमाग में देव के प्रति नफरत भरने के मंसूबे से मुझे बताया गया कि किस तरह उसने मेरे निप्पल्स पर जहर पहुंचाया। मेरे हाथों देव की हत्या करा देना चाहते थे तुम। तुम दोनों। मैंने भी भरपूर एक्टिंग की। वही किया जो तुम चाहते थे। जिससे तुम्हें लगे मैं तुम्हारे जाल में फंस गई हूं। जैसा कि वह चाहता था, विचित्रा बनकर बातें भी कीं देव से और फिर भड़क उठने का नाटक भी मगर... तुम्हारी जानकारी

के लिए बता दूं। विचित्रा के जाल में फंसकर देव ने वह किया जरूर था मगर..उसी रात, एकाकार होने के बाद मुझे बता भी दिया था। कम से कम इस मामले में उसने मुझे कोई धोखा नहीं दिया।"

"यानी तुम दोनों ठकरियाल का खेल खत्म कर चुके हो?"

"अकेले ठकरियाल का नहीं, तुम्हारा भी।"

"क्यों प िछे पड़ी हो मेरे?" अवतार के हंसने की आवाज आई।

"ताकि तुम आगे वैसी कोई खुराफात न सोचो जैसी ठकरियाल के साथ मिलकर सोची थी।" दिव्या कहती चली गई---"पहले देव का खात्मा। फिर, रकम हाथ में आते ही दिव्या का खात्मा। उस अवस्था में बेचारी अकेली अबला कर ही क्या पाती?"

"अब क्या कहूं? तुम केवल अपनी कल्पनाओं को हमारी साजिश बता रही हो। ठकरियाल के बारे में तो खैर कुछ कह नहीं सकता उसने क्या सोचा था मगर, मैंने कभी ऐसा कुछ नहीं सोचा। तुम्हारे बारे में आज भी मेरे दिल में वही भावनाएं हैं जो पहले दिन पनपी थीं। वही ऑफर आज भी है। कुबूल करना न करना तुम्हारे हाथ में है। हां, देवांश को

हिस्सा न देने की बात जरूर कही थी। वही आज भी कहूंगा। उसका कोई हिस्सा इसलिए नहीं बनता क्योंकि उसने कुछ किया है।"

"मुझे दो हिस्से चाहिएं मिस्टर गिल।" दिव्या ने उसकी बात काटकर कहा---"पूरे दो हिस्से।"

"समझा। तुम देवांश के हिस्से के लिए इस कदर इसलिए अड़ी हुई हो क्योंकि एक तरह से वह हिस्सा भी तुम्हारा ही है। तुम्हारे ही कब्जे में रहेगा।"

"तुम्हें ऐसे सिरदर्द पालने की कोई जरूरत नहीं है। केवल इतना समझ लो, रकम के तीन हिस्से होंगे---दो हमारे। एक तुम्हारा। वह भी केवल इसलिए कि सारे सुबूत तुम्हारे कब्जे में हैं। और हां, पहले मुझे सुबूत सौंपोगे। रकम उसके बाद मिलेगी।"

"ऐसा चाहती हो तो ऐसा ही सही। मुझे पांच करोड़ के तीसरे हिस्से की दरकार थी। सो मिल रहा है। देवांश का कम होता या, ठकरियाल का कम हुआ, मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ता।"

दिव्या चुप रही।

पुनः अवतार ने ही कहा---"वैसे है आश्चर्य की बात।"

"कौन सी बात में आश्चर्य नजर आ रहा है तुम्हें?"

"तुम उसके साथ हो जिसने क्षमादान की जरा सी उम्मीद नजर आते ही तुम पर रिवाल्वर तान दिया था। जिसने एक तरह से खुद तुम्हें नंगी नाचने की सलाह दी।"

"बे जख्म आज भी मेरे दिल पर हैं। वाकई देव ने वह सब ठीक नहीं किया मगर, कभी-कभी आदमी को बड़ी बुराई और छोटी बुराई में से किसी एक को चुनना पड़ता है। भले ही देव राजदान जितना अच्छा न सही मगर तुमसे हजार गुना अच्छा है। बैंक नहीं लूटा उसने कभी, कालगर्ल्स रैकिट नहीं चलाया।"

"कमाल है। जिन बातों का असर तुम पर कुछ और पड़ना चाहिए था, उन बातों का असर बिल्कुल उल्टा पड़ा है।"

"मतलब?"

"चाहता तो मैं अपने बारे में बहुत कुछ छुपा सकता था। मगर कुछ नहीं छुपाया। सब कुछ स्पष्ट कहा। बिल्कुल साफ-साफ। सोचा था तुम मेरी इस बात को 'एप्रीशिएट' करोगी। सोचोगी इतनी स्पष्ट स्वीकारोक्ति करने वाला कभी धोखा नहीं दे सकता मगर देख रहा हूं कि---

"कि तुम्हारा जादू मुझ पर नहीं चला।" एक-एक शब्द को

चबाती दिव्या कहती चली गयी---"बात घूम-फिर कर तुम्हारी जुबान पर आ ही गई मिस्टर गिल। वह सब तुमने मुझे प्रभावित करने के लिए कहा था और अब हैरान हो ऐसा हुआ क्यों नहीं। बड़ा गुरूर है तुम्हें खुद पर? कामदेव हो तुम! महारत हासिल है औरतों को शीशे में उतारने के मामले में! मैं समझ गई। हर औरत पर तुम अपना यही गुर इस्तेमाल करते हो। स्पष्ट स्वीकारोक्ति के जाल में फंसाते हो उसे। सोचते हो हर औरत वही सोचेगी जो तुम सुचवाना चाहोगे।"

"अफसोस... तुम मेरे बारे में बहुत गलत सोच रही हो।"

"बौखलाओ मत मिस्टर गिल। यह सोचकर बौखलाओ मत कि एक औरत तुम्हें ऐसी भी मिल गई जो तुम्हारे जाल में नहीं फंसी। मैं समझ सकती हूं तुमने क्या सोचा होगा? यही न कि---दिव्या पूरी की पूरी रकम लेकर साथ चल पड़ेगी और तुम किसी भी स्पॉट पर उसे ठिकाने लगाकर पूरे पांच करोड़ के मालिक बन जाओगे?"

"तुमने इतनी बातें कह दी हैं तो एक बात मैं भी कह दूं?"

"करो हसरत पूरी।"

"मेरे मुकाबले देवांश को तुमने कहीं इसीलिए तो नहीं चुना

कि उस पर काबू पाना, उसे अपने इशारों पर नचाना और अंततः उसका हिस्सा गड़प कर जाना मेरे मुकाबले ज्यादा आसान है?"

"मतलब?"

"जो आफर मैंने दिया है उसके मुताबिक ढाई करोड़ तुम्हारे होंगे, ढाई मेरे। तीसरा कोई हिस्सा नहीं होगा। पति-पत्नी को एक समझो तो पांच के पांच करोड़ हमारे होंगे जबकि जिस रास्ते पर तुम चल रही हो, उसके मुताबिक तुम्हारे पल्ले केवल एक करोड़ छियासठ लाख से कुछ ज्यादा लगने वाले हैं अर्थात् देखा जाये तो नुकसान है तुम्हें। हां, अगर देवांश का हिस्सा गड़पने का प्लान दिमाग में रखती हो..

"ऐसी घटिया बातें तुम जैसा घटिया क्रिमिनल ही सोच सकता है।"

"इन सब बातों के बावजूद अंत में एक ही बात कहूंगा।" ऐसा लगा जैसे अवतार ने गहरी सांस लेने के बाद पुनः कहना शुरू किया हो---"मुझे दुख है। मेरे बारे में तुम भ्रमित रहीं। सोच नहीं पाईं ठीक से। वाकई मेरे दिमाग में तुम्हें किसी किस्म का धोखा देने की नहीं बल्कि अपनी जिन्दगी में वह दर्जा देने की बात थी जो किसी भी आदमी की जिन्दगी में उसकी पत्नी का होता है। दूसरी बात---अगर

तुम्हारे दिमाग में रकम को लेकर वही गणित है जो कुछ देर पहले मैंने कहा तो वह भी गलत है। तुम्हारे और देवांश के हिस्से को एक मान भी लिया जाये तो उसमें से एक बड़ी रकम कर्जे से मुक्ति की भेंट चढ़ जायेगी। मेरा ऑफर स्वीकार करने का मतलब---किसी को कोई कर्जा नहीं देना। ढाई का ढाई करोड़ तुम्हारा होगा। कर्जदारों के लिए हम यहां देवांश को..

"बस मिस्टर गिल! बस!" एक बार फिर दिव्या उसकी बात पूरी होने से पहले गुर्रा उठी---"बहुत बोल चुके। तुम एक क्रिमिनल हो और तुम्हारे सोचने का अंदाज हमेशा घटिया ही रहेगा। अब हमारी मुलाकात केवल तब होगी जब मुझे बीमा कम्पनी से रकम मिल चुकी होगी। इस बार सारे सुबूत साथ लेकर आना यहां।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी।" अवतार का लहजा ऐसा था जैसा आदमी के मुंह से तब निकलता है जब सामने वाले को समझाने की भरपूर कोशिश के बाद कामयाब नहीं हो पाता।

देवांश को लगा---वह लौटने वाला है।

सो।

दरवाजे को धकेलकर तेजी से कमरे में दाखिल हुआ।

ठीक ऐसे अंदाज में जैसे अभी-अभी वहां पहुंचा हो।

'भड़ाक' की जोरदार आवाज के कारण दोनों ने एक साथ उधर देखा था। दिव्या बैड के नजदीक खड़ी थी। अवतार खुली खिड़की के पास। काफी देर तक कोई कुछ नहीं बोला। वे उसे देखते रहे, वह उन्हें। फिर थोड़े नियंत्रित स्वर में देवांश ने पूछा---"तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"मिलने आया था।" अवतार मुस्कराया---"कोई परेशानी है तुम्हें?"

देवांश से पहले दिव्या ने कहा---"तुम जा सकते हो मिस्टर गिल।"

"जाने से पहले एक और बात बता देना चाहता हूं।"

"बोलो।" दिव्या का लहजा बहुत शुष्क था।

"होशियार रहना, अखिलेश एण्ड कम्पनी विला पर नजर रखे हुए है। मैं काफी मुश्किल से उन्हें 'डॉज' देकर यहां पहुंच सका हूं। वैसे ही निकलना होगा।"

"फिक्र मत करो। मुझे उनके बारे में पता है।" नहले पर दहला मारने वाले अंदाज में दिव्या ने कहा---"यह भी पता है कल रात भट्टाचार्य ने बैण्ड स्टैण्ड तक मेरा पीछा किया

था इसलिए 'काम' करने के बाद स्टीमर को लेकर हम वापस बैण्ड स्टैण्ड पर नहीं बल्कि गेटवे ऑफ इण्डिया पर पहुंचे थे। वह बेचारा वहीं, इंतजार करता रह गया होगा जबकि हम यहां, विला में आ गये।"

"वाकई होशियार हो।" अजीब से स्वर में कहने के बाद उसने खिड़की की चौखट पर पैर रखा और दूसरी तरफ कूद गया।

देवांश खिड़की की तरफ लपका।

देखा---खुद को पेड़ों की आड़ में छुपाता वह बाउन्ड्री वाल की तरफ बढ़ रहा था।

दिव्या की तरफ पलटा। पूछा---"क्या कह रहा था?"

दिव्या ने संक्षेप में बता दिया।

देवांश ने पूछा ही यह जानने के लिए था वह सच बताती है या कुछ और कहती है। उस वक्त संतुष्टि हुई जब दिव्या ने वे ही बातें बताईं जो उसके और अवतार के बीच हुई थीं। सभी बातें बताने के बाद दिव्या ने पूछा---"तुम कैसे आये थे?"

"अरे!" देवांश चौंका---"मैं तो उसे यहां देखकर भूल ही

गया। बीमा कम्पनी से पांच करोड़ का चैक लेकर एक आदमी आया है।"

"क-क्या वाकई?"

"तुम्हें बुलाया है। कहता है चैक नोमिनी को ही देगा।"

झूम-झूमकर नाच उठने को दिल चाहा दिव्या का। वैसी ही खुशी हुई उसे जैसी ऐश्वर्या को मिस यूनिवर्स चुनी जाने की घोषणा के वक्त हुई थी।

किल्ली सी निकली मुंह से---"क्या तुम सच कह रहे हो?"

"खुद चलकर देख सकती हो, वह बैठक में बैठा है।"

"चलो!" कहने के साथ वह दरवाजे की तरफ उड़ चली।

देवांश ने पुकारा---"दिव्या!"

"क्या है?" वह पलटी।

"तुम्हारा लिबास।"

दिमाग को झटका सा लगा। वह राजदान द्वारा लंदन से लाया गया जरी के काम वाला कीमती सूट पहने हुए थी। देवांश ने कहा---"न उसके सामने यह लिबास पहनकर

जाना ठीक होगा। न ही चेहरे पर इतनी खुश समेटे।"

"तुम ठीक कहते हो।" कहने के बाद वह ड्रेसिंग की तरफ बढ़ गई।
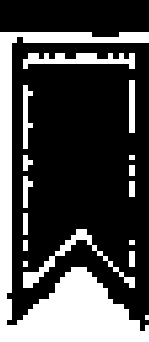
मारे खुशी के पागल से हुए जा रहे थे। बार-बार जाम टकरा रहे थे। सिगरेटें सुलगा रहे थे। होश ही नहीं था कि रात आधी से ज्यादा गुजर चुकी है। ऐशट्रे सिगरेट के टोटों से भर चुकी थी। इस वक्त वे दोनों दिव्या के बैडरूम में थे। दो सोफा चेयर्स पर। आमने-सामने। बीच में सेन्टर टेबल रखी थी। सेन्टर टेबल पर 'शीवाज रीगल' की बोतल। सोडे की बोतलें, आईस बकेट, काजू-बादाम और सलाद की प्लेट।

पीते-पीते तीन घंटे से ज्यादा हो चुके थे उन्हें।

बोतल आधी हो चुकी थी।

जाहिर है---सुरूर से निकलकर नशे के आगोश में पहुंच चुके थे। उसी में झूमती दिव्या ने कहा था---"ये नींद भी कम्बख्त बड़ी जालिम चीज है। न तब आती है जब दिमाग में टेंशन हो, न तब आती है जब मारे खुशियों के फुलझड़ियां छूट रही हों। चैक बैंक में जमा हो चुका है। 'क्लेयरिंग' से 'क्लियर' होते ही, परसों हमारे पास नोट ही नोट होंगे। आंखें बंद करती हूं तो अम्बार नजर आता है नोटों का। पहाड़ के पहाड़। नोटों के पहाड़। देव, क्या तुम बता सकते हो---पांच करोड़ में पांच-पांच सौ के कितने नोट होते हैं?"

देवांश के दिमाग पर कुछ और ही धुन चढ़ी थी। बहुत ही

भावुकस्वर में बोला---"दिव्या! मैं कुछ कहना चाहता हूं।"

"तो बोलो न?"

"मैंने तुम्हारे और अवतार के बीच होने वाली बातें उस दरवाजे के पीछे खड़े होकर सुनी थीं।"

"हेराफेरी की आदत नहीं गई तुम्हारी?"

"मैंने जानबूझकर कुछ नहीं किया। सब्बरलाल के आने की खुशखबरी देने आया था कि...।" सबकुछ साफ-साफ बताता चला गया वह। बताने के बाद बोला---"जब अवतार ने मेरे द्वारा रिवाल्वर तानने और तुम्हें नचाने की बात कही तो तुमने कहा---वे जख्म आज भी मेरे दिल पर हैं। वाकई देव ने वह सब ठीक नहीं किया।"

"गलत कहा कुछ?"

"अपने प्वाइंट ऑफ व्यू से ठीक ही कहा होगा मगर वे शब्द मुझे तभी से कचोट रहे हैं। दिल दुखी है कि तुम मेरे बारे में ऐसा सोचकर आहत हो। दिव्या, चीर सकता तो सीना चीरकर दिखा देता तुम्हें, तुम पर गोली चलाने का तो ख्याल तक नहीं था मेरे दिमाग में। अब मैं कैसे यकीन दिलाऊं तुम्हें, सचमुच अगले पल मेरा रिवाल्वर उसकी तरफ घूमने वाला था और वो...वो उनके बीच नंगी नाचने वाली

बात?... याद करो, मैंने कभी वैसा नहीं कहा। कहता तो तब, जब चाहा होता। मैंने तो केवल सोच-समझकर फैसला करने के लिए कहा था। केवल इतना कि हमारे पास टाइम है।' मगर उस वक्त तुम ऐसी मानसिक अवस्था में थीं कि कुछ सुनने को ही तैयार नहीं थीं। कहा कुछ जा रहा था, समझ में तुम्हारे कुछ और आ रहा था। डिप्लोमेसी तो ठकरियाल ने की। आखिर उसने तुमसे वह बात मनवा ही ली जो..

"छोड़ो देव... जो गुजर गया, सो गुजर गया।"

"नहीं दिव्या। अगर मेरे मन पर यह बोझ रहा कि तुम मेरे बारे में ऐसा सोचती हो, आहत हो मेरे किसी कृत्य पर तो मैं सारे जीवन आत्मग्लानि की आग में सुलगता रहूंगा।"

"शायद चढ़ गई है तुम्हें।"

और वास्तव में, नशे की ज्यादती ने देवांश को जरूरत से ज्यादा भावुक बना दिया था।

वह उठा।

संभल-संभलकर चलता दिव्या के नजदीक पहुंचा। सोफा चेयर के करीब घुटनों के बल कार्पेट पर बैठ गया। दोनों हाथ बढ़ाकर दिव्या का मुखड़ा उनमें मरा। बोला---"क्या मैं

तुम्हें..अपनी इतनी प्यारी दिव्या को गोली मार सकता हूं? क्या मैं चाह सकता हूं तुम गैरों के सामने कपड़े उतारकर नाचो?"

दिव्या की आंखों में आंसू उमड़ आये।

होठ थरथराकर रह गये। कुछ कह नहीं सकी वह। "तुम रो रही हो?" देवांश ने कहा।

"स-सच बोल रहे हो न?"

"बिल्कुल सच।"

"मेरी कसम?"

"तुम्हारी कसम दिव्या। ...तुम्हारी कसम।" कहने के साथ देवांश भी रो पड़ा।

और।

दिव्या का तो मानो बांध ही टूट गया। अपना चेहरा देवांश की छाती में छुपाये फूट-फूटकर रो पड़ी वह। देवांश ने उसे बाहों में भर लिया। बल्कि भींच लिया।

कम से कम पांच मिनट तक दोनों में से कोई कुछ नहीं
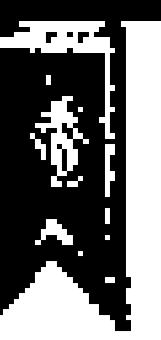
बोला।

केवल रोते रहे।

पांच मिनट बाद दिव्या ने चेहरा उठाया। आंसुओं से तर था वह। बोली---"सॉरी देव।"

देवांश उसके मुखड़े को केवल देखता रहा।

"सॉरी।" कहने के साथ दिव्या के होंठ देवांश के होंठों से जा चिपके।

देवांश ने उसकी जीभ अपने मुंह में भर ली। चुसकने लगा उसे। दोनों में से किसी को नहीं मालूम उसी पोजीशन में वे कब खड़े हो गये। अमरबेल की तरह एक-दूसरे की बाहों में लिपटे हुए थे वे।

जाने किसका पैर सेन्टर टेबल में लगा।

सोडे की एक बोतल कार्पेट पर जा गिरी।

न किसी को होश न फिक्र।

दोनों के हाथ एक-दूसरे के जिस्म पर गर्दिश कर रहे थे। दिव्या ने सिल्क नाइट गाऊन पहन रखा था। कुछ भी तो

नहीं था गाऊन के नीचे।

न पेंटी, न ब्रा।

वे बहके, तो बहकते चले गये।

बैड पर पहुंचते-पहुंचते दोनों के कपड़े जिस्म से अलग हो चुके थे।

उन्माद में डूबा देवांश उस वक्त उरोज चुसक रहा था और दिव्या के ऊपर आना ही चाहता था कि एक खटका हुआ।

दोनों चौंके।

उन्माद गायब।

एक-दूसरे से इस तरह अलग हो गये जैसे स्प्रिंग ने उछाला हो। देवांश के मुंह से निकला---"कोई है...।"

"शायद खिड़की पर।" दिव्या ने कहा।

देवांश एक ही जम्प में बैड से उछलकर खिड़की के नजदीक पहुंच गया। यह वही खिड़की थी जिसके माध्यम से अवतार दो बार कमरे में आ चुका था। इस वक्त पर्दा पड़ा हुआ था उस पर।

देवांश ने एक झटके से उसे हटाया।

कांच के पल्ले बंद थे। चटकनी चढ़ी हुई।

फ्रन्ट लॉन रोशनी से जगमगा रहा था।

रोशनी का इन्तजाम जानबूझकर किया था उन्होंने।

बावजूद इसके देवांश को दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आया।

खिड़की के पल्ले खोले।

बाहर झांका।

अपने तन पर बैडशीट ढक चुकी दिव्या ने पूछा---"कौन है?"

"कोई नजर नहीं आ रहा।"

"था तो जरूर कोई, आवाज हुई थी।"

देवांश ने पल्ले बंद किये। चटकनी चढ़ाई। पर्दा खींचा। भन्नाया हुआ बोला---"वही होगा।"

"कौन?"

"वही साला अवतार। उसी ने रास्ता देख रखा है ये।" कहने के बाद वह तेज कदमों के साथ बैड के करीब, वहां पहुंचा जहां कार्पेट पर उसकी लुंगी पड़ी थी। उठाई। उसे बांधता हुआ बड़बड़ाया---"सारा मूड चौपट कर दिया हरामजादे ने!"

दिव्या चुप रही।

देवांश ने सेन्टर टेबल से सिगरेट का पैकिट उठाया। एक सिगरेट सुलगाई और 'धम्म' की आवाज के साथ सोफा चेयर पर बैठ गया। आधा भरा अपना गिलास उठाया और एक ही सांस में खाली कर गया।

मारे उत्तेजना के इस वक्त उसका चेहरा बुरी तरह भभक रहा था।

दिव्या भी बैड से उठी।

गाउन जिस्म पर डाला।

सेन्टर टेबल के नजदीक आकर एक सिगरेट सुलगाई और सोफा चेयर पर बैठ गयी।

देवांश बड़बड़ाया---"ठकरियाल से तो पीछा छुड़ा लिया। किसी तरह इससे भी पीछा छूट जाता तो...

"यही...मैं भी ठीक यही सोच रही थी देव।"

"मगर नहीं... इससे पीछा छुड़ाना इतना आसान नहीं है। बहुत ही घाघ है साला। और... सारे सुबूत कब्जाये बैठा है। भनक तक नहीं दे रहा कि ठहरा कहां है?"

"इसका पता तो मैं लगा सकती हूं।"

"त-तुम। वो कैसे?"

"भूल गये?... मरता है मुझ पर। साथ लेकर भागने को तैयार है।"

देवांश ने खिड़की की तरफ देखा।

"कांच के पल्ले बंद हैं।" दिव्या ने कहा---"आवाज बाहर नहीं जा सकती।"

"क्या कहना चाहती हो?" देवांश ने वापस उसकी तरफ देखते हुए धीमे स्वर में पूछा।

"उसकी नजरों में, बस जरा सा पलटा खाने की जरूरत है मुझे।" दिव्या ने कहा---"अगर उसका ऑफर कुबूल कर लूं तो सबसे पहले मुझे अपने ठिकाने पर ही ले जायेगा। वहां, जहां सारे सुबूत भी होंगे।"

एकाएक देवांश चुटकी बजा उठा।

अंदाज ऐसा था जैसे दिमाग में कोई बात 'क्लिक' हुई हो।

"क्या हुआ?" दिव्या ने पूछा।

"एक तरकीब दिमाग में आई है।"

दिव्या ने उत्सुक होकर पूछा---"क्या?"

देवांश चुप रह गया। जैसे कुछ सोच रहा हो।

"बोलो न!"

"छोड़ो।" देवांश ने बोतल से एक और पैग गिलास में डालते हुए कहा---"तुम फिर मेरे बारे में गलत धारणा बना बैठोगी।"

"देव प्लीज! बोलो न। आखिर तरकीब क्या आई है तुम्हारे दिमाग में?"

देवांश ने सोडे की एक बोतल खोली। उससे व्हिस्की वाला गिलास भरा। उठाया और होठों से लगाने से पहले बोला---"सलाह को कि दूसरे ऐंगिल से न लो तो कहूं।"

"कहो न।"

गिलास हाथ में लिए उठा। सिर चकराया। टांगें लड़खड़ाईं। गिरने से बड़ी मुश्किल से रोका खुद को।

दिव्या ने कहा---"संभलकर।... और मत पियो देव!"

"वह तुम पर मरता है। बीवी बनाना चाहता है अपनी!" कहते-कहते उसने महसूस किया, जीभ कुछ अकड़ सी रही है। फिर भी, कहता चला गया---"हालांकि मैं समझता हूं वह दीवाना नहीं हो गया है तुम्हारा। बेवकूफ बना रहा है साला। पूरे के पूरे पांच करोड़ पर हाथ साफ करने के लिए ड्रामा कर रहा है तो फिर क्यों नहीं हम भी ड्रामा करें? उसकी चाल में फंसने का ड्रामा और तुम उसे उसी तरह मार डालो।"

"किस तरह?"

"अपने निप्पल्स पर जहर लगाकर।... चुसा दो साले को!"

"वही तो किया मैंने।"

"क-क्या मतलब?" उसके एक हाथ से सिगरेट, दूसरे से गिलास छूट गया। मुंह से निकला---"य-ये हो क्या रहा है मुझे! नशा तो नहीं है ये। सारा जिस्म अकड़ा जा रहा है।"

दिव्या ने सामान्य स्वर में कहा---"कहा तो यही था अवतार
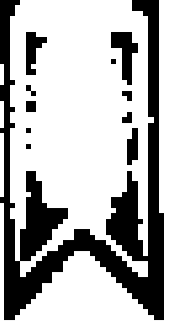
ने कि ये जहर धीरे-धीरे असर करेगा।"

"क-कौन सा जहर?"

"वही, जो तुमने इनसे चुसका है।" कहने के साथ दिव्या ने अपने गाऊन की डोरी खोल दी।

दोनों उरोज आवरणहीन हो गये।

देवांश को अपनी तरफ ताकते हुए उसके निप्पल्स किसी नाग के खड़े फन जैसे लगे।

बुरी तरह लड़खड़ाते वक्त देवांश के मुंह से निकला---"क-क्या कह रही हो दिव्या?"

"वही, जो तुमने सुना।" दिव्या के होठों पर जहरीली मुस्कान थी।

"हरामजादी!" पूरी बात समझ में आते ही वह दहाड़ता हुआ दिव्या पर झपटा।

मगर!

दिव्या फुर्ती से सीट छोड़ चुकी थी।

सोफा चेयर से जा टकराया वह। चेयर सहित सेन्टर टेबल

पर गिरा। सेन्टर टेबल अपने सारे सामान के साथ कार्पेट पर।

एक तरफ खड़ी दिव्या हिंसक नागिन के से अंदाज में फुंफकार रही थी---गलीच कुत्ते! स्वार्थ की नाली में रेंगता गंदा कीड़ा है तू। तू तो अब भी मुझे किसी और का बिस्तर गर्म करने की सलाह दे रहा था। उसका---जिसने मुझे यह काम जरूर सौंपा मगर कहा---'दिव्या, मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं तुम राजदान की पत्नी रहीं या देवांश को चाहती रहीं। बस इतना चाहता हूं---अब अगर मेरी हो गयीं तो मेरी बनकर रहना। केवल मेरी। देवांश का खात्मा करने के लिए मैं उसे तुम्हारे निप्पल्स चुसकने तक की इजाजत दे सकता हूं। उससे आगे बढ़ने की हरगिज नहीं।' इसलिए, उसने ठीक उस वक्त खटका किया जब तुम जहर चुसक चुके।"

सेन्टर टेबल और सोफा चेयर से उलझे देवांश ने उठने की कोशिश की मगर कामयाब न हो सका। कई बार थोड़ा उठा भी, मगर फिर गिरा। हाथ-पांव शिथिल पड़ चुके थे उसके।

जिस्म शक्तिहीन होता चला गया।

दिव्या ने लपककर बाथरूम का दरवाजा खोला।
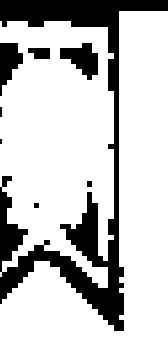
अवतार नजर आया।

उसके होठों पर सुलगी हुई सिगरेट लटक रही थी।

अपने अंतिम क्षणों में देवांश बुरी तरह हैरान नजर आ

रहा था। मुंह से निकला---"व-वो सब..

"वो सब तुम्हें सुनाना जरूरी था।" कहने के साथ आगे बढ़कर अवतार ने दिव्या को अपनी बांहों में भर लिया। बोला---"ताकि तुम पूरी यकीन कर सको दिव्या मेरे नहीं, तुम्हारे साथ है। वैसा न होता तो इसके निप्पल्स चुसकने का मूड कैसे बनता तुम्हारा?"

कुछ कहने की कोशिश में देवांश के मुंह से झाग निकलने लगे।

एक झटका सा खाया उसने। फिर शांत पड़ गया। पलक झपकते ही आंखों से ज्योति गायब हो गयी। पथराई आंखें एक-दूसरे की बांहों में समाये दिव्या और अवतार पर जमकर रह गयी थीं।

अखिलेश की सारी बातें सुनने के बाद रणवीर राणा मुस्कराया। बोला---"ये सभी बातें मामूली हेर-फेर के साथ इंस्पेक्टर ठकरियाल हमें बता चुका है। कह चुका है तुम लोग यही कहानी लिये घूम रहे हो। कोर्ट को भी यही सब सुनाने वाले हो। मगर मिस्टर अखिलेश, तुम तो खुद एक सुलझे हुए जासूस हो। तुम्हें समझना चाहिए कानून कहानियों पर विश्वास नहीं करता। उसे सुबूत चाहिए। और बकौल तुम्हारे, सुबूत तुम्हारा पांचवां दोस्त ले उड़ा।"

"जो कुछ मैंने कहा वह कानून से बचने के लिए नहीं कहा है।"

"फिर किसलिए कहा?"

"दरअसल हमें लग रहा है ठकरियाल अपने ही जाल का शिकार हो गया है। वह अब इस दुनिया में नहीं है।" उछल पड़ा रणवीर राणा---"क्या बक रहे हो तुम?"

"आप थाने में मालूम कर सकते हैं।" समरपाल ने कहा---"वह बगैर इन्फारमेशन दिये चार दिन से गायब है। फ्लैट में भी ताला लगा हुआ है। उसके किसी पड़ोसी से बात कर सकते हैं।"

"यह इन्फारमेशन तो हमारे पास आ चुकी है कि वह चार

दिन से ड्यूटी पर नहीं आ रहा---मगर इसका मतलब यह कहां हुआ वह इस दुनिया में नहीं है? बेस क्या है तुम्हारे ऐसा कहने के पीछे?"

अखिलेश ने दिव्या, देवांश और ठकरियाल के स्टीमर पर जाने की बात ज्यों की त्यों बताने के बाद कहा---"बैण्ड स्टैण्ड पर हम सारी रात स्टीमर के लौटने का इंतजार करते रहे मगर वह नहीं लौटा। अगली सुबह दिव्या और देवांश विला में थे मगर ठकरियाल तभी से गायब है।"

"क्या तुम यह कहना चाहते हो दिव्या और देवांश ने उसे मार डाला?"

"तीन दिन से देवांश भी गायब है।" वकीलचंद ने कहा।

"इसका क्या मतलब हुआ?" रणवीर राणा भड़क सा उठा---"तुम्हारे ख्याल से क्या उसे भी किसी ने मार डाला?"

"और आज!" भट्टाचार्य बोला---"हमारी भरपूर होशियारी के बावजूद भी 'डॉज' देकर गायब हो गयी।"

"ओफ्फो! आखिर कहना क्या चाहते हो तुम लोग?"

"विला से वह बैंक गई थी। बहुत बड़ी सी एक अटैची के

साथ। हम उसका पीछा कर रहे थे। बैंक से निकलते वक्त अटैची काफी भारी हो चुकी थी। अकेली दिव्या पर वह उठ नहीं रही थी। बैंक के गार्ड ने मदद करके गाड़ी में रखवायी। हमें पूरा डाऊट था, वह कहीं न कहीं अवतार से मिलेगी। बता ही चुके हैं---'इन सबको फालो ही हम अवतार तक पहुंचने के लिए कर रहे थे। इसलिए चुपचाप, पुनः दिव्या की गाड़ी का पीछा करना शुरू कर दिया। एक रेड लाइट पर, लाइट के रेड होने के बावजूद वह गाड़ी को निकाल ले गई। हम उसे किसी भी कीमत पर आंखों से ओझल नहीं होने देना चाहते थे। अतः हमने भी रेड लाइट पर नाका क्रॉस करना चाहा परन्तु हमारी गाड़ी विपरीत दिशा से आने वाले ट्रेफिक में फंस गयी। बाद में ट्रेफिक पुलिस ने भी घेर लिया। जैसे-जैसे उनसे निपटे मगर आप समझ सकते हैं, तब तक दिव्या जाने कहां से कहां पहुंच गयी होगी। हम बैंक पहुंचे। पता लगा---परसों दिव्या को बीमा कम्पनी से पांच करोड़ का चैक मिला था। आज ही यह क्लियर हुआ। दिव्या ढाई करोड़ कैश ले गई है। और ढाई करोड़ का उसने क्रेडिट कार्ड बनवाया है।"

"फिर?"

"स्टोरी सीधी-साधी है सर, कोशिश कीजिए समझने की। दिव्या, देवांश, ठकरियाल और अवतार सारा खेल इन्हीं पांच करोड़ की खातिर खेल रहे थे। यकीनन अवतार ने दिव्या को
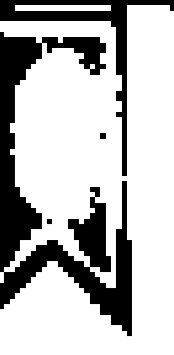
सब्जबाग दिखाकर अपने जाल में फंसा लिया होगा। दिव्या उसकी बातों में आ भी इसलिए गई होगी क्योंकि यहां तो कर्जदार ही उसके पास कुछ नहीं छोड़ते। हमें पूरा यकीन है---अवतार और दिव्या ने मिलकर पहले ठकरियाल को ठिकाने लगाया। उसके बाद देवांश का काम तमाम किया और अब पूरे पांच करोड़ के साथ गायब है।"

"बड़ी भयानक कहानी सुना रहे हो तुम।" राणा ने कहा---"मगर, सवाल ये उठता है---सुना क्यों रहे हो? क्या चाहते हो हमसे?"

"भले ही आपको हमारी कहानी पर विश्वास न आ रहा हो। लेकिन मेरे कहने पर, केवल मेरे उस आदमी के कहने पर शहर की नाकाबंदी करा दें जिसने कई बड़े-बड़े केस हल किये हैं। रेलवे स्टेशन, बस-स्टैण्ड और खासतौर पर एयरपोर्ट पर जबरदस्त चैकिंग के आदेश बगैर देर किये जारी कर दें। मेरे ख्याल से वे मुंबई छोड़ने की कोशिश करेंगे।"

इस बार रणवीर राणा ने कुछ कहा नहीं, केवल देखता रहा अखिलेश की तरफ। जैसी बेचैनी, जैसी उत्तेजना उसके चेहरे पर नजर आ रही थी, उससे लगा---कहीं न कहीं, कोई न कोई बात है जरूर।

ठकरियाल वाकई बगैर बताये चार दिन से गायब था।

कहां गया वह?

एकाएक उसने अखिलेश से पूछा---"तुम्हारे पास अवतार का कोई फोटो है?"

चारों की गर्दन इंकार में हिली।

"पूरा नाम क्या है उसका?"

"अवतार गिल।"

"ग-गिल?" राणा उछल पड़ा---"अवतार गिल? क्या तुम उसकी बात कर रहे हो?"

"क्या आप उसे जानते हैं?"

जवाब देने की जगह रणवीर राणा ने झटके से मेज की दराज खोली। कई फाइलों के नीचे से एक फाइल निकाली। उसे मेज पर डाला। खोला। चंद कागजों के ऊपर एक फोटो लगा हुआ था। सरदार का फोटो। राणा ने उत्तेजित सी अवस्था में पूछा---"जरा देखो, ये तो नहीं है तुम्हारे बचपन का दोस्त?"

"य-यही! यही तो है।" चारों के मुंह से एक साथ हैरत मिश्रित चीख निकली।

"ओह! माई गाड!" राणा कह उठा---"ये तो बैंक लुटेरा है। मर्डरर। ऐसा कोई जुर्म नहीं जो इसने न किया हो। नहीं! यह किसी का सगा नहीं हो सकता। दिव्या का भी नहीं। उसे भी नहीं छोड़ेगा ये। पूरे के पूरे पांच करोड़ हथियाने की सोचेगा।"

अवतार के बारे में सुनकर चारों हैरान रह गये।

रणवीर राणा वायरलेस पर झपट पड़ा था।

"ये! ये रहे मेरे ढाई करोड़।" दिव्या ने उसे 'कार्ड' दिखाते हुए कहा---"अब चाहो भी तो मेरा मर्डर नहीं कर सकते क्योंकि उससे तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा। मेरे हिस्से की फूटी कौड़ी तक हाथ नहीं लग सकेगी तुम्हारे। और मैंने किसी किताब में पढ़ा था---बगैर फायदे के कोई किसी का मर्डर नहीं करता। आदमी पागल ही हो तो बात अलग है। वह तुम हो नहीं। जबकि मैं दुनिया में चाहेंजहां अपने साइन से ढाई करोड़ रुपये हासिल कर सकती हूं। एक साथ चाहूं तो एक साथ। हजार किश्तों में चाहूं तो हजार किश्तों में। बस हर बार, हर जगह मेरे साइन की जरूरत पड़ेगी।"

अवतार मुस्कराया। बोला---"काफी होशियारी दिखाई तुमने।"

"हालात आदमी को होशियार बना देते हैं।"

"यानी विश्वास नहीं था मुझ पर?"

"था नहीं---'है' कहो मिस्टर गिल! है!" दिव्या स्पष्ट शब्दों में कहती चली गई---"अभी तक भी मुझे तुम पर 'रत्ती' बराबर विश्वास नहीं है।"

"फिर सबकुछ छोड़-छाड़कर। देवांश का मर्डर तक करके क्यों आ गई यहां? क्यों मेरे साथ इण्डिया छोड़ने को तैयार हो?

क्यों पत्नी बनना कुबूल किया मेरी?"

"बात बहुत सीधी है मिस्टर गिल। जिन हालात में मैं थी, उनमें सबसे बेहतर यही कर सकती थी। एक तरह से अगर यह कहा जाये तब भी गलत नहीं होगा, इसका कोई विकल्प ही नहीं था मेरे पास। शादी रचा नहीं सकती थी देवांश से, समाज में कोई सम्मान नहीं रह जाता। यूं ही साथ रहने का कोई मतलब नहीं था। उधर, रामभाई शाह जैसे लोग नोंच-नोंच खा जाते। छोड़ना तो था ही वह सब। विकल्प बनकर तुम सामने आ खड़े हुए। हालांकि अभी मुझे मालूम नहीं तुमने झूठ कहा था या सच। मगर कहा---तुम्हें ठहराव की जरूरत है। जीवन-साथी, बच्चों और परिवार की जरूरत है। चैन और सुकून की जरूरत है। सच्ची बात ये है, जरूरत मुझे भी इसी सबकी है। शायद इसीलिए। शायद इसी उम्मीद के सहारे कि तुम सच बोल रहे हो सकते हो, मैंने तुम्हारा साथ दिया। वही किया जो तुम चाहते थे या तुमने कहा। सबसे पहले देवांश को अपने विश्वास में लिया। तुम्हारे कहने पर उसके हाथों ठकरियाल का खून कराया जबकि उधर तुम्हारे और इधरे मेरे कहे के मुताबिक अंतिम समय तक ठकरियाल समझता यही रहा कि खून देवांश का होने वाला है। उसके बाद---ठीक उसी तरह देवांश का पत्ता साफ किया जैसे तुम चाहते थे और पूरे पांच करोड़ लेकर यहां आ गई हूं। तुम्हारे ढाई करोड़ कैश की शक्ल में तुम्हारे हवाले हैं। इससे जाहिर है---मेरे मन में धोखा देने का कोई

प्लान नहीं है। ठीक इसी तरह, मैं धोखा खाने के लिए भी तैयार नहीं ह। इसीलिए, मू ॅ की शक्ल मेंहैंरा हिस्सा काड। मतलब---यदि तुमने अपना वादा नहीं निभाया। अर्थात् शादी नहीं की मुझसे तो ये ढाई करोड़ मुझे एक नई जिन्दगी बसाने में मदद करेंगे। ये ढाई करोड़ जिन्हें तुम मेरी मर्जी के बगैर किसी हालत में हासिल नहीं कर सकते।"

"और अगर शादी की?" अवतार मुस्कराया।

"तो मुझे खुशी होगी। इन ढाई करोड़ पर भी तुम्हारा उतना ही हक होगा जितना कैश वाले ढाई करोड़ पर है। पति-पत्नी का कुछ भी अलग नहीं होता।"

"यानी मैं अभी गुरुद्वारे या मंदिर में जाकर तुमसे शादी कर लूं तो?"

"नहीं...। ऐसे झांसों में मैं नहीं आने वाली।"

"फिर कब यकीन करोगी कि मैं सच्चा हूं? धोखा देने की फिराक में नहीं हूं तुम्हें? शादी करना चाहता हूं? घर बसाना चाहता हूं तुम्हारे साथ?"

"तब... जब तुम्हारे बच्चे की मां बन चुकी होऊंगी।"

ठहाका लगाकर हंस पड़ा अवतार। बहुत देर तक हंसता
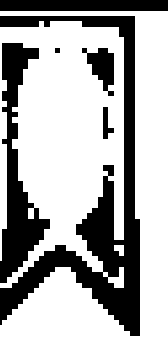
रहा। दिल खोलकर हंसने के बाद बोला---"उसके लिए तो कम से कम नौ महीने इंतजार करना होगा।"

"क्यों... नौ महीने नहीं रह सकते दूसरे ढाई करोड़ के बगैर?"

"तुम्हारा अपना खर्चा कहां से चलेगा?"

"कायदे में तो तुम्हें चलाना चाहिए। अपने कैश वाले ढाई करोड़ से।"

"मुझे?"

"कोई नई या अलग बात नहीं करोगे ऐसा करके। हर हिन्दुस्तानी पति अपनी पत्नी का खर्चा उठाता है।"

"और यदि तुम मेरे ढाई करोड़ फुर्र होते ही, अपने कार्ड के साथ फुर्र हो गयीं तो... तो किसकी मां को मां कहूंगा मैं? जब तुम ठगी जाने को तैयार नहीं हो तो मैं ऐसा मौका क्यों दूं?"

"मैं औरत हूं। कहां जाऊंगी तुम्हें छोड़कर? फिर किसी मर्द के पास। ऐसा ही करना है तो तुम्हें ही क्यों छोड़ूंगी? फिर भी अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं तो फैसला इस बात पर भी हो सकता है हम पति-पत्नी बनकर साथ रहेंगे।

महीने भरे में तुम्हारे कैश में से जितना खर्च होगा उसका आधा मैं अपने कार्ड से कैश करके तुम्हें देती रहूंगी।"

"और अगर मैं बच्चा पैदा करने के बाद भी धोखा दे गया?"

"आदमी बीवी को धोखा दे सकता है, अपने बच्चे को नहीं।"

"काफी माकूल सोच है तुम्हारी।"

"अवतार।" दिव्या का लहजा थोड़ा भावुक हो उठा---"उम्मीद है, तुम मेरे अंदर छुपे डर और मेरी भावनाओं को समझ रहे होगे। मेरी हर सतर्कता के पीछे केवल और केवल एक ही कारण है। न मैं धोखा देने की फिराक में हूं, न धोखा खाना चाहती हूं। अगर तुम इस बात को समझ गये हो जो मैंने किया है या कह रही हूं, उसका बुरा नहीं मानोगे।"

"बुरी मानने का सवाल ही नहीं उठता दिव्या।" अवतार का लहजा भी थोड़ा गंभीर हुआ---"जो शख्स मैं हूं। वाकई कोई औरत उस पर विश्वास नहीं कर सकती। सतर्कता का जो जामा पहनकर तुम यहां आई हो, सच कहूं तो उससे खुशी ही हुई है मुझे। यह सोचकर अपनी पसंद पर गर्व है कि मेरी पत्नी खूबसूरत ही नहीं समझदार भी होगी।"

दिव्या चुपचाप उसकी तरफ देखती रही।

थोड़े गैप के बाद अवतार ने पूछा---"पर एक बात जरूर जानना चाहूंगा।"

"क्या?"

"तुमने मुझे केवल इसलिए चुना क्योंकि तुम्हारे पास और कोई विकल्प नहीं था या कोई और बात भी थी?"

"सच्ची कहूं?"

"उम्मीद तो सच की ही कर रहा हूं।"

"जिस तरह पहली नजर में तुम्हें लगा मुझे तुम्हारी पत्नी होना चाहिए, उसी तरह मुझे भी लगा था मुझे तुम्हारे बच्चे की मां होना चाहिए।"

"वाह!" एक बार फिर जोरदार ठहाका लगा उठा अवतार---"सीधी बच्चे तक पहुंच गईं तुम?"

"दूसरे मर्दों की तरह औरत की इस भावना को शायद तुम भी न समझ सको।" दिव्या का लहजा अत्यन्त गंभीर हो उठा---"औरत चाहे जैसी हो, उसकी सबसे बड़ी इच्छा मां
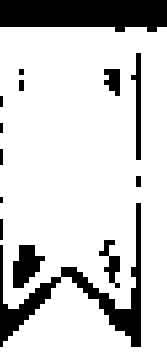
बनने की होती है। मेरी वह इच्छा आज तक! शादी के इतने सालों बाद तक भी पूरी न हो सकी। राजदान ने देवांश से प्यार की खातिर नहीं की और देवांश के बच्चे की मां मैं बन नहीं सकती थी।"

"तो फिर आओ। तुम मां बनो। मुझे बाप बनाओ।" कहने के साथ अवतार ने दिव्या का मुखड़ा अपने दोनों हाथों में भर लिया। उसकी आंखों में झांकता बोला---"नौ महीने बाद ही सही, हमारे बीच विश्वास भी तो वही स्थापित करेगा।"

भीगी पलकों से दिव्या अवतार की तरफ केवल देखती रही।

"उधर देखो!" अवतार ने बैड के ठीक सामने वाली दीवार की तरफ इशारा किया।

दिव्या ने उधर देखा।

वहां एक स्वस्थ और सुन्दर बच्चे की खिलखिलाती फोटो लगी थी।

"जानती हो होटल वालों ने वहां वह फोटो क्यों लगाई है?

दिव्या ने होठों से नहीं, आंखों से सवाल किया।

"क्योंकि यह इस होटल का 'हनीमून सुईट' है। केवल नये
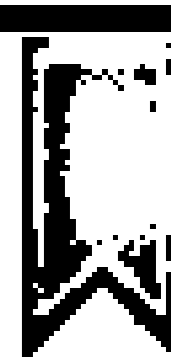
जोड़े ही ठहरते हैं यहां। नींव रखते हैं अपने बच्चे की।"

मारे लाज के दुहेरी हो गई दिव्या। मुखड़ा अवतार की छाती में छुपा लिया।

उसे बाहों में भरते अवतार ने कहा---"हनीमून की खुमारी में कहीं फ्लाइट न छूट जाये। इसलिए सात बजे हम लंदन के लिए उड़ जायेंगे।" कहने के साथ अवतार ने सुईट की लाइट ऑफ कर दी।

अलार्म की तेज आवाज ने दिव्या की नींद तोड़ी।

हड़बड़ाकर उठी। सबसे पहले अलार्म ऑफ किया।

देखा---अवतार बैड पर नहीं था।

सोचा---बाथरूम में होगा। नजर उधर गई---बाथरूम का दरवाजा कमरे की तरफ से बंद था।

फिर कहां गया वह?

थोड़ी घबराकर उठी। सीधी उस वार्डरोब की तरफ लपकी जिसमें ढाई करोड़ से भरी अटैची थी। उसे खोला।

धक!

दिल ने मानो धड़कना बंद कर दिया।

अटैची गायब थी।

बौखला कर सेंटर टेबल की तरफ देखा।

वहां जहां उसने अपना कार्ड रखा था।

वह वहीं था।

दिव्या ने झपटकर उसे उठा लिया। कसमसाकर मुट्ठी में भींचा उसे। अब बस यही उसका सहारा था। वह समझ गयी अवतार उसे छोड़कर जा चुका है। अंततः वही हुआ जिसका उसे डर था। नजर बच्चे की फोटो की तरफ उठी। और चीख निकल गई हलक से। वैसे, जैसे भूत देख लिया हो। कार्ड जाने कहां जा गिरा था। दोनों हाथों से अपने खुले बाल पकड़कर वह आर्तनाद कर उठी---"नहीं! नहीं! नहीं!!!"

"अखिलेश! यह लेटर पढ़कर तुझे यकीन हो जायेगा कि मैं एक नम्बर का हरामजादा हूं।

पैसे पीटने आया था, पैसे पीटकर जा रहा हूं।

जिस सुबह ये लेटर तुझे मिलेगा उस सुबह तक मेरा मिशन पूरा हो चुका होगा। इसमें कोई शक नहीं, यहां मैं दोस्तों से मिलने या राजदान की मौत पर मातमपुर्सी करने नहीं बल्कि उसकी जायदाद पर हाथ साफ करने आया था। दोस्ती की तो बात ही छोड़ दे, दुनिया के किसी भी रिश्ते की मेरी नजरों में कोई अहमियत नहीं है। आज भी नहीं। गुजरा ही कुछ ऐसे मुकाम से हूं।

शुरू में तेरी बातें सुनकर। फिर तेरे द्वारा भट्टाचार्य के फार्म हाऊस पर राजदान के अंत की फिल्म देखकर और अंत में मेरे नाम लिखे गये राजदान के लम्बे लेटर को पढ़कर जाना राजदान अपने तीन दुश्मनों से बदला लेना चाहता था।

दिव्या, देवांश और ठकरियाल।

बदला मैंने लिया जरूर है मगर दिमाग में यह खुशफहमी भी पालने की बिल्कुल जरूरत नहीं है कि ऐसा मैंने राजदान का या तुम लोगों का दोस्त होने के नाते किया। मेरा लक्ष्य था---दौलत हासिल करना। संयोग से मैं लक्ष्य को इन तीनों

से निपटने के बाद ही हासिल कर सकता था। सो, सोचा क्यों न उसी ढंग से निपटा जाये जैसा राजदान ने अपने लेटर में लिखा है, बहरहाल, लेटर ने बनी-बनाई स्कीमें दे दी थीं मुझे। तू जानता ही है, राजदान ने लिखा था---'ठकरियाल की समाधि वहीं बननी चाहिए जहां उसने विचित्रा और उसकी मां की बनाई थी।' वही कर दिया मैंने। किसी और ढंग से न मारा, इस ढंग से मार दिया। क्या फर्क पड़ता है मुझ पर! राजदान ने आगे लिखा है---'तुम लोग दिव्या को इतनी मजबूर कर दोगे कि वह अपने निप्पल्स पर जहर लगाकर देवांश को चुसकाये ताकि देवांश उसी औरत के द्वारा उसी ढंग से मारा जाये जैसे उसने कभी मुझे मारने की कोशिश की थी। यह तरकीब मुझे इन्ट्रेस्टिंग लगी। मारना मेरे लिए भी जरूरी या देवांश को...। सो, इसी तरकीब से मार दिया। उस वक्त मैं ठीक उसी तरह दिव्या को बांहों में लिए खड़ा था जैसे राजदान ने अपने अंतिम क्षणों में देवांश और दिव्या को देखा था।

इस लेटर के साथ सभी सुबूत अर्थात् राजदान के लेटर्स, पाइप पर लटके देवांश का फोटो, ऑडियो कैसिट्स और वह वीडियो फिल्म भी भेज रहा हूं जिसमें राजदान के अंत का मंजर है। एक बार फिर---किसी खुशफहमी का शिकार होने की जरूरत नहीं है। तुम्हें या बबलू को बेकसूर साबित करने में कोई दिलचस्पी नहीं है मेरी। भेज केवल इसलिए रहा हूं क्योंकि मेरे लिए ये कूड़ा हैं। कूड़ेदान में नहीं डाला, तुझे
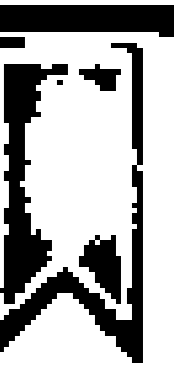
भेज दिया। बात तो एक ही हुई।

दिव्या पर आता हूं।

वाकई बड़ी कुत्ती औरत है।

इस अलंकार से मैं उसे इसलिए नहीं नवाज रहा क्योंकि मैंने उसे राजदान को हार्टअटैक से मारने की कोशिश करते देखा है। बल्कि इसलिए नवाज रहा हूं क्योंकि सोचा था---'फेर में तो आ ही गई मेरे। सो, पूरे के पूरे पांच करोड़ पर हाथ साफ कर दूंगा।' मगर वो पट्ठी तो अपने हिस्से का कार्ड ले आई। किसी भी तरह मैं उसके हिस्से पर हाथ साफ नहीं कर सकता था। हुई न कुत्ती चीज? भावुक करके ठगने की कोशिश कर रही थी मुझ हरामजादे को। जिस्म की आग बुझाने की मां बनने की ख्वाहिश के आवरण से ढांप रही थी। वरना भला हिन्दुस्तानी औरत शादी से पहले किसका बिस्तर गर्म करती है! एक बार तू फिर जानता है, उसके बारे में राजदान ने अपने लेटर में लिखा है---'भट्टाचार्य, तुझे दिव्या के जिस्म में इंजेक्शन द्वारा एच.आई.वी. कीटाणु प्रविष्ट करने हैं ताकि वह महसूस कर सके पल-पल मौत की तरफ सरक रहे व्यक्ति को कितनी जबरदस्त पीड़ा से गुजरना पड़ता है।' इंजेक्शन न सही, किसी और माध्यम से हो गया है ऐसा। मुझे खुद नहीं मालूम मैंने यह बीमारी कहां से पाई। जाने किस-किस वेश्या में मुंह मारा है। बैड के

सामने एक बच्चे का फोटो लगा है। उस फोटो को उल्टा टांग आया हूं। फोटो की पीठ पर मोटे-मोटे हर्फों में लिखा है---"तुम्हें एड्स हो चुका है।"

समाप्त